विवरणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	व्याकरण-परिचय	1-14
	अभ्यासार्थ प्रश्न	15-22
2.	सन्धि	21-34
	अभ्यासार्थ प्रश्न	35-40
3.	कारक एवं अनुवाद	41-56
	अभ्यासार्थ प्रश्न	57-60
4.	लकार परिवर्तन	61-62
	अभ्यासार्थ प्रश्न	63-63
	वाच्य परिवर्तन	64-67
	अभ्यासार्थ प्रश्न	68-68
5.	समास	69-87
	अभ्यासार्थ प्रश्न	88-92
6.	प्रत्यय	93-107
	अभ्यासार्थ प्रश्न	108-111
7.	शब्द-रूप	112-116
	अभ्यासार्थ प्रश्न	116-118
8.	धातु-रूप	119-126
	अभ्यासार्थ प्रश्न	127-129
9.	अव्यय	130-133
	अभ्यासार्थ प्रश्न	134-135
10.	उपसर्ग	136-138
	अभ्यासार्थ प्रश्न	138-139
11.	अशुद्धि-संशोधन	140-154
	अभ्यासार्थ प्रश्न	155-161
12.	छन्द	162-165
	अभ्यासार्थ प्रश्न	166-167
13.	सूक्ति	168-170
14.	पर्यायवाची एवं विलोम शब्द	171-172
15.	शिक्षण विधि	173-196
	अभ्यासार्थ प्रश्न	197-201
16.	हल प्रश्न-पत्र-RTET-2011, 2012, REET-2015, REET-2017	202-233
17.	मॉडल पेपर-10	234-255

Scanned by CamScanner

अध्याय 1

व्याकरण-परिचय

व्याकरण-परिचय

- **भाषा– भाष्यते अनया इति भाषा**–अपने मन्तव्य को अभिव्यक्त करने या सम्प्रेषित करने के माध्यम को भाषा कहा जाता है।
- यह भाषा ध्वनि, लिपि या संकेत के रूप में सम्भव है। इनमें से ध्वनि और लिपि रूप में स्थित भाषा में निश्चितता का होना आवश्यक है।
- भाषा के निश्चित स्वरूप के लिए निश्चित नियमों का होना आवश्यक है। निश्चित नियमों के अभाव में भाषा सार्वभौमिक नहीं हो सकती है।
- भाषा के प्रसंग में निश्चित नियमों के समूह को ही व्याकरण कहा जाता है।
- संस्कृत भाषा के प्रसंग में शब्द पहले से स्थित थे। उन शब्दों के आधार पर व्याकरण का निर्माण बाद में हुआ है। अर्थात् शब्द प्राथमिक है, जबकि व्याकरण द्वितीयक है।
- व्याकरण के माध्यम से शब्दों की व्याकृति/व्युत्पत्ति को दिखाया जाता है। अतः कहा गया है कि– **''व्याक्रियन्ते = व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्।''(वि + आङ् + कृ + ल्युट्)**
- इस तरह स्पष्ट है कि यहाँ शब्द लक्ष्य है तथा व्याकरण लक्षण या साधन है।
- व्याकरण में शब्दों का नियमन किया जाता है। अतः महाभाष्य में व्याकरण को 'शब्दानुशासन' भी कहा जाता है।
- संस्कृत व्याकरण के अध्ययन की दो परम्पराएँ है। ये दो परम्पराएँ है– (1) बार्हस्पती परम्परा और (2) माहेश्वरी परम्परा।

  (1) व्याकरण की **बार्हस्पती परम्परा** में, कहा जाता है कि ब्रह्मा ने सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र का निर्माण करके बृहस्पति को बताया। बृहस्पति ने इन्द्र को तथा इन्द्र ने यम, रुद्र, वायु, वरुण आदि को बताया। अतः इस मत में 'इन्द्र' को प्रथम वैयाकरण (व्याकरण को जानने वाला) माना जाता है तथा प्रथम प्रवक्ता बृहस्पति को माना जाता है। यहाँ शब्दों का प्रतिपदपाठ किया गया। इस कारण नियमों के ज्ञान में कठिनता रही। इस बार्हस्पती परम्परा को 'कातन्त्र' नाम भी दिया जाता है, क्योंकि यहाँ पर कठिनता थी।

  (2) **माहेश्वरी परम्परा** के अनुसार भगवान् महेश्वर ही प्रथम वैयाकरण हुए है। कहा गया है कि माहेश्वर-सूत्रों के माध्यम से पाणिनि को व्याकरण का ज्ञान हुआ। अतः इस परम्परा को 'पाणिनीय परम्परा' भी कहा जाता है। इस परम्परा को वर्तमान में अधिक तार्किक, मनोवैज्ञानिक एवं सर्वग्राह्य माना जाता है।

व्याकरण के त्रिमुनि

पाणिनि, कात्यायन (वररुचि) और पतञ्जलि को व्याकरण के त्रिमुनि कहा जाता है। पाणिनि की अष्टाध्यायी, कात्यायन के वार्तिक तथा पतञ्जलि के महाभाष्य को 'तदुक्ति' पद से सुशोभित किया गया है।

त्रिमुनि	तदुक्ति (रचना)
1. पाणिनि	1. अष्टाध्यायी
2. कात्यायन (वररुचि)	2. वार्तिक
3. पतञ्जलि	3. महाभाष्य

- इस त्रिमुनि में पाणिनि की अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरण का आधारस्तम्भ कृति है। पाणिनीय-सूत्रों से बचे हुए विषय तथा कठिनता से कहे गये विषय की सरल प्रस्तुति, कात्यायन (वररुचि) ने वार्तिकों के रूप में की है। अष्टाध्यायी और वार्तिकों पर विचार करके, पाणिनीय सूत्रों की ही पुनः प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए पतञ्जलि ने 'महाभाष्य' लिखा।
- इस त्रिमुनि परम्परा में पतञ्जलि के मत को श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि इसमें पुनः पाणिनि के मत को ही प्रामाणिक माना है। पुनश्च, जो मुनि बाद में, विषय प्रस्तुत करता है, उसका मत प्रामाणिक माना जाता है। कहा गया है– **'यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्।'**

Scanned by CamScanner

त्रिमुनि	तदुक्ति	सामान्य-परिचय
1. पाणिनि (समय-500 ईसा पूर्व) जन्म-शलातुर अध्ययन-तक्षशिला माता-दाक्षी पिता-पणिन गुरु-आचार्य वर्ष	अष्टाध्यायी	– दूसरा नाम- शब्दानुशासनम्। – आठ अध्याय, प्रत्येक अध्याय में चार पाद, अतः कुल 32 पाद। – 14 माहेश्वर सूत्र व 3978 सूत्र। – प्रथम सूत्र- वृद्धिरादैच्। – अन्तिम सूत्र- अ अ। – अष्टाध्यायी में व्याकरण के दस आचार्यों का नाम लिया गया है। – इसके प्रारम्भ के 29 पादों (सवा सात अध्यायों) के प्रति अंतिम तीन पाद असिद्ध माने गये हैं। (पूर्वत्रासिद्धम्) – प्रारम्भिक सवा सात अध्याय-सपादसप्ताध्यायी, अन्तिम तीन पाद-त्रिपादी।
2. कात्यायन (वररुचि) (समय-350 ईसा पूर्व)	वार्तिकम्	– लगभग 1500 सूत्रों पर 4000-5000 वार्तिक लिखी। – 836 वार्तिक वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी में प्रचलित। – दक्षिण भारत के रहने वाले थे।
3. पतञ्जलि (समय-200 ईसा पूर्व)	महाभाष्यम्	– कुल '85' आह्निक। (कुछ के मत में 84 की प्रामाणिकता) – एक दिन में निवृत्त कार्य को आह्निक कहा जाता है, अतः महाभाष्य को 84/85 दिनों में निर्मित ग्रन्थ माना जाता है। महाभाष्य पर कैयट, नागेश, भर्तृहरि ने टीकाएँ लिखी हैं। – वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- भट्टोजिदीक्षित। – मध्यसिद्धान्तकौमुदी- वरदराज। – लघुसिद्धान्तकौमुदी-वरदराज।

माहेश्वर-सूत्र

1. अ इ उ ण्
2. ऋ लृ क्
3. ए ओ ङ्
4. ऐ औ च्
5. ह य व र ट्
6. ल ण्
7. ञ म ङ ण न म्
8. झ भ ञ्
9. घ ढ ध ष्
10. ज ब ग ड द श्
11. ख फ छ ठ थ च ट त व्
12. क प य्
13. श ष स र्
14. ह ल्

- जनश्रुति है कि पाणिनि की निरन्तर आराधना से प्रसन्न होकर भगवान् शिव ने डमरू बजाया था। इसी से ये चौदह माहेश्वर-सूत्र निकले। अतः इनको शिवसूत्रजाल भी कहा जाता है।

- चूँकि इन माहेश्वर सूत्रों में सभी अक्षरों का उल्लेख किया गया है, अतः इन माहेश्वर-सूत्रों को **अक्षरसमाम्नाय** या वर्णसमाम्नाय भी कहा जाता है। समाम्नाय से तात्पर्य वेद से है। अतः इन्हें अक्षरवेद या वर्णवेद भी कहा जाता है।
- प्रत्याहारों का निर्माण माहेश्वर सूत्रों से ही होने के कारण, इन्हें **प्रत्याहार-सूत्र** भी कहा जाता है।
- इनमें प्रारंभ के चार सूत्र स्वर-विधायक (अच्सम्बन्धी) तथा अंतिम दस सूत्र व्यञ्जन-विधायक (हल्सम्बन्धी) है।
- माहेश्वर सूत्रों के अंतिम वर्ण की इत्संज्ञा होती है (**हलन्त्यम्**)। जैसे अइउण् में ण्, ऋलृक् में क् आदि की **इत्संज्ञा** होती है।
- 'लण्' सूत्र (6) के लकार में विद्यमान अकार की भी इत्संज्ञा होती है।
- शेष सभी व्यञ्जनों में अकार केवल उच्चारण के लिए है।
- इन सभी इत्संज्ञाओं का प्रयोजन प्रत्याहार निर्माण है।
- माहेश्वर सूत्रों में हवर्ण का दो बार उपदेश किया। (**हयवरट् एवं हल् सूत्र में**)
- माहेश्वर सूत्रों में इत्सञ्ज्ञक वर्ण ण् का दो बार पाठ किया गया है।

वर्णमाला

माहेश्वर सूत्रों के अनुसार– स्वर (अच्) = 9	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ [अ इ उ ऋ लृ-**मूल स्वर**, ए ओ ऐ औ-**संयुक्त स्वर**]	
व्यञ्जन (हल्) = 33	ह् य् व् र् ल् आदि	
कुल वर्ण (अल्) = 42		
व्यञ्जनों में स्पर्श वर्ण 25 (जय्-प्रत्याहार)	(इन्हें उदित् वर्ण भी कहा जाता है।) कु - कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्) चु - चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) टु - टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) तु - तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) पु - पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्)	कु चु टु तु पु में ह्रस्व उ की इत्संज्ञा होती है। अतः इन्हें उदित् वर्ण भी कहा जाता है। इन 25 वर्णों के उच्चारण में तालु आदि उच्चारण स्थानों का स्पर्श (Touch) होता है, अतः इन्हें स्पर्श-वर्ण कहा जाता है।
ऊष्मवर्ण - 4 (शल् प्रत्याहार)	श् ष् स् ह्	इनके उच्चारण में मुख में से ऊष्मा का निकास होता है, अतः इन्हें ऊष्मवर्ण कहा जाता है।
अन्तःस्थवर्ण - 4 (यण् प्रत्याहार)	य् व् र् ल्	इनके उच्चारण में वायु मुख से बाहर नहीं निकल कर, अन्दर ही विद्यमान रहती है। अतः इन्हें अन्तःस्थ वर्ण कहा गया है।

प्रसिद्ध संयुक्त व्यञ्जन वर्ण	
क्ष् - क् + ष्	श्र् - श् + र्
त्र् - त् + र्	स्र् - स् + र्
ज्ञ् - ज् + ञ्	द्य् - द् + य्

इन संयुक्त व्यञ्जन वर्णों को स्वतन्त्र वर्ण नहीं माना जाता। ये दो वर्णों के संयोग मात्र हैं। अतः इनकी गणना वर्णमाला में नहीं होती।

अयोगवाह

ऐसे वर्ण या चिह्न जिनका पाठ सामान्य वर्णमाला में नहीं है, फिर भी लेखन में काम आते हैं, अयोगवाह कहलाते हैं। सामान्यतः अयोगवाह चार माने गये हैं–

(1) **अनुस्वार–**
अं– अ के बाद स्थित यह चिह्न अनुस्वार कहलाता है।

(2) **विसर्ग–**
अः – अ के बाद स्थित (:) इस चिह्न को विसर्ग कहा जाता है।

(3) **अर्धविसर्ग**–विसर्ग का आधा स्वरूप अर्धविसर्ग कहलाता है। अर्धविसर्ग दो प्रकार के हैं–
 (i) **जिह्वामूलीय**– क और ख से पहले स्थित अर्ध-विसर्ग (आधा विसर्ग) जिह्वामूलीय होता है। ≍ **क**, ≍ **ख**
 (ii) **उपध्मानीय**– प और फ से पहले स्थित अर्ध-विसर्ग उपध्मानीय होता है। ≍ **प** ≍ **फ**

(4) **यम**–वर्ग के प्रारम्भिक चार वर्णों में से किसी भी एक के आगे, किसी भी वर्ग के पञ्चम वर्ण (ङ ञ ण न म) के रहने पर, पहले के जैसे द्वितीय वर्ण को यम कहा जाता है। जैसे–
'पलिक्क्नी' में द्वितीय 'क्' यम है।
'चख्ख्नतु' में द्वितीय 'ख्' यम है।
'अग्ग्निः' में द्वितीय 'ग्' यम है।
'घ्घ्नन्ति' में द्वितीय 'घ्' यम है।

Scanned by CamScanner

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार वर्णमाला

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार कुल वर्ण 63/64 माने गये है। (**त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः**)
इनमें कुल 21 या 22 स्वर व 42 शेष वर्ण माने गये हैं।

स्वर (21/22)

- **अ, इ, उ, ऋ, (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत)** 4×3 = 12
- **लृ (केवल प्लुत या ह्रस्व और प्लुत)** (1 या 2)
- **ए ओ ऐ औ (केवल दीर्घ और प्लुत)** 4×2 = 8

शेष वर्ण (42)

- **25 स्पर्श वर्ण (कु चु टु तु पु)/उदित् वर्ण/वर्गीय वर्ण**
- **4 ऊष्म वर्ण (श् ष् स् ह्)**
- **4 अन्तःस्थ वर्ण (य् व् र् ल्)**
- **4 यम**
- **अनुस्वार (1)**
- **विसर्ग (1)**
- **जिह्वामूलीय (1)**
- **उपध्मानीय (1)**
- **दुःस्पृष्ट (1) ळ –** वैदिक प्रक्रिया में ड् से पहले तथा बाद में स्वर के होने पर ड् के स्थान पर दुःस्पृष्ट ळ् आदेश हो जाता है।

प्रत्याहार निर्माण

- प्रत्याहार-संज्ञा विधायक सूत्र "**आदिरन्त्येन सहेता**" है। प्रत्याहार निर्माण में आदि (प्रारम्भिक) वर्ण से प्रारम्भ होकर अन्तिम इत्संज्ञक वर्ण-तक वर्णों का ग्रहण किया जाता है। लेकिन इत्संज्ञक वर्णों का यहाँ ग्रहण नहीं किया जाता।
- जैसे अक् प्रत्याहार के निर्माण में 'अइउण्' सूत्र के अ से प्रारम्भ करके 'ऋलृक्' सूत्र के ककारपर्यन्त वर्णों का ग्रहण किया जाता है, लेकिन इत्संज्ञक 'ण्' तथा 'क्' का नहीं। इस प्रकार अक् प्रत्याहार में 'अ, इ, उ, ऋ और लृ'-पाँच वर्णों का ग्रहण होता है।
- सामान्यतः अष्टाध्यायी में 41 प्रत्याहारों का प्रयोग किया जाता है। 'उरण् रपरः' सूत्र में 'र' को प्रत्याहार मानकर 42 प्रत्याहारों का प्रयोग अष्टाध्यायी में किया गया है।
- लेकिन इन प्रत्याहारों के अलावा वार्तिकों में 'चय्-प्रत्याहार' तथा उणादि सूत्रों में 'ञम्-प्रत्याहार' मानकर प्रत्याहारों की कुल संख्या 44 गिनी जा सकती है।
- माहेश्वर सूत्रों में 'ण्' की इत्संज्ञा दो जगह होती है। अर्थात् ण् का पाठ दो स्थानों पर है–
  (1) अ इ उ ण् (प्रथम सूत्र) में तथा
  (2) ल ण् (षष्ठ सूत्र) में।
- यहाँ प्रत्याहार निर्माण प्रक्रिया में अण् और इण् प्रत्याहारों कें बनाने में संशय उत्पन्न होता है, कि किस णकार-पर्यन्त वर्णों का ग्रहण किया जावें?
- यहाँ यह ध्यातव्य है कि इण् प्रत्याहार में 'लण्' सूत्र के णकार तक वर्णों का ग्रहण किया जाता है।
- अण् प्रत्याहार में, '**अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः**' सूत्र के प्रसङ्ग में 'लण्' सूत्र पर्यन्त तथा अन्य सूत्रों के प्रसंग में 'अइउण्' के णकार-पर्यन्त ही ग्रहण होगा। इसीलिए 44 प्रत्याहारों के पाठ में अण् प्रत्याहार का दो बार पाठ किया गया है।
- सर्वाधिक 6-6 प्रत्याहार श् और ल् इत्संज्ञक वर्णों सें बनाये गये हैं–

  इत्संज्ञक श् से - अश्, हश्, वश्, झश्, जश्, बश्।

  इत्संज्ञक ल् से - अल्, हल्, वल्, रल्, झल्, शल्।
- लण् सूत्र में अकार की इत्संज्ञा करने का प्रयोजन 'र' प्रत्याहार है। 'र' प्रत्याहार में र् और ल्-इन दो वर्णों का ग्रहण होता है।
- इन 44 प्रत्याहारों एवं इनमें शामिल होने वाले वर्णों को सारणी के रूप में आगामी पृष्ठ पर प्रस्तुत किया गया है।

प्रत्याहार

क्र.सं.	प्रत्याहार	वर्ण
1.	अक्	अ, इ, उ, ऋ, लृ
2.	अच्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ
3.	अट्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्
4.	अण्	अ, इ, उ
5.	अण्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्
6.	अम्	स्वर, ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्
7.	अल्	सभी वर्ण
8.	अश्	स्वर, ह्, य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5
9.	इक्	इ, उ, ऋ, लृ
10.	इच्	इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ
11.	इण्	इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, र्, ल्
12.	उक्	उ, ऋ, लृ
13.	एङ्	ए, ओ
14.	एच्	ए, ओ, ऐ, औ
15.	ऐच्	ऐ, औ
16.	खय्	वर्गों के 1, 2
17.	खर्	वर्गों के 1, 2, श्, ष्, स्
18.	ङम्	ङ्, ण्, न्
19.	चय्	च्, ट्, त्, क्, प् (वर्गों के प्रथम वर्ण)
20.	चर्	वर्गों के प्रथमवर्ण, श्, ष्, स्
21.	छव्	छ, ठ्, थ्, च्, ट्, त्
22.	जश्	ज्, ब्, ग्, ड्, द्
23.	झय्	वर्गों के 1, 2, 3, 4
24.	झर्	वर्गों के 1, 2, 3, 4, श्, ष्, स्
25.	झल्	वर्गों के 1, 2, 3, 4, श्, ष्, स्, ह्
26.	झश्	वर्गों के 3, 4
27.	झष्	वर्गों के चतुर्थ वर्ण (झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्)
28.	बश्	ब्, ग्, ड्, द्
29.	भष्	झ् के अलावा वर्गों के चतुर्थ वर्ण
30.	मय्	ञ् को छोड़कर वर्गों के 1, 2, 3, 4, 5
31.	यञ्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 5, झ्, भ्
32.	यण्	य्, व्, र्, ल्
33.	यम्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्
34.	यय्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1, 2, 3, 4, 5
35.	यर्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1, 2, 3, 4, 5, श्, ष्, स्
36.	रल्	य्, व् के अलावा सभी व्यञ्जन
37.	वल्	य् के अलावा सभी व्यञ्जन
38.	वश्	व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5
39.	शर्	श्, ष्, स्
40.	शल्	श्, ष्, स्, ह् (ऊष्म वर्ण)
41.	हल्	सभी व्यञ्जन
42.	हश्	ह्, य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5
43.	ञम्	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्
44.	र	र्, ल्

Scanned by CamScanner

उच्चारण-स्थान

- प्रत्येक वर्ण जहाँ से उत्पन्न होता है, उसे उसका उच्चारण स्थान कहा जाता है। अर्थात् वर्णों के उत्पत्ति स्थल या प्रथम प्रकाशन स्थल को उनका उच्चारण स्थान कहा जाता है।
- सामान्यत: कुल सात उच्चारण स्थान माने गये है। पाणिनीय शिक्षा में उरस् को भी सभी वर्णों का सामान्य उच्चारण-स्थान माना गया है। अर्थात् पाणिनीय शिक्षा में आठ उच्चारण स्थान माने गये है।
- कुछ वर्ण दो उच्चारण-स्थानों की सहायता से भी उत्पन्न होते हैं। सवर्ण सञ्ज्ञा में इन सात उच्चारण स्थानों का ही प्रयोग होता है।
- सात उच्चारण-स्थान हैं–

1. कण्ठ, 2. तालु,
3. मूर्धा, 4. दन्त,
5. ओष्ठ, 6. नासिका तथा
7. जिह्वामूल।

उच्चारण स्थान

1. कण्ठ	-	**अ-कु-ह-विसर्जनीयानां कण्ठ:**	अ + कवर्ग + ह् + विसर्ग
2. तालु	-	**इ-चु-य-शानां तालु**	इ + चवर्ग + य् + श्
3. मूर्धा	-	**ऋ-टु-र-षाणां मूर्धा**	ऋ + टवर्ग + र् + ष्
4. दन्त	-	**लृ-तु-ल-सानां दन्ता:**	लृ + तवर्ग + ल् + स्
5. ओष्ठ	-	**उ-पू-पध्मानीयानामोष्ठौ**	उ + पवर्ग + उपध्मानीय (≍ प, ≍ फ)
6. नासिका	-	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् + म् + ङ् + ण् + न्
7. कण्ठतालु	-	**एदैतो: कण्ठतालु**	ए + ऐ
8. कण्ठोष्ठ	-	**ओदौतो: कण्ठोष्ठम्**	ओ + औ
9. दन्तोष्ठ	-	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व्
10. जिह्वामूल	-	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	जिह्वामूलीय (≍ क, ≍ ख)
11. नासिका	-	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	ं (अनुस्वार)

उच्चारण स्थान	कण्ठ	तालु	मूर्धा	दन्त	ओष्ठ	नासिका	कण्ठतालु	कण्ठोष्ठ	दन्तोष्ठ	जिह्वामूल
वर्ण	अ क ख ग घ ङ ह :	इ च छ ज झ ञ य श	ऋ ट ठ ड ढ ण र ष	लृ त थ द ध न ल स	उ प फ ब भ म ≍प ≍फ	ञ म ङ ण न ं	ए ऐ	ओ औ	व	≍क ≍ख

- 'ञ म ङ ण न' का अपने वर्ग के अनुसार उच्चारण स्थान तो है ही, साथ में नासिका भी उनका उच्चारण स्थान है। अत: इस तरह दस वर्णों के दो-दो उच्चारण स्थान है।

ङ	-	कण्ठ + नासिका	ए	-	कण्ठ + तालु
ञ	-	तालु + नासिका	ऐ	-	कण्ठ + तालु
ण	-	मूर्धा + नासिका	ओ	-	कण्ठ + ओष्ठ
न	-	दन्त + नासिका	औ	-	कण्ठ + ओष्ठ
म	-	ओष्ठ + नासिका	व	-	दन्त + ओष्ठ

- विसर्ग एवं अर्ध विसर्ग जिस स्वर पर आश्रित होता है, उसके अनुसार उसका उच्चारण स्थान परिवर्तित हो जाता है।
- यम वर्णों का उच्चारण स्थान नासिका ही माना जाता है।
- ह् के बाद अन्त:स्थ या ऊष्म वर्णों के होने पर उरस् उच्चारण स्थान होगा।
- एक उच्चारण स्थान वाले कुल वर्ण= 32 वर्ण तथा विसर्ग, उपध्मानीय, जिह्वामूलीय व अनुस्वार।
- दो उच्चारण स्थान वाले कुल वर्ण = 10

यत्न

वर्णों के उच्चारण में किये जाने वाले आन्तरिक प्रयासों को यत्न कहा जाता है। यत्न दो प्रकार के होते हैं–

1. आभ्यन्तर यत्न (इसे प्रयत्न भी कहा जाता है) और
2. बाह्य यत्न।

आभ्यन्तर प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण से पहले किया जाने वाला आन्तरिक प्रयास ही आभ्यन्तर यत्न है।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है–

(i) स्पृष्ट (ii) ईषत्स्पृष्ट (iii) ईषद्विवृत (iv) विवृत (v) संवृत

(i)	**स्पृष्ट प्रयत्न–**	स्पर्श वर्णों कु चु टु तु पु (उदित् वर्ण) का है। (क से म तक 25 वर्ण)
(ii)	**ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न–**	अन्त:स्थ वर्णों (य्, व्, र्, ल्) का है। (4 वर्ण)
(iii)	**ईषद्विवृत–**	ऊष्म वर्णों (श्, ष्, स्, ह्) का है। (4 वर्ण)
(iv)	**विवृत प्रयत्न–**	स्वरों का है। (9 वर्ण)
(v)	**संवृत प्रयत्न–**	ह्रस्व 'अ' का लौकिक प्रयोग दशा में संवृत प्रयत्न होता है। (1 वर्ण) व्याकरण की प्रक्रिया दशा में विवृत ही होता है।

- ह्रस्व 'अ' लौकिक प्रयोग में ही संवृत होता है। व्याकरण की प्रक्रिया दशा में यह ह्रस्व 'अ' विवृत ही होगा। अन्य सभी स्वर विवृत ही होंगे, चाहे वे प्रक्रिया दशा में हो या लौकिक प्रयोग दशा में। दीर्घ 'अ' अर्थात् 'आ' भी सर्वदा विवृत ही होगा। उक्त संवृत-विवृत भेद केवल ह्रस्व अकार के लिए किया गया है।
- सिद्धान्तकौमुदी में ईषद्विवृत को आभ्यन्तर प्रयत्न पृथक् से नहीं मानकर विवृत में ही समाहित किया है। यहाँ स्वरों तथा ऊष्म वर्णों का आभ्यन्तर यत्न विवृत ही माना गया है। **इस प्रकार वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी में 4 आभ्यन्तर यत्न माने गए हैं।**

	आभ्यन्तर प्रयत्न		वर्ण	[वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार]
1.	स्पृष्ट	→	कु चु टु तु पु (25)	Note :
2.	ईषत्स्पृष्ट	→	य्, व्, र्, ल् (4)	प्रत्येक वर्ण का एक ही
3.	विवृत	→	स्वर (9) एवं ऊष्म वर्ण (4)	आभ्यन्तर प्रयत्न हो सकता है।
4.	संवृत	→	प्रयोग दशा में ह्रस्व अकार मात्र	

बाह्य यत्न

वर्णों के उच्चारण के बाद किया जाने वाला आन्तरिक प्रयास बाह्य यत्न कहलाता है।

बाह्य यत्न ग्यारह (11) हैं–

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

इनमें प्रारम्भ के 8 बाह्य यत्न व्यञ्जनों से सम्बन्धित है तथा अन्तिम तीन बाह्य यत्न स्वरों से सम्बन्धित है।

बाह्य यत्न	वर्ण			
विवार **श्वास** **अघोष**	क ख च छ ट ठ त थ प फ	(प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितीय वर्ण)	+ +	विसर्ग श ष स जिह्वामूलीय उपध्मानीय यम (वर्गों के 1, 2 के)

Scanned by CamScanner

बाह्य यत्न	वर्ण		
संवार नाद घोष	ग घ ङ, ज झ ञ, ड ढ ण, द ध न, ब भ म	(वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण)	+ अन्तःस्थ (य व र ल) + ह + अनुस्वार + यम (वर्गों के 3, 4 के)
अल्पप्राण	क ग ङ, च ज ञ, ट ड ण, त द न, प ब म	(प्रत्येक वर्ग के 1, 3, 5 वर्ण)	+ य व र ल + 1, 3 के यम
महाप्राण	ख घ, छ झ, ठ ढ, थ ध, फ भ	(प्रत्येक वर्ग के 2, 4 वर्ण)	+ श ष स ह + 2, 4 के यम

सभी स्वरों के तीन-तीन बाह्य यत्न होते हैं–

1. उदात्त– **उच्चैरुदात्तः–** तालु आदि उच्चारण स्थानों में उपरि भाग में निष्पन्न स्वर उदात्त होता है। उदात्त स्वर के लिए किसी चिह्न का प्रयोग नहीं होता।
जैसे–अ, आ, इ, ई आदि।

2. अनुदात्त– **नीचैरनुदात्तः–** तालु आदि उच्चारण स्थानों के अधोभाग में निष्पन्न स्वर अनुदात्त होता है। अनुदात्त स्वर के लिए स्वर के नीचे आड़ी पंक्ति का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– अ, आ, इ, ई आदि।

3. स्वरित– **समाहारः स्वरितः–** उदात्त व अनुदात्त का समाहार स्वरित होता है। स्वरित का प्रारम्भिक अर्धभाग उदात्त तथा अन्तिम अर्धभाग अनुदात्त होता है। स्वरित स्वर के लिए स्वर के ऊपर खड़ी पंक्ति का प्रयोग होता है।
जैसे– अ, आ, इ, ई आदि।

	संज्ञा	सूत्र	चिह्न	मन्त्रपाठ के दौरान हस्त संचालन	उदाहरण
1.	उदात्त-	उच्चैरुदात्तः (उपरिभाग में निष्पन्न स्वर)	कोई चिह्न नहीं	सिर के सामने	आ ये
2.	अनुदात्त-	नीचैरनुदात्तः (अधोभाग में निष्पन्न स्वर)	नीचे आड़ी रेखा	हृदय के सामने	अर्वाङ्
3.	स्वरित-	समाहारः स्वरितः (उदात्त व अनुदात्त का मिश्रण)	ऊपर खड़ी रेखा	कर्णमूल के सामने	क्व वोऽश्वाः

निष्कर्ष–

1. प्रत्येक व्यञ्जन के **चार-चार बाह्य यत्न** होते हैं।
तीन → विवार, श्वास, अघोष या संवार, नाद, घोष।
एक → अल्पप्राण या महाप्राण।
2. प्रत्येक स्वर के तीन-तीन बाह्य यत्न होते है। (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित)
3. प्रत्येक वर्ण (चाहे स्वर हो या व्यंजन) का **एक ही आभ्यन्तर यत्न** होता है।
4. अतः हम कह सकते हैं कि प्रत्येक स्वर के एक आभ्यन्तर व तीन बाह्य कुल चार यत्न होते हैं।
5. इसी तरह प्रत्येक व्यंजन के एक आभ्यन्तर प्रयत्न तथा चार बाह्य यत्न, कुल पांच यत्न होते हैं।

वर्ण	आभ्यन्तर यत्न	बाह्य यत्न	कुल यत्न
1. स्वर	1	3	4
2. व्यंजन	1	4	5

उदाहरणस्वरूप–(इस तरह से प्रत्येक वर्ण का अभ्यास किया जाना चाहिए।)

इ → विवृत + उदात्त + अनुदात्त + स्वरित।
उ → विवृत + उदात्त + अनुदात्त + स्वरित।
क → स्पृष्ट + विवार + श्वास + अघोष + अल्पप्राण।
घ → स्पृष्ट + संवार + नाद + घोष + महाप्राण।
ह → ईषद्विवृत + संवार + नाद + घोष + महाप्राण।
श → ईषद्विवृत + विवार + श्वास+ अघोष + महाप्राण।
य् → ईषत्स्पृष्ट + संवार + नाद + घोष + अल्पप्राण।

उच्चारण स्थान व आभ्यन्तर प्रयत्नों का प्रयोग सवर्ण-संज्ञा के प्रसङ्ग में किया जाता है। बाह्य यत्नों का प्रयोग आन्तरतम्य परीक्षा में किया जाता है। अर्थात् जब किसी प्रसङ्ग में उच्चारण स्थान व आभ्यन्तर प्रयत्नों के माध्यम से सवर्ण वर्ण का निर्धारण नहीं हो पा रहा हो, तो वहाँ बाह्य यत्नों की सहायता लेकर सवर्ण वर्ण का ग्रहण किया जा सकेगा। यह ही **आन्तरतम्य परीक्षा** है।

सवर्ण-संज्ञा

(तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्–सवर्ण सञ्ज्ञा विधायक सूत्र)

- तालु आदि उच्चारण स्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न, ये दोनों जिसके साथ तुल्य हो, वे दोनों आपस में सवर्ण होते है।
- अर्थात् जिन-जिन वर्णों के उच्चारण स्थान एवं आभ्यन्तर यत्न समान होते हैं, वे आपस में सवर्ण होते हैं।
- सूत्र में आस्य पद से तात्पर्य कण्ठ, तालु आदि उच्चारण स्थानों से है, तथा प्रयत्न से तात्पर्य आभ्यन्तर प्रयत्नों (कुल पाँच–स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत व संवृत) से है। इन उच्चारण स्थानों तथा आभ्यन्तर प्रयत्नों में समानता ही सवर्णता होती है।
- लेकिन ''नाज्झलौ'' सूत्र के अनुसार स्वर एवं व्यञ्जनों में, आपस में, सवर्ण संज्ञा नहीं होती, चाहे उनका उच्चारण-स्थान व आभ्यन्तर प्रयत्न समान रहा हो।
- ए और ऐ, तथा ओ और औ में भी आपस में सवर्ण-संज्ञा नहीं होती। अन्यथा माहेश्वर सूत्रों में ''ऐ औ च्'' सूत्र का ग्रहण व्यर्थ हो जाता।
- ऋ और ऌ वर्णों की, आपस में, सवर्ण संज्ञा होती है। इस कार्य को बताने के लिए कात्यायन ने ''**ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्**'' वार्तिक लिखी है।

अ – आ
कण्ठ = कण्ठ
विवृत = विवृत
} अतः आपस में सवर्ण।

इ – ई
तालु = तालु
विवृत = विवृत
} अतः आपस में सवर्ण।

उ – ऊ
ओष्ठ = ओष्ठ
विवृत = विवृत
} अतः आपस में सवर्ण।

ऋ – ॠ
मूर्धा = मूर्धा
विवृत = विवृत
} अतः आपस में सवर्ण।

ऋ – ऌ
मूर्धा ≠ दन्त
विवृत = विवृत
} फिर भी आपस में सवर्ण।

ए – ऐ
कण्ठतालु = कण्ठतालु
विवृत = विवृत
} फिर भी सवर्ण नहीं।

अ – इ
कण्ठ ≠ तालु
विवृत = विवृत
} उच्चारण स्थान अलग-अलग, अतः आपस में सवर्ण नहीं।

Scanned by CamScanner

सवर्ण संज्ञा के बाद वर्णों के भेद

स्वरों का प्रारंभिक विभाजन ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत में किया जाता है। ये तीनों उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के रूप में विभक्त होने पर प्रत्येक के 9 भेद हो जाते है। उदात्त, अनुदात्त व स्वरित, प्रत्येक भी दो प्रकार का होता है–अननुनासिक व अनुनासिक। इस प्रकार कुल 18 भेद होते हैं। इसमें ह्रस्व के 6, दीर्घ के 6 तथा प्लुत के 6 भेद होते हैं।

- **अ, इ, उ**,-तीनों, ह्रस्व, दीर्घ व प्लुत संभव हैं, अतः ये प्रत्येक 18 प्रकार के होते हैं।
- **ऋ** भी 18 प्रकार का होता है।
- **लृ** में दीर्घ का अभाव होने के कारण 12 भेद होते हैं।
- **ऋ** और **लृ** की सवर्ण संज्ञा होने के कारण इन दोनों के 30, 30 भेद (18+12) माने गये है।
- **ए, ओ, ऐ, औ** के प्रत्येक के 12 भेद है। इनमें ह्रस्व का अभाव होता है।
- व्यञ्जनों में **य् व् ल्** – अननुनासिक और अनुनासिक भेद से दो-दो प्रकार के हैं।

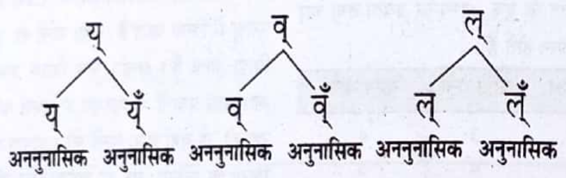

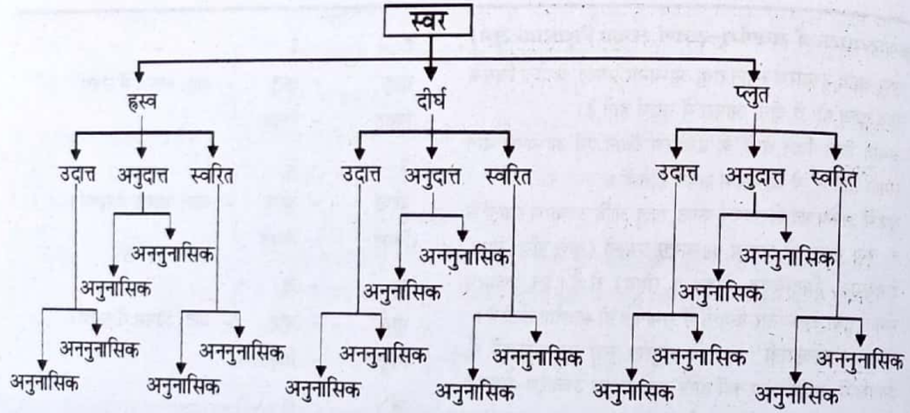

इत्सञ्ज्ञा

पाणिनीय व्याकरण के अनुसार इत्संज्ञा विधायक 6 सूत्र है। ये क्रमशः है–

1. उपदेशेऽजनुनासिक इत्,
2. हलन्त्यम्,
3. आदिर्ञिटुडवः,
4. षः प्रत्ययस्य,
5. चुटू,
6. लशक्वतद्धिते।

1. उपदेशेऽजनुनासिक इत्–

(उपदेशे + अच् + अनुनासिकः + इत्)

- उपदेश अवस्था में विद्यमान अनुनासिक अच् (स्वर) की इत्संज्ञा होती है। उपदेश से यहाँ तात्पर्य पाणिनि, कात्यायन व पतञ्जलि आदि के द्वारा किये गये प्रारम्भिक उच्चारण से है।

(उपदेश आद्योच्चारणम्)। पाणिनि आदि ने जिस-जिस धातु, सूत्र, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि का उच्चारण किया है, वे सब 'उपदेश' कहलाते है। बाद के एक आचार्य ने इसे सरल एवं स्पष्ट करते हुए श्लोकबद्ध किया है–

''धातु-सूत्र-गणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम्।
आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः।।''

- इस उपदेश अवस्था के अनुनासिक स्वर की इत्संज्ञा होती है।
- पाणिनि के समय में संभवतः स्वरों में अनुनासिक व अननुनासिक में लेखन भेद किया जाता था। इसके लिए कोई विशिष्ट चिह्न होता था। लेकिन वर्तमान में इन दोनों के लेखन में कोई भेद नहीं किया जाता है। अतः '**प्रतिज्ञानुनासिक्याः पाणिनीयाः**' के अनुसार यह माना जाता है कि ये-ये स्वर अनुनासिक है। इसी आधार पर उन स्वरों की इत्संज्ञा आदि व्यवहार किया जाता है।

2. हलन्त्यम् –

(हल् + अन्त्यम्)

- उपदेश अवस्था में विद्यमान अन्तिम हल् वर्ण की इत्संज्ञा होती है। अर्थात् धातु, आगम, आदेश, प्रत्यय आदि के अन्त में विद्यमान हल्-वर्ण की इत्संज्ञा होती है। जैसे–
- डुकृञ् 'धातु' के अन्तिम हल्वर्ण 'ञ्' की इत्संज्ञा।
- नुम् 'आगम' में अन्तिम हल्वर्ण म् की इत्संज्ञा।
- शप् 'प्रत्यय' में अन्तिम हल्वर्ण प् की इत्संज्ञा।
- लेकिन विभक्ति में स्थित तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) सकार तथा मकार की इत्संज्ञा नहीं होती है, चाहे वह तवर्ग, सकार और मकार प्रत्यय (उपदेश) के अन्त में हल्-रूप में स्थित हो। **''न विभक्तौ तुस्माः''** सूत्र के अनुसार विभक्ति में स्थित तवर्ग, सकार व मकार इत्संज्ञक नहीं होते। यहाँ विभक्ति से तात्पर्य सुप् तथा तिङ् प्रत्ययों से है। सुप् में सु औ जस् आदि 21 प्रत्ययों तथा तिङ् में तिप् तस् झि आदि 18 प्रत्ययों की गणना की जाती है।

3. आदिर्ञिटुडवः–

- धातु के आदि (प्रारम्भ) में विद्यमान ञि, टु और डु की इत्संज्ञा हो जाती है। जैसे–
- 'ञिभी' धातु के प्रारंभ में स्थित 'ञि' की इत्संज्ञा।
- 'टुनदि' धातु के आदि (प्रारम्भ) में स्थित 'टु' की इत्संज्ञा।
- 'डुकृञ्' धातु के आदि (प्रारम्भ) में स्थित 'डु' की इत्संज्ञा।

4. षः प्रत्ययस्य–

- प्रत्यय के आदि (प्रारम्भ) में स्थित 'ष्' की इत्संज्ञा हो जाती है। जैसे–
- ष्फ और ष्वुन् प्रत्यय के आदि में स्थित ष् की इत्संज्ञा हो जाती है।

5. चुटू–

- प्रत्यय के आदि (प्रारम्भ) में स्थित चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) तथा टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) की इत्संज्ञा हो जाती है। जैसे–
- जस् प्रत्यय में प्रारम्भ में स्थित ज् की इत्संज्ञा हो जाती है।
- टाप् (स्त्री प्रत्यय) प्रत्यय में प्रारम्भ में स्थित ट् की इत्संज्ञा हो जाती है।

6. लशक्वतद्धिते–

- तद्धित प्रत्ययों के अलावा, किसी भी प्रत्यय के प्रारम्भ में स्थित ल्, श् तथा कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) की इत्संज्ञा हो जाती है। जैसे–
- ल्यप् प्रत्यय में प्रारंभ में स्थित 'ल्' की इत्संज्ञा हो जाती है।
- शप् – प्रत्यय में प्रारंभ में स्थित 'श्' की इत्संज्ञा हो जाती है।
- क्त्वा प्रत्यय के प्रारम्भ में स्थित 'क्' की इत्संज्ञा हो जाती है। इन छः सूत्रों के अलावा एक वार्तिक भी इत्संज्ञा का कार्य करती है। वह वार्तिक है-**'इरइत्संज्ञा वक्तव्या'**। अर्थात् धातु के अन्त में विद्यमान 'इर्' की इत्संज्ञा होती है। जैसे–
- च्युतिर् और द्युतिर् धातु में इर् की इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञा करने का फल–

- इत्संज्ञक वर्ण का **''तस्य लोपः''** सूत्र से लोप हो जाता है। वर्णों की इत्संज्ञा करके उनका लोप करना ही प्रयोजन नहीं, बल्कि इसके माध्यम से एक-एक समुदाय की रचना हुई। जैसे- क् की इत्संज्ञा जहाँ-जहाँ हुई, वे सभी कित् हो गये (क् + इत् = कित्)। कित् को मानकर होने वाले सभी कार्य उस कित् समुदाय के लिए एक साथ ही बता दिये जायेंगे। इससे ही व्याकरण बहुत संक्षिप्त हो गया है।
- इसी तरह ङ् की इत्संज्ञा वाले ङित्, प् की इत्संज्ञा वाले पित्, ण् की इत्संज्ञा वाले णित्, ञ् की इत्संज्ञा वाले ञित्, श् की इत्संज्ञा वाले शित् आदि समुदायों का निर्माण किया जा सकता है तथा सम्बन्धित कार्य एक साथ समझे जा सकते हैं।

Scanned by CamScanner

इत्संज्ञा

कहाँ	किसकी इत्संज्ञा	जैसे	सूत्र
1. उपदेश में	अनुनासिक अच् अन्त्य हल्	टुनदि धातु में 'इ' की शप् प्रत्यय में 'प्' की	1. उपदेशेऽजनुनासिक इत् 2. हलन्त्यम्
2. धातु में	आदि (प्रारम्भ) में ञि टु डु	ञिभी धातु में ञि की टुनदि धातु में टु की डुकृञ् धातु में डु की	3. आदिर्ञिटुडवः
3. प्रत्यय में	आदि में ष् आदि में चवर्ग तथा टवर्ग आदि में ल्, श् तथा कवर्ग	ष्फ प्रत्यय में ष् की जश् प्रत्यय में ज् की शस् प्रत्यय में श् की	4. षः प्रत्ययस्य 5. चुटू 6. लशक्वतद्धिते

लोप-संज्ञा – अदर्शनं लोपः

- प्रसक्त का अदर्शन होना लोप कहलाता है। अर्थात् जो वर्ण पहले उपस्थित हो, लेकिन अब दिखाई नहीं दे रहा हो, उसे उस वर्ण का लोप कहा जाता है। जैसे–इत्संज्ञक वर्ण का 'तस्य लोपः' से लोप हो जाता है। अतः इत्संज्ञक वर्ण का अदर्शन हो जाता है। लोप का तात्पर्य वर्ण का नष्ट होना नहीं है।
- इसी कारण लोप होने पर भी इनको मानकर होने वाला कार्य यथावत् हो जाता है।

संहिता-संज्ञा – परः सन्निकर्षः संहिता

- वर्णों की अत्यधिक सन्निधि को संहिता कहा जाता है। अर्थात् वर्णों को यथासंभव व नियमानुसार, समीप लाना ही संहिता है। इसे 'संधि' भी कहा जाता है। यहाँ सन्निकर्ष का तात्पर्य अत्यन्त समीपता से है। यह समीपता ऐसी होती है कि आधी मात्रा के उच्चारण के समय से अधिक का व्यवधान नहीं होता। जब हम वर्णों को निरन्तरता के साथ, बिना व्यवधान के बोलते है, वहीं संहिता है।
- जैसे– 'सुधी + उपास्यः' में ई तथा उ वर्ण संहिता सञ्ज्ञक है। इसी तरह 'मधु + अरिः' में 'उ' और 'अ' वर्ण संहिता संज्ञक है।

यह संहिता-कार्य तीन जगह अनिवार्यतः किया जाता है–

1. **एक पद में**– (एक पद के वर्णों का उच्चारण बिना व्यवधान के होना जरूरी है।)
2. **धातु और उपसर्ग के कार्य में,** (जब धातु से पूर्व उपसर्ग लगा हो, तो उन्हें भी बिना व्यवधान के बोलना होगा, न कि खण्डशः।)
3. **समास में,** (समास किये हुए पद को भी बिना व्यवधान के बोलना होगा, यद्यपि कि उसमें दो या दो से अधिक पद हैं)

- **वाक्य के प्रसङ्ग में,** यदि संहिता कार्य संभव है, तो यह वक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है, कि वह संहिता में पदों का उच्चारण करें या खण्डशः उच्चारण करें। इसे कारिका में कहा गया है–

"संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे, वाक्ये तु, सा विवक्षामपेक्षते॥"

प्रत्याहार-संज्ञा – "आदिरन्त्येन सहेता"

- अंतिम इत्संज्ञक वर्ण के साथ प्रारंभिक (आदि) वर्ण की संज्ञा प्रत्याहार है। इसमें आदि वर्ण तथा इत्संज्ञक वर्ण के बीच में विद्यमान वर्णों का ग्रहण होता है। प्रत्याहार में आदि (प्रारंभिक) वर्ण का भी ग्रहण होता है। लेकिन इत्संज्ञक वर्णों का ग्रहण यहाँ नहीं होता।
- जैसे अच् प्रत्याहार में 'अ इ उ ण्' सूत्र के अ से प्रारंभ करके 'ऐ औ च्' सूत्र के च-पर्यन्त वर्णों का ग्रहण होगा। लेकिन इनके बीच में आये ण्, क्, ङ्, और च्–वर्णों की अच् प्रत्याहार में गणना नहीं होगी। प्रत्याहार 44 है। इनकी विस्तृत चर्चा की जा चुकी है।

संयोग-संज्ञा – हलोऽनन्तराः संयोगः

- यदि दो या दो से अधिक व्यञ्जन वर्णों के बीच किसी भी स्वर का व्यवधान नहीं हो, तो वहाँ संयोग-संज्ञा होती है।
- अर्थात् अच् (स्वर) के व्यवधान से रहित हल् (व्यंजन) वर्णों को संयोग कहा जाता है।
- जैसे–'इन्द्रः' में न्, द् और र् के बीच कोई स्वर नहीं है। अतः यहाँ न् द् र् – ये वर्ण संयोग संज्ञक है। 'विज्ञानम्' पद में ज् और ञ्, 'क्षमा' पद में क् और ष् तथा 'त्राणम्' पद में त् और र् वर्ण संयोग संज्ञक है।

पद संज्ञा-सुप्तिङन्तं पदम्

- सुबन्त और तिङन्त की पद-संज्ञा होती है। अर्थात् किसी भी शब्द को पद बनाने के लिए उसके पीछे सुप् प्रत्यय या तिङ् प्रत्यय का होना अत्यावश्यक है। प्रायः शब्दों से सुप् प्रत्यय तथा धातुओं से तिङ् प्रत्यय संयोजित करके पद बनाया जाता है।
- किसी भी शब्दरूप या धातुरूप को ही पद कहा जाता है।
- शब्दों से विभक्ति एवं वचन के अनुसार सु, औ, जस् आदि प्रत्यय लगाकर, विभक्ति कार्य करके पद बनाया जाता है। ये सु, औ, जस् आदि 21 प्रत्यय है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (उ)	औ	जस् (ज्)
द्वितीया	अम्	औट् (ट्)	शस् (श्)
तृतीया	टा (ट्)	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे (ङ्)	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि (ङ्, इ)	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस् (ङ्)	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि (ङ्)	ओस्	सुप् (प्)

कोष्ठक में इत्संज्ञक वर्णों को दर्शाया गया है। अर्थात् कोष्ठक में विद्यमान वर्णों की इत्संज्ञा होकर, उनका लोप हो जाता है।

- धातुओं से पुरुष व वचन तथा परस्मैपद व आत्मनेपद के अनुसार तिप् तस् झि आदि 18 प्रत्यय होते हैं।

परस्मैपद (9 प्रत्यय)

पुरुष/वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप् (प्)	तस्	झि (झ्)
मध्यम पुरुष	सिप् (प्)	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप् (प्)	वस्	मस्

आत्मनेपद (9 प्रत्यय)

पुरुष/वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ (झ्)
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट् (ट्)	वहि	महिङ् (ङ्)

कोष्ठक में इत्संज्ञक वर्णों को दर्शाया गया है। अर्थात् कोष्ठक में विद्यमान वर्णों की इत्संज्ञा होकर, उनका लोप हो जाता है।

अपदं न प्रयुञ्जीत

संस्कृत में किसी भी शब्द को पद बनाये बिना प्रयोग में नहीं लाया जाना चाहिए। चाहे कोई भी शब्द हो, उसको पद बनाने के बाद ही प्रयोग में लाया जाना चाहिए। यदि इस कार्य को ध्यान में रखकर, संस्कृत निर्माण किया जाये, तो अशुद्धियाँ अवश्य कम हो जायेगी।

- अव्यय या निपातों से विभक्ति कार्य अर्थात् सु, औ, जस् आदि नहीं होते है, यह मानकर चलना गलत है। चाहे सुबादि का लोप हो जाये, लेकिन उनको पद तब ही माना जा सकता है, जबकि उनका सुबादि कार्य सम्पादित किया जावें।

Scanned by CamScanner

अन्य महत्त्वपूर्ण संज्ञाएँ

संज्ञा	सूत्र	सामान्य अर्थ	प्रसंग जिनमें यह संज्ञा काम आयेगी
1. वृद्धि	वृद्धिरादैच्	आ, ऐ, औ को वृद्धि कहा जाता है।	'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि करते समय।
2. गुण	अदेङ्गुण:	अ, ए, ओ को गुण कहा जाता है।	'आद्गुण:'' सूत्र में गुणकार्य करते समय
3. धातु	भूवादयो धातव:	क्रियावाची भू आदि को धातु कहा जाता है।	कृत्-प्रत्यय करते समय।
4. निपात	चादयोऽसत्त्वे	द्रव्य से भिन्न अर्थ वाले च, वा, ह आदि निपात होते हैं।	अव्यय प्रकरण में।
	प्रादय:	द्रव्य से भिन्न अर्थ वाले प्र, परा आदि को भी निपात कहा जाता है।	अव्यय प्रकरण में।
5. उपसर्ग	उपसर्गा: क्रियायोगे, गतिश्च	प्र, परा आदि के साथ क्रिया (धातु) के रहने पर इन्हें उपसर्ग कहा जाता है। इन्हें गति भी कहा जाता है।	उपसर्ग प्रकरण में।
6. विभाषा	न वेति विभाषा	निषेध व विकल्प कार्य को विभाषा कहा जाता है।	'सर्वत्र विभाषा गो:'
7. अवसान	विरामोऽवसानम्	वर्णों का अभाव अवसान कहलाता है।	'वाऽवसाने सूत्र प्रसङ्ग' में।
8. लघु	'ह्रस्वं लघु'	ह्रस्व स्वर को लघु कहा जाता है।	छन्दों में गणव्यवस्था में।
9. गुरु	संयोगे गुरु	ह्रस्व स्वर के आगे संयोग रहने पर वह गुरु हो जाता है।	छन्दों में गणव्यवस्था में।
	दीर्घं च	दीर्घ स्वर को भी गुरु कहा जाता है।	छन्दों में गणव्यवस्था में।
10. टि	अचोऽन्त्यादि टि	अंतिम अच् या उसके बाद स्थित व्यञ्जन (अच्+व्यञ्जन) टि होता है।	शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् के प्रसङ्ग में
11. उपधा	अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा	अन्तिम वर्ण से पूर्व के वर्ण को उपधा कहते हैं। (Second last alphabet)	उपधा वृद्धि के प्रसङ्ग में।

संस्कृत केवल पण्डितों की भाषा नहीं है।

- संतोष बनाम मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वाद में, उच्चतम न्यायालय ने कहा कि संस्कृत एक धर्मनिरपेक्ष भाषा है। यह सभी भारतीयों की संस्कृति व सभ्यता का प्रतिमान है।
- बौद्ध और जैन दर्शन पर संस्कृत का प्रचुर प्रभाव है।
- गुरुगोविन्द सिंह ने अपने शिष्यों को संस्कृत अध्ययन हेतु काशी भेजा था।
- औरंगजेब के भाई दाराशिकोह ने उपनिषदों का उर्दु में अनुवाद करवाया था।
- रहीम संस्कृत के ज्ञाता थे।
- योग से योगा (Yoga) के रूप में, संस्कृत पूरे विश्व में फैल चुकी है।
- पॉपसिंगर मेडोना ने शांति (अष्टांगी) तथा साइबर रांगा नामक दो एलबम संस्कृत में रिकोर्ड किये है। मेडोना ने ''निनादय नवीनामये वाणीवीणाम्'' को भी गाया है। इसे जानकीवल्लभ शास्त्री ने लिखा है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(व्याकरण-प्रकरण)

1. वेदों का मुख कहलाता है–
(अ) छन्द: (ब) निरुक्त
(स) व्याकरण (द) ज्योतिष ( )

2. अष्टाध्यायी में कितने अध्याय हैं?
(अ) 5 (ब) 6
(स) 7 (द) 8 ( )

3. प्रथम वैयाकरण माना जाता है–
(अ) इन्द्र (ब) यम
(स) रुद्र (द) वायु ( )

4. व्याकरण के त्रिमुनि में नहीं है–
(अ) कैयट (ब) पाणिनि
(स) वररुचि (द) पतञ्जलि ( )

5. वार्तिकों के रचयिता कौन है?
(अ) पाणिनि (ब) भट्टोजिदीक्षित
(स) पतञ्जलि (द) कात्यायन ( )

6. पतञ्जलि की कृति का नाम है–
(अ) महाभाष्य (ब) अष्टाध्यायी
(स) वार्तिक (द) प्रौढमनोरमा ( )

7. व्याकरण की मुख्य परम्पराएँ कितनी प्रकार की हैं?
(अ) एक (ब) दो
(स) तीन (द) चार ( )

8. व्याकरण की बार्हस्पती परम्परा का दूसरा नाम है–
(अ) पाणिनीय परम्परा (ब) प्रक्रिया परम्परा
(स) सिद्धान्त परम्परा (द) कातन्त्र ( )

9. व्याकरण की बार्हस्पती परम्परा के अनुसार बृहस्पति ने किसे शब्दों का ज्ञान दिया?
(अ) पाणिनि को (ब) शिव को
(स) इन्द्र को (द) वरुण को ( )

10. वार्तिकों की कुल संख्या कितनी है?
(अ) 863 (ब) 836
(स) 953 (द) 683 ( )

11. व्याकरण की माहेश्वरी परम्परा में व्याकरण के जनक है–
(अ) ब्रह्मा (ब) विष्णु
(स) शिव (द) कृष्ण ( )

12. महाभाष्य में कितने आह्निक है–
(अ) 81 (ब) 82
(स) 83 (द) 84/85 ( )

13. पाणिनि की माता का नाम था–
(अ) दाक्षी (ब) सुवर्णाक्षी
(स) दासी (द) सुपर्णा ( )

14. 'यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्' के अनुसार सर्वाधिक सम्मत मत है–
(अ) पाणिनि का (ब) कात्यायन का
(स) पतञ्जलि का (द) तीनों का ( )

15. माहेश्वर सूत्रों की संख्या है–
(अ) 5 (ब) 3978
(स) 14 (द) 42 ( )

16. महाभाष्य कितने दिनों में लिखा गया था?
(अ) 40 (ब) 44
(स) 80 (द) 84/ 85 ( )

17. माहेश्वर सूत्रों में किस वर्ण का दो बार उपदेश हुआ है?
(अ) ह (ब) य
(स) र (द) ल ( )

18. अष्टाध्यायी का दूसरा नाम है–
(अ) शब्दवैयाकरण (ब) प्रक्रियासर्वस्व
(स) शब्दानुशासनम् (द) व्याकरणम् ( )

19. स्वरों के लिए प्रत्याहार है–
(अ) अच् (ब) हल्
(स) अल् (द) वल् ( )

20. वरदराज की रचना है–
(अ) लघुसिद्धान्तकौमुदी (ब) मध्यसिद्धान्तकौमुदी
(स) बालमनोरमा (द) (अ) व (ब) दोनों ( )

Scanned by CamScanner

21. पाणिनि ने किस भगवान् की आराधना करके व्याकरण का ज्ञान प्राप्त किया था–
(अ) ब्रह्मा (ब) विष्णु
(स) महेश (द) इन्द्र ( )

22. ऊष्म वर्णों के लिए प्रत्याहार है–
(अ) अच् (ब) शल्
(स) झल् (द) हल् ( )

23. अष्टाध्यायी में कुल कितने अध्याय है?
(अ) 4 (ब) 8
(स) 12 (द) 32 ( )

24. अन्तःस्थों के लिए प्रत्याहार है–
(अ) शल् (ब) यण्
(स) अच् (द) वल् ( )

25. सपादसप्ताध्यायी में कितने पाद हैं–
(अ) 7 (ब) 7.25
(स) 32 (द) 29 ( )

26. अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र है–
(अ) अ अ (ब) अदेङ्गुण:
(स) वृद्धिरादैच् (द) हलन्त्यम् ( )

27. माहेश्वर सूत्रों में अन्तिम वर्ण की सञ्ज्ञा होती है?
(अ) इत् (ब) वृद्धि
(स) प्रत्याहार (द) पद ( )

28. चखञतु: में द्वितीय खकार है–
(अ) यम (ब) अनुनासिक
(स) उपध्मानीय (द) जिह्वामूलीय ( )

29. प से पहले का अर्धविसर्ग कहलाता है–
(अ) जिह्वामूलीय (ब) उपध्मानीय
(स) यम (द) अनुस्वार ( )

30. उदित् वर्णों की संख्या कितनी है?
(अ) 9 (ब) 42
(स) 32 (द) 25 ( )

31. माहेश्वर सूत्रों में स्वर सम्बन्धी सूत्रों की संख्या है–
(अ) 10 (ब) 4
(स) 5 (द) 9 ( )

32. संस्कृत वर्णमाला में स्वरों की संख्या है–
(अ) 9 (ब) 12
(स) 14 (द) 16 ( )

33. संस्कृत वर्णमाला में व्यञ्जनों की संख्या है–
(अ) 9 (ब) 33
(स) 42 (द) 25 ( )

34. संस्कृत वर्णमाला में कितने वर्ण हैं?
(अ) 9 (ब) 33
(स) 42 (द) 60 ( )

35. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार संस्कृत में कितने वर्ण है?
(अ) 40 (ब) 42
(स) 63/64 (द) 44 ( )

36. ऊष्म वर्णों में नहीं है–
(अ) श (ब) स
(स) ष (द) र ( )

37. अन्तःस्थ वर्ण नहीं है–
(अ) ह (ब) य
(स) व (द) र ( )

38. स्पर्श वर्णों की संख्या है–
(अ) 4 (ब) 9
(स) 25 (द) 21 ( )

39. 'ज्ञ्' वर्ण में संयोजन हुआ है–
(अ) ग् + य् (ब) ज् + य्
(स) ज् + न् (द) ज् + ञ् ( )

40. किस माहेश्वर सूत्र में अकार की भी इत्संज्ञा हुई है?
(अ) अइउण् (ब) लण्
(स) हल् (द) हयवरट् ( )

41. '⨯ क'–क से पूर्व विद्यमान चिह्न है–
(अ) विसर्ग (ब) अनुस्वार
(स) उपध्मानीय (द) जिह्वामूलीय ( )

42. प्रत्याहारों की संख्या है–
(अ) 40 (ब) 41
(स) 44 (द) 38 ( )

43. कौनसे प्रत्याहार का दो बार पाठ किया गया है–
(अ) अण् (ब) अक्
(स) इण् (द) अच् ( )

44. सर्वाधिक प्रत्याहार किस इत्संज्ञक वर्ण से बने है–
(अ) ह् (ब) श्
(स) ल् (द) श् व ल् दोनों से ( )

45. 'अण्' प्रत्याहार में पर 'ण्' का ग्रहण कब होता है?
(अ) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्यय: में
(ब) ढ्रलोपे पूर्वस्व दीर्घोऽण: में
(स) केऽण: में
(द) तीनों सूत्रों में ( )

46. प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) हलन्त्यम् (ब) आदेश उपदेशेऽशिति
(स) वृद्धिरैचि (द) आदिरन्त्येन सहेता ( )

47. इण् प्रत्याहार में णकार ग्रहण होगा–
(अ) अइउण् से (ब) लण् से
(स) ञमङणनम् से (द) हल् से ( )

48. 'छ' का उच्चारण स्थान होगा–
(अ) कण्ठ (ब) तालु
(स) कण्ठतालु (द) कण्ठोष्ठ ( )

49. वकार का उच्चारण स्थान है–
(अ) कण्ठोष्ठ (ब) दन्तोष्ठ
(स) ओष्ठ (द) कण्ठतालु ( )

50. णकार का उच्चारण स्थान है–
(अ) नासिका (ब) मूर्धा
(स) मूर्धा व नासिका (द) कण्ठतालु ( )

51. उच्चारण स्थान कितने हैं?
(अ) 4 (ब) 5
(स) 6 (द) 7 ( )

52. पाणिनीय शिक्षा में कितने उच्चारण स्थान माने हैं?
(अ) 5 (ब) 8
(स) 7 (द) 63/64 ( )

53. अधोलिखित में से उच्चारण स्थान नहीं है–
(अ) कण्ठ (ब) दन्त
(स) ग्रीवा (द) मूर्धा ( )

54. कितने वर्ण दो उच्चारण स्थानों की सहायता से बोले जाते हैं?
(अ) 6 (ब) 32
(स) 38 (द) 10 ( )

55. आभ्यन्तर प्रयत्नों की संख्या है– (लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार)
(अ) 2 (ब) 5
(स) 6 (द) 8 ( )

56. किसी भी वर्ण के कितने आभ्यन्तर प्रयत्न संभव है–
(अ) 1 (ब) 3
(स) 5
(द) निश्चय नहीं किया जा सकता ( )

57. यत्न कितने प्रकार का है?
(अ) 2 (ब) 3
(स) 4 (द) 5 ( )

58. आकार का आभ्यन्तर प्रयत्न होगा–
(अ) स्पष्ट (ब) विवृत्त
(स) संवृत्त (द) विवृत्त, संवृत्त ( )

59. बाह्य यत्नों की संख्या है–
(अ) 4 (ब) 5
(स) 11 (द) 13 ( )

60. अन्तःस्थ वर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न है–
(अ) स्पृष्ट (ब) ईषत्स्पृष्ट
(स) विवृत्त (द) संवृत्त ( )

61. इकार का आभ्यन्तर प्रयत्न होगा–
(अ) स्पृष्ट (ब) विवृत्त
(स) संवृत्त (द) ईषत्स्पृष्ट ( )

62. प्रक्रियादशा में अ का आभ्यन्तर प्रयत्न है–
(अ) स्पृष्ट (ब) विवृत्त
(स) संवृत्त (द) विवृत्त, संवृत्त दोनों ( )

63. ऊष्म वर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न है–
(अ) स्पृष्ट (ब) ईषत्स्पृष्ट
(स) ईषद्विवृत्त (द) संवृत्त ( )

64. व्यञ्जनों से सम्बन्धित बाह्य प्रयत्न कितने है?
(अ) 4 (ब) 10
(स) 8 (द) 3 ( )

65. निम्नलिखित में से किसका कोई चिह्न नहीं होता?
(अ) उदात्त (ब) अनुदात्त
(स) स्वरित (द) कोई नहीं ( )

66. प्रत्येक व्यञ्जन के कितने बाह्य यत्न होते हैं–
(अ) एक (ब) तीन
(स) चार (द) दो ( )

Scanned by CamScanner

67. उदात्त और अनुदात्त का समाहार कहलाता है–
(अ) संवार (ब) अनुनासिक
(स) स्वर (द) स्वरित ( )

68. विवार, श्वास, अघोष व महाप्राण है–
(अ) ख (ब) घ
(स) ढ (द) भ ( )

69. वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण कहलाते हैं–
(अ) विवार (ब) संवार
(स) अल्पप्राण (द) महाप्राण ( )

70. वर्णों के उच्चारण के बाद के आन्तरिक प्रयास को कहा जाता है–
(अ) उच्चारणस्थान (ब) आभ्यन्तर यत्न
(स) बाह्य यत्न (द) उपधा ( )

71. हकार के यत्न है–
(अ) विवृत्त संवार नाद घोष
(ब) विवृत्त संवार नाद अघोष
(स) संवार नाद घोष अल्पप्राण
(द) संवृत्त संवार नाद घोष ( )

72. आन्तरतम्य परीक्षा में प्रयुक्त होते हैं–
(अ) उच्चारण स्थान (ब) आभ्यन्तर प्रयत्न
(स) बाह्य प्रयत्न (द) सभी ( )

73. अष्टाध्यायी में इत्संज्ञा विधायक सूत्रों की संख्या बताओ।
(अ) 4 (ब) 5
(स) 3 (द) 6 ( )

74. धातुसूत्रगणोणादि की क्या संज्ञा होती है?
(अ) आदेश (ब) प्रत्याहार
(स) उपदेश (द) अनुनासिक ( )

75. 'टुनदि' धातु में 'टु' की इत्संज्ञा हुई है–
(अ) हलन्त्यम् से (ब) आदिर्ञिटुडव: से
(स) ष:प्रत्ययस्य से (द) लशक्वतद्धिते से ( )

76. 'शप्' में इत्संज्ञा करने के बाद क्या शेष रहता है?
(अ) श (ब) अप्
(स) अ (द) प् ( )

77. अधोलिखित में से 'वृद्धि' नहीं है–
(अ) आ (ब) ए
(स) ऐ (द) औ ( )

78. अधोलिखित में 'गुण' है–
(अ) अ (ब) इ
(स) उ (द) ऋ ( )

79. व्यंजन वर्णों के लिए प्रत्याहार है–
(अ) अच् (ब) हल्
(स) अल् (द) झल् ( )

80. स्पर्श वर्णों के लिए प्रत्याहार है–
(अ) अल् (ब) ञम्
(स) ञय् (द) झल् ( )

81. सुप्तिङन्तं ...... रिक्त स्थान में होगा–
(अ) उपसर्ग: (ब) पदम्
(स) अव्ययम् (द) इत् ( )

82. संहिता नित्य नहीं होती–
(अ) एक पद में (ब) धातु–उपसर्ग के कार्य में
(स) समास में (द) लौकिक वाक्य में ( )

83. 'इन्द्र:' उदाहरण है–
(अ) संयोग का (ब) अवसान का
(स) वृद्धि का (द) सवर्ण संज्ञा का ( )

84. अकार के कुल कितने भेद हैं?
(अ) 12 (ब) 18
(स) 24 (द) 30 ( )

85. 18 भेद किसके नहीं है–
(अ) अ (ब) इ
(स) उ (द) ए ( )

86. 'ए' का नहीं होता–
(अ) ह्रस्व (ब) दीर्घ
(स) प्लुत (द) कोई नहीं ( )

87. ऋ और लृ की सवर्ण संज्ञा होने पर कुल कितने भेद हो जाते हैं?
(अ) 12 (ब) 18
(स) 30 (द) 24 ( )

88. सवर्ण होने के लिए समान होना जरूरी है–
(अ) उच्चारण स्थान (ब) बाह्य प्रयत्न
(स) आभ्यन्तर प्रयत्न (द) (अ) व (स) ( )

89. आड़ी रेखा किस स्वर के नीचे लगाई जाती है?
(अ) उदात्त (ब) अनुदात्त
(स) स्वरित (द) तीनों में ( )

90. 'सुप्' प्रत्यय कितने है?
(अ) 18 (ब) 9
(स) 27 (द) 21 ( )

91. 'पद' होने के लिए आवश्यक है–
(अ) सुबन्त (ब) तिङन्त
(स) दोनों (द) दोनों में कोई एक ( )

92. वर्णों का अभाव कहलाता है–
(अ) निपात (ब) संयोग
(स) विभाषा (द) अवसान ( )

93. अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की सञ्ज्ञा होती है–
(अ) टि (ब) उपधा
(स) घु (द) घि ( )

94. ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त की संज्ञा होती है'–
(अ) टि (ब) घि
(स) घु (द) भ ( )

95. दा और धा (दाप् को छोड़कर) धातु की सञ्ज्ञा होती है–
(अ) घु (ब) घि
(स) भ (द) टि ( )

96. वेदाङ्गों में प्रधान अङ्ग है–
(अ) निरुक्त (ब) छन्द
(स) ज्योतिष (द) व्याकरण ( )

97. अष्टाध्यायी का अंतिम सूत्र है–
(अ) अदेङ्गुण: (ब) वृद्धिरादैच्
(स) अ अ (द) हलन्त्यम् ( )

98. अष्टाध्यायी में असिद्ध पादों की संख्या है–
(अ) 32 (ब) 29
(स) 3 (द) 7.25 ( )

99. माहेश्वर सूत्रों को कहा जाता है–
(अ) अक्षरसमाम्नाय (ब) प्रत्याहार सूत्र
(स) वर्णमाला सूत्र (द) उक्त सभी ( )

100. क्षवर्ण में संयोजन है–
(अ) क् + स् का (ब) क् + श् का
(स) ख् + ष् का (द) क् + ष् का ( )

101. लोप सञ्ज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) तस्य लोप: (ब) प्रसक्तं लोप:
(स) लोप: शाकल्यस्य (द) अदर्शनं लोप: ( )

102. पतञ्जलि का काल है–
(अ) 350 ई. पूर्व (ब) 600 ई. पूर्व
(स) 500 ई. पूर्व (द) 200 ई. पूर्व ( )

103. पाणिनि का समय माना गया है–
(अ) 350 ई. पूर्व (ब) 150 ई. पूर्व
(स) 500 ईस्वी (द) 500 ई. पूर्व ( )

104. 'डुकृञ्' धातु में इत्संज्ञक नहीं है–
(अ) डु (ब) कृ
(स) ञ् (द) तीनों ( )

105. स्वादि प्रत्यय है–
(अ) 17 (ब) 18
(स) 21 (द) 24 ( )

106. झ का बाह्य यत्न नहीं है–
(अ) महाप्राण (ब) संवार
(स) नाद (द) अघोष ( )

107. ण का बाह्य यत्न है–
(अ) महाप्राण (ब) अघोष
(स) विवार (द) संवार ( )

108. विसर्ग का बाह्य यत्न नहीं है–
(अ) अघोष (ब) संवार
(स) विवार (द) श्वास ( )

109. उपदेश में हैं–
(अ) धातु (ब) प्रत्यय
(स) आगम (द) तीनों ( )

110. अयोगवाह नहीं है–
(अ) विसर्ग (ब) अनुस्वार
(स) स्पर्श (द) यम ( )

111. वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) वृद्धिरेचि (ब) अत उपधाया:
(स) वृद्धिरादैच् (द) अचो ञ्णिति ( )

112. यम वर्णों की संख्या है–
(अ) 3 (ब) 4
(स) 5 (द) 6 ( )

113. पाणिनी की रचना है–
(अ) कार्तिक (ब) अष्टाध्यायी
(स) महाभाष्य (द) बालमनोरमा ( )

114. 'लृ' का नहीं होता–
(अ) ह्रस्व (ब) दीर्घ
(स) प्लुत (द) कोई नहीं ( )

115. 'क्' का उच्चारण स्थान है–
(अ) तालु (ब) दन्त
(स) कण्ठ (द) ओष्ठ ( )

116. 'ए' का उच्चारण स्थान हैं।
(अ) कण्ठतालु (ब) कण्ठोष्ठ
(स) दन्तोष्ठ (द) नासिका ( )

Scanned by CamScanner

117. बाह्य यत्न नहीं है–
(अ) अघोष (ब) अल्पप्राण
(स) संवृत (द) विवार ( )

118. विवार, श्वास, अघोष व महाप्राण हैं–
(अ) ग (ब) ज
(स) स (द) य ( )

119. संवार, नाद, घोष व अल्पप्राण है–
(अ) व (ब) थ
(स) ज (द) फ ( )

120. त्रवर्ण में संयोजन हैं–
(अ) क् + ष् का (ब) त् + र् का
(स) द् + य् का (द) स् + र् का ( )

121. 12 भेद किसके नहीं हैं–
(अ) ए (ब) इ
(स) ओ (द) लृ ( )

122. सवर्णता के बाद ऋकार के कितने भेद है–
(अ) 18 (ब) 12
(स) 24 (द) 30 ( )

123. 'ल्यप्' प्रत्यय में 'ल्' की इत्संज्ञा हुई–
(अ) हलन्त्यम् (ब) चुटू
(स) षः प्रत्ययस्य (द) लशक्वतद्धिते ( )

124. संयोग संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) तस्य लोपः (ब) सुप्तिङन्तं पदम्
(स) हलन्त्यम् (द) हलोऽनन्तराः संयोगः ( )

125. 'तिङ्' प्रत्यय कितने है।
(अ) 27 (ब) 18
(स) 9 (द) 21 ( )

126. गुण संज्ञा विधायक सूत्र है–
(अ) अदेङ्गुणः (ब) अचोऽन्त्यादि टि
(स) अत उपधायाः (द) आद्गुणः ( )

127. पतञ्जलि की रचना है–
(अ) अष्टाध्यायी (ब) हितोपदेश
(स) वार्तिक (द) महाभाष्य ( )

128. 'ल' का उच्चारण स्थान है–
(अ) तालु (ब) दन्त
(स) कण्ठ (द) औष्ठ ( )

129. मकार का उच्चारण स्थान है–
(अ) कण्ठतालु (ब) दन्त
(स) ओष्ठ व नासिका (द) मूर्धा ( )

130. ऊष्म वर्णों का आभ्यन्तर प्रयत्न है–
(अ) संवृत (ब) स्पृष्ट
(स) ईषद्विवृत (द) विवृत ( )

131. बाह्य यत्न नहीं है–
(अ) अघोष (ब) महाप्राण
(स) स्वरित (द) संवृत ( )

132. 'आ' का बाह्य यत्न नहीं हैं–
(अ) स्वरित (ब) विवृत
(स) उदात्त (द) अनुदात्त ( )

133. अन्तःस्थ वर्णों की संख्या है–
(अ) 3 (ब) 4
(स) 1 (द) 2 ( )

134. पाणिनीय शिक्षा के अनुसार उच्चारण स्थानों की संख्या कितनी है–
(अ) 8 (ब) 6
(स) 7 (द) 5 ( )

उत्तर तालिका

(1) स	(2) द	(3) अ	(4) अ	(5) द	(6) अ	(7) ब	(8) द	(9) स	(10) ब
(11) स	(12) द	(13) अ	(14) स	(15) स	(16) द	(17) अ	(18) स	(19) अ	(20) द
(21) स	(22) ब	(23) ब	(24) ब	(25) द	(26) स	(27) अ	(28) अ	(29) ब	(30) द
(31) ब	(32) अ	(33) ब	(34) स	(35) स	(36) द	(37) अ	(38) स	(39) द	(40) ब
(41) द	(42) स	(43) अ	(44) द	(45) अ	(46) द	(47) ब	(48) ब	(49) ब	(50) स
(51) द	(52) ब	(53) स	(54) द	(55) ब	(56) अ	(57) अ	(58) ब	(59) स	(60) ब
(61) ब	(62) ब	(63) स	(64) स	(65) अ	(66) स	(67) द	(68) अ	(69) स	(70) स
(71) अ	(72) स	(73) द	(74) स	(75) ब	(76) स	(77) ब	(78) अ	(79) ब	(80) स
(81) ब	(82) द	(83) अ	(84) ब	(85) द	(86) अ	(87) स	(88) द	(89) ब	(90) द
(91) द	(92) द	(93) ब	(94) ब	(95) अ	(96) द	(97) स	(98) स	(99) द	(100) द
(101) द	(102) द	(103) द	(104) ब	(105) स	(106) द	(107) द	(108) ब	(109) द	(110) स
(111) स	(112) ब	(113) ब	(114) ब	(115) स	(116) अ	(117) स	(118) स	(119) स	(120) ब
(121) ब	(122) अ	(123) द	(124) द	(125) ब	(126) अ	(127) द	(128) ब	(129) स	(130) स
(131) द	(132) ब	(133) ब	(134) अ						

अध्याय 2

सन्धि

सन्धि

- **परः सन्निकर्षः संहिता।**
- **वर्णानां मेलनं सन्धिः।**
- **लोपागमादेशवर्णविकाराः वा सन्धिः।**

दो वर्णों में अतिशय सन्निधि या अत्यधिक समीपता को संधि कहा जाता है। संधि को संहिता भी कहा जाता है। दो वर्णों का उच्चारण बिना किसी व्यवधान के, निरन्तरता से करना ही सन्धि है। इन दोनों वर्णों के मिलन में कोई आगम या आदेश या विकार होता है या किसी वर्ण का लोप हो जाता है।

यह सन्धि कार्य अधोलिखित तीन प्रसंगों में अनिवार्यतः होता है–

(1) **एकपद में–** एक पद में यदि संधि कार्य प्राप्त हो रहा है, तो सन्धि अवश्य करनी होगी। जैसे- 'जयः' एक पूर्ण पद को एक साथ ही बोलना होगा, न कि 'जे + अः' इस रूप में अलग-अलग। एक ही पद में संधि कार्य अनिवार्य होता है।

(2) **धातु-उपसर्ग के कार्य में–** जब धातु से पूर्व उपसर्ग हो और संधिकार्य प्राप्त हो रहा हो, तो संधि कार्य अवश्य रूप में होगा। जैसे 'अधि + इते' – यहाँ अधि उपसर्ग पूर्वक इङ् धातु है। इन्हें एक साथ ही बोला जायेगा न कि अलग-अलग। यहाँ 'अधीते' यह सन्धियुक्त रूप होगा।

अतः उपसर्ग व धातु कार्य में भी सन्धि अनिवार्य रूप में होगी।

(3) **समास में–** समास किया हुआ पद समस्त पद कहलाता है। समस्त पद में यदि संधि कार्य संभव है तो वहाँ भी अनिवार्यतः होगा। जैसे 'नीलम् उत्पलम्' विग्रह में समस्त पद (नील+उत्पल) नीलोत्पलम् होता है। यहाँ गुणकार्य अनिवार्यतः होगा।

पुनश्च, **वाक्य में** संधिकार्य प्राप्त होने पर, यह वक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह संधि कार्य करे या न करे। यहाँ यह नियम वैकल्पिक हो जाता है। जैसे-'सा इह आगच्छति' वाक्य में दो सन्धि कार्य प्राप्त है। यदि वक्ता चाहे तो इन्हें खण्डशः यथारूप सा, इह, आगच्छति भी बोल सकता है। यदि वह सन्धिकार्य करना चाहे तो सा+इह = सेह, सेह+ आगच्छति = सेहागच्छति भी बोल सकता है। श्लोक के वाक्य में प्राप्त सन्धि कार्य नित्य रूप से होगा।

कहा भी गया है–

''संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।''

सन्धि-भेद

व्याकरण शास्त्र की प्रक्रिया-परम्परा में संधि पाँच प्रकार की मानी गई है। अनेक प्रसंगों में **'पञ्चसन्धिप्रकरणम्'** का वर्णन किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सन्धि के पाँच भेद हैं। भट्टोजिदीक्षित ने **'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी'** में सन्धियों के अनुसार पाँच प्रकरण बना कर, संधियों के पाँच भेद बताये हैं–

1. अच् सन्धि (स्वर सन्धि),
2. प्रकृतिभाव सन्धि,
3. हल्-संधि (व्यञ्जन सन्धि),
4. विसर्ग सन्धि तथा
5. स्वादि सन्धि।

परवर्ती व्याकरण परम्परा में, प्रकृतिभाव सन्धि को अच्-सन्धि में तथा स्वादि सन्धि को विसर्ग सन्धि में ही समाहित मानकर सन्धि के तीन भेद माने गये है। वरदराज आचार्य ने लघुसिद्धान्तकौमुदी में तीन प्रकरणों में विभाजन करके, संधि के तीन भेद माने है। ये भेद हैं-

1. अच्सन्धि (स्वर सन्धि)
2. हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) तथा
3. विसर्ग सन्धि।

1. स्वर सन्धि प्रकरण (अच्-सन्धि)

सामान्यतः दो स्वरों में सन्धि कार्य होने पर स्वर सन्धि (अच्सन्धि) होती है। दो स्वरों का मिलन स्वरसन्धि है। स्वर सन्धि के निम्नलिखित कई भेद हैं-

1. सवर्णदीर्घ-सन्धि,
2. गुण-सन्धि,
3. वृद्धि-सन्धि,
4. यण्-सन्धि,
5. पूर्वरूप-सन्धि,
6. अयादि-सन्धि तथा
7. पररूप-सन्धि।

1. सवर्णदीर्घ सन्धि

- अक् (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के आगे, सवर्ण स्वर के रहने पर दीर्घ एकादेश होता है। (**अकः सवर्णे दीर्घः**) एकादेश से यहाँ तात्पर्य दो स्वरों के स्थान पर एक ही स्वर के आदेश होने से है।

अ/आ + अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ
लृ + लृ = लृ (लृ का दीर्घरूप नहीं होता)

अ/आ + अ/आ = आ

दैत्य + अरिः = दैत्यारिः
मुर + अरिः = मुरारिः
वेद + अभ्यासः = वेदाभ्यासः
न + अस्ति = नास्ति
अत्र + अयम् = अत्रायम्
तुल्य + आस्यम् = तुल्यास्यम्
मम + अपि = ममापि
देव + आलयः = देवालयः
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
सदा + अत्र = सदात्र
कदा + अत्र = कदात्र
महा + आत्मा = महात्मा

इ/ई + इ/ई = ई

अत्ति + इदम् = अत्तीदम्
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः
दधि + इन्द्रः = दधीन्द्रः
फलानि + इमानि = फलानीमानि
यदि + इच्छा = यदीच्छा
भूमि + ईशः = भूमीशः
हरि + ईशः = हरीशः
श्री + ईशः = श्रीशः
सम्पत्ति + ईर्ष्या = सम्पत्तीर्ष्या
महती + ईहा = महतीहा
मेदिनी + ईश्वरः = मेदिनीश्वरः
कुमारी + ईहते = कुमारीहते

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

विष्णु + उदयः = विष्णूदयः
भानु + उदयः = भानूदयः
लघु + उत्तरम् = लघूत्तरम्
विधु + उदयः = विधूदयः
सु + उक्तिः = सूक्तिः
वधू + उत्साहः = वधूत्साहः
चमू + उत्थानम् = चमूत्थानम्
यवागू + ऊष्मा = यवागूष्मा
वधू + ऊहा = वधूहा
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

होतृ + ऋकारः = होतॄकारः
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्
मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
कर्तृ + ऋणम् = कर्तॄणम्
होतृ + ऋषिः = होतॄषिः
तृ + ऋकारः = तॄकारः
भर्तृ + ऋद्धिः = भर्तॄद्धिः
धातृ + ऋकारः = धातॄकारः

लृ + लृ = लृ

गम्लृ + लृकारः = गम्लृकारः
लृ + लृकारः = लृकारः
विष्लृ + लृकारः = विष्लृकारः
लृ + लृवर्णः = लृवर्णः
पद्लृ + लृकारः = पद्लृकारः
मुच्लृ + लृवर्णः = मुच्लृवर्णः

2. गुण-सन्धि

- अवर्ण (अ+आ) के बाद इ, उ, ऋ, लृ के रहने पर दोनों के स्थान पर गुण एकादेश हो जाता है। (**आद्गुणः**)
- यहाँ गुण के प्रसंग में 'अदेङ्गुणः' का ज्ञान अत्यावश्यक है। गुण से तात्पर्य 'अ, ए, ओ' से होता है। ऋकार से सम्बन्धित गुणकार्य में र् जुड़ जाता है। उसी तरह लृकार के गुणकार्य में ल् जुड़ जाता है। (**उरण् रपरः**)

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
अ/आ + लृ = अल्

अ/आ + इ/ई = ए

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः
न + इति = नेति
मम+इह = ममेह
यथा+इदम् = यथेदम्
यथा + इच्छम् = यथेच्छम्
का+इह = केह
नर+ईशः = नरेशः
लोक+ईशः = लोकेशः
राका+ईशः = राकेशः
महा+ईशः = महेशः
अन्न+ईहा = अन्नेहा
धरा+ईश्वरः = धरेश्वरः
गुडाका + ईशः = गुडाकेशः

अ/आ + उ/ऊ = ओ

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
परीक्षा + उत्सवः = परीक्षोत्सवः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
परम + उत्तमः = परमोत्तमः
सूर्य+उदयः = सूर्योदयः
सर्व+उत्तमः = सर्वोत्तमः
सर्व+उदयः = सर्वोदयः
महा+उदयः = महोदयः
शर्व+उपमम् = शर्वोपमम्
पाद+ऊनः = पादोनः
नव+ऊढा = नवोढा
तव+ऊतिः = तवोतिः
जल+ऊर्मिः = जलोर्मिः
महा+ऊषरः = महोषरः

अ/आ + ऋ/ॠ = अर्

कृष्ण+ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः
ब्रह्म+ऋषिः = ब्रह्मर्षिः
देव+ऋषिः = देवर्षिः
ग्रीष्म+ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः
मम+ऋद्धिः = ममर्द्धिः
उत्तम + ऋणः = उत्तमर्णः
अधम + ऋणः = अधमर्णः
भरत+ऋषभः = भरतर्षभः
महा+ऋषिः = महर्षिः
सदा+ऋणः = सदर्णः
वर्षा+ऋतुः = वर्षर्तुः
तथा+ऋकारः = तथर्कारः

अ/आ + लृ = अल्

तव+लृकार:	= **तवल्कार:**
तव + लृदन्त:	= तवल्दन्त:
मम+लृकार:	= ममल्कार:
मम + लृवर्ण:	= ममल्वर्ण:
तथा+लृकार:	= तथल्कार:
कदा+लृकार:	= कदल्कार:

3. वृद्धि-सन्धि

- अवर्ण (अ/आ) के बाद ए, ओ, ऐ, औ (एच्) के रहने पर दोनों स्वरों के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है। (**वृद्धिरेचि**) यहाँ वृद्धि से तात्पर्य 'आ, ऐ, औ' से है। (**वृद्धिरादैच्**)

अ/आ +ए	= **ऐ**
अ/आ +ऐ	= **ऐ**
अ/आ +ओ	= **औ**
अ/आ +औ	= **औ**

अ/आ+ए = ऐ

कृष्ण+एकत्वम्	= **कृष्णैकत्वम्**
वित्त+एषणा	= वित्तैषणा
अत्र+एकम्	= अत्रैकम्
देव+एकत्वम्	= देवैकत्वम्
पञ्च + एते	= पञ्चैते
जन + एकता	= जनैकता
वीर + एक:	= वीरैक:
तव + एवम्	= तवैवम्
सभा + एषा	= सभैषा
मा + एवम्	= मैवम्
सभा + एका	= सभैका
बाला + एषा	= बालैषा
विद्या+एषणा	= विद्यैषणा
सदा+एव	= सदैव

अ/आ+ओ = औ

गङ्गा+ओघ:	= **गङ्गौघ:**
जल+ओघ:	= जलौघ:
मधुर+ओदन:	= मधुरौदन:
तण्डुल+ओदनम्	= तण्डुलौदनम्

अ/आ+ऐ = ऐ

देव+ऐश्वर्यम्	= **देवैश्वर्यम्**
सर्व+ऐक्यम्	= सर्वैक्यम्
मम+ऐश्वर्यम्	= ममैश्वर्यम्
तव+ऐतिह्यम्	= तवैतिह्यम्
महा+ऐरावत:	= महैरावत:
महा+ऐश्वर्यम्	= महैश्वर्यम्
सदा+ऐहलौकिकम्	= सदैहलौकिकम्
गङ्गा+ऐश्वर्यम्	= गङ्गैश्वर्यम्

अ/आ+औ = औ

कृष्ण+औत्कण्ठ्यम्	= **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**
तव+औदार्यम्	= तवौदार्यम्
देव+औदार्यम्	= देवौदार्यम्
सदा+औत्सुक्यम्	= सदौत्सुक्यम्
क्रीडा+औत्सुक्यम्	= क्रीडौत्सुक्यम्
तीक्ष्ण+औषधि:	= तीक्ष्णौषधि:
महा+औषधम्	= महौषधम्
परम+औषधि:	= परमौषधि:

- अधोलिखित उदाहरणों में अन्य संधियों का खण्डन करके वृद्धि कार्य हुआ है–

उप+एति	= **उपैति**	[एङि पररूपम् का अपवाद]
उप+एधते	= **उपैधते**	[एङि पररूपम् का अपवाद]
अक्ष+ऊहिनी	= अक्षौहिणी	[गुण का अपवाद]
स्व+ईर:	= स्वैर:	[गुण का अपवाद]
स्व+ईरिणी	= स्वैरिणी	[गुण का अपवाद]
स्व+ईरी	= स्वैरी	[गुण का अपवाद]
प्र+ ऊह:	= प्रौह:	[गुण का अपवाद]
प्र+ऊढ:	= प्रौढ:	[गुण का अपवाद]
प्र+ऊढा	= प्रौढा	[गुण का अपवाद]
प्र+ऊढि:	= प्रौढि:	[गुण का अपवाद]
प्र+एष्य:	= प्रैष्य:	[पररूप का अपवाद]
सुखेन ऋत:, सुख+ऋत:	= सुखार्त:	(गुणापवाद)
दु:खेन ऋत:, दु:ख+ऋत:	= दु:खार्त:	(गुणापवाद)

प्र+ऋणम्	= प्रार्णम्	[गुण का अपवाद]
वत्सतर+ऋणम्	= वत्सतरार्णम्	[गुण का अपवाद]
कम्बल+ऋणम्	= कम्बलार्णम्	[गुण का अपवाद]
वसन+ऋणम्	= वसनार्णम्	[गुण का अपवाद]
दश+ऋण:	= दशार्ण:	[गुण का अपवाद]
ऋण+ऋणम्	= ऋणार्णम्	[गुण का अपवाद]

4. यण्-सन्धि

- इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान पर क्रमश: यण् (य् व् र् ल्) आदेश हो जाता है, असवर्ण स्वर आगे हो तो। (**इको यणचि**)

इ/ई	= **य्**	**[असवर्ण स्वर आगे हो तो]**
उ/ऊ	= **व्**	
ऋ/ॠ	= **र्**	
लृ	= **ल्**	

इ/ई = य्

अभि+उदय:	= अभ्युदय:
प्रति+एकम्	= प्रत्येकम्
दधि+आनय	= दध्यानय
इति+आदय:	= इत्यादय:
अभि + उदय:	= अभ्युदय:
स्मृति + आदेश:	= स्मृत्यादेश:
यदि+अपि	= यद्यपि
गति+ऊर्जा	= गत्यूर्जा
हि + अयम्	= ह्ययम्
मही+आरूढ:	= मह्यारूढ:
सुधी+उपास्य:	= **सुध्युपास्य:**
स्त्री + उत्सव:	= स्त्र्युत्सव:
गौरी+आत्मज:	= गौर्यात्मज:
नदी+उदकम्	= नद्युदकम्
स्त्री+उचितम्	= स्त्र्युचितम्
महती + आशा	= महत्याशा
वाणी + एका	= वाण्येका

उ/ऊ = व्

मधु+अरि:	= **मध्वरि:**
अनु+अय:	= अन्वय:
पठतु+इदम्	= पठत्विदम्
तनु + अङ्गी	= तन्वङ्गी
गुरु+आज्ञा	= गुर्वाज्ञा
शृणु + इदम्	= शृण्विदम्
तु+इदम्	= त्विदम्
सु+आगतम्	= स्वागतम्
धातु + आदेश:	= धात्वादेश:
लघु + आदेश	= लघ्वादेश:
चारु+अङ्गी	= चार्वङ्गी
वधू+अलङ्कार:	= वध्वलङ्कार:
वधू+ओक:	= वध्वोक:
वधू + आशा	= वध्वाशा
वधू + आगमनम्	= वध्वामगनम्
यवागू+आशा	= यवाग्वाशा
चमू + आगमनम्	= चम्वागमनम्
श्वश्रू + आदेश:	= श्वश्र्वादेश:

ऋ/ॠ = र्

धातृ+अंश:	= **धात्रंश:**
पितृ+इच्छा	= पित्रिच्छा
गन्तृ+एध:	= गन्त्रेध:
मातृ+अंक:	= मात्रंक:
पितृ + अधीनम्	= पित्रधीनम्
मातृ+उत्सव:	= मात्रुत्सव:
यातृ+ओदन:	= यात्रोदन:
पितृ+अंश:	= पित्रंश:
पितृ+आज्ञा	= पित्राज्ञा
नृ + आत्मज:	= न्रात्मज:

लृ = ल्

लृ+आकृति:	= **लाकृति:**
लृ+आकार:	= लाकार:
घस्लृ + आदेश:	= घस्लादेश:
लृ + आदेश:	= लादेश:
लृ + अङ्ग:	= लङ्ग:
लृ+ऐश्वर्यम्	= लैश्वर्यम्
लृ+आधारितम्	= लाधारितम्
लृ + अनुबन्ध:	= लनुबन्ध:
गम्लृ + आदेश:	= गम्लादेश:
लृ + आधार:	= लाधार:

Scanned by CamScanner

5. अयादि सन्धि

- एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय् तथा आव् आदेश हो जाते है, यदि कोई भी स्वर आगे हो तो। (एचोऽयवायावः)

ए → अय्
ओ → अव्
ऐ → आय्
औ → आव्
(यदि आगे कोई भी स्वर हो तो)

ए → अय्

हरे+ए = हरये
ने+अनम् = नयनम्
शे+अनम् = शयनम्
चे+अनम् = चयनम्

ओ → अव्

विष्णो+ए = विष्णवे
भो+अनम् = भवनम्
पो+अन: = पवन:
पो+इत्रम् = पवित्रम्

ऐ → आय्

नै+अक: = नायक:
डै+अक: = डायक:
चै+अक: = चायक:
क्षै+अक: = क्षायक:

औ → आव्

पौ+अक: = पावक:
भौ+अक: = भावक:
नौ+इक: = नाविक:
लौ+अक: = लावक:

- यकार से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के आगे होने पर ओ के स्थान पर अव् तथा औ के स्थान पर आव् आदेश होते है। (**'वान्तो यि प्रत्यये'**)

गो + यम् – गव्यम्
गो + यूति: – गव्यूति:
शङ्क्रो + यम् – शङ्क्रव्यम्
नौ + यम् – नाव्यम्
भौ +यम् – भाव्यम्

6. पूर्वरूप सन्धि

- पद के अन्त में स्थित एङ् (ए, ओ) के बाद ह्रस्व अकार के रहने पर, उसका पूर्वरूप एकादेश हो जाता है। **यहाँ 'ए/ओ + अ'** के स्थान पर ए/ओ एकादेश होता है तथा अ के स्थान पर अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है। (**एङः पदान्तादति**)

हरे+अव = हरेऽव
रवे + अव = रवेऽव
ग्रामे +अयम् = ग्रामेऽयम्
वने+अटति = वनेऽटति
गृहे+अस्मि = गृहेऽस्मि
मुरारे+अव = मुरारेऽव
एधते + अयम् = एधतेऽयम्
ग्रामे + अस्मिन् = ग्रामेऽस्मिन्
विष्णो+अव = विष्णोऽव
साधो+अपेहि = साधोऽपेहि

7. पररूप सन्धि

- अवर्णान्त (अ/आ अन्त वाले) उपसर्ग के बाद ए या ओ से प्रारंभ होने वाला धातुरूप रहने पर, दोनों के स्थान पर पररूप (बाद वाला वर्ण) एकादेश हो जाता है। (**एङि पररूपम्**)

अ/आ+ए = ए

प्र+एजते = प्रेजते
प्र+एषयति = प्रेषयति
परा+एलयति = परेलयति
उप+एलयति = उपेलयति
प्र + एषक: = प्रेषक:
प्र + एषिति: = प्रेषिति:
प्र + एषणम् = प्रेषणम्

अ/आ+ओ = ओ

उप+ओषति = उपोषति
प्र+ओषति = प्रोषति

- **शकन्ध्वादि-गण** में पठित शब्दों में, टि को, पररूप कार्य होता है। (वा. **शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्**)
- **टि** से तात्पर्य किसी शब्द के स्वरों में से अंतिम स्वर के आगे यदि कोई व्यञ्जन है तो वह पूरा समुदाय तथा अंतिम स्वर के आगे कोई व्यञ्जन न हो तो वह अंतिम स्वर ही 'टि' कहलाता

है। (**अचोऽन्त्यादि टि**) **जैसे**- मनस् में 'अस्' टि है, पतत् में 'अत्' टि है और शक में 'अ' टि है।

शक+अन्धु:	= शकन्धु:	(दीर्घ का अपवाद)
कर्क+अन्धु:	= कर्कन्धु:	(दीर्घ का अपवाद)
कुल+अटा	= कुलटा	(दीर्घ का अपवाद)
मार्त+अण्ड:	= मार्तण्ड:	(दीर्घ का अपवाद)
हल+ईषा	= हलीषा	(गुण का अपवाद)
लाङ्गल+ईषा	= लाङ्गलीषा	(गुण का अपवाद)
मनस्+ईषा	= मनीषा	
पतत्+अञ्जलि:	= पतञ्जलि:	(जश्त्व का अपवाद)
सीम+अन्त:	= सीमन्त:	(केशवेश अर्थ में)
सार+अङ्ग:	= सारङ्ग:	(पशु-पक्षी अर्थ में)

- अकारान्त शब्दों में आगे ओतु या ओष्ठ के रहने पर विकल्प से पररूप एकादेश होता है। यह कार्य समास होने पर ही होता है। पररूप के अभाव में, यथाप्राप्त वृद्धि एकादेश हो जाता है। (**वा.-ओत्वोष्ठयो: समासे वा**)

स्थूल+ओतु: = स्थूलोतु:/स्थूलौतु: [कर्मधारय समास]
बिम्ब+ओष्ठ: = बिम्बोष्ठ:/बिम्बौष्ठ: [बहुव्रीहि समास]
कण्ठ+ओष्ठम् = कण्ठोष्ठम्/कण्ठौष्ठम् [समाहार द्वन्द्व]
दन्त+ओष्ठम् = दन्तोष्ठम्/दन्तौष्ठम् [समाहार द्वन्द्व]

2. व्यञ्जन सन्धि (हल्-सन्धि)

- व्यञ्जनों (हल्-वर्णों) का, किसी व्यञ्जन (हल्) या स्वर (अच्) के साथ मेलन, व्यञ्जन सन्धि (हल्-सन्धि) कहलाता है। हल् सन्धि के अनेक भेद है।

1. चर्त्व-सन्धि

- झल्वर्णों के (प्रत्येक वर्ग के 1, 2, 3, 4 वर्णों के) स्थान पर प्रथम वर्ण हो जाता है, खर् वर्णों (वर्गों के 1, 2 और श् ष् स्) के परे रहते। (**खरि च**)

वर्गों के 1, 2, 3, 4 – यदि आगे वर्गों के 1,2,श्ष्स् वर्ण हो तो प्रथम वर्ण

सत् + पुत्र: = सत्पुत्र:
सत् +कार: = सत्कार:
तद् + पर: = तत्पर:
उद् +कीर्ण: = उत्कीर्ण:
विपद् + काल: = विपत्काल:
उद् + पन्न: = उत्पन्न:
लभ् + स्यते = लप्स्यते
समिध् + सु = समित्सु
लिभ् + सा = लिप्सा
युयुध् + सव: = युयुत्सव:
महत् + कालम् = महत्कालम्
शरद् + कालम् = शरत्कालम्
मृद् + पात्रम् = मृत्पात्रम्
सम्पद् + कालम् = सम्पत्कालम्
अग्निमथ् + सु = अग्निमत्सु

2. जश्त्व सन्धि

- झल्-वर्णों (वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण व श् ष् स् ह्) के स्थान पर जश्-आदेश (उसी वर्ग का तृतीय वर्ण) हो जाता है, यदि झश् (वर्गों के 3, 4) आगे हो तो। (**झलां जश् झशि**)

वर्गों के 1, 2, 3, 4 / उसी वर्ग का 3 — यदि आगे किसी भी वर्ग का 3, 4 वर्ण हो तो।

दघ् + ध: = दग्ध:
बुध् + धि: = बुद्धि:
सिध् + धि: = सिद्धि:
लभ् + ध: = लब्ध:
रभ् + ध: = रब्ध:
सरित् + भ्याम् = सरिद्भ्याम्
त्विष् + भि: = त्विड्भि:
त्विष् + भ्याम् = त्विड्भ्याम्

(ष् के स्थान पर उच्चारण स्थान की दृष्टि से ड् जश्त्व होता है।)

- यदि पदान्त में झल् (वर्गों के 1, 2, 3, 4 श् ष् स् ह्) हो, तो जश् (उसी वर्ग का तृतीय वर्ण) हो जाता है। लेकिन आगे या तो स्वर रहे या फिर वर्गों के 3, 4, 5, ह्, य्, व्, र्, ल् रहें। (**झलां जशोऽन्ते**)। यहाँ पदान्त से तात्पर्य विच्छेद के दोनों खण्डों का सार्थक होना है।

जगत् + ईश: = जगदीश:
वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी
दिक् + अम्बर: = दिगम्बर:
अच् + आदि: = अजादि:
सत् + आनन्द: = सदानन्द:

Scanned by CamScanner

सुप् + अन्तः = सुबन्तः
अच् + अन्तः = अजन्तः
सत् + धर्मः = सद्धर्मः
तिप् + अन्तः = तिबन्तः
अप् + जम् = अब्जम्
वाक् + अत्र = वागत्र
वाक् + दानम् = वाग्दानम्
त्वक् + धारणम् = त्वग्धारणम्
जगत् + धाता = जगद्धाता
तद् + रूपम् = तद्रूपम्
ककुभ् + गामी = ककुब्गामी
समिध् + आधानम् = समिदाधानम्
(षष्)षट् + आननः = षडाननः

3. अनुनासिक सन्धि

- पदान्त यर् (वर्गों के 1, 2, 3, 4) के स्थान पर उसी वर्ग (अनुनासिक)का 5 वर्ण हो जायेगा, यदि अनुनासिक वर्ण (किसी भी वर्ग का 5 वर्ण) आगे हो। (**यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा**)

किसी भी वर्ग के 1,2,3,4 / विकल्प से उसी वर्ग का 5 **यदि आगे किसी भी वर्ग का पञ्चम वर्ण हो तो।**

- यह कार्य विकल्प से होता है। अतः अनुनासिक सन्धि के अभाव में यथाप्राप्त जश्त्व कार्य हो जायेगा।

सन्धि विच्छेद	अनुनासिक सन्धि में	जश्त्व संधि में
दिक् + नागः	दिङ्नागः	दिग्नागः
सत् + मार्गः	सन्मार्गः	सद्मार्गः
वाक् + मलम्	वाङ्मलम्	वाग्मलम्
वाक् + महिमा	वाङ्महिमा	वाग्महिमा
एतद् + मुरारिः	**एतन्मुरारिः**	**एतद्मुरारिः**
पृथक् + नरेन्द्रः	पृथङ्नरेन्द्रः	पृथग्नरेन्द्रः
तद् + न	तन्न	तद्न

- (**प्रत्यये भाषायां नित्यम्**) लेकिन यदि प्रत्यय वाला पञ्चम वर्ण आगे रहे, तो यह अनुनासिक सन्धि नित्य रूप से होती है।

तद् + मात्रम् = तन्मात्रम्
चित् + मयम् = चिन्मयम्
वाक् + मयम् = वाङ्मयम्
वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम्

चित् + मात्रम् = चिन्मात्रम्
दिक् + मात्रम् = दिङ्मात्रम्
विराट् + मयम् = विराण्मयम्
मृद् + मयम् = मृन्मयम्
कियत् + मात्रम् = कियन्मात्रम्
अप् + मयम् = अम्मयम्

4. पूर्वसवर्ण सन्धि

- झय् (वर्गों के 1,2,3,4) के आगे 'ह्' के रहने पर, उसे पूर्वसवर्ण हो जाता है। (**झयो होऽन्यतरस्याम्**) 'ह्' के स्थान पर पूर्व के वर्ण के अनुसार वर्ग का चतुर्थ वर्ण आदेश होता है।

क्, ख्, ग्, घ् → के आगे ह् रहने पर– ह् = घ्
च् छ् ज् झ् → के आगे ह् रहने पर– ह् = झ्
ट् ठ् ड् ढ् → के आगे ह् रहने पर– ह् = ढ्
त् थ् द् ध् → के आगे ह् रहने पर– ह् = ध्
प् फ् ब् भ् → के आगे ह् रहने पर– ह् = भ्

- यहाँ ह के स्थान पर पूर्वसवर्ण क्या हो ? इस संशय में सवर्ण वर्ण की खोज की गई। लेकिन उच्चारण स्थान व आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर निर्णय नहीं हो पाता है। अतः यहाँ आन्तरतम्य परीक्षा की गई। चूंकि हकार संवार, नाद, घोष व महाप्राण वर्ण है, अतः इस प्रारूप में प्रत्येक वर्ण का चतुर्थ अक्षर ही युक्तिसंगत है। यह पूर्वसवर्ण कार्य विकल्प से होता है। अतः पूर्वसवर्ण के अभाव में केवल जश्त्व कार्य करने पर भी रूप निष्पन्न होगा।

सन्धि विच्छेद	(पूर्वसवर्ण संधि)	(जश्त्व संधि)
तद् + हितम्	तद्धितम्,	तद्हितम्
वाक् + हरिः	वाग्घरिः,	वाग्हरिः
अप् + हविः	अब्भविः,	अब्हविः
षट् + हयाः	षड्ढयाः,	षड्हयाः
उद् + हारः	उद्धारः,	उद्हारः
उद् + हरणम्	उद्धरणम्,	उद्हरणम्
उद् + हर्ता	उद्धर्ता,	उद्हर्ता
अच् + हीनम्	अज्झीनम्,	अज्हीनम्

- उद् के बाद स्था, स्तम्भ रहने पर स्था और स्तम्भ के स् को पूर्वसवर्ण हो जाता है। (**उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य**) सकार को पूर्वसवर्ण करने के लिए बाह्य यत्नों का सहारा लिया जाता है। (स् = थ्) थकार के परे रहते द् को चर्त्व कार्य हो जाता है। [पूर्वसवर्ण नित्य रूप से]
- **झरो झरि सवर्णे**–झर् के आगे झर् के रहने पर पूर्व झर् का लोप हो जाता है, विकल्प से।

सन्धि विच्छेद			पूर्वसवर्ण संधि
उद् + स्थानम्	उद् थ्थानम्	उत्थ्थानम्,	उत्थानम्
उद् + स्थाय	उद् थ्थाय	उत्थ्थाय,	उत्थाय
उद् + स्थितः	उद् थ्थितः	उत्थ्थितः,	उत्थितः
उद् + स्तम्भनम्	उद् थ् तम्भनम्	उत्थ्तम्भनम्,	उत्तम्भनम्

5. परसवर्ण सन्धि (लत्व सन्धि)

- तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के आगे लकार (ल्) के रहने पर तवर्ग के स्थान पर ल् परसवर्ण हो जाता है। (**तोर्लि**) अतः इस सन्धि को लत्व सन्धि भी कहते हैं। 'न' को परसवर्ण करने पर ल् भी अनुनासिक ही होगा।

विद्युत् + लेखा = विद्युल्लेखा
जगत् + लीयते = जगल्लीयते
चित् + लयः = चिल्लयः
महत् + लाभः = महल्लाभः
पद् + लवः = पल्लवः
तद् + लयः = तल्लयः
तद् + लीनः = तल्लीनः
उद् + लेखः = उल्लेखः
यद् + लक्षणम् = यल्लक्षणम्
उद् + लङ्घनम् = उल्लङ्घनम्
विद्वान् + लिखति = विद्वाल्ँलिखति
हसन् + लिखति = हसल्ँलिखति

6. अनुस्वार-सन्धि

- पद के अन्त में स्थित, 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है, व्यञ्जनों (हल्वर्णों) के परे रहते। (**मोऽनुस्वारः**)

मातरम् + वन्दे = मातरं वन्दे
सत्यम् + शिवम् = सत्यं शिवम्
हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
रामम् + नमामि = रामं नमामि
स्वदेशम् + सेवते = स्वदेशं सेवते
सत्यम् + वद = सत्यं वद
धर्मम् + वद = धर्मं वद
प्रियम् + वद = प्रियं वद

- पद के बीच में न् और म् दोनों का अनुस्वार हो जाता है, झल् वर्णों (वर्गों के 1,2,3,4, श् ष् स् ह्) के परे रहते। (**नश्चापदान्तस्य झलि**)

पयान् + सि = पयांसि
नम् + स्यति = नंस्यति

यशान् + सि = यशांसि
मनान् + सि = मनांसि
मन् + स्यते = मंस्यते
आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते
हन् + स्यते = हंस्यते
श्रेयान् + सि = श्रेयांसि

- **अनुस्वार के अपवाद–**

(**मो राजि समः क्वौ**) सम् उपसर्ग के म् के बाद क्विप् प्रत्यययुक्त राज् धातु के रूप के रहने पर म् को अनुस्वार नहीं होता।

सम् + राट् = सम्राट्/सम्राड् (प्रथमा–एकवचन)
सम् + राजौ = सम्राजौ (प्रथमा–द्विवचन)
सम् + राजः = सम्राजः(प्रथमा–बहुवचन)
साम् + राज्यम् = साम्राज्यम्

7. अनुस्वारपरसवर्ण सन्धि

- उपर्युक्त दोनों सूत्रों ('**मोऽनुस्वारः**', '**नश्चापदान्तस्य झलि**') के द्वारा अनुस्वार करने पर, यदि उनके आगे यय् (श ष स ह के अलावा कोई भी व्यञ्जन) रहे तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है। अग्रिम वर्ण के अनुसार अनुस्वार को पञ्चम वर्ण हो जाता है। (**अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः**)

सन्धि विच्छेद	अनुस्वार	परसवर्ण (अन्तिमरूप)
अन् + कितः	= अंकितः	= अङ्कितः
अन् + चितः	= अंचितः	= अञ्चितः
शाम् + तः	= शांतः	= शान्तः
दाम् + त	= दांतः	= दान्तः
गुम् + फितः	= गुंफितः	= गुम्फितः
गम् + ता	= गंता	= गन्ता

- पदान्त की स्थिति में अनुस्वार परसवर्ण का कार्य विकल्प से होता है। (**वा पदान्तस्य**)

त्वम् + करोषि = त्वं करोषि, त्वङ्करोषि
त्वम् + चतुरः = त्वं चतुरः, त्वञ्चतुरः
धर्मम् + चर = धर्मं चर, धर्मञ्चर
तृणम् + चरति = तृणं चरति, तृणञ्चरति
सम् + यन्ता = संयन्ता, सँय्यन्ता [अनुनासिक यँ]
सम् + वत्सरः = संवत्सरः, सँव्वत्सरः [अनुनासिक वँ]
पुम् + लिङ्गम् = पुंलिङ्गम्, पुँल्लिङ्गम् [अनुनासिक लँ]

य् व् ल् दो प्रकार के होते हैं– य् व् ल् – अननुनासिक; यँ वँ लँ – अनुनासिक

8. श्चुत्व-सन्धि

- सकार और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के स्थान पर शकार और चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) हो जाता है, शकार व चवर्ग में से किसी एक का योग रहने पर। (**स्तोः श्चुना श्चुः**)
- यह योग सकार व तवर्ग के आगे-पीछे किसी भी तरफ हो सकता है। श्चुत्व कार्य को करने से पहले यथाप्राप्त चर्त्व, जश्त्व या अनुनासिक सन्धि का कार्य भी होगा।

स	→	श्	हरिस्+शेते	= हरिश्शेते
त्	→	च्	सत्+चित्	= सच्चित्
थ्	→	छ्	------------	------------
द्	→	ज्	उद्+ज्वलः	= उज्ज्वलः
ध्	→	झ्	------------	------------
न्	→	ञ्	याच् + ना	= याच्ञा

शिवस्	+ च	= शिवश्च
रामस्	+ चिनोति	= रामश्चिनोति
तेजस्	+ चीयते	= तेजश्चीयते
दरद्	+ जलम्	= दरज्जलम्
शरद्	+ चन्द्रः	= शरच्चन्द्रः
यज्	+ नः	= यज्ञः
शार्ङ्गिन्	+ जय	= शार्ङ्गिञ्जय
सत्	+ जनः	= सज्जनः
तद्	+ च	= तच्च
वहत्	+ जलम्	= वहज्जलम्
सत्	+ छात्रः	= सच्छात्रः
राज्	+ नः	= राज्ञः

- **ध्यातव्य–**

[**शात्**]– शवर्ण के बाद स्थित तवर्ण (त् थ् द् ध् न्) को श्चुत्व कार्य नहीं होता।

विश्	+ नः	= विश्नः
प्रश्	+ नः	= प्रश्नः
जश्	+ त्वम्	= जश्त्वम्
अश्	+ नित्यम्	= अश्नित्यम्
श्	+ तिप्	= श्तिप्
अश्	+ नाति	= अश्नाति

इन सभी उदाहरणों में कोई संधि कार्य नहीं माना जाएगा।

9. ष्टुत्व सन्धि

- सकार और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के स्थान पर क्रमशः षकार और टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) हो जाता है, षकार व टवर्ग में से किसी का भी योग होने पर। (**ष्टुना ष्टुः**)
- यह 'ष्टु' (षकार और टवर्ण) का योग सकार और तवर्ग के आगे-पीछे किसी भी तरफ हो सकता है। ष्टुत्व कार्य को करने से पहले यथाप्राप्त चर्त्व, जश्त्व या अनुनासिक सन्धि का कार्य होगा।

स्	→	ष्	रामस् + टीकते	= रामष्टीकते
त्	→	ट्	तद् (त्) + टीका	= तट्टीका
थ्	→	ठ्	------------	------------
द्	→	ड्	उद् + डीनः	= उड्डीनः
ध्	→	ढ्	------------	------------
न्	→	ण्	कृष् + नः	= कृष्णः

रामस्	+ षष्ठः	= रामष्षष्ठः
रामस्	+ टीकते	= रामष्टीकते
पेष्	+ ता	= पेष्टा
तद्	+ टीका	= तट्टीका
चक्रिन्	+ ढौकसे	= चक्रिण्ढौकसे
षष्	+ थः	= षष्ठः
कृष्	+ नः	= कृष्णः
उद्	+ डीनः	= उड्डीनः
विष्	+ नुः	= विष्णुः
सत्	+ टीका	= सट्टीका
तद्	+ टङ्कणम्	= तट्टङ्कणम्
उद्	+ डयनम्	= उड्डयनम्

- **ध्यातव्य–**

1. पदान्त टवर्ग के आगे ष्टुत्व कार्य नहीं होता। (**न पदान्ताट्टोरनाम्**) जैसे- **षट् सन्तः**। लेकिन नाम्, नवति और नगरी शब्दों के आगे होने पर ष्टुत्व कार्य होगा।

   षष् (षट्) + नाम् **षण्णाम्** (अनुनासिक सन्धि का कार्य भी)
   षष् (षट्) + नवतिः **षण्णवतिः** (अनुनासिक सन्धि का कार्य भी)
   षष् (षट्) + नगर्यः **षण्णगर्यः** (अनुनासिक सन्धि का कार्य भी)
2. पदान्त तवर्ग के के आगे षकार होने पर ष्टुत्व कार्य नहीं होगा। (**तोः षि**) जैसे- **सन् षष्ठः**।

10. छत्व सन्धि

- पद के अन्त में स्थित् झय् (वर्गों के 1,2,3,4 वर्ण) के बाद श् को छ् हो जाता है, श् के आगे अट् (स्वर, ह् य् व् र्) वर्णों के होने पर। (**शश्छोऽटि**) वार्त्तिककार कात्यायन ने यहाँ अट् की जगह 'अम्' प्रत्याहार माना है। (**छत्वममीति वक्तव्यम्**)
- अतः श् के बाद अम् (स्वर, ह् य् व् र् ल्, ञ् म् ङ् ण् न्) होने पर छत्व कार्य हो सकता है। यह कार्य वैकल्पिक है।

विग्रह	छत्व	छत्व संधि रूप	श्चुत्व संधि रूप
तद् + शिवः	= तद् + छिवः	= तच्छिवः	तच्शिवः
तद् + शिला	= तद् + छिला	= तच्छिला	तच्शिला
उद् + श्रेयः	= उद् + छ्रेयः	= उच्छ्रेयः	उच्श्रेयः
तद् + श्लोकेन	= तद् + छ्लोकेन	= तच्छ्लोकेन	तच्श्लोकेन
तद् + श्रुत्वा	= तद् + छ्रुत्वा	= तच्छ्रुत्वा	तच्श्रुत्वा
तद् + श्लक्ष्णः	= तद् + छ्लक्ष्णः	= तच्छ्लक्ष्णः	तच्श्लक्ष्णः
तद् + श्लिष्टः	= तद् + छ्लिष्टः	= तच्छ्लिष्टः	तच्श्लिष्टः

11. तुगागमसन्धि

- ह्रस्व स्वर के बाद 'छ' आने पर, उससे पहले तुक् (त्) का आगम हो जाता है। त को यथाप्राप्त श्चुत्व कार्य भी हो जायेगा। (**छे च**)

विच्छेद		तुगागम	श्चुत्व (सिद्धरूप)
शिव	+ छाया	= शिव त् छाया	= शिवच्छाया
अनु	+ छेदः	= अनु त् छेदः	= अनुच्छेदः
स्व	+ छाया	= स्व त् छाया	= स्वच्छाया
परि	+ छेदः	= परि त् छेदः	= परिच्छेदः
स्व	+ छन्दः	= स्व त् छन्दः	= स्वच्छन्दः

- पदान्त दीर्घ स्वर के बाद 'छ' आने पर, उससे पहले तुक् (त्) का आगम विकल्प से होता है। (**पदान्ताद्वा**)

लक्ष्मी	+ छाया	= लक्ष्मीच्छाया,	लक्ष्मीछाया
कुटी	+ छाया	= कुटीच्छाया,	कुटीछाया
वधू	+ छविः	= वधूच्छविः,	वधूछविः
शीतला	+ छाया	= शीतलाच्छाया,	शीतलाछाया

3. विसर्ग सन्धि

- विसर्ग के आधार पर होने वाली सन्धि विसर्ग सन्धि कहलाती है।
- इस सन्धि में विसर्ग के स्थान पर :, ᳵ, र्, श्, ष्, स् या फिर विसर्ग का लोप दिखाई देता है।
- पद के अन्त में स्थित स् (तथा सजुष् शब्द के ष्) को रुत्व हो जाता है। (**ससजुषो रुः**)
- अर्थात् 'स्' के स्थान पर 'रु' हो जाता है। रु में उ की इत्संज्ञा व लोप होने पर 'र्' मात्र शेष रहता है।
- स् के स्थान पर हुए रुत्व के 'र्' के स्थान पर विसर्ग हो जाता है, या तो खर् प्रत्याहार (वर्गों के 1,2 श् ष् स्) परे रहे या फिर अवसान रहे। (**खरवसानयोर्विसर्जनीयः**)
- अवसान से तात्पर्य वर्णों के अभाव से है। (**विरामोऽवसानम्**)
- इसीलिए यदि 'र्' के आगे कोई वर्ण नहीं रहे, तो भी विसर्ग हो जाता है।
- विसर्ग के स्थान पर 'स' हो जाता है, खर् प्रत्याहार (वर्गों के 1, 2, श् ष् स्) के परे रहते। (**विसर्जनीयस्य सः**)
- विसर्ग के आगे क्, ख् के रहने पर विकल्प से अर्ध विसर्ग (जिह्वामूलीय) हो जाता है तथा विसर्ग के आगे प्, फ्, रहने पर अर्ध विसर्ग (उपध्मानीय) हो जाता है। (**कुप्वोः ᳵकᳵ पौ च**)

संधि विच्छेद	जिह्वामूलीय, विकल्प से
विप्रः + कथयति	विप्र ᳵ कथयति, विप्रः कथयति
श्रमिकः + खनति	श्रमिक ᳵ खनति, श्रमिकः खनति
रामः + खनति	राम ᳵखनति, रामः खनति
नरः + खादति	नर ᳵखादति, नरः खादति
बालः + करोति	बाल ᳵकरोति, बालः करोति
मनः + कामना	मनᳵकामना, मनःकामना

Scanned by CamScanner

- विसर्ग के आगे च या छ होने पर विसर्ग के स्थान पर तालव्य श् आदेश होगा।

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
रामः + च	रामश्च
कः + चित्	कश्चित्
निः + छलः	निश्छलः
वृक्षः + छादयति	वृक्षश्छादयति
मनः + छाया	मनश्छाया

- विसर्ग के आगे ट या ठ के होने पर विसर्ग के स्थान पर मूर्धन्य ष् आदेश होगा।

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
धनुः + टंकारः	धनुष्टंकारः
मीमांसायाः + टीका	मीमांसायाष्टीका
वृद्धः + ठगति	वृद्धष्ठगति
द्वितीयः + ठकारः	द्वितीयष्ठकारः
देवः + ठक्कुरः	देवष्ठक्कुरः

- विसर्ग के आगे त या थ होने पर विसर्ग के स्थान पर दन्त्य स् आदेश होगा।

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
विष्णुः + त्राता	विष्णुस्त्राता
नमः + ते	नमस्ते
बालः + थूत्करोति	बालस्थूत्करोति
हरिः + त्रायते	हरिस्त्रायते
देवः + त्राता	देवस्त्राता
रामः + त्राता	रामस्त्राता

- इसी प्रसंग में, विसर्ग के आगे, प वर्ग (प्, फ्) रहने पर विकल्प से, स् के स्थान पर उपध्मानीय (अर्धविसर्ग) हो जाता है। पक्ष में विसर्ग ही शेष रह जायेगा।

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
बालः + पठति	बाल ≍ पठति, बालः पठति
नृपः + पाति	नृप ≍पाति, नृपः पाति
वृक्षः + फलति	वृक्ष ≍ फलति, वृक्षः फलति
अधः + पतनम्	अध≍पतनम्, अधःपतनम्

- विसर्ग के आगे, श्, ष्, स् के रहने पर, विकल्प से, विसर्ग के स्थान पर स् होता है। पक्ष में, विसर्ग ही रह जायेगा। (**वा शरि**) श् के परे रहने पर, स् को श्चुत्व श् तथा ष् के परे रहने पर, स् को ष्टुत्व ष् भी हो जायेगा।

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
सर्पः + सरति →	सर्पस्सरति, सर्पः सरति
हरिः + शेते →	हरिश्शेते, हरिः शेते
कविः + शोभते →	कविश्शोभते, कविः शोभते
रामः + शेते →	रामश्शेते, रामः शेते
मोहनः + षष्ठः →	मोहनष्षष्ठः, मोहनः षष्ठः
नृपः + षष्ठः →	नृपष्षष्ठः, नृपःषष्ठः

निष्कर्षः– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से विसर्ग केवल खर् प्रत्याहार (वर्गों के 1, 2 वर्ण तथा श् ष् स्) के परे या अवसान रहते होता है।

- खर् से भिन्न अर्थात् "वर्गों के 3, 4, 5 ह् य् व् र् ल् ह् या स्वर" के परे रहते, 'ससजुषोरुः' द्वारा रुत्व के 'र्' का श्रवण होगा। (आगे कहे जाने वाले उत्व सन्धि के प्रसंग के अलावा)

संधि विच्छेद	संधियुक्त रूप
गुरोः + भाषणम्	→ गुरोर्भाषणम्।
वायुः + वाति	→ वायुर्वाति।
हरिः + गच्छति	→ हरिर्गच्छति।
विष्णोः+ माया	→ विष्णोर्माया।
रवेः+ गतिः	→ रवेर्गतिः।
अवनेः+ गतिः	→ अवनेर्गतिः
हरिः+ एति	→ हरिरेति।
विष्णुः+ आयाति	→ विष्णुरायाति।
कविः+ अगायत्	→ कविरगायत्।
पितुः+ इच्छा	→ पितुरिच्छा।
मातुः+ इच्छा	→ मातुरिच्छा
हरिः+ अवदत्	→ हरिरवदत्
हरिः+ आयाति	→ हरिरायाति

उत्व सन्धि

'अ:अ' की स्थिति

- ह्रस्व अकार के बाद स्थित रुत्व के 'र्' के स्थान पर 'उ' हो जाता है, यदि 'र्' के आगे भी ह्रस्व अकार हो। (**अतो रोरप्लुतादप्लुते**) 'र्' के स्थान पर 'उ' होने पर यथाप्राप्त गुण कार्य तथा पूर्वरूप कार्य भी हो जाता है।

मूल रूप	रुत्व	उत्व	गुण	निष्पन्नरूप
(शिवः) शिवस् + अर्च्यः	शिवर् अर्च्यः	शिव उ अर्च्यः	शिवो अर्च्यः	शिवोऽर्च्यः
(देवः) देवस् + अर्च्यः	देवर् अर्च्यः	देव उ अर्च्यः	देवो अर्च्यः	देवोऽर्च्यः
(रामः) रामस् + अस्ति	रामर् अस्ति	राम उ अस्ति	रामो अस्ति	रामोऽस्ति
(देवः) देवस् + अर्चनीयः	देवर् अर्चनीयः	देव उ अर्चनीयः	देवो अर्चनीयः	देवोऽर्चनीयः
(कः) कस् + अपि	कर् अपि	क उ अपि	को अपि	कोऽपि
(कः) कस् + अयम्	कर् अयम्	क उ अयम्	को अयम्	कोऽयम्
(सः) सस् + अपवादः	सर् अपवादः	स उ अपवादः	सो अपवादः	सोऽपवादः

'अ : हश्' की स्थिति में

- ह्रस्व अकार के बाद स्थित रुत्व के 'र्' को 'उ' हो जाता है, हश् (वर्गों के 3, 4, 5, ह् य् व् र् ल्) वर्णों के परे रहते। यहाँ यथाप्राप्त गुण कार्य भी हो जायेगा। (**"हशि च"**)

मूल रूप	रुत्व	उत्व	गुण करने के बाद निष्पन्न रूप
(रामः) रामस् + हसति	रामर् हसति	राम उ हसति	रामो हसति
(बालः) बालस् + लिखति	बालर् लिखति	बाल उ लिखति	बालो लिखति
(नृपः) नृपस् + दास्यति	नृपर् दास्यति	नृप उ दास्यति	नृपो दास्यति
(रामः) रामस् + जयति	रामर् जयति	राम उ जयति	रामो जयति
(मनः) मनस् + रथः	मनर् रथः	मन उ रथः	मनोरथः
(शिवः) शिवस् + वन्द्यः	शिवर् वन्द्यः	शिव उ वन्द्यः	शिवो वन्द्यः
(घटः) घटस् + नास्ति	घटर् नास्ति	घट उ नास्ति	घटो नास्ति
(लक्ष्मणः) लक्ष्मणस् + मूर्च्छितः	लक्ष्मणर् मूर्च्छितः	लक्ष्मण उ मूर्च्छितः	लक्ष्मणो मूर्च्छितः
(सूर्यः) सूर्यस् + भाति	सूर्यर् भाति	सूर्य उ भाति	सूर्यो भाति

रलोप सन्धि

- रेफ (र्) के बाद रेफ (र्) के रहने पर, पूर्व रेफ (र्) का लोप हो जाता है। (**रो रि**) रेफ (र्) का लोप होने पर उससे पूर्व में स्थित अण् (अ, इ, उ) को दीर्घ भी हो जाता है। यह दीर्घ का कार्य **"ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः"** सूत्र से होता है। इस सूत्र के अनुसार ढ् या र् का लोप होने पर उससे पूर्व में स्थित अण् (अ, इ, उ) को दीर्घ हो जाता है।
- यहाँ 'र्' का लोप हुआ है, अतः उससे पूर्व में स्थित अण् (अ, इ, उ) का भी दीर्घ हो जायेगा।

मूल रूप	रुत्व	र-लोप	दीर्घ के बाद सिद्ध रूप
(हरिः) हरिस् + रम्यः	हरिर् + रम्यः	हरि रम्यः	हरी रम्यः
(शिशुः) शिशुस् + रोदिति	शिशुर् + रोदिति	शिशु रोदिति	शिशू रोदिति
(गुरुः) गुरुस् + राजते	गुरुर् + राजते	गुरु राजते	गुरू राजते

Scanned by CamScanner

(शम्भुः) शम्भुस् + राजते	शम्भुर् + राजते	शम्भु राजते	शम्भू राजते
(गुरुः) गुरुस् + रुग्णः	गुरुर् + रुग्णः	गुरु रुग्णः	गुरू रुग्णः
(दाशरथिः) दाशरथिस् + रामः	दाशरथिर् रामः	दाशरथि रामः	दाशरथी रामः
निर् रसः		नि रसः	नीरसः
निर् रवः		नि रवः	नीरवः
पुनर् + रमते		पुन रमते	पुना रमते
अन्तर् + राष्ट्रियः		अन्त राष्ट्रियः	अन्ताराष्ट्रियः
प्रातर् + राजते		प्रात राजते	प्राता राजते

मनोरथः–यहाँ 'मनस् + रथः' इस स्थिति में स् को रुत्व होने पर "हशि च" सूत्र से उत्व तथा "रो रि" सूत्र से रेफ का लोप प्राप्त था, लेकिन "हशि च" सूत्र (6–1–114) की दृष्टि में, "रो रि" सूत्र (8–3–14) असिद्ध है। अतः यहाँ रेफ का लोप नहीं होकर "हशि च" से उत्व कार्य ही होगा। इसी तरह मनोरञ्जनम्, मनोरोग आदि में भी यह कार्य समझना चाहिए।

विसर्ग सन्धि सार

विसर्ग के आगे ये रहें, तो	विसर्ग के स्थान पर यह होगा	उदाहरण
क् ख्	विकल्प से जिह्वामूलीय, पक्ष में विसर्ग ही	क ᳵखनति, कःखनति
च् छ्	'श्' दिखाई देगा	कश्चित्, मनश्च
ट् ठ्	'ष्' दिखाई देगा	रामष्टीकते, धनुष्टंकारः
त् थ्	'स्' दिखाई देगा	विष्णुस्त्राता, नमस्ते
प् फ्	विकल्प से उपध्मानीय, पक्ष में विसर्ग ही	कᳶफलति, कःफलति
श्	एक बार श्, एक बार :	हरिश्शेभते, हरिः शोभते
ष्	एक बार ष्, एक बार :	हरिष्षष्ठः हरिः षष्ठः
स्	एक बार स्, एक बार :	सर्पस्सरति, सर्पः सरति
सभी वर्गों के 3, 4, 5	रुत्व का 'र्' दिखाई देगा	वायुर्वाति
ह् य् व् र् ल् (उत्व प्रसंग को छोड़कर)		
स्वर (उत्व प्रसंग को छोड़कर)	रुत्व का 'र्' दिखाई देगा	हरिरेति
(अः अ)	र् को उ, गुण तथा पूर्वरूप	कोऽपि
(अः हश्)	र् को 'उ' तथा गुण	रामो हसति

अभ्यासार्थ प्रश्न

(सन्धि प्रकरण)

1. सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार संधि कितने प्रकार की है?
(अ) 3 (ब) 5
(स) 4 (द) 6 ( )
2. 'श्रीशः' में सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (ब) यण्सन्धि
(स) वृद्धिसन्धि (द) सवर्णदीर्घसन्धि ( )
3. निम्नलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) नास्ति (ब) हरीशः
(स) महर्षिः (द) मातृणम् ( )
4. 'सर्व + ऐक्यम्' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) सर्वेक्यम् (ब) सर्वैक्यम्
(स) सर्वाक्यम् (द) सर्व एक्यम् ( )
5. 'प्रष्ठ + ऊहः' यहाँ सन्धि होगी–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) यण्सन्धि (द) ष्टुत्वसन्धि ( )
6. 'महतीहा' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) महती + इहा (ब) महति + ईहा
(स) महति + इहा (द) महती + ईहा ( )
7. 'सदैव' में सन्धि होगी–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) जश्त्वसन्धि ( )
8. 'लृ + लृकारः' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) लृकारः (ब) लृकारः
(स) ल्लृकारः (द) लाकारः ( )
9. इनमें से भिन्न पद है–
(अ) देवर्षिः (ब) नवोढा
(स) राकेशः (द) कृष्णैकत्वम् ( )
10. 'कर्तृणम्' में सन्धि है–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) सवर्णदीर्घ सन्धि (द) यण्सन्धि ( )
11. 'सूर्योदयः' में सन्धि है–
(अ) गुणसन्धि (ब) वृद्धिसन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) यण्सन्धि ( )
12. 'अक्षौहिणी' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) अक्ष + ऊहिनी (ब) अक्ष + ओहिनी
(स) अक्ष + उहिनी (द) अक्षा + ऊहिनी ( )
13. निम्नलिखित में भिन्न पद है–
(अ) प्रत्येकम् (ब) यद्यपि
(स) धात्रंश (द) ब्रह्मर्षिः ( )
14. मृन्मयम् में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि
(स) यण् (द) अनुनासिक ( )
15. 'वटवृक्षः' में सन्धि है–
(अ) यण्सन्धि (ब) अयादिसन्धि
(स) गुणसन्धि (द) जश्त्वसन्धि ( )
16. 'प्रेजते' में सन्धि है–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) पररूपसन्धि (द) परसवर्णसन्धि ( )
17. 'विष्णो + अव' में सन्धि है–
(अ) अयादिसन्धि (ब) वृद्धिसन्धि
(स) पररूपसन्धि (द) पूर्वरूपसन्धि ( )
18. 'पतञ्जलिः' में सन्धि है–
(अ) पररूपसन्धि (ब) पूर्वरूपसन्धि
(स) पूर्वसवर्णसन्धि (द) परसवर्णसन्धि ( )
19. अधोलिखित में से भिन्न है–
(अ) शकन्धुः (ब) कर्कन्धुः
(स) कुलटा (द) कदोम् ( )
20. 'पवनः' में सन्धि है–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) यण्सन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) गुणसन्धि ( )
21. 'दन्त + ओष्ठम्' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) दन्तौष्ठम् (ब) दन्तोष्ठम्
(स) दन्त्योष्ठम् (द) (अ) व (ब) दोनों ( )
22. 'पित्राज्ञा' में सन्धि है–
(अ) यण्सन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) वृद्धिसन्धि (द) सवर्णदीर्घसन्धि ( )

Scanned by CamScanner

23. 'भानोऽव' में सन्धि है–
(अ) पूर्वरूपसन्धि (ब) पररूपसन्धि
(स) पूर्वसवर्णसन्धि (द) परसवर्णसन्धि ( )

24. 'उप + ओषति' में सन्धि होगी–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) पररूपसन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) पूर्वरूपसन्धि ( )

25. 'प्र + ऊढ:' में सन्धि होगी–
(अ) गुणसन्धि (ब) वृद्धिसन्धि
(स) यण्सन्धि (द) कोई नहीं ( )

26. 'स्थूलौतु:' में सन्धि होगी–
(अ) अयादिसन्धि (ब) वृद्धिसन्धि
(स) परसवर्णसन्धि (द) पूर्वरूपसन्धि ( )

27. 'प्र + एषक:' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) प्रैषक: (ब) प्रौषक:
(स) प्रेषक: (द) परेषक: ( )

28. 'हरे + अव' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) हरेव (ब) हरेऽव
(स) हरयव (द) हरेअव ( )

29. 'प्र + ऊढा' में सन्धि होगी–
(अ) गुण (ब) अयादि
(स) पररूप (द) वृद्धि ( )

30. 'वाक् + मयम्' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) वान्मयम् (ब) वाङ्गमयम्
(स) वाङ्मयम् (द) वाग्मयम् ( )

31. 'प्र + ऊढि:' में सन्धि होगी–
(अ) वृद्धिसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) यणसन्धि ( )

32. 'अक्ष + ऊहिनी' में सन्धि होगी–
(अ) यण्सन्धि (ब) सवर्णदीर्घसन्धि
(स) गुणसन्धि (द) वृद्धिसन्धि ( )

33. अनुस्वारसन्धि का अपवाद उदाहरण है–
(अ) सम्राट् (ब) सम्राजौ
(स) सम्राज: (द) तीनों ( )

34. नवोढा में सन्धि है–
(अ) वृद्धि (ब) अयादि
(स) गुण (द) पूर्वरूप ( )

35. 'तद्धितम्' में सन्धि है–
(अ) पूर्वसवर्णसन्धि (ब) परसवर्णसन्धि
(स) श्चुत्वसन्धि (द) चर्त्वसन्धि ( )

36. 'लक्ष्मी + छाया' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) लक्ष्मीछाया (ब) लक्ष्मीच्छाया
(स) लक्ष्मीच्छाया (द) (अ) व (स) दोनों ( )

37. 'मनोवेग:' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) उत्त्व
(स) वृद्धि (द) अयादि ( )

38. 'प्र + ऊढवान्' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) प्रौढवान् (ब) प्रोढवान्
(स) दोनों (द) दोनों नहीं ( )

39. 'उज्ज्वल:' किस सन्धि का उदाहरण है–
(अ) यण्सन्धि (ब) श्चुत्वसन्धि का
(स) ष्टुत्वसन्धि का (द) चर्त्वसन्धि का ( )

40. 'लभ् + स्यते' में सन्धि होगी–
(अ) चर्त्वसन्धि (ब) जश्त्वसन्धि
(स) ष्टुत्वसन्धि (द) पूर्वसवर्णसन्धि ( )

41. 'मनोरञ्जनम्' में सन्धि है–
(अ) वृद्धि (ब) गुण
(स) उत्त्व (द) अयादि ( )

42. 'ऋण + ऋणम्' में सन्धि होगी–
(अ) यण्सन्धि (ब) सवर्णदीर्घसन्धि
(स) गुणसन्धि (द) वृद्धिसन्धि ( )

44. अधोलिखित में से अशुद्ध रूप है–
(अ) उज्ज्वल: (ब) तच्च
(स) शरत्चन्द्र: (द) याच्वा ( )

45. यहाँ किस पद में श्चुत्व नहीं हुआ–
(अ) शिवश्च (ब) तच्च
(स) दरजलम् (द) प्रश्न: ( )

46. 'स्व + ईर:' में सन्धि होगी–
(अ) गुणसन्धि (ब) वृद्धिसन्धि
(स) यण्सन्धि (द) हल्सन्धि ( )

47. 'उड्डीन:' में सन्धि है–
(अ) अच्सन्धि (ब) प्रकृतिभावसन्धि
(स) हल्सन्धि (द) स्वादिसन्धि ( )

48. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) ऋणार्णम् (ब) पितृणम्
(स) प्रार्णम् (द) दशार्णम् ( )

49. 'श्रियै + उद्यत:' में सन्धि होगी–
(अ) प्रकृतिभावसन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) अयादिसन्धि (द) वृद्धिसन्धि ( )

50. 'अच् + अन्तम्' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) अचन्तम् (ब) अचान्तम्
(स) अजन्तम् (द) अदन्तम् ( )

51. 'सुखेन ऋत:' में समस्त व सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) सुखर्त: (ब) सुखार्त:
(स) सुखेनार्त: (द) सुखेनर्त: ( )

52. 'खरि च' सूत्र किस सन्धि का विधायक है–
(अ) जश्त्वसन्धि (ब) चर्त्वसन्धि
(स) विसर्गसन्धि (द) स्वादिसन्धि ( )

53. 'तन्मात्रम्' में सन्धि है–
(अ) परसवर्णसन्धि (ब) चर्त्वसन्धि
(स) अनुनासिक सन्धि (द) अनुस्वार सन्धि ( )

54. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) तन्मात्रम् (ब) चिन्मयम्
(स) वाङ्मयम् (द) शङ्कर: ( )

55. अधोलिखित में अशुद्ध पद है–
(अ) पल्लव: (ब) तल्लीन:
(स) उलङ्घनम् (द) तच्छुत्वा ( )

56. शिरोवेदना में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) उत्त्व
(स) वृद्धि (द) अयादि ( )

57. 'हरिस्त्रायते' में सन्धि है–
(अ) विसर्गसन्धि (ब) हल्सन्धि
(स) अच्सन्धि (द) श्चुत्वसन्धि ( )

58. 'हरिश्शेते' में सन्धि है–
(अ) ष्टुत्व सन्धि (ब) श्चुत्वसन्धि
(स) चर्त्वसन्धि (द) जश्त्वसन्धि ( )

59. 'वाक् + हरि:' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) वाक् घरि: (ब) वाक्घरि:
(स) वाग्घरि: (द) वाघरि: ( )

60. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) रामश्च (ब) कश्चित्
(स) हरिश्शेते (द) साधुश्चलति ( )

61. अधोलिखित उदाहरणों में से जिह्वामूलीय नहीं है–
(अ) विप्र⨯कथयति (ब) श्रमिक⨯खनति
(स) शिव⨯खादति (द) वृक्ष⨯फलति ( )

62. अधोलिखित में भिन्न पद है–
(अ) वायुर्वाति (ब) गुरोर्भाषणम्
(स) विष्णोर्माया (द) सर्पस्सरति ( )

63. अधोलिखित में भिन्न पद है–
(अ) चक्रिण्ढौकसे (ब) रामष्टीकते
(स) षट् सन्त: (द) षष्ठ: ( )

64. 'दिक् + मात्रम्' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) दिग्मात्रम् (ब) दिग्मात्रम्
(स) दिङ्मात्रम् (द) दिम्मात्रम् ( )

65. विसर्ग सन्धि का ही अवान्तरभेद है–
(अ) अच्सन्धि (ब) प्रकृतिभाव सन्धि
(स) हल्सन्धि (द) स्वादिसन्धि ( )

66. 'मनोरथ:' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) मनस् + रथ: (ब) मनोस् + रथ:
(स) मनो + रथ: (द) मनोर् + रथ: ( )

67. 'अन्तर् + राष्ट्रिय:' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) अन्तर्राष्ट्रीय: (ब) अन्तर्राष्ट्रिय
(स) अन्ताराष्ट्रिय: (द) अन्त:राष्ट्रिय: ( )

68. 'जगदीश:' 'षडानन:'–किस सन्धि के उदाहरण है?
(अ) जश्त्वसन्धि (ब) चर्त्वसन्धि
(स) अनुनासिक सन्धि (द) श्चुत्वसन्धि ( )

69. 'एतद् + मुरारि:' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) एतद्मुरारि: (ब) एतन्मुरारि:
(स) एतत्मुरारि: (द) (अ) व (ब) दोनों ( )

70. 'रो रि' सूत्र का उदाहरण नहीं है–
(अ) हरी रम्य: (ब) मनोरथ:
(स) प्राता राजते (द) अन्ताराष्ट्रिय: ( )

71. 'सम् + यन्ता' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) संयन्ता (ब) सँय्यन्ता
(स) सय्यन्ता (द) (अ) व (ब) दोनों ( )

72. भिन्न उदाहरण है–
(अ) अब्भवि: (ब) वाग्घरि:
(स) तद्धितम् (द) वाङ्मयम् ( )

73. अनुस्वारपरसवर्ण का उदाहरण नहीं है–
(अ) अङ्कित: (ब) शान्त:
(स) गुम्फित: (द) विध्वंस: ( )

74. 'अब्भवि:' में सन्धि है–
(अ) पूर्वसवर्णसन्धि (ब) चर्त्वसन्धि
(स) परसवर्णसन्धि (द) स्वादिसन्धि ( )

75. 'प्रातर् + राजते' में सन्धियुक्त पद क्या होगा ?
(अ) प्राता राजते (ब) प्रात: राजते
(स) प्रातर्राजते (द) प्रातोराजते ( )

76. 'शिरोरुह:' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि
(स) अयादि (द) उत्त्व ( )

77. 'षण्णवति:' में सन्धि है–
(अ) श्चुत्व सन्धि (ब) अनुस्वार सन्धि
(स) ङमुडागम सन्धि (द) ष्टुत्वसन्धि ( )

Scanned by CamScanner

78. 'झयो होऽन्यतरस्याम्' सूत्र से होता है–
(अ) वृद्धि (ब) पूर्वरूप
(स) पूर्वसवर्ण (द) परसवर्ण ( )

79. अधोलिखित में उपध्मानीय है–
(अ) बाल≍पठति (ब) विप्र≍कथयति
(स) श्रमिक≍खनति (द) सभी ( )

80. 'हशि च' सूत्र का उदाहरण नहीं है–
(अ) शिवो वन्द्यः (ब) देवोऽर्च्यः
(स) रामो जयति (द) मनोरथः ( )

81. 'कविः + शोभते' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) कविः शोभते (ब) कविस् शोभते
(स) कविश्शोभते (द) (अ) व (स) दोनों ( )

82. 'हरी रम्यः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) हरिः + रम्यः (ब) हरी + रम्यः
(स) हरिर् + रम्यौ (द) हरी + रम्यौ ( )

83. यणसन्धि विधायक सूत्र है–
(अ) इको यणचि (ब) आद्गुणः
(स) वृद्धिरेचि (द) एचोऽयवायावः ( )

84. 'यादृक् + हविः' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) यादृक्छविः (ब) यादृग्हविः
(स) यादृग्घविः (द) (ब) एवं (स) दोनों ( )

85. 'रामायणम्' का सन्धि विच्छेद है–
(अ) राम + अयणम् (ब) राम + अयनम्
(स) रामा + अयणम् (द) रामा +अयनम् ( )

86. अयादिसन्धि विधायक सूत्र है–
(अ) इकोयणचि (ब) एचोऽयवायावः
(स) एङि पररूपम् (द) छे च ( )

87. त्रिमात्रिक अच् कहलाता है–
(अ) ह्रस्व (ब) दीर्घ
(स) प्लुत (द) प्रकृति ( )

88. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) तल्लीनः (ब) उल्लेखः
(स) विद्वाँल्लिखति (द) सूल्लेखः ( )

89. 'राकेशः' में सन्धि है–
(अ) पररूप (ब) अयादि
(स) वृद्धि (द) गुण ( )

90. कृष्णैकता में सन्धि है–
(अ) यण् (ब) वृद्धि
(स) गुण (द) पररूप ( )

91. जलौघः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) अयादि
(स) वृद्धि (द) यण् ( )

92. मध्वरिः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण्
(स) वृद्धि (द) अयादि ( )

93. 'यदीच्छा' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) यदि + इच्छा (ब) यद् + इच्छा
(स) यदि + ईच्छा (द) (अ) व (ब) दोनों ( )

94. 'तव + लृकारः' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) तवल्कारः (ब) तवलृकारः
(स) तवृकारः (द) तवर्कारः ( )

95. वृद्धियुक्त पद नहीं है–
(अ) तवैतिह्यम् (ब) महौषधम्
(स) वित्तैषणा (द) सर्वोत्तमः ( )

96. अधोलिखित में से भिन्न है–
(अ) सुध्युपास्यः (ब) मध्वरिः
(स) धात्रंशः (द) रामायणम् ( )

97. संधिकार्य कहाँ नित्य नहीं होता ?
(अ) एक पद में (ब) धातु–उपसर्ग के कार्य में
(स) समास में (द) वाक्य में ( )

98. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) विच्छेदः (ब) अनुच्छेदः
(स) स्वच्छाया (द) लक्ष्मीच्छाया ( )

99. 'शिवो वन्द्यः' में सन्धि है–
(अ) स्वादिसन्धि (ब) हल्सन्धि
(स) विसर्गसन्धि (द) अच्सन्धि ( )

100. 'मधुलिट् + हरति' में सन्धियुक्त होगा–
(अ) मधुलीहरति (ब) मधुलीढरति
(स) मधुलिट्धरति (द) मधुलिड्ढरति ( )

101. 'अन्वयः' में सन्धि है–
(अ) यण्-सन्धि (ब) गुण सन्धि
(स) वृद्धि सन्धि (द) अयादि सन्धि ( )

102. 'उद् + श्रेयः' में सन्धि युक्त पद होगा–
(अ) उत्श्रेयः (ब) उच्श्रेयः
(स) उच्छ्रेयः (द) (ब) व (स) दोनों ( )

103. 'उप + एधते' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) उपैधते (ब) उपेधते
(स) उपेऽधते (द) कोई नहीं ( )

104. पररूपसन्धि को बाधकर अपवादस्वरूप वृद्धि हुई है–
(अ) प्रौहः (ब) प्रौढः
(स) प्रौढिः (द) प्रैषः ( )

105. 'लृ + आकृतिः' में सन्धि होगी–
(अ) दीर्घ सन्धि (ब) यण् सन्धि
(स) अयादि सन्धि (द) वृद्धि सन्धि ( )

106. 'मोहनः + षष्ठः' में सन्धि होगी–
(अ) अच्सन्धिः (ब) प्रकृतिभाव
(स) विसर्गसन्धि (द) स्वादिसन्धि ( )

107. 'मनोरोगः' यहाँ सन्धि है–
(अ) उत्वं सन्धि (ब) वृद्धि सन्धि
(स) यण् सन्धि (द) दीर्घ सन्धि ( )

108. 'उद् + स्थाय' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) उद्स्थाय (ब) उत्स्थाय
(स) उत्थाय (द) उद्थाय ( )

109. 'नमशिशवाय' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) श्चुत्व
(स) विसर्ग (द) वृद्धि ( )

110. 'देवेशः' सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि
(स) अयादि (द) सवर्ण दीर्घ ( )

111. 'यथार्थः' में सन्धि है–
(अ) पररूप सन्धि (ब) गुणसन्धि
(स) सवर्ण-दीर्घ सन्धि (द) यणसन्धि ( )

112. 'भानु + ऊष्मा' में सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) भानुष्मा (ब) भानूष्मा
(स) भानउष्मा (द) भानोषमा ( )

113. 'तथेति' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) तथ + इति (ब) तथा + एति
(स) तथा + इति (द) तथे + इति ( )

114. 'तथेष्ट' में सन्धि है–
(अ) अयादि (ब) यण्
(स) गुण (द) पररुप ( )

115. 'एकोनः' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) एका + उनः (ब) एक + ऊनः
(स) एक + उनः (द) एक + इनः ( )

116. 'एकैकः' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि
(स) पररुप (द) अयादि ( )

117. 'जलौघः' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) जल + ओघः (ब) जला + ओघः
(स) जले + ओघः (द) जल + औघः ( )

118. 'प्राच्छति' में सन्धि है–
(अ) पूर्वरुप (ब) अयादि
(स) वृद्धि (द) गुण ( )

119. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) इत्यलम् (ब) वध्वागमः
(स) पित्रे (द) हरये ( )

120. अयादि सन्धि का उदाहरण नहीं है–
(अ) विष्णविह (ब) मात्राज्ञा
(स) गायन्ति (द) चयनम् ( )

121. 'भावयंति' में सन्धि है–
(अ) यण् (ब) गुण
(स) अयादि (द) पररुप ( )

122. 'ते + अत्र' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) तेअत्र (ब) तोऽत्र
(स) तत्रे (द) तेऽत्र ( )

123. अधोलिखित में से भिन्न पद हैं–
(अ) उपोषति (ब) पतञ्जलिः
(स) मनीषा (द) प्रैधते ( )

124. 'रामश्च' में सन्धि हैं–
(अ) चर्त्व (ब) जश्त्व
(स) ष्टुत्व (द) श्चुत्व ( )

125. 'उद् + ज्वलः' का सन्धियुक्त पद होगा–
(अ) उजज्वलः (ब) उज्ज्वलः
(स) उज्ज्वलः (द) उज्वलः ( )

126. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) सच्चित् (ब) रामश्च
(स) हरिश्शेते (द) राष्ट्रम् ( )

127. 'उत्पन्नः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) उत् + पन्नः (ब) उद् + पन्नः
(स) उच् + पन्नः (द) उत् + पनः ( )

128. 'निश्छलः' में सन्धि होगी–
(अ) जश्त्व (ब) चर्त्व
(स) ष्टुत्व (द) विसर्ग ( )

129. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) नमो नमः (ब) मनोहरः
(स) यशोदा (द) दिग्गजः ( )

130. 'को + अपि' में सन्धि है–
(अ) पूर्वरूप (ब) पररुप
(स) उत्व (द) यण् ( )

131. अधोलिखित में से भिन्न पद हैं।
(अ) वाग्हरि (ब) अब्ब्रविः
(स) उद्हारः (द) वागीशः ( )

Scanned by CamScanner

132. 'वृक्षोपरि' में सन्धि है–
(अ) पररुप (ब) अयादि
(स) गुण (द) यण् ( )

133. 'मृन्मयम्' का सन्धि विच्छेद होगा–
(अ) मृत् + मयम् (ब) मृक् + मयम्
(स) मृद् + मयम् (द) मृद् + अयम् ( )

134. 'प्रियंवद' में सन्धि है–
(अ) अनुस्वार परसवर्ण (ब) अनुस्वार
(स) अनुनासिक (द) परसवर्ण ( )

135. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) पयांसि (ब) नंस्यति
(स) यशांसि (द) मातं वन्दे ( )

136. 'अञ्चितः' में सन्धि है–
(अ) श्चुत्व (ब) परसवर्ण
(स) अनुस्वार परसवर्ण (द) जश्त्व ( )

137. 'राज्ञः' का सन्धिविच्छेद होगा–
(अ) राज + नः (ब) राज् + ञ्
(स) राज् + ज्ञः (द) राज् + नः ( )

138. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) सज्जनः (ब) तच्च
(स) प्रश्नः (द) शिवश्च ( )

139. 'मात्रनुमतिः' में सन्धि है–
(अ) यण् (ब) अयादि
(स) गुण (द) सवर्ण दीर्घ ( )

140. अधोलिखित में से भिन्न पद हैं–
(अ) नीरसः (ब) प्राता राजते
(स) दाशरथी रामः (द) रामो हसति ( )

141. 'प्रेषकः' सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण्
(स) पररुप (द) अयादि ( )

142. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) स्वैरः (ब) महौषधम्
(स) परेलयति (द) प्रैष्यः ( )

143. 'तृ + आत्मजः' में सन्धि युक्त पद होगा–
(अ) नात्मजः (ब) नतमजः
(स) त्रात्मजः (द) त्रतमर्ज ( )

144. अधोलिखित में से भिन्न पद हैं–
(अ) शान्तः (ब) गन्ता
(स) त्वं चतुरः (द) अञ्चितः ( )

145. 'श्रेयांसि' में सन्धि है–
(अ) परसवर्ण (ब) अनुस्वार
(स) अनुस्वार परसवर्ण (द) पररुप ( )

उत्तर तालिका

(1) ब	(2) द	(3) स	(4) ब	(5) अ	(6) द	(7) अ	(8) ब	(9) द	(10) स
(11) अ	(12) अ	(13) द	(14) द	(15) ब	(16) स	(17) द	(18) अ	(19) द	(20) स
(21) द	(22) अ	(23) अ	(24) ब	(25) ब	(26) ब	(27) स	(28) ब	(29) द	(30) स
(31) अ	(32) द	(33) द	(34) स	(35) अ	(36) द	(37) ब	(38) ब	(39) ब	(40) अ
(41) स	(42) द	(43) स	(44) स	(45) द	(46) ब	(47) स	(48) ब	(49) स	(50) स
(51) ब	(52) ब	(53) स	(54) द	(55) स	(56) ब	(57) अ	(58) ब	(59) स	(60) स
(61) द	(62) द	(63) स	(64) स	(65) द	(66) अ	(67) स	(68) अ	(69) द	(70) ब
(71) द	(72) द	(73) द	(74) अ	(75) अ	(76) द	(77) द	(78) स	(79) अ	(80) ब
(81) द	(82) अ	(83) अ	(84) द	(85) ब	(86) ब	(87) स	(88) द	(89) द	(90) ब
(91) स	(92) ब	(93) अ	(94) अ	(95) द	(96) द	(97) द	(98) द	(99) अ	(100) द
(101) अ	(102) द	(103) अ	(104) द	(105) ब	(106) स	(107) अ	(108) स	(109) स	(110) अ
(111) स	(112) ब	(113) स	(114) स	(115) ब	(116) ब	(117) अ	(118) स	(119) द	(120) ब
(121) स	(122) द	(123) द	(124) द	(125) स	(126) द	(127) ब	(128) द	(129) द	(130) अ
(131) द	(132) स	(133) स	(134) ब	(135) द	(136) स	(137) द	(138) स	(139) अ	(140) द
(141) स	(142) स	(143) स	(144) स	(145) ब					

अध्याय 3

कारक एवं अनुवाद

कारक

क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्।
'क्रियां करोति' इति कारकम्।
क्रियान्वयि कारकम्।
क्रियानिष्पादकत्वं कारकत्वम्।

- वाक्य में जिन-जिन तत्त्वों (घटकों) का क्रिया के साथ सीधा अन्वय होता है, वे कारक कहलाते है। अर्थात् क्रिया को सम्पादित करने वाले तत्त्व कारक कहलाते है।
- जो क्रिया के साथ सम्बन्ध को प्राप्त करता है, वही कारक है। यह कारक सामान्यतः 6 प्रकार का है।

(1) कर्ता (2) कर्म
(3) करण (4) सम्प्रदान
(5) अपादान और (6) अधिकरण।

कर्ता कर्म च करणं च, सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरण इत्याहुः कारकाणि षट्।।

- यहाँ यह ध्यातव्य है कि सम्बन्ध को कारक नहीं माना गया है। क्योंकि सम्बन्ध कारक का सीधा अन्वय क्रिया के साथ नहीं होता। जैसे– रामः ब्राह्मणस्य पुत्रं पश्यति। यहाँ राम के देखने की क्रिया पुत्र से सम्बद्ध है, न कि ब्राह्मण से। अतः सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता।
- पाणिनि ने अष्टाध्यायी में कारकों का अधोलिखित क्रम रखा है–

1. अपादान – ध्रुवमपायेऽपादानम् 1.4.24
2. सम्प्रदान – कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् 1.4.32
3. करण – साधकतमं करणम् 1.4.42
4. अधिकरण – आधारोऽधिकरणम् 1.4.45
5. कर्म – कर्तुरीप्सिततमं कर्म 1.4.49
6. कर्ता – स्वतन्त्रः कर्ता 1.4.54

- अतः इनमें पूर्व कार्य के प्रति, पर कार्य (बाद वाला कार्य) बलवान् होने को देखने हेतु, इस क्रम का ज्ञान आवश्यक है।

- एक वाक्य में सभी कारक–अयोध्यायाः राजा गङ्गातीरे गोष्ठाद् विप्राय हस्तेन गां ददाति।

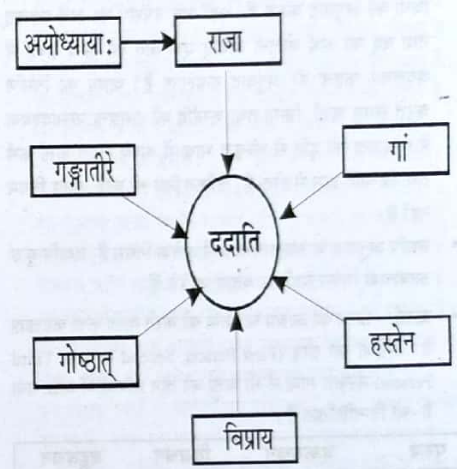

- यहाँ राजा, गङ्गातीर, गोष्ठ, विप्र, हस्त और गो सभी देने की क्रिया से सम्बद्ध है, अतः ये कारक है। देने की क्रिया में 'अयोध्या' का सीधा सम्बन्ध नहीं होने के कारण वह कारक नहीं है। यद्यपि अयोध्या पद का अन्वय राजा के साथ है, लेकिन कारक वही होता है, जिसका अन्वय क्रिया के साथ हो।
- इन कारकों के आधार पर प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त विभक्तियाँ होती है। **विभक्तियाँ कुल सात हैं।**
- सामान्यतः कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, करण में तृतीया, सम्प्रदान में चतुर्थी, अपादान में पञ्चमी तथा अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

Scanned by CamScanner

उक्त (अभिहित) एवं अनुक्त (अनभिहित) कारक

- जिस कारक के वचन-पुरुष आदि के अनुसार, क्रिया का वचन एवं पुरुष निर्धारित होता है, उसे उक्त/अभिहित कारक कहते हैं। उक्त कारक के वचन या पुरुष में परिवर्तन करते ही, क्रिया का वचन या पुरुष भी परिवर्तित हो जाता है। जो कारक उक्त होता है, उसमें हमेशा प्रथमा विभक्ति होती है। अर्थात् यदि कर्ता उक्त है तो उसमें प्रथमा विभक्ति, यदि कर्म उक्त है, तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।
- इसी उक्त के आधार पर वाच्य का निर्धारण होता है। जिस वाक्य में कर्ता उक्त हो, वह कर्तृवाच्य का वाक्य होता है तथा जिस वाक्य में कर्म उक्त हो, वह कर्मवाच्य का वाक्य होता है।
- इसी कारण कर्तृवाच्य में कर्ता के वचन एवं पुरुष के अनुसार क्रिया का वचन एवं पुरुष निर्धारित होता है। इसी तरह कर्मवाच्य में कर्म के वचन एवं पुरुष के अनुसार क्रिया का वचन एवं पुरुष निर्धारित होता है।

कारक एवं अनुवाद

- **किसी** भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दों में बदलने की विधा को अनुवाद कहते हैं। यहाँ अनु उपसर्ग का अर्थ पश्चात् तथा वद् का अर्थ बोलना अर्थात् एक बात को अन्य शब्दों में बदलकर कहना ही अनुवाद कहलाता है। वाक्य का निर्माण करते समय कर्त्ता, क्रिया तथा कर्मादि को समझना परमावश्यक है। सरलता की दृष्टि से संस्कृत भाषा में वाक्य रचना कर्त्ता कर्म तथा क्रियादि क्रम से होती है, लेकिन फिर भी कोई कठोर नियम नहीं है।
- यद्यपि अनुवाद के संस्कृत भाषा में अनेक नियम है, तथापि कुछ आवश्यक नियम यहाँ पर बताए जा रहे हैं।
- **कर्त्ता:**–क्रिया का आश्रय या क्रिया को करने वाला कर्त्ता कहलाता है। अंग्रेजी की तरह (First Person, Second Person, Third Person) संस्कृत भाषा में भी कर्त्ता को तीन श्रेणियों में बांटा गया है-जो निम्नलिखित हैं।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः/सा/तत्	तौ/ते/ते	ते/ताः/तानि
मध्यम पुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्
उत्तम पुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्

- अर्थात् संक्षिप्त में यह कह सकते हैं मध्यम तथा उत्तम पुरुष को छोड़कर संसार के सभी कर्त्ताओं का समावेश प्रथम पुरुष में हो जाता है।

(1) उक्त कारक के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है।-जैसे धावकः धावति।

- यहाँ धावक कर्ता प्रथमपुरुष का एकवचन है, इसलिए क्रिया भी प्रथम पुरुष तथा एकवचन की है। इस बात को सारणी के माध्यम से समझ सकते हैं।
- सभी धातुरूपों का इसी प्रकार (उपर्युक्त सारणी के अनुसार) कर्त्ता के साथ प्रयोग होता है। धातुरूपों में तो, कालपरिवर्तन (लकार परिवर्तन) के समय परिवर्तन हो सकता लेकिन कर्त्ता वही रहता है जैसे:-रामः गच्छति। काल परिवर्तन के बाद रामः गमिष्यति अर्थात् कर्त्ता वही रहता है।

(2) वाक्य में जिस पद में प्रथमा विभक्ति होती है, उसी के अनुसार क्रिया का स्वरूप निर्धारित होता है।

(3) वर्तमान काल को बताने के लिए लट् लकार का प्रयोग होता है (वर्तमाने लट्)-जैसे
गणेशः विद्यालयं गच्छति। (गणेश विद्यालय जाता है।)

(4) यदि कार्य आगामी (भविष्य) समय में होगा तो लृट्लकार होता है (लृट् शेषे च)-जैसे
गणेशः विद्यालयं गमिष्यति। (गणेश विद्यालय जायेगा।)

(5) भूतकाल के अर्थ में लङ् लकार का प्रयोग होता है (अनद्यतने लङ्)-जैसे
सः गतदिने अलवरम् अगच्छत्। (वह कल अलवर गया।)

(6) लोट् लकार का प्रयोग आज्ञा, अनुमति, आशीर्वाद तथा प्रार्थना अर्थ में, करते हैं। (लोट् च) जैसे–
सर्वे भवन्तु सुखिनः (आशीर्वाद)। (सभी सुखी होवें।)
सर्वे पठन्तु (आज्ञा)। (सभी पढ़ो।)
किम् अहम् आगच्छानि (अनुमति)। (क्या मैं आऊँ?)

(7) यदि वाक्य में एक से अधिक पुरुषों का प्रयोग हो तो भाव के अनुसार पुरुष का निर्धारण होगा। यदि प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष एक साथ हो तो मध्यम पुरुष की क्रिया होगी।
इसी तरह मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के उक्त कारक एक साथ होने पर उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होगा। तीनों पुरुषों के उक्त कारकों का प्रयोग होने पर उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होगा।

(8) जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य से करवाता है तो, इस प्रकार की क्रिया को प्रेरणाभिक्रिया कहते हैं।

धातु से णिच् प्रत्यय होता है। इस प्रकार की वाक्य संरचना में प्रयोजक (प्रेरणा देने वाला) में प्रथमा तथा प्रयोज्य (जिसको प्रेरित किया जाये) में तृतीया विभक्ति होती है-
जैसे:-देवदत्तः यज्ञदत्तेन भोजनं पाचयति।

(9) सर्वनाम शब्दों एवं विशेषण का वही लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति होती है, जो विशेष्य के होते हैं।
कहा भी गया है:-

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।
तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेषणस्य।।

(10) **अव्यय– इस नाम से ही स्पष्ट है कि इसका तीनों लिङ्गों में तीनों वचनों में तथा तीनों विभक्तियों में रूप समान चलता है।** कहा भी है–

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

विभक्ति सम्बन्धी कुछ नियम

प्रथमा विभक्ति (कर्त्ता कारक)

(1) प्रतिपादिकार्थ मात्र में, लिङ्ग मात्र में, परिमाण मात्र में तथा वचन मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। (प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा)
जैसे-रामः कृष्णः कन्या, तटः तटी, तटम्, द्रोणो व्रीहिः।

(2) सम्बोधन अर्थ में प्रथमा होती है। **(सम्बोधने च)**
जैसे-हे राम! आगच्छतु। (हे राम! आओ।)

द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

कर्म– कर्ता, अपनी क्रिया के द्वारा, जिसको सर्वाधिक चाहे, वह कर्म होता है। अर्थात् क्रिया का इष्टतम कारक कर्म होता है। **(कर्तुरीप्सिततमं कर्म)**

(1) अनुक्त ईप्सिततम कर्म में द्वितीया होती है। (कर्मणि द्वितीया) जैसे-
(सः) हरिं भजति। (वह हरि को भजता है।)
मोहनः ग्रन्थं पठति। (मोहन ग्रन्थ पढ़ता है।)
सुरेशः चित्रं पश्यति (सुरेश चित्र देखता है।)
पाचकः तण्डुलान् पचति (रसोईयाँ चावल पकाता है।)

(2) अनुक्त अनीप्सित कर्म में भी द्वितीया होती है।
जैसे–आपणं गच्छन्ती माता शिशुं पश्यति। (बाजार जाती माता बालक को देखती है।)

(3) अनुक्त गौण कर्म में अर्थात् दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् तथा नी, हृ, कृष्, वह् धातुओं के अप्रधान कर्म में द्वितीया होती है। **(अकथितं च)**
सः गां पयः दोग्धि। (वह गाय से दूध दुहता है।)
वामनः बलिं वसुधां याचते। (वामन बलि से भूमि माँगता है।)
सः तण्डुलान् ओदनं पचति। (वह चावलों से भात पकाता है।)
सः देवदत्तं शतं दण्डयति। (वह देवदत्त को सौ (रुपये) का दण्ड देता है।)
सः व्रजं गाम् अवरुणद्धि। (वह बाडे से गाय को रोकता है।)
सः माणवकं पन्थानं पृच्छति। (वह माणवक से रास्ता पूछता है।)
सः वृक्षं फलानि अवचिनोति। (वह वृक्ष से फल चुनता है।)
सः माणवकं धर्मं ब्रूते। (वह माणवक को धर्म बताता है।)
सः माणवकं धर्मं शास्ति। (वह माणवक को धर्म बताता है।)
सः देवदत्तं शतं जयति। (वह देवदत्त से सौ (रुपये) जीतता है।)
सः क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति। (वह समुद्र से अमृत को मथता है।)
सः देवदत्तं शतं मुष्णाति। (वह देवदत्त से सौ रुपये चुराता है।)
सः ग्रामम् अजां नयति। (वह गाँव से बकरी ले जाता है।)
सः ग्रामम् अजां हरति। (वह गाँव से बकरी ले जाता है।)
सः ग्रामम् अजां कर्षति। (वह गाँव से बकरी ले जाता है।)
सः ग्रामम् अजां वहति। (वह गाँव से बकरी ले जाता है।)
सः अविनीतं विनयं याचते। (वह अविनीत से विनय माँगता है।)
वामनः बलिं वसुधां भिक्षते। (वामन बलि से भूमि माँगता है।)
सः राजेशं शतं भिक्षते/याचते। (वह राजेश से सौ माँगता है।)
सः माणवकं धर्मं भाषते। (वह माणवक को धर्म बताता है।)
गुरुः बालं धर्मं ब्रूते। (गुरु बालक को धर्म बताता है।)
इन सोलह अर्थों में धातुओं का प्रयोग होने पर दो प्रकार के कर्म संभव है। अतः इन धातुओं को द्विकर्मक धातु कहा जाता है।

(4) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा तथा प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।
जैसे– **कृष्णम् अभितः।** (कृष्ण के दोनों ओर।)
कृष्णं परितः। (कृष्ण के चारों ओर।)
ग्रामं समया। (गाँव के समीप।)
लङ्कां निकषा। (लङ्का के समीप।)
हा कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण का अभक्त! हा!)
अलवरं परितः गिरयः सन्ति। (अलवर के चारों ओर पर्वत हैं।)
ग्रामम् अभितः नदी अस्ति। (गाँव के दोनों ओर नदी है।)
उद्यानं निकषा विद्यालयः अस्ति। (उद्यान के समीप विद्यालय है।)
क्रीडाक्षेत्रं समया सरित् अस्ति। (खेल के मैदान के समीप नदी है।)
बुभुक्षितं न प्रति भाति किञ्चित्। (भूखे को कुछ नहीं भाता है।)

(5) गत्यर्थक धातुओं के योग में द्वितीया होती है।
जैसे–सिंहः वनं विचरति, देशभक्ताः स्वर्गं यान्ति।

Scanned by CamScanner

(6) **उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अध्यधि के योग में द्वितीया होती है।**

जैसे- **कृष्णम् उभयतः गोपाः।** (कृष्ण के दोनों ओर ग्वाले हैं।)

ग्रामम् उभयतः वृक्षाः। (गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।)

कृष्णं सर्वतः गोपाः। (कृष्ण के सभी ओर ग्वाले हैं।)

लङ्कां सर्वतः समुद्रः। (लङ्का के सभी ओर समुद्र है।)

धिग् दुर्जनम्। (दुर्जन को धिक्कार है।)

धिक् कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है।)

धिक् चौरान्। (चौरों को धिक्कार है।)

धिग् अनृतवादिनम्। (झूठ बोलने वाले को धिक्कार है।)

लोकम् उपर्युपरि हरिः। (संसार के ठीक ऊपर हरि है।)

लोकम् अधोऽधः हरिः। (संसार के ठीक नीचे हरि है।)

लोकम् अध्यधि हरिः। (संसार के ठीक बीचों-बीच हरि है।)

मेघान् अध्यधि वायुयानम्। (बादलों के ठीक बीचों-बीच वायुयान है।)

भूमिम् उपर्युपरि विमानानि। (जमीन के ठीक ऊपर विमान हैं।)

भूमिम् अधोऽधः जलम्। (भूमि के ठीक नीचे जल है।)

(7) यदि वस् धातु से पूर्व उप, अनु, अधि तथा आङ् उपसर्ग लगा हो तो क्रिया के आधार की कर्म संज्ञा होती है। **(उपान्वध्याङ्वसः)**

जैसे-**हरिः बैकुण्ठम् उपवसति।** (हरि बैकुण्ठ में रहता है।)

हरिः बैकुण्ठम् अनुवसति। (हरि बैकुण्ठ में रहता है।)

हरिः बैकुण्ठम् अधिवसति। (हरि बैकुण्ठ में रहता है।)

हरिः बैकुण्ठम् आवसति। (हरि बैकुण्ठ में रहता है।)

मुनिः पर्वतम् उपवसति। (मुनि पर्वत पर रहता है।)

सेना कटकम् उपवसति। (सेना छावनी में रहती है।)

गुरुः गुरुकुलम् अधिवसति। (गुरु गुरुकुल में रहता है।)

(8) **शीङ्, स्था तथा आस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है** यदि अधि उपसर्ग पूर्वक हो तो। **(अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म)**

जैसे-**हरिः बैकुण्ठम् अधिशेते।** (हरि बैकुण्ठ में सोता है।)

हरिः बैकुण्ठम् अधितिष्ठति। (हरि बैकुण्ठ में ठहरता है।)

हरिः बैकुण्ठम् अध्यास्ते। (हरि बैकुण्ठ में बैठता है।)

शिवः पर्यङ्कम् अधिशेते। (शिव पलंग पर सोता है।)

अध्यापकः आसन्दीम् अध्यास्ते। (अध्यापक कुर्सी पर बैठता है।)

प्रतापः ग्रामम् अधितिष्ठति। (प्रताप गाँव में ठहरता है।)

(9) **अभि तथा नि उपसर्ग पूर्वक विश् धातु हो तो उसके आधार की कर्म संज्ञा** हो जाती है।

जैसे - **सः सन्मार्गम् अभिनिविशते/अभिनिवेशः।** (वह अच्छे मार्ग में प्रवेश करता है।)

सः कुमार्गम् अभिनिविशते/अभिनिवेशः। (वह कुमार्ग में प्रवेश करता है।)

(10) **समयवाचक तथा मार्गवाचक शब्दों के साथ अत्यन्त संयोग** (सम्पूर्णता) होने पर द्वितीया विभक्ति होती है। **(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे)**

जैसे-**मासं कल्याणी।** (महीने भर कल्याणकारी।)

मासं गुडधानाः। (महीने भर गुड एवं चावल।)

मासं दधि भुङ्क्ते। (महीने भर दही खाता है।)

मासं मङ्गलोत्सवः। (महीने भर मङ्गल उत्सव।)

क्रोशं कुटिला नदी। (कोस भर नदी टेढ़ी है।)

क्रोशं गिरिः। (कोस भर तक पर्वत है।)

क्रोशं वृक्षाः। (कोस भर पेड़ है।)

योजनं कुटिला नदी। (योजन भर नदी टेड़ी है।)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

करण– क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट उपकारक (अत्यन्त सहायक, जिसके बिना क्रिया की निष्पत्ति संभव नहीं थी) कारक को करण कहा जाता है।

(1) **अनुक्त करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। (कर्तृकरणयोस्तृतीया)**

जैसे- **रामः बाणेन रावणं हतवान्।** (बाण-करण)

शिवः कलमेन लिखति। (कलम-करण)

रामः बसयानेन गच्छति। (बसयान-करण)

लता वर्णेन चित्रं चित्रयति। (वर्ण-करण)

रामः एकेन बाणेन रावणं हतवान्। (राम ने एक बाण से रावण को मारा।)

रामः त्रिभिः बाणैः शत्रून् हतवान्। (राम ने तीन बाणों से शत्रुओं को मारा।)

सैनिकः गुलिकया आतङ्कवादिनं हन्ति। (सैनिक गोली से आंतकवादी को मारता है।)

राजपुरुषः भुशुण्ड्या शत्रुं हतवान्। (राजपुरुष ने बन्दूक से शत्रु को मारा।

छात्रः एकेन हस्तेन लिखति। (छात्र एक हाथ से लिखता है।)

बालिका द्वाभ्यां हस्ताभ्यां लिखति। (बालिका दो हाथों से लिखती है।)

चित्रकारः चतुर्भिः वर्णैः चित्रं चित्रयति। (चित्रकार चार रंगों से चित्र बनाता है।)

(2) **कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति** होती है।

जैसे-तेन पुस्तकानि पठ्यन्ते। अस्माभिः गम्यते।

रामेण बाणेन बालिः हतः। (यहाँ राम अनुक्त कर्ता तथा बाण करण है)

रामेण रावणः हतः। (राम अनुक्त कर्ता)

(3) **जिस लक्षण या चिह्न विशेष से व्यक्ति या वस्तु विशेष का बोध होता है,** तो उस लक्षणवाचक शब्द में तृतीया होती है। **(इत्थंभूतलक्षणे)**

जैसे-**नखैः राक्षसः।** (नाखूनों से राक्षस प्रतीत होता है।)

जटाभिस्तापसः। (वह जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है।)

शिखया पण्डितः। (वह शिखा से पण्डित प्रतीत होता है।)

वेषेण यतिः। (वह वेशभूषा से संन्यासी प्रतीत होता है।)

गणवेशेन छात्रः। (वह गणवेश से छात्र प्रतीत होता है।)

आकृत्या शूरः। (वह आकृति से शूर लगता है।)

(4) **प्रकृति (स्वभाव) गोत्रादि शब्दों में 'से' का अर्थ होने पर तृतीया** होती है।

जैसे- **प्रकृत्या चारुः।** (स्वभाव से सुन्दर।)

समेन एति। (सीधा जाता है।)

विषमेण एति। (विपरीत जाता है।)

सुखेन याति। (सुख से जाता है।)

दुःखेन याति। (दुःख से जाता है।)

गोत्रेण गार्ग्यः। (गोत्र से गार्ग्य।)

नाम्ना सुतीक्ष्णः। (नाम से सुतीक्ष्ण।)

आत्मना चतुर्थः। (अपने से चतुर्थ।)

रामः जात्या क्षत्रियः अस्ति। (राम जाति से क्षत्रिय है।)

अनिलः प्रकृत्या साधुः वर्तते। (अनिल प्रकृति से सज्जन है।)

सः सरलतया लिखति। (वह सरलता से लिखता है।)

(5) **सह, साकम्, सार्धम्, समम्, युगपद् आदि साथ अर्थ वाले अव्ययों के योग में अप्रधान कारक में तृतीया होती है। (सहयुक्तेऽप्रधाने)**

जैसे-**पिता पुत्रेण सह आगतः।** (पिता पुत्र के साथ आया।)

रामः सीतया सह वनं गतवान्। (राम सीता के साथ वन गया।)

शिक्षकः छात्रैः समं/सार्धं भ्रमति। (शिक्षक छात्रों के साथ घूमता है।)

मोहनः सीतया युगपद् विद्यालयं गच्छति। (मोहन सीता के साथ विद्यालय जाता है।)

शशिना सह याति कौमुदी। (चन्द्रमा के साथ चाँदनी चली जाती है।)

सह मेघेन तडित् प्रलीयते। (बादल के साथ बिजली चली जाती है।)

मया साकं छात्राः पठन्ति। (मेरे साथ छात्र पढ़ते हैं।)

युष्माभिः सार्धम् अयं गमिष्यति। (तुम्हारे साथ यह जायेगा।)

(6) **पृथक्, विना तथा नाना के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमी विभक्ति होती है।**

जैसे- **रामं/रामेण/रामाद् वा पृथक् (आश्रयः नास्ति)** (राम के अलावा आश्रय नहीं है।)

धनं/धनेन/धनाद् वा विना (जगद् न चलति) (धन के बिना संसार नहीं चलता।)

देवं/देवेन/देवाद् वा विना (तृणमपि न चलति) (भगवान् के बिना तिनका भी नहीं चलता।)

कृष्णं/कृष्णेन/कृष्णाद् वा विना (न अन्या गतिः) (कृष्ण के बिना कोई गति नहीं।)

कृष्णं/कृष्णेन/कृष्णाद् वा नाना (न अन्या गतिः) (कृष्ण के बिना कोई गति नहीं।)

जलं/जलेन/जलाद् वा विना जीवनं नास्ति। (जल के बिना जीवन नहीं है।)

(7) **विकृत अङ्ग के वाचक शब्द में तृतीया होती है। (येनाङ्गविकारः)**

जैसे- **अक्ष्णा काणः।** (आँख से काणा)

नेत्रेण काणः। (आँख से काणा)

नेत्राभ्याम् अन्धः। (आँखों से अन्धा)

शिरसा खल्वाटः। (सिर से गंजा)

पादेन खञ्जः। (पैर से लंगड़ा)

पद्भ्याम् असक्तः। (पैरों से असक्त)

कर्णाभ्यां बधिरः। (कानों से बहरा)

मुखेन मूकः। (मुँह से गूँगा)

शरीरेण वामनः। (शरीर से बौना)

पृष्ठेन कुब्जः। (पीठ से कुबड़ा)

पाणिना कुणिः। (हाथ से लुञ्जा)

अक्षिभ्याम् अन्धः (आँखों से अन्धा)

शिशुः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति। (शिशु कानों से बहरा है।)

गर्दभः नेत्रेण काणः अस्ति। (गधा नेत्र से काणा है।)

राकेशः शिरसा खल्वाटः अस्ति। (राकेश सिर से गंजा है।)

(8) **हेतु (कारण) बोधक शब्दों में तृतीया होती है। (हेतौ)**

जैसे- **दण्डेन घटः।** (घड़े का कारण दण्ड।)

पुण्येन दृष्टः हरिः। (हरिदर्शन का कारण पुण्य।)

अध्ययनेन वसति। (बसने का कारण अध्ययन।)

धनेन कुलम्। (कुल का कारण धन।)

पुत्रेण हर्षः। (हर्ष का कारण पुत्र।)

अविद्यया शोकः। (शोक का कारण अविद्या।)

कुशिक्षया शोकः। (शोक का कारण कुशिक्षा।)

(9) **अलम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है,** यदि अलम् का अर्थ निषेध हो तो।

जैसे-**अलं विवादेन।** (विवाद मत करो)

अलं वदनेन । (मत बोलो)

अलं क्रीडया। (मत खेलो)

अलं भाषणेन। (भाषण मत करो)

अलम् अतिविस्तरेण। (ज्यादा विस्तार मत करो।)

Scanned by CamScanner

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

(1) अनुक्त सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है। (चतुर्थी सम्प्रदाने)

(2) दान के कर्म (दान की वस्तु) के द्वारा जिसको खुश किया जाता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। अर्थात् दान के कर्म (वस्तु) द्वारा जिसको अपने अनुकूल किया जाता है, वह सम्प्रदान होता है। दा धातु के योग में सम्प्रदान सञ्ज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है। (कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्)

जैसे–धनिकः याचकाय वस्त्राणि ददाति। (धनिक माँगने वाले को वस्त्र देता है।)

राजा विप्राय गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है।)

भामाशाहः प्रतापाय धनं ददाति। (भामाशाह प्रताप को धन देता है।)

पिता पुत्राय फलं ददाति। (पिता पुत्र को फल देता है।)

(3) जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है, उस प्रयोजन में चतुर्थी विभक्ति होती है। (तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या)

जैसे–धार्मिकः धर्माय यतते। (धार्मिक व्यक्ति धर्म के लिए प्रयास करता है।)

यूपाय दारु । (खूँटे के लिए लकड़ी।)
कुण्डलाय हिरण्यम्। (कुण्डल के लिए सोना।)
आभूषणाय स्वर्णम्। (आभूषणों के लिए सोना।)
मुक्तये हरिं भजति। (मुक्ति के लिए हरि को भजता है।)
दानाय धनम्। (धन दान के लिए है।)
रक्षणाय शक्तिः। (शक्ति रक्षा करने के लिए है।)
यशसे काव्यम्। (काव्य यश के लिए है।)
ज्ञानाय विद्या। (विद्या ज्ञान के लिए है।)

(4) रुचि अर्थवाली धातुओं के योग में जिसको अच्छा लगता हो, उसमें सम्प्रदान सञ्ज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है। (रुच्यर्थानां प्रीयमाणः)

जैसे–रामाय हनुमान् रोचते। (राम को हनुमान अच्छे लगते है।)

हरये रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति रुचिकर लगती है।)

बालकाय मोदकाः रोचन्ते। (बालक को लड्डू रुचिकर लगते हैं।)

क्रमेलकाय कण्टकाः रोचन्ते। (ऊँट को काँटे अच्छे लगते हैं।)

बालकाय खण्डशर्करा रोचते। (बालक को खाँड अच्छी लगती है।)

(5) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य् तथा असूय् धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समानार्थक अन्य धातुओं के योग में भी, जिस पर क्रोध किया जाता है, उसमें सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है। (क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः)

जैसे–गुरुः शिष्याय क्रुध्यति। (गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।)

गोविन्दः रामाय ईर्ष्यति/असूयति। (गोविन्द राम से ईर्ष्या करता है।)

असुरः हरये क्रुध्यति (असुर हरि पर क्रोध करता है।)

असुरः हरये द्रुह्यति/ईर्ष्यति/असूयति। (असुर हरि से द्रोह, ईर्ष्या/असूया करता है।)

नृपः दुष्टेभ्यः क्रुध्यति। (राजा दुष्टों पर क्रोध करता है।)

आरक्षकः चौरेभ्यः क्रुध्यति। (पुलिस वाला चौरों पर क्रोध करता है।)

दुर्जनाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति। (दुर्जन सज्जनों से द्रोह करते हैं।)

मूर्खाः गुणिभ्यः ईर्ष्यन्ति। (मूर्ख गुणियों से ईर्ष्या करते हैं।)

विनोदः मह्यम् असूयति। (विनोद मेरे में दोष निकालता है।)

कर्णः अर्जुनाय द्रुह्यति। (कर्ण अर्जुन से द्रोह करता है।)

ध्यातव्य–यदि क्रुध् और द्रुह् अर्थवाली धातुओं से पूर्व यदि उपसर्ग आ जाये, तो जिसके प्रति कोप हो, उसकी कर्म संज्ञा ही होती है। (क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म)

जैसे- (असुरः) हरिम् अभिक्रुध्यति।

(असुरः) हरिम् अभिद्रुह्यति।

(6) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी होती है। (नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च)

जैसे- हरये नमः। (हरि को नमस्कार।)
कृष्णाय नमः। (कृष्ण को नमस्कार।)
नमोऽस्तु अनन्ताय। (अनन्त को नमस्कार हो।)
गुरुभ्यः नमः। (गुरुओं को नमस्कार।)
श्रीगणेशाय नमः। (श्री गणेश को नमस्कार।)
प्रजाभ्यः स्वस्ति। (प्रजा का कल्याण हो।)
सर्वेभ्यः स्वस्ति। (सभी का कल्याण हो।)
अग्नये स्वाहा। (अग्नि के लिए स्वाहा।)
पित्रे स्वधा। (पिता को स्वधा।)
पितृभ्यः स्वधा। (पितरों को स्वधा।)
इन्द्राय वषट्। (इन्द्र के लिए वषट्।)
अग्नये वषट्। (अग्नि के लिए वषट्।)
दैत्येभ्यः हरिः अलम्/शक्तः। (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त है।)
भीमः बकाय अलम्/प्रभुः। (भीम बक के लिए पर्याप्त है।)

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

(1) विभाग होने या दूर होने की क्रिया में, जो अवधिभूत हो अर्थात् जहाँ से विभाग या दूरीकरण हो, उसको अपादान कहते है। अपादान चल और अचल दोनों प्रकार का हो सकता है। (ध्रुवमपायेऽपादानम्)।

'ग्राम से आता है' में 'ग्राम' अपादान अचल है तथा 'दौडते हुए घोड़ से गिरता है' में 'दौडता हुआ घोडा' चल अपादान है। अनुक्त अपादान में पञ्चमी होती है। (अपादाने पञ्चमी)

जैसे- सः ग्रामाद् आयाति। (वह गाँव से आता है।)

सः धावतः अश्वात् पतति। (वह दौडते हुए घोडे से गिरता है।)

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।)

क्षेत्रात् पशवः आगच्छन्ति। (खेत से पशु आते हैं।)

(2) भय तथा रक्षा अर्थवाली धातुओं के साथ भय तथा रक्षा के निमित्त (कारण) में अपादान होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। (भीत्रार्थानां भयहेतुः)

जैसे–रामाद् रावणः बिभेति। (राम से रावण डरता है।)
सः चौराद् बिभेति। (वह चौर से डरता है।)
सः चौरात् त्रायते। (वह चौर से रक्षा करता है।)
सः सर्पाद् बिभेति। (वह सर्प से डरता है।)
वैद्यः रोगात् त्रायते। (चिकित्सक रोग से बचाता है।)
दण्डः कुक्कुरेभ्यः रक्षति। (डण्डा कुत्तों से रक्षा करता है।)
सः व्याघ्राद् रक्षति। (वह बघेरे से रक्षा करता है।)

(3) वारण अर्थ में अपादान होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। (वारणार्थानामीप्सितः)

जैसे–विद्या पापाद् निवारयति। (विद्या पाप से हटाती है।)

सः यवेभ्यः गां वारयति। (वह जौ से गाय को निकालता है।)

(4) जन् धातु के कर्त्ता के मूल कारण में अपादान होकर पञ्चमी होती है। (जनिकर्तुः प्रकृतिः)

जैसे–शूद्राः पद्भ्याम् अजायन्त। (शूद्र पैरों से उत्पन्न हुए।)

ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते। (ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती हैं।)

कामात् क्रोधोऽभिजायते। (काम से क्रोध उत्पन्न होता है।)

गोमयाद् वृश्चिकाः जायन्ते। (गोबर से बिच्छू पैदा होते हैं।)

भूमेः वनस्पतयः प्ररोहन्ति। (भूमि से वनस्पतियाँ उगती हैं।)

तन्तुभ्यः पटः भवति। (तन्तुओं से कपडा बनता है।)

(5) जिससे नियम पूर्वक विद्या पढ़ी जाये उसमें अपादान होकर पञ्चमी होती है। (आख्यातोपयोगे)

जैसे- गुरोः पाठं पठति। (गुरु से पाठ पढ़ता है।)

सः गुरोः अधीते। (वह गुरु से पढ़ता है।)

सः उपाध्यायाद् अधीते। (वह उपाध्याय से पढ़ता है।)

(6) अन्य, आरात्, इतर ऋते दिशावाची शब्द प्रत्यक्, उदीच् आदि के योग में पञ्चमी होती है।

जैसे–ऋते ज्ञानाद् न मोक्षः। (ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं है।)

जयपुराद् आरात् क्रीडाङ्गणम् अस्ति। (जयपुर के दूर और समीप खेल का मैदान है।)

कृष्णाद् अन्यः/इतरः/ऋते। (कृष्ण से भिन्न)

ज्ञानाद् ऋते न मुक्तिः। (ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं)

वनाद् आराद्। (वन के समीप व दूर)

ग्रामात् पूर्वम्/पश्चिमम्/उत्तरम्/दक्षिणम्। (गाँव के पूर्व में)

चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः। (चैत्र से पूर्व फाल्गुन)

ग्रामात् प्राक्। (गाँव से पहले)

ग्रामात् प्रत्यक्। (गाँव के बाद)

ग्रामाद् दक्षिणाहि। (गाँव से दक्षिण में)

ग्रामाद् दक्षिणा। (गाँव से दक्षिण में)

(7) तुलना में भी पञ्चमी होती है, जिससे की जाये उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। (पञ्चमी विभक्ते)

जैसे- कृष्णाद् रामः पटुतरः। (कृष्ण से राम चालाक है।)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि गरीयसी। (जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।)

(8) प्रभृति, बहिः अनन्तरम्, परम्, ऊर्ध्वम्- इन शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे- बाल्यात् प्रभृति विलक्षणः अस्ति। (बाल्य काल से ही विलक्षण है।)

तस्मात् परं न विद्यते। (इसके बाद कुछ नहीं है।)

षष्ठी विभक्ति

(1) सम्बन्ध को कारक नहीं मानते क्योंकि इसका प्रत्यक्ष रूप से क्रिया के साथ अन्वय नहीं होता।

(2) शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। (षष्ठी शेषे)

जैसे–रामस्य भार्या सीता अस्ति। (राम की पत्नी सीता है।)
राज्ञः पुरुषः। (राजा का आदमी)
शिवस्य चरणौ। (शिव के चरण)
कक्षायाः अध्यापकः। (कक्षा का अध्यापक)
क्षेत्रस्य स्वामी। (खेत का मालिक)
दशरथस्य पुत्रः। (दशरथ का पुत्र)
वृक्षस्य पर्णम्। (वृक्ष का पत्ता)
हिरण्यस्य कङ्कणम्। (सोने का कंगन)

(3) दिशावाचक अतस् प्रत्ययान्त शब्दों (दक्षिणतः, पूर्वतः) तथा इसी प्रकार के समान अर्थ वाले शब्दों (पुरः, पुरस्तात्, पश्चात्, उपरि, अधः तथा अधस्तात्) के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे- वाहनस्य उपरि। (वाहन के ऊपर)

वटवृक्षस्य अधः। (वटवृक्ष के नीचे)

भवतः पश्चाद् मम क्रमाङ्कः। (आपके बाद मेरा क्रमांक है।)

ग्रामस्य दक्षिणतः/उत्तरतः/परतः। (गाँव के दक्षिण/उत्तर/पश्चिम से)

ग्रामस्य पुरतः। (गाँव के सामने से)

कक्षस्य उपरि। (कक्ष के ऊपर)

ग्रामस्य पुरस्तात्। (गाँव के सामने से)

ग्रामस्य उपरिष्टात्। (गाँव के ऊपर से)

(4) निर्धारण में षष्ठी एवं सप्तमी होती है। (यतश्च निर्धारणम्)

जैसे- नराणां/नरेषु द्विजः श्रेष्ठः। (नरों में द्विज श्रेष्ठ है।)

प्राणिनां/प्राणिषु मानवः श्रेष्ठः। (प्राणियों में मानव श्रेष्ठ है।)

गवां/गोषु कृष्णा बहुक्षीरा। (गायों में काली गाय ज्यादा दूध देती है।)

गच्छतां/गच्छत्सु धावन् शीघ्रः। (चलने वालों में दौड़ने वाला तेज है।)

अध्वगानां/अध्वगेषु धावन् शीघ्रतमः। (चलने वालों में दौड़ने वाला तेज है।)

छात्राणां/छात्रेषु मैत्रः पटुः। (छात्रों में मैत्र चतुर है।)

(5) कृते के योग में षष्ठी होती है।

जैसे- पठनस्य कृते गच्छति। (पढ़ने के लिए जाता है।)

Scanned by CamScanner

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

(1) अनुक्त अधिकरण कारक में सप्तमी होती है। (सप्तम्यधिकरणे च)। आधार को अधिकरण कहा जाता है। (आधारोऽधिकरणम्)

जैसे- **सः कटे आस्ते।** (वह चटाई पर बैठता है।)

सः आसन्द्याम् आस्ते। (वह कुर्सी पर बैठता है।)

सः बसयाने तिष्ठति। (वह बस में बैठता है।)

सः खट्वायां शेते। (वह खाट पर सोता है।)

सः भूमौ शेते। (वह भूमि पर सोता है।)

सः स्थाल्याम् ओदनं भुङ्क्ते। (वह भगोनी में भात खाता है।)

मोक्षे इच्छा अस्ति। (मोक्ष के विषय में इच्छा है।)

व्याकरणे इच्छा अस्ति। (व्याकरण के विषय में इच्छा है।)

पठने इच्छा अस्ति। (पढ़ने की इच्छा है।)

गणिते रुचिः अस्ति। (गणित में रुचि।)

तिलेषु तैलम् अस्ति। (तिलों में तेल है।)

सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति। (सभी में आत्मा है।)

दुग्धे सर्पिः/घृतम् अस्ति। (दूध में घी है।)

दधि सर्पिः अस्ति। (दही में घी है।)

(2) **भावलक्षण** (एक क्रिया द्वारा दूसरी क्रिया बताने पर, पहले वाली क्रिया में) **में सप्तमी होती है। (यस्य च भावेन भावलक्षणम्)**

जैसे-**चन्द्रमसि उदिते सति तारकाः दृश्यन्ते।** (चन्द्रमा के उदय होने पर तारे दिखाई देते है।)

गोषु दुह्यमानासु गतः। (गायों को दुहने पर गया।)

बालेषु अधीयानेषु गतः। (बच्चों के पढ़ते समय गया।)

पठत्सु बालेषु भोजनं कृतवान्। (बालकों के पढ़ते समय भोजन किया।)

(3) **आयुक्त तथा कुशल शब्द के योग मे सप्तमी होती है।**

जैसे-**सः पठने आयुक्तः/कुशलः।** (वह पढ़ने में कुशल है।)

(4) **साधु व असाधु शब्दों के योग में सप्तमी होती है। (साध्वसाधुप्रयोगे च)**

जैसे- **कृष्णः राधायां साधुः।** (कृष्ण राधा की नजर में सज्जन है।)

कृष्णः मातरि साधुः। (कृष्ण माता के लिए सज्जन है)

कृष्णः मातुले असाधुः। (कृष्ण मामा के लिए असाधु है)

नृपः सज्जनेषु साधुः। (राजा सज्जनों के लिए सज्जन है)

नृपः दुर्जनेषु असाधुः। (राजा दुर्जनों के लिए दुर्जन है)

(5) **विश्वास तथा श्रद्धा अर्थवाली धातुओं और शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है।**

जैसे- **चार्वाकस्य भगवति श्रद्धा नास्ति।** (चार्वाक की भगवान में श्रद्धा नहीं थी।)

ध्रुवः विष्णौ विश्वसिति। (ध्रुव विष्णु में विश्वास करता है।)

कारक-सार

विभक्ति	भेद व सूत्र	उदाहरण
प्रथमा	प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा	कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्, उच्चैः, नीचैः।
	सम्बोधने च	हे राम! भो लक्ष्मि!
	उक्त–कर्तरि	रामः फलानि खादति।
	उक्त–कर्मणि	छात्रेण ग्रन्थः पठ्यते।
द्वितीया	**कर्मकारक द्वितीया**	
	कर्तुरीप्सिततमं कर्म	हरिं भजति।
	अकथितं च	गां दोग्धि पयः।
	अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म	बैकुण्ठम् अधिशेते।
	उपान्वध्याङ्वसः	बैकुण्ठम् उपवसति।
	उपपद द्वितीया	
	उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु।	कृष्णम् उभयतः, धिग् दुर्जनम्।
	द्वितीया आम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।	कृष्णं सर्वतः, उपर्युपरि लोकं हरिः।
	अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि	कृष्णम् अभितः, ग्रामं समया, निकषा लङ्काम्।
तृतीया	**करणकारक तृतीया**	
	साधकतमं करणम्	रामः बाणेन रावणं हतवान्।
	अनुक्तकर्तरि तृतीया	मोहनेन ग्रन्थः पठ्यते।

विभक्ति	भेद व सूत्र	उदाहरण
	उपपदतृतीया	
	येनाङ्गविकारः	अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः।
	सहयुक्तेऽप्रधाने	पुत्रेण सह आगतः पिता।
	अपवर्गे तृतीया	मासेन अनुवाकः अधीतः।
चतुर्थी	**सम्प्रदान कारक चतुर्थी**	
	कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्	विप्राय गां ददाति।
	क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्	पत्ये शेते।
	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः	हरये रोचते भक्तिः।
	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः	हरये क्रुध्यति।
	उपपद चतुर्थी	
	नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च	हरये नमः, प्रजाभ्यः स्वस्ति।
पञ्चमी	**अपादान कारक पञ्चमी**	
	ध्रुवमपायेऽपादानम्	ग्रामाद् आयाति, धावतः अश्वात् पतति।
	भीत्रार्थानां भयहेतुः	चौराद् बिभेति।
	अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति	कृष्णः मातुः निलीयते।
	आख्यातोपयोगे	उपाध्यायाद् अधीते।
	जनिकर्तुः प्रकृतिः	ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते।
	भुवः प्रभवः	हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति।
	उपपद पञ्चमी	
	अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते	कृष्णाद् अन्यः/इतरः/ऋते।
	पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् (2+3+5)	रामं, रामेण, रामाद् वा विना।
	दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च (2+3+5)	दूरं, दूरेण, दूरात्/समीपं, समीपेन, समीपात्।
षष्ठी	षष्ठी शेषे च	राज्ञः पुरुषः।
	कर्तृकर्मणोः कृति	श्लोकस्य पाठकः।
	उभयप्राप्तौ कर्मणि	जगतः कर्ता कृष्णः।
	कृत्यानां कर्तरि वा	मम/मया हरिः सेव्यः।
सप्तमी	**अधिकरण सप्तमी**	
	औपश्लेषिक आधार	कटे आस्ते, स्थाल्यां पचति।
	वैषयिक आधार	मोक्षे इच्छास्ति।
	अभिव्यापक आधार	तिलेषु तैलम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।
	उपपद सप्तमी	
	यस्य च भावेन भावलक्षणम्	गोषु दुह्यमानासु गतः।
	यतश्च निर्धारण (6+7)	गवां/गोषु कृष्णा बहुक्षीरा।
	साध्वसाधुप्रयोगे च	कृष्णः मातरि साधुः।
	निमित्तात्कर्मयोगे	चर्मणि द्वीपिनं हन्ति।
	षष्ठी चानादरे	रुदतः/रुदति प्राव्राजीत्।

Scanned by CamScanner

सङ्ख्या सम्बन्धी नियम

- संस्कृत भाषा में गिनने योग्य संख्या विशेषण होती है, अतः उन संख्याओं के विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन के अनुसार रूप निर्धारित होते हैं अर्थात् विशेषण विशेष्य भाव होता है। जहाँ विशेषण-विशेष्य भाव हो, वहाँ विशेषण की विभक्ति, लिङ्ग तथा वचन विशेष्य के अनुसार ही होते हैं। जैसे-एकः बालकः। एका बालिका। एकं पुष्पम्।
- इन प्रयोगों में विशेष्य के अनुसार ही संख्या का लिङ्ग वचनादि है।

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।
तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेषणस्य।।

कुछ आवश्यक नियम

(1) 1 से लेकर 4 तक संख्यावाचक शब्द तीनों लिङ्गों में चलते हैं तथा एक शब्द एकवचन में, द्वि शब्द द्विवचन, त्रि एवं चतुर् शब्द नित्य रूप से बहुवचन में हैं।

एक शब्द

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि शब्द

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि शब्द

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर् शब्द

विभक्ति	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

पञ्चन् से नवदशन् तक के रूप तीनों लिंगों में समान ही चलते हैं।

विभक्ति	पञ्चन् शब्द	षष् शब्द	सप्तन् शब्द	अष्टन् शब्द
प्रथमा	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट/अष्टौ
द्वितीया	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट/अष्टौ
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः/अष्टाभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः/अष्टाभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु/अष्टासु

नवन्	-	नव	दशन्	-	दश
एकादशन्	-	एकादश	द्वादशन्	-	द्वादश
त्रयोदशन्	-	त्रयोदश	चतुर्दशन्	-	चतुर्दश
पञ्चदशन्	-	पञ्चदश	षोडशन्	-	षोडश
सप्तदशन्	-	सप्तदश	अष्टादशन्	-	अष्टादश
नवदशन्	-	नवदश			

विंशति शब्द–

विंशतिः,
विंशतिम्,
विंशत्या,
विंशत्यै/विंशतये
विंशत्याः/विंशतेः
विंशत्याः/विंशतेः
विंशत्याम्/विंशतौ

इसी तरह षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति, नवनवति आदि के रूप चलेंगे।

त्रिंशत् शब्द–

त्रिंशत्
त्रिंशतम्
त्रिंशता
त्रिंशते
त्रिंशतः
त्रिंशतः
त्रिंशति

इसी तरह चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् के रूप चलेंगे।

(2) 6 से लेकर 19 तक संख्यावाचक शब्दों के रूप में पञ्चन् शब्द की तरह और नित्य बहुवचन में चलेंगे तथा सभी लिङ्गों में समान चलेंगे।

(3) 21 से लेकर 99 तक संख्यावाचक शब्दों के रूप एकवचन एवं स्त्रीलिंङ्ग में ही प्रयुक्त होंगे। इनके रूप विंशति की तरह चलेंगे। किन्तु 30 से लेकर 59 तक संख्यावाचक शब्दों के रूप में पृथक् चलेंगे तथा स्त्रीलिंङ्ग एवं एकवचन में ही प्रयुक्त होंगे। इनके रूप त्रिंशत् की तरह चलेंगे। एकवचन मानने में अमरकोष का वाक्य प्रमाण है- **विंशत्याद्याः सदैकत्वे।**

(4) शत, सहस्त्र संख्यावाचक शब्दों के रूप एकवचन तथा नपुंसकलिङ्ग में ही चलते है।

विशेषः–यद्यपि यह नियम कर दिया गया फिर भी अपवाद स्वरूप कुछ हम को आर्ष प्रयोग मिलते हैं, जो बहुवचन में होते हैं-जैसे-''सहस्त्रेषु मनुष्येषु कश्चिद् यतते सिद्धये'' यह गीता का वचन है इसमें यद्यपि सहस्त्रे होना चाहिए था फिर आर्ष या आप्त वाक्य होने के कारण यह ठीक है। इसी प्रकार शङ्कराचार्य भी कहते हैं-श्लोकार्धेन वक्ष्यामि यदुक्तं शास्त्रकोटिभिः।

(5) कति (How many) तथा कियत् (How Much) का प्रयोग।
कतिः–जहाँ संख्या को लेकर यदि प्रश्न किया है वहाँ कति शब्द का प्रयोग तथा बहुवचन में होता है, चाहे उत्तर एकवचन में ही क्यों न हो।

कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु।

जैसे-सभायां कति जनाः सन्ति।

कियत्–जहाँ प्रमाण विशेष की बात करते हैं वहाँ कियत् शब्द का प्रयोग होता है। इसके तीना लिङ्गों में तथा बहुवचन में रूप चलते हैं। कियत् शब्द के भवत् शब्द की तरह रूप चलेंगे।

(6) यदि संख्या में अयच् प्रत्यय लगा दिया जाये तो क्रिया हमेशा एकवचन एवं नपुसंक लिङ्ग में होगी तथा यह प्रत्यय 2 से लेकर 4 तक संख्यावाचक शब्दों में लगता हैं। जैसे-बालकद्वयं गच्छति, ग्रन्थत्रयम् अस्ति, पुस्तकचतुष्टयम् अस्ति।

Scanned by CamScanner

भेदकानि विशेषणानि भवन्ति

- सम्पूर्ण समूह में से अलग करने वाले गुण को विशेषण कहा जाता है।

जैसे–नीलं कमलम् (नीला कमल)।

यहाँ कमलों के सम्पूर्ण समुदाय में से नीले गुण के आधार पर अलग होने का कार्य हुआ है, अतः यहाँ नीला विशेषण है।

- जिस कारक में विशेषण या गुण होता है, उसे विशेष्य कहा जाता है।
- विशेषण और विशेष्य में समान लिंग, समान विभक्ति एवं समान वचन होता है, अर्थात् विशेष्य के लिंग, विभक्ति एवं वचन के अनुसार विशेषण का लिंग, विभक्ति एवं वचन निर्धारित होगा।

श्वेतः घटः। (सफेद घड़ा)
श्वेता साटिका। (सफेद साड़ी)
श्वेतं कमलम्। (सफेद कमल)
नीलः घटः। (नीला घड़ा)
नीलाः घटाः। (नीले घड़े)
नीलं कमलम्। (नीला कमल)
नीलानि कमलानि। (नीले कमल)
नीलेन कमलेन। (नीले कमल के द्वारा)
नीलैः कमलैः। (नीले कमलों के द्वारा)
नीलाय कमलाय। (नीले कमल के लिए)
नीलात् कमलात्। (नीले कमल से)
नीलस्य कमलस्य। (नीले कमल का)
नीलानां कमलानाम्। (नीले कमलों का)
नीले कमले। (नीले कमल में)
नीलेषु कमलेषु। (नीले कमलों में)
पीनः छात्रः पठति। (मोटा छात्र पढ़ता है।)
छात्रः पीनं ग्रन्थं पश्यति। (छात्र मोटा ग्रन्थ देखता है।)
पीनाः छात्राः पठन्ति। (मोटे छात्र पढ़ते हैं।)
छात्रः पीनान् ग्रन्थान् पश्यति। (छात्र मोटे ग्रन्थों को देखता है।)
रामः पीनेन बाणेन रावणं हन्ति। (राम मोटे बाण से रावण को मारता है।)
रामः पीनैः बाणैः रावणं हन्ति। (राम मोटे बाणों से रावण को मारता है।)
नृपः पीनाय विप्राय गां ददाति। (राजा मोटे ब्राह्मण को गाय देता है।)
बालकः पीनाद् अश्वात् पतति। (बालक मोटे घोड़े से गिरता है।)
मोहनः पीनस्य पुस्तकस्य लेखकः अस्ति। (मोहन मोटी पुस्तक का लेखक है।)
सोहनः स्वच्छे ग्रामे वसति। (सोहन स्वच्छ गाँव में रहता है।)
ग्रामीणः स्वच्छेषु ग्रामेषु वसति। (ग्रामीण स्वच्छ गाँवों में रहता है।)
पीना बलिका पठति। (मोटी बालिका पढ़ती है।)
पीनाः बालिकाः पठन्ति। (मोटी बालिकाएँ पढ़ती हैं।)
छात्रः पीनां पुस्तिकां पश्यति। (छात्र मोटी पुस्तिका को देखता है।)
छात्रः पीनानि पुस्तकानि पश्यति। (छात्र मोटी पुस्तकों को देखता है।)
रामः पीनया गुलिकया रावणं हन्ति। (राम मोटी गोली से रावण को मारता है।)
रामः पीनेन तीरेण रावणं हन्ति। (राम मोटे तीर से रावण को मारता है।)

संख्या विशेषण के उदाहरण

एकः छात्रः पठति। (एक छात्र पढ़ता है।)
एका छात्रा पठति। (एक छात्रा पढ़ती है।)
छात्रः एकं ग्रन्थं पठति। (छात्र एक ग्रन्थ पढ़ता है।)
छात्रः एकां पुस्तिकां पठति। (छात्र एक पुस्तिका पढ़ती है।)
रामः एकेन बाणेन रावणं हन्ति। (राम एक बाण से रावण को मारता है।)
रामः एकया गुलिकया रावणं हन्ति। (राम एक गोली से रावण को मारता है।)
नृपः एकस्मै विप्राय गां ददाति। (राजा एक विप्र को गाय देता है।)
छात्रः एकस्मात् अश्वात् पतति। (छात्र एक घोड़े से गिरता है।)
मोहनः एकस्य पुस्तकस्य लेखकः अस्ति। (मोहन एक पुस्तक का लेखक है।)
मोहनः एकस्मिन् ग्रामे वसति। (मोहन एक गाँव में रहता है।)
मोहनः एकस्यां नगर्यां वसति। (मोहन एक नगरी में रहता है।)

प्रथमा विभक्ति के वाक्य–

द्वौ छात्रौ पठतः। (दो छात्र पढ़ते हैं।)
द्वे छात्रे पठतः। (दो छात्राएँ पढ़ती हैं।)
त्रयः छात्राः पठन्ति। (तीन छात्र पढ़ते हैं।)
तिस्रः बालिकाः पठन्ति। (तीन बालिकायें पढ़ती हैं।)
चत्वारः छात्राः पठन्ति। (चार छात्र पढ़ते हैं।)
चतस्रः बालिकाः पठन्ति। (चार बालिकायें पढ़ती हैं।)

द्वितीया विभक्ति के वाक्य–

बालकः त्रीन् ग्रन्थान् लिखति। (बालक तीन ग्रन्थ लिखता है।)
बालकः चतुरः ग्रन्थान् लिखति। (बालक चार ग्रन्थ लिखता है।)

तृतीया विभक्ति के वाक्य–

रामः त्रिभिः बाणैः रावणं हन्ति। (राम तीन बाणों से रावण को मारता है।)
रामः चतुर्भिः बाणैः रावणं हन्ति। (राम चार बाणों से रावण को मारता है।)

चतुर्थी विभक्ति के वाक्य–

नृपः त्रिभ्यः विप्रेभ्यः गाः ददाति। (राजा तीन ब्राह्मणों को गायें देता है।)
नृपः चतुर्भ्यः विप्रेभ्यः गाः ददाति। (राजा चार ब्राह्मणों को गायें देता है।)

पंचमी विभक्ति के वाक्य–

बालकाः त्रिभ्यः अश्वेभ्यः पतन्ति। (बालक तीन घोड़ें से गिरते हैं।)
बालकाः चतुर्भ्यः अश्वेभ्यः पतन्ति। (बालक चार घोड़ों से गिरते हैं।)

षष्ठी विभक्ति के वाक्य–

मोहनः त्रयाणां पुस्तकानां लेखकः अस्ति। (मोहन तीन पुस्तकों का लेखक है।)
मोहनः चतुर्णां पुस्तकानां लेखकः अस्ति। (मोहन चार पुस्तकों का लेखक है।)

सप्तमी विभक्ति के वाक्य–

पण्डिताः त्रिषु ग्रामेषु वसन्ति। (पण्डित तीन गाँव में रहते हैं।)
पण्डिताः चतुर्षु ग्रामेषु वसन्ति। (पण्डित चार गाँव में रहते हैं।)

सर्वनाम विशेषण

- किसी स्थान, वस्तु, व्यक्ति आदि के नाम को संज्ञा कहा जाता है। संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले पदों को सर्वनाम कहा जाता है।
- सर्वनाम शब्द भी विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।
- अतः सर्वनाम शब्दों को सर्वनामविशेषण भी कहा जाता है।
- अतः विशेष्य के लिंग, विभक्ति एवं वचन के अनुसार सर्वनाम शब्दों का लिंग, वचन एवं विभक्ति होगा।
- संस्कृत में सर्व, इदम्, तद्, अस्मद्, युष्मद्, किम् आदि 35 सर्वनाम शब्द हैं।

सर्वनाम (पु.)	सर्वनाम (स्त्री.)	सर्वनाम (नपुं.)
सर्वे पुत्राः	सर्वाः बालिकाः	सर्वाणि पुष्पाणि
बालकः सर्वान् ग्रन्थान् पठति	सर्वासु नगरीषु वर्षा अभवत्	
नृपः सर्वेभ्यः विप्रेभ्यः गां ददाति		
सः/अयं पुरुषः	सा/इयं बालिका	तत्/इदं पुष्पम्
तं/इमं पुरुषम्	तां/इमां बालिकां	तानि/इमानि पुष्पाणि
तेन/अनेन बाणेन	तया/अनया गुलिकया	तेन/अनेन पुष्पेण
तैः/एभिः बाणैः	ताभिः/आभिः गुलिकाभिः	तैः/एभिः पुष्पैः
तस्मै/अस्मै विप्राय	तस्यै/अस्यै कुमार्यै	तस्मै/अस्मै मित्राय
तस्मात्/अस्माद् ग्रामात्	तस्याः/अस्याः नगर्याः	तस्मात्/अस्माद् नगरात्
तस्य/अस्य बालकस्य	तस्याः/अस्याः नगर्याः	तस्य/अस्य नगरस्य
तस्मिन्/अस्मिन् ग्रामे	तस्याम्/अस्याम् नगर्याम्	तस्मिन्/अस्मिन् नगरे

Scanned by CamScanner

प्रश्न-निर्माण

प्रथमा विभक्ति

1. सुरेश: गच्छति।	क: गच्छति?
2. बालका: गच्छन्ति।	के गच्छन्ति?
3. छात्रौ गच्छत:।	कौ गच्छत:?
4. राधा नृत्यति।	का नृत्यति?
5. बालिका: पठन्ति।	का: पठन्ति?
6. मित्रम् आगच्छति।	किम् आगच्छति?
7. मित्राणि पठन्ति।	कानि पठन्ति?
8. पुष्पं उत्फुल्लम् अस्ति।	किम् उत्फुल्लम् अस्ति?

द्वितीया विभक्ति

1. अध्यापक: छात्रं पाठयति।	अध्यापक: कं पाठयति?
2. शिक्षक: बालकान् पाठयति।	शिक्षक: कान् पाठयति?
3. मोहन: रोटिकां खादति।	मोहन: कां खादति?
4. वानर: रोटिका: नयति।	वानर: का: नयति?
5. दिनेश: फलानि खादति।	दिनेश: कानि खादति?
6. लता कमलं धारयति।	लता किं धारयति?

तृतीया विभक्ति

1. राम: बाणेन रावणं हन्ति।	राम: केन रावणं हन्ति?
2. सैनिक: गुलिकया शत्रुं हन्ति।	सैनिक: कया शत्रुं हन्ति?
3. लता वर्णै: चित्रं चित्रयति।	लता कै: चित्रं चित्रयति?
4. सीता बसयानेन गच्छति।	सीता केन गच्छति?
5. सैनिक: गुलिकाभि: शत्रुं हन्ति।	सैनिक: काभि: शत्रुं हन्ति?

चतुर्थी विभक्ति

1. नृप: विप्राय गां ददाति।	नृप: कस्मै गां ददाति?
2. पिता पुत्राय धनं ददाति।	पिता कस्मै धनं ददाति?
3. गुरु: छात्राय कुप्यति।	गुरु: कस्मै कुप्यति?
4. बालिकायै मोदकं रोचते।	कस्यै मोदकं रोचते?
5. माता पुत्रेभ्य: क्रुध्यति।	माता केभ्य: क्रुध्यति?
6. अध्यापक: छात्रेभ्य: कुप्यति।	अध्यापक: केभ्य: कुप्यति?
7. रावण: विभीषणाय द्रुह्यति।	रावण: कस्मै द्रुह्यति?
8. श्रीगणेशाय नम:।	कस्मै नम:?

पञ्चमी विभक्ति

1. स: ग्रामाद् आयाति।	स: कस्माद् आयाति?
2. मोहन: नगर्या: गच्छति।	मोहन: कस्या: गच्छति?
3. लता अश्वात् पतति।	लता कस्मात् पतति?
4. पर्वताद् नदी उद्भवति।	कस्माद् नदी उद्भवति?
5. छात्र: गुरो: अधीते।	छात्र: कस्माद् अधीते?
6. बालिका अध्यापिकाया: पठति।	बालिका कस्या: पठति?
7. बालिका: बालकेभ्य: साधुतरा:।	बालिका: केभ्य: साधुतरा:?

षष्ठी विभक्ति

1. नृपस्य कन्या गच्छति।	कस्य कन्या गच्छति?
2. अन्नस्य हेतो: वसति।	कस्य हेतो: वसति?
3. ते वृक्षाणाम् अध: शेरते।	ते केषाम् अध: शेरते?

सप्तमी विभक्ति

1. नदीतीरे फलानि सन्ति।	कस्मिन्/कुत्र फलानि सन्ति?
2. साधु: गुहायां निवसति।	साधु: कस्यां/कुत्र निवसति?
3. स: स्त्रीषु विश्वसिति।	स: कासु विश्वसिति?
4. स: पाठने कुशल: अस्ति।	स: कस्मिन् कुशल: अस्ति?

मिश्रित विभक्ति

1. नृप: पुत्राय वस्त्राणि ददाति।	नृप: कस्मै वस्त्राणि ददाति?
2. पिता पुत्रेण सह गच्छति।	पिता केन सह गच्छति?
3. जनक: सीतायै गां ददाति।	जनक: कस्यै गां ददाति?
4. मोहन: नेत्रेण काण: अस्ति।	मोहन: केन काण: अस्ति?
5. नृप: नगरीणां स्वामी अस्ति।	नृप: कासां स्वामी अस्ति?
6. बालक: खट्वाम् अधिशेते।	बालक: काम् अधिशेते?
7. विभीषण: रावणं विद्रुह्यति।	विभीषण: कं विद्रुह्यति?
8. मोहन: ग्रामम् अजां नयति।	मोहन: कम् अजां नयति?
9. राम: बाणै: राक्षसान् हन्ति।	राम: कै: राक्षसान् हन्ति?
10. मेघान् उपर्युपरि वायुयानम् अस्ति।	कान् उपर्युपरि वायुयानम् अस्ति?
11. लता अजां दुग्धं दोग्धि।	लता कां दुग्धं दोग्धि?
12. गुरु: छात्रं प्रश्नान् पृच्छति।	गुरु: छात्रं कान् पृच्छति?
13. मोहन: सुरेशाय अलम्।	मोहन: कस्मै अलम्?
14. अलं विवादेन।	अलं केन?
15. स: व्याकरणे कुशल: अस्ति।	स: कस्मिन् कुशल: अस्ति?
16. जना: लोभिन: वर्तन्ते।	के लोभिन: वर्तन्ते?
17. वयं विद्यालयात् आगच्छाम:।	वयं कस्माद् आगच्छाम:?

Scanned by CamScanner

अधोलिखित प्रसंग के अनुसार अव्यय पदों का प्रयोग करके भी प्रश्न निर्माण किया जा सकता है।

1. तृतीया विभक्ति के प्रश्नों में कथम् अव्यय का प्रयोग किया जा सकता है।

जैसे– रामः कथं रावणं हन्ति? सैनिकः कथं शत्रुं हन्ति?

2. 'के लिए' अर्थ में चतुर्थी विभक्ति के प्रसंग में 'किमर्थम्' अव्यय का प्रयोग किया जा सकता है।

जैसे– नृपः किमर्थं गां ददाति?

3. पंचमी विभक्ति के अर्थ में प्रश्न निर्माण के लिए 'कुतः' अव्यय का प्रयोग किया जा सकता है।

जैसे– सः कुतः आयातिः? मोहनः कुतः गच्छति?

4. सप्तमी या द्वितीया विभक्ति के अर्थ में प्रश्न निर्माण करते समय कुत्र या क्व अव्यय का प्रयोग किया जा सकता है, यदि वहाँ स्थान या जगह का प्रसंग हो तो–

जैसे– कुत्र फलानि सन्तिः? साधुः कुत्र निवसति?

1. तृतीया विभक्ति से संबंधित प्रश्न निर्माण के संबंध में 'किम्' शब्द के स्थान पर 'कथम्' अव्यय का प्रयोग किया जा सकता है, यदि वहाँ प्रकार से संबंधित जिज्ञासा उत्पन्न हो रही हो।

रामः बसयानेन जयपुरं गच्छति।

रामः कथं जयपुरं गच्छति?

2. स्थान से संबन्धित पंचमी एवं सप्तमी वाले पदों से जिज्ञासा अर्थ में प्रश्न निर्माण करते समय क्रमशः 'कुतः' एवं 'कुत्र/क्व' प्रत्यय का प्रयोग किया जा सकता है।

मोहनः जयपुराद् आगच्छति। **मोहनः कुतः आगच्छति?**

मोहनः जयपुरे वसति। **मोहनः कुत्र/क्व वसति?**

3. यदि वाक्य में पूरण प्रत्ययान्त (पहला, दूसरा, तीसरा..... आदि) पद होकर प्रश्न निर्माण किया जावे तो उसे पद के स्थान पर कतम शब्द के रूपों का प्रयोग होगा।

1. कतमः (पु. में राम की तरह)
2. कतमा (स्त्री. में लता की तरह)
3. कतमम् (नपु. में फल की तरह)

रामः छात्राणां प्रथमः अस्ति।

रामः छात्राणां कतमः अस्ति?

सीता बालिकानां प्रथमा अस्ति।

सीता बालिकानां कतमा अस्ति?

कमलं पुष्पाणां प्रथमम् अस्ति।

कमलं पुष्पाणां कतमम् अस्ति?

बालकः द्वितीयं ग्रन्थं पठति।

बालकः कतमं ग्रन्थं पठति?

रामः तृतीयेन बाणेन रावणं हन्ति।

रामः कतमेन बाणेन रावणं हन्ति?

नृपः द्वितीयाय ब्राह्मणाय गां ददाति।

नृपः कतमाय ब्राह्मणाय गां ददाति?

बालकः द्वितीयां पुस्तिकां पठति।

बालकः कतमां पुस्तिकां पठति?

रामः तृतीयया गुलिकया रावणं हन्ति।

रामः कतमया गुलिकया रावणं हन्ति?

नृपः द्वितीयायै ब्राह्मण्यै गां ददाति।

नृपः कतमायै ब्राह्मण्यै गां ददाति?

4. प्रकार से संबंधित प्रश्नों के संबंध में 'कीदृक्' पद का प्रयोग किया जा सकता है। इसी शब्द के विकल्प के रूप से कीदृशः, कीदृशी, कीदृशम् (क्रमशः तीनों लिङ्गों में) प्रयोग किया जा सकता है।

रामः स्वस्थः अस्ति।	**रामः कीदृक्/कीदृशः अस्ति?**
सीता स्वस्था अस्ति।	**सीता कीदृक्/कीदृशी अस्ति?**
फलं रुचिकरम् अस्ति।	**फलं कीदृक्/कीदृशम् अस्ति?**
रामः पीनं ग्रन्थं पठति।	**रामः कीदृशं ग्रन्थं पठति?**
रामः पीनां पुस्तिकां पठति।	**रामः कीदृशीं पुस्तिकां पठति?**

5. संख्यावाची शब्दों से संबंधित प्रश्न निर्माण करते समय संख्यावाची शब्द के स्थान पर 'कति' शब्द का प्रयोग कर दिया जाता है।

कक्षायां पञ्च छात्राः सन्ति।

कक्षायां कति छात्राः सन्ति?

कक्षायां दश बालिकाः सन्ति।

कक्षायां कति बालिकाः सन्ति?

स्यूते चत्वारि फलानि सन्ति।

स्यूते कति फलानि सन्ति?

रामः त्रिभिः बाणैः रावणं हन्ति।

रामः कतिभिः बाणैः रावणं हन्ति?

नृपः चतुर्भ्यः ब्राह्मणेभ्यः गां ददाति।

नृपः कतिभ्यः ब्राह्मणेभ्यः गां ददाति?

त्रिषु ग्रामेषु वर्षा अभवत्।

कतिषु ग्रामेषु वर्षा अभवत्?

इस तरह स्पष्ट है कि प्रश्न निर्माण में संख्यावाची शब्द के स्थान पर 'कति' शब्द के रूपों का प्रयोग होगा। चाहे लिङ्ग या वचन कोई भी हो।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(कारक प्रकरण)

1. **कारक कितने हैं ?**
(अ) 6 (ब) 7
(स) 8 (द) 5 ( )

2. **अष्टाध्यायी क्रम में पहला कारक कौनसा है?**
(अ) अपादान (ब) कर्ता
(स) कर्म (द) अधिकरण ( )

3. **अष्टाध्यायी क्रम में अन्तिम कारक कौनसा है?**
(अ) अपादान (ब) सम्प्रदान
(स) कर्ता (द) कर्म ( )

4. **धिक् योग में विभक्ति होती है–**
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) द्वितीया ( )

5. **उक्त कर्ता में कौनसी विभक्ति होती है?**
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) प्रथमा-तृतीया ( )

6. **सम्बोधन में कौनसी विभक्ति होती है?**
(अ) सप्तमी (ब) पञ्चमी
(स) प्रथमा (द) द्वितीया ( )

7. **कर्मवाच्य के वाक्य में प्रथमा विभक्ति होती है–**
(अ) कर्म में (ब) कर्ता में
(स) करण में. (द) सम्प्रदान में ( )

8. **उक्त कर्म में विभक्ति होती है–**
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया
(स) तृतीया (द) प्रथमा-द्वितीया ( )

9. **'वामनः बलिं याचते वसुधाम्' में 'वसुधा' पद है–**
(अ) ईप्सितकर्म (ब) अकथितकर्म
(स) अनीप्सित कर्म (द) ईप्सिततम कर्म ( )

10. **लिङ्गमात्र में प्रथमा-विभक्ति का उदाहरण है–**
(अ) कृष्णः (ब) श्रीः
(स) उच्चैः (द) तटः, तटी, तटम् ( )

11. **परिमाणमात्र में प्रथमा का उदाहरण नहीं है–**
(अ) खारी (ब) आढकम्
(स) द्रोणो व्रीहिः (द) बहवः ( )

12. **अधोलिखित में अशुद्ध है–**
(अ) वृक्षात् फलानि अवचिनोति
(ब) शतं जयति देवदत्तम्
(स) ग्रामम् अजां नयति
(द) तण्डुलान् ओदनं पचति ( )

13. **सम्प्रदान में विभक्ति होती है–**
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) षष्ठी (द) तृतीया ( )

14. **कर्ता द्वारा सर्वाधिक चाहे गये कारक की संज्ञा होती है–**
(अ) कर्ता (ब) कर्म
(स) करण (द) अधिकरण ( )

15. **अपादान कितने प्रकार का होता है–**
(अ) एक (ब) दो
(स) तीन (द) चार ( )

16. **निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है–**
(अ) तण्डुलैः ओदनं पचति
(ब) ग्रामाद् अजां कर्षति
(स) देवदत्तं शतं मुष्णाति
(द) माणवकाय धर्मं ब्रूते ( )

17. **'सुरेशः क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति' वाक्य में अकथित कर्म है–**
(अ) सुरेश (ब) क्षीरनिधि
(स) सुधा (द) (ब) व (स) दोनों ( )

18. **'नाना' पद के योग में कौनसी विभक्ति होती है–**
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया
(स) पञ्चमी (द) (अ)(ब)(स) तीनों ( )

19. **''प्रातिपदिकार्थ......'' सूत्र के द्वारा विभक्ति होती है–**
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया
(स) पंचमी (द) चतुर्थी ( )

20. **ईप्सिततम कर्म से भिन्न उदाहरण है–**
(अ) हरिं भजति
(ब) तण्डुलान् पचति
(स) ओदनं भुञ्जानो विषं भुंक्ते
(द) ग्रामं गच्छति ( )

21. 'रामेण बाणेन हतो बालि:' में करण है–
(अ) राम (ब) बाण
(स) बालि (द) हत ( )

22. अधोलिखित में से भिन्न है–
(अ) विषं भुङ्क्ते ओदनं भुञ्जान:
(ब) बलिं याचते वसुधां वामन:
(स) माणवकं पन्थानं पृच्छति गुरु:
(द) शतं जयति देवदत्तं महेश: ( )

23. ''स: चोराद् बिभेति'' में कारक है–
(अ) करण (ब) सम्प्रदान
(स) अधिकरण (द) अपादान ( )

24. स्वस्वामिभावादि सम्बन्ध में विभक्ति होती है–
(अ) पञ्चमी (ब) षष्ठी
(स) तृतीया (द) सप्तमी ( )

25. (स:) हरिं भजति में 'हरि' कर्म है–
(अ) ईप्सिततम (ब) ईप्सित
(स) अकथित (द) अनीप्सित ( )

26. 'प्रजाभ्य: स्वस्ति' में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (ब) सप्तमी
(स) षष्ठी (द) चतुर्थी ( )

27. ''नम:स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'' सूत्र से विभक्ति होती है–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

28. 'तण्डुलान् ओदनं पचति' में अकथित कारक है–
(अ) तण्डुल (ब) ओदन
(स) दोनों (द) दोनों नहीं ( )

29. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते' में 'विष' कर्म है–
(अ) ईप्सिततम (ब) अनीप्सित
(स) ईप्सित (द) अकथित ( )

30. 'धावत: अश्वात् पतति' में कारक है–
(अ) अपादान (ब) सम्प्रदान
(स) करण (द) कर्म ( )

31. 'कामात् क्रोधोऽभिजायते' उदाहरण में कारक है–
(अ) सम्प्रदान (ब) अपादान
(स) करण (द) कर्म ( )

32. अकथित कारक में कही गई दुह आदि धातुएँ कितनी हैं ?
(अ) 12 (ब) 14
(स) 16 (द) 18 ( )

33. सम्प्रदान सञ्ज्ञक पद नहीं है–
(अ) विप्राय गां ददाति (ब) हरये रोचते भक्ति:
(स) खट्वायां शेते (द) हरये असूयति ( )

34. षष्ठी का उदाहरण नहीं है–
(अ) मनसा पाठ: (ब) कालिदासस्य कृति:
(स) सूर्यस्य उदय: (द) कृष्णस्य गमनम् ( )

35. त्रिविध आधार में नहीं है–
(अ) औपश्लेषिक (ब) अभिव्यापक
(स) वैषयिक (द) आधिकरणिक ( )

36. दुहादि धातुओं में नहीं है–(अकथित कारक के प्रसंग में)
(अ) पच् (ब) मुच्
(स) मुष् (द) जि ( )

37. उपरि के योग में विभक्ति होती है–
(अ) षष्ठी (ब) प्रथमा
(स) द्वितीया (द) तृतीया ( )

38. ''येनाङ्गविकार:'' सूत्र से विभक्ति होती है–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

39. अपादान का उदाहरण नहीं है–
(अ) हिमवतो गङ्गा प्रभवति
(ब) चौराद्बिभेति
(स) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति
(द) विप्राय गां ददाति ( )

40. 'दुग्धे चिक्कणता' में आधार है–
(अ) अभिव्यापक (ब) औपश्लेषिक
(स) वैषयिक (द) तीनों ( )

41. अधोलिखित में से शुद्ध वाक्य है–
(अ) हरि: बैकुण्ठे शेते
(ब) हरि: बैकुण्ठे अध्यास्ते
(स) शिव: पर्यङ्के अधिशेते
(द) प्रताप: ग्रामे अधितिष्ठति ( )

42. रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोग में संज्ञा होती है–
(अ) अपादान (ब) सम्प्रदान
(स) अधिकरण (द) करण ( )

43. अधोलिखित में से शुद्ध वाक्य है–
(अ) ग्रामस्य उभयत: वृक्षा: सन्ति
(ब) वनेन निकषा जलम्
(स) अध्यधि लोकं हरि:
(द) मुनि: पर्वते उपवसति ( )

44. कर्तृवाच्य के कर्ता में विभक्ति होती है–
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया
(स) तृतीया (द) षष्ठी ( )

45. ''येनाङ्गविकार:'' सूत्र का उदाहरण नहीं है–
(अ) शिरसा खल्वाट: (ब) पादेन खञ्ज:
(स) नेत्रेण काण: (द) पुत्रेण सहागत: पिता ( )

46. कर्मवाच्य के कर्ता में कौनसी विभक्ति होती है–
(अ) तृतीया (ब) प्रथमा
(स) चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

47. हरि: ...... (बैकुण्ठ) अनुवसति। रिक्त स्थान में होगा–
(अ) बैकुण्ठे (ब) बैकुण्ठाय
(स) बैकुण्ठम् (द) बैकुण्ठेन ( )

48. आधार कितने प्रकार का होता है?
(अ) 2 (ब) 4
(स) 3 (द) 7 ( )

49. निषेधार्थक 'अलम्' के योग में विभक्ति होती है–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

50. उपपद-चतुर्थी विभक्ति वाला वाक्य है–
(अ) हरये क्रुध्यति (ब) हरये रोचते भक्ति
(स) दैवान् नमस्करोति (द) श्रीगणेशाय नम: ( )

51. 'स: अध्यापकात् पठति' में कारक है–
(अ) अपादान (ब) सम्प्रदान
(स) अधिकरण (द) करण ( )

52. 'वने उपवसति' में वन की संज्ञा हुई है–
(अ) अधिकरण (ब) सम्प्रदान
(स) कर्म (द) कर्ता ( )

53. अपादान में विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) षष्ठी (द) सप्तमी ( )

54. दान देने के प्रसंग में कारक होता है–
(अ) सम्प्रदानम् (ब) अपादानम्
(स) करणम् (द) अधिकरणम् ( )

55. 'सीतया सह राम: वनम् अगच्छत्' वाक्य में तृतीया वाला पद है–
(अ) सीता (ब) राम
(स) वन (द) समम् ( )

56. क्रुध्-आदि धातुओं के प्रयोग में, जिसकी तरफ क्रोध किया जावें, उसकी संज्ञा होती है–
(अ) करण (ब) अधिकरण
(स) अपादान (द) सम्प्रदान ( )

57. अधि-पूर्वक शी-धातु के आधार को कहा जाता है–
(अ) आधार (ब) कर्म
(स) करण (द) सम्प्रदान ( )

58. भिन्न वाक्य है–
(अ) हरये क्रुध्यति (ब) सज्जनेभ्य: द्रुह्यन्ति
(स) हरिम् अभिक्रुध्यति (द) कृष्णाय असूयति ( )

59. 'वषट्' के योग में विभक्ति होगी–
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

60. उपपद्द्वितीया विभक्ति का उदाहरण है–
(अ) हरिं भजति (ब) बलिं याचते वसुधाम्
(स) देवान् नमस्करोति (द) ग्रामं समया वनम् ( )

61. 'राम: योग्यतया हस्तेन कलमेन मस्या पत्रं लिखति' वाक्य में कितने पद करण है?
(अ) 2 (ब) 3
(स) 4 (द) 5 ( )

62. अधोलिखित में से शुद्ध वाक्य है–
(अ) ग्रामस्य समया (ब) लङ्काया: निकषा
(स) दुर्जनाय धिक् (द) हा कृष्णाभक्तम् ( )

63. अधोलिखित में करण है–
(अ) स: ग्रन्थं पठति।
(ब) स: ग्रन्थं लिखति।
(स) स: कलमेन लिखति।
(द) स: ग्रन्थं पाठयति। ( )

64. अधिकरण में विभक्ति होती है–
(अ) षष्ठी (ब) सप्तमी
(स) पञ्चमी (द) चतुर्थी ( )

65. अव्ययपद किसके उदाहरण हैं?
(अ) प्रातिपदिकार्थमात्र (ब) लिङ्गमात्र
(स) परिमाणमात्र (द) वचनमात्र ( )

66. 'तृतीया' का उदाहरण है–
(अ) अक्ष्णा काण:
(ब) ग्रन्थं पठति
(स) हरिं भजति
(द) ग्रामे वसति (

67. 'आधार' में विभक्ति होती है–
(अ) षष्ठी (ब) सप्तमी
(स) षष्ठी-सप्तमी (द) चतुर्थी

Scanned by CamScanner

68. 'सः ग्रन्थं पठति' में कारक है–
(अ) अधिकरण (ब) कर्म
(स) सम्प्रदान (द) करण ( )

69. पर्याप्ति अर्थ वाले 'अलम्' के योग में विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (ब) तृतीया
(स) तृतीया-चतुर्थी (द) पञ्चमी ( )

70. निम्नलिखित में से किसके योग में द्वितीया नहीं होती–
(अ) धिक् (ब) सर्वतः
(स) नमः (द) समया ( )

71. द्वितीया विभक्ति का उदाहरण नहीं है–
(अ) मासं कल्याणी
(ब) क्रोशं कुटिला नदी
(स) क्रोशस्य एकदेशे पर्वतः
(द) मासं गुडधानाः ( )

72. औपश्लेषिक आधार का उदाहरण है–
(अ) कटे आस्ते
(ब) मोक्षे इच्छा अस्ति
(स) सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति
(द) तिलेषु तैलम् ( )

73. 'तमप् प्रत्यय' के योग में विभक्ति होती है–
(अ) सप्तमी (ब) षष्ठी
(स) पञ्चमी (द) षष्ठी-सप्तमी ( )

74. विभक्तियाँ कितनी होती है?
(अ) सात (ब) आठ
(स) छः (द) पाँच ( )

75. 'कर्म' में विभक्ति होती है–
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया
(स) षष्ठी (द) तृतीया ( )

76. तृतीया विभक्ति होती है–
(अ) सम्प्रदान में (ब) अपादान में
(स) कर्म में (द) करण में ( )

77. अभिपूर्वक दुह् धातु के योग में सञ्ज्ञा होगी–
(अ) अपादान (ब) सम्प्रदान
(स) कर्म (द) करण ( )

78. सप्तमी का उदाहरण नहीं है–
(अ) धावतः अश्वात् पतति
(ब) नरेषु द्विजः श्रेष्ठः
(स) छात्रेषु मोहनः पटुः
(द) गोषु कृष्णा बहुक्षीरा ( )

79. दिशावाची शब्दों के योग में विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) सप्तमी (द) पञ्चमी, सप्तमी ( )

80. क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट सहायक को कहा जाता है–
(अ) करण (ब) सम्प्रदान
(स) अपादान (द) अधिकरण ( )

81. अभिव्यापक आधार का उदाहरण है–
(अ) तिलेषु तैलम् (ब) मोक्षे इच्छा
(स) कटे आस्ते (द) स्थाल्यां पचति ( )

82. 'ऋते' के योग में विभक्ति होती है–
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) तृतीया (द) षष्ठी ( )

उत्तर तालिका

(1) अ	(2) अ	(3) स	(4) द	(5) अ	(6) स	(7) अ	(8) अ	(9) द	(10) द
(11) द	(12) अ	(13) अ	(14) ब	(15) ब	(16) स	(17) ब	(18) द	(19) अ	(20) स
(21) ब	(22) अ	(23) द	(24) ब	(25) अ	(26) द	(27) स	(28) अ	(29) ब	(30) अ
(31) ब	(32) स	(33) स	(34) अ	(35) द	(36) ब	(37) अ	(38) ब	(39) द	(40) अ
(41) अ	(42) ब	(43) स	(44) अ	(45) द	(46) अ	(47) स	(48) स	(49) ब	(50) द
(51) अ	(52) अ	(53) ब	(54) अ	(55) अ	(56) द	(57) ब	(58) स	(59) स	(60) द
(61) स	(62) द	(63) स	(64) ब	(65) अ	(66) अ	(67) ब	(68) ब	(69) अ	(70) स
(71) स	(72) अ	(73) द	(74) अ	(75) ब	(76) द	(77) स	(78) अ	(79) ब	(80) अ
(81) अ	(82) ब								

अध्याय 4

लकार, वाच्य परिवर्तन आदि

लकार

(i) लट्लकार–
- वर्तमाने लट्–

वर्तमानकालिक अर्थ में धातुओं से लट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।

राम पढ़ता है।	रामः पठति।
बालिका पढ़ती है।	बालिका पठति।
तुम पढ़ते हो।	त्वं पठसि।
मैं पढ़ता हूँ।	अहं पठामि।
हम सब पढ़ते हैं।	वयं पठामः।
तुम सब पढ़ते हैं।	यूयं पठत।
राम रावण को मारता है।	रामः रावणं हन्ति।

(ii) लङ् लकार–
- अनद्यतने लङ्–

भूतकालिक अर्थ में धातुओं से लङ् लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।

राम ने ग्रंथ को पढ़ा।	रामः ग्रन्थम् अपठत्।
तुमने ग्रंथ को पढ़ा।	त्वं ग्रन्थम् अपठः।
तुम सब ने ग्रंथ को पढ़ा।	यूयं ग्रन्थम् अपठत।
मैंने ग्रंथ को पढ़ा।	अहं ग्रन्थम् अपठम्।
हम सब ने ग्रंथ को पढ़ा।	वयं ग्रन्थम् अपठाम।
राम ने रावण को मारा।	रामः रावणम् अहन्।
तुम ने रावण को मारा।	त्वं रावणम् अहन्।
मैंने रावण को मारा।	अहं रावणम् अहनम्।

(iii) लृट् लकार–
- लृट् शेषे च–

भविष्यकालीन अर्थ के प्रसंग में धातुओं से लृट् लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।

रामः ग्रन्थं पठिष्यति।
छात्राः ग्रन्थं पठिष्यन्ति।
त्वं ग्रन्थं पठिष्यसि।
यूयं ग्रन्थं पठिष्यथ।
अहं ग्रन्थं पठिष्यामि।
वयं ग्रन्थं पठिष्यामः।
रामः रावणं हनिष्यति।
त्वं रावणं हनिष्यसि।

(IV/V) लिङ् लकार एवं लोट् लकार–
- विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्–
- लोट् च– विधि आदि छः अर्थों में विधिलिङ्लकार एवं लोट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।

(i) विधि (चाहिए/आदेश/प्रेरणा)।
(ii) निमन्त्रण (निश्चित रूप से आगमन)।
(iii) आमन्त्रण (वैकल्पिक आगमन)।
(iv) अधीष्ट (निवेदन)।
(v) संप्रश्न (मैं पढ़ूँ या लिखूँ)।
(vi) प्रार्थना।

रामः ग्रन्थं पठेत्/पठतु।
छात्राः ग्रन्थं पठेयुः/पठन्तु।
त्वं ग्रन्थं पठेः/पठ।
अहं ग्रन्थं पठेयम्/पठानि।
वयं ग्रन्थं पठेम/पठाम।
यूयं ग्रन्थं पठेत/पठत।

- लकार परिवर्तन के प्रसंग में दिये हुए क्रिया रूप के पुरुष एवं वचन में दूसरे लकार के रूप में परिवर्तन होता है। अर्थात् लकार परिवर्तन के प्रसंग में पुरुष या वचन में परिवर्तन नहीं होगा, जब तक की स्पष्ट तौर पर परिवर्तन हेतु नहीं कहा जाए।

लट् लकार से लङ् लकार में परिवर्तन–

1. सः ग्रन्थं पठति।	**सः ग्रन्थं अपठत्।**
2. बालिका नृत्यति।	**बालिका अनृत्यत्।**
3. सुरेशः चित्रं पश्यति।	**सुरेशः चित्रं अपश्यत्।**
4. सः गां नयति।	**सः गां अनयत्।**
5. रामः रावणं हन्ति।	**रामः रावणं अहन्।**
6. अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।	**अध्यापकः प्रश्नं अपृच्छत्।**
7. मोहनः साधुः अस्ति।	**मोहनः साधुः आसीत्।**
8. नृपः गां ददाति।	**नृपः गां अददात्।**
9. सः ग्रन्थं लिखति।	**सः ग्रन्थं अलिखत्।**
10. मोहनः ग्रामं गच्छति।	**मोहनः ग्रामं अगच्छत्।**

लट् लकार से लोट् लकार में परिवर्तन–

11. सः धनं लभते।	**सः धनं लभताम्।**
12. त्वं फलं लभसे।	**त्वं फलं लभस्व।**
13. अहं गुरुं सेवे।	**अहं गुरुं सेवै।**
14. सः पुस्तकं पठति।	**सः पुस्तकं पठतु।**
15. सा ग्रामं गच्छति।	**सा ग्रामं गच्छतु।**
16. वयं ग्रन्थं लिखामः।	**वयं ग्रन्थं लिखाम।**
17. यूयं पाठं पठथ।	**यूयं पाठं पठत।**

लट् लकार से लृट् लकार में परिवर्तन–

18. सः पाठं पठति।	**सः पाठं पठिष्यति।**
19. त्वं पापं लभसे।	**त्वं पापं लप्स्यसे।**
20. अहं गुरुं नमामि।	**अहं गुरुं नंस्यामि।**
21. सा अजां नयति।	**सा अजां नेष्यति।**
22. ते फलानि पश्यन्ति।	**ते फलानि द्रक्ष्यन्ति।**
23. ते कार्यं कुर्वन्ति।	**ते कार्यं करिष्यन्ति।**
24. रामः लेखं लिखति।	**रामः लेखं लेखिष्यन्ति।**
25. शत्रुः जलं पिबति।	**शत्रुः जलं पास्यति।**

लट् लकार से विधिलिङ् लकार में परिवर्तन–

26. सः पुस्तिकां पठति।	**सः पुस्तिकां पठेत्।**
27. सा नृत्यति।	**सा नृत्येत्।**
28. अहं पाठं पठामि।	**अहं पाठं पठेयम्।**
29. ते गां नयन्ति।	**ते गां नयेयुः।**
30. वयं ग्रामं गच्छामः।	**वयं ग्रामं गच्छेम।**

अभ्यासार्थ-प्रश्नाः–

I. लोट् लकारे परिवर्तनम् –

31. सः ग्रामं गच्छति।	**सः ग्रामं गच्छतु।**
32. अहं पाठं पठेयम्।	**अहं पाठं पठानि।**
33. त्वं लेखं पठिष्यसि।	**त्वं लेखं पठ।**
34. अहं अजां नेष्यामि।	**अहं अजां नयानि।**
35. रामः रावणम् अहन्।	**रामः रावणम् हन्तु।**

II. लृट्लकारे परिवर्तनम्–

36. सः नगरं गच्छेत्।	**सः नगरं गमिष्यति।**
37. ते पाठं पठेयुः।	**ते पाठं पठिष्यन्ति।**
38. ते छात्रान् पश्यन्ति।	**ते छात्रान् द्रक्ष्यन्ति।**
39. सा गां नयति।	**सा गां नेष्यति।**
40. त्वं लेखं लिखेः।	**त्वं लेखं लेखिष्यसि।**

III. लट्लकारे परिवर्तनम्–

41. भवान् पाठं पठतु।	**भवान् पाठं पठति।**
42. ते ग्रामं गमिष्यन्ति।	**ते ग्रामं गच्छन्ति।**
43. ते चित्राणि द्रक्ष्यन्ति।	**ते चित्राणि पश्यन्ति।**
44. अहं ग्रामम् अगच्छम्।	**अहं ग्रामं गच्छामि।**
45. ते ग्रन्थम् अलिखन्।	**ते ग्रन्थं लिखन्ति।**

IV. लङ् लकारे परिवर्तनम्–

46. सः पाठं पठतु।	**सः पाठम् अपठत्।**
47. भवान् लेखं लिखेत्।	**भवान् लेखम् अलिखत्।**
48. ते ग्रामं गच्छेयुः।	**ते ग्रामम् अगच्छन्।**
49. सा गां नयति।	**सा गाम् अनयत्।**
50. अहं मातरं सेवे।	**अहं मातरम् असेवे।**

अभ्यासार्थ प्रश्न

(लकार परिवर्तन)

1. 'रामः पुस्तकं पठति'– अस्य वाक्यस्य लृट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) रामः पुस्तकं पठतु
(ब) रामः पुस्तकं पठिष्यति
(स) रामः पुस्तकं पठेत्
(द) रामः पुस्तकानि पठिष्यन्ति ( )

2. 'बालकः कक्षायाम् अनृत्यत्' अस्य लट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) नृत्यति (ब) नर्तिष्यति
(स) नृत्येत् (द) नृत्यतु ( )

3. 'ते छात्रान् पाठयन्ति'– अस्य लृट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) पठिष्यन्ति (ब) पाठयिष्यन्ति
(स) अपाठयन् (द) पठेयुः ( )

4. 'सीता ग्रामम् अगच्छत्' लोट्लकारे परिवर्तनं करोतु–
(अ) गच्छति (ब) गमिष्यति
(स) गच्छतु (द) गच्छेत् ( )

5. 'छात्रः गुरुं नमति' अस्य भविष्यत्काले रूपम् अस्ति–
(अ) नमिष्यति (ब) नंस्यति
(स) नमिष्यामि (द) नमेयम् ( )

6. 'पठामि'– इति रूपं लोट्लकारे परिवर्तयत–
(अ) पठानि (ब) पठेयम्
(स) अपठम् (द) पठिष्यामि ( )

7. 'अहं जलं पिबामि'– अस्य लृट्लकारे रूपमस्ति–
(अ) पास्यति (ब) पिबिस्यामि
(स) पास्यामि (द) पाष्यामि ( )

8. 'त्वं पुस्तकं पठसि'– अस्य लोट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) पठतु (ब) पठानि
(स) पठ (द) पठेः ( )

9. 'यूयं ग्रन्थान् लिखथ' – अस्य विधिलिङ्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) लिखेत् (ब) लिखेत
(स) अलिखत (द) लिखित ( )

10. 'पृच्छति'– अस्य लृट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) प्रक्ष्यति (ब) पृच्छिष्यति
(स) पृक्ष्यति (द) प्रच्छिष्यति ( )

11. 'पश्यन्ति' अस्य भविष्यकाले रूपम् अस्ति–
(अ) पश्यिष्यन्ति (ब) पक्ष्यन्ति
(स) द्रक्ष्यन्ति (द) दृक्ष्यन्ति ( )

12. 'सा अजां नयति' – अस्य लृट्लकारे रूपम् अस्ति–
(अ) नयिष्यति (ब) नीष्यति
(स) नेष्यति (द) अनयत् ( )

13. 'पक्ष्यति' इत्यत्र लकारः वर्तते–
(अ) लट्लकारः (ब) लोट्लकारः
(स) लृट्लकारः (द) लङ्लकारः ( )

14. धातवः सन्ति–
(अ) एकविधः (ब) त्रिविधाः
(स) चतुर्विधाः (द) षड्धाः ( )

15. भवति पदस्य विधिलिङ्लकारः वर्तते–
(अ) भवतु (ब) भवताम्
(स) भविष्यति (द) भवेत् ( )

16. पठिष्यति पदस्य लट्लकारः अस्ति–
(अ) पठति (ब) पठतु
(स) पठन्ति (द) पठन्तु ( )

17. 'देहि' पदस्य लकारः वर्तते–
(अ) लोट् (ब) लट्
(स) लृट् (द) विधिलिङ् ( )

18. 'लिखामि' पदस्य लृट्लकारः वर्तते–
(अ) लिखिष्यामि (ब) लेक्ष्यामि
(स) लेखिष्यामि (द) लिखानि ( )

19. 'सेवे' पदस्य लोट्लकारः वर्तते–
(अ) सेवै (ब) असेवे
(स) सेवेय (द) सेविष्ये ( )

20. 'अपिबः' इत्यत्र लकारः वर्तते–
(अ) लट् (ब) लृट्
(स) लङ् (द) विधिलिङ् ( )

उत्तर तालिका

(1) ब	(2) अ	(3) ब	(4) स	(5) ब	(6) अ	(7) स	(8) स	(9) ब	(10) अ
(11) स	(12) स	(13) स	(14) ब	(15) द	(16) अ	(17) अ	(18) स	(19) अ	(20) स

Scanned by CamScanner

वाच्य परिवर्तन

वाच्य की दृष्टि से संस्कृत वाक्यों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) कर्तृवाक्य–कर्त्ता के अनुसार क्रिया का स्वरूप निर्धारित होना।
(ii) कर्मवाच्य–कर्म के अनुसार क्रिया का स्वरूप निर्धारित होना
(iii) भाववाच्य–क्रिया नित्य रूप से प्रथम पुरुष एकवचन होना।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
(i) कर्त्ता उक्त (सक्रिय) होता है।	(i) कर्म उक्त होता है।	(i) भाव या क्रिया उक्त होती है।
(ii) अत: कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।	(ii) अत: कर्म में प्रथमा विभक्ति होगी।	(ii) प्रथमा विभक्ति किसी पद में नहीं होगी।
(iii) क्रिया का स्वरूप कर्त्ता के वचन एवं पुरुष के अनुसार निर्धारित होगा।	(iii) क्रिया का स्वरूप कर्म के वचन एवं पुरुष के अनुसार निर्धारित होगा।	(iii) क्रिया नित्यरूप से प्रथम पुरुष एकवचन की होगी।
(iv) धातुरूप नियमानुसार परस्मैपदी/आत्मनेपदी/उभयपदी होगा।	(iv) सभी धातुएँ आत्मनेपदी हो जाती है।	(iv) क्रिया नित्य रूप से आत्मनेपदी होगी।
(v) कर्त्ता के अलावा अन्य सभी कारक अनुक्त होंगे।	(v) कर्म के अलावा अन्य सभी कारक अनुक्त होंगे।	(v) यहाँ कर्म का अभाव होता है। अन्य सभी कारक अनुक्त होते हैं।
अनुक्त-कर्म–II	अनुक्त कर्त्ता–III	अनुक्त कर्त्ता–III
करण–III	करण–III	करण–III
संप्रदान–IV	संप्रदान–IV	संप्रदान–IV
अपादान–V	अपादान–V	अपादान–V
अधिकरण–VII	अधिकरण–VII	अधिकरण–VII

वाच्य परिवर्तन के प्रसंग में पठ् धातु के रूप निम्नलिखित प्रकार से चलेंगे–

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

यहाँ सुविधा के लिए धातुओं का प्रथम रूप संकलित किया गया है। पठ् धातु की तरह इनका रूप बनाकर वाच्य परिवर्तन करें।

दा	– दीयते	[देना]
पा (पिब्)	– पीयते	[पीना]
हस्	– हस्यते	[हँसना]
पठ्	– पठ्यते	[पढ़ना]
लिख्	– लिख्यते	[लिखना]
लभ्	– लभ्यते	[प्राप्त करना]
गम् (गच्छ्)	– गम्यते	[जाना]
खाद्	– खाद्यते	[खाना]
नी	– नीयते	[ले जाना]
दृश् (पश्य्)	– दृश्यते	[देखना]
नम्	– नम्यते	[नमस्कार]
कृ	– क्रियते	[करना]
गा	– गीयते	[गाना]
अस्	– भूयते	[होना]
भू	– भूयते	[होना]
आप्	– आप्यते	[पाना]
अधि +इ	– अधीयते	[अध्ययन]
इष् (इच्छ्)	– इष्यते	[चाहना]
कथ्	– कथ्यते	[कहना]
कुप्	– कुप्यते	[क्रोध करना]
क्री	– क्रीयते	[खरीदना]
क्रुध्	– क्रुध्यते	[क्रोध करना]
चर्	– चर्यते	[चलना]
चल्	– चल्यते	[चलना]
चुर्	– चोर्यते	[चुराना]
जप्	– जप्यते	[जपना]
जि (जय्)	– जीयते	[जीतना]
क्षिप्	– क्षिप्यते	[फेंकना]
ग्रह्	– गृह्यते	[पकड़ना]
घ्रा (जिघ्र्)	– घ्रायते	[सूंघना]
ज्ञा	– ज्ञायते	[जानना]
त्यज्	– त्यज्यते	[त्याग करना]
त्रा	– त्रायते	[रक्षा करना]
दुह्	– दुह्यते	[दुहना]
धा (दधाति)	– धीयते	[धारण करना]
नश्	– नश्यते	[नाश करना]
नृत्	– नृत्यते	[नाचना]
पच्	– पच्यते	[पकाना]
पा	– पायते	[रक्षा करना]
प्रच्छ् (पृच्छ्)	– पृच्छ्यते	[पूँछना]
भज्	– भज्यते	[सेवा करना]
भिक्ष्	– भिक्ष्यते	[माँगना]
भी	– भीयते	[डरना]
भुज्	– भुज्यते	[खाना]
यज्	– इज्यते	[यज्ञ करना]
याच्	– याच्यते	[माँगना]
रक्ष्	– रक्ष्यते	[रक्षा करना]
रुच्	– रुच्यते	[अच्छा लगना]
वद्	– उद्यते	[बोलना]
वस्	– उष्यते	[रहना]
वह्	– उह्यते	[ले जाना]
शी	– शय्यते	[सोना]
श्रु	– श्रूयते	[सुनना]
सेव्	– सेव्यते	[सेवा करना]
स्था (तिष्ठ्)	– स्थीयते	[रुकना]
स्पृश्	– स्पृश्यते	[छूना]
स्मृ	– स्मर्यते	[याद करना]
स्वप्	– सुप्यते	[सोना]
हन्	– हन्यते	[मारना]
हृ (हरति)	– ह्रियते	[ले जाना]

- क्रिया का स्वरूप वाक्य में स्थित प्रथमा विभक्ति वाले पद के अनुसार ही निर्धारित होगा।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः ग्रन्थं पठति।	**रामेण ग्रन्थः पठ्यते।**
रामः ग्रन्थान् पठति।	**रामेण ग्रन्थाः पठ्यन्ते।**
छात्राः ग्रन्थं पठन्ति।	**छात्रैः ग्रन्थः पठ्यते।**
मोहनः मां पठति।	**मोहनेन अहं पठ्ये।**
मोहनः त्वां पठति	**मोहनेन त्वं पठ्यसे।**

निष्कर्ष–

(i) स्पष्ट है कि वाच्य परिवर्तन के प्रसंग में केवल कर्त्ता, कर्म, और क्रिया में ही परिवर्तन होगा।

(ii) करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कारक तथा अव्ययों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

★(iii) कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है, जबकि कर्मवाच्य के वाक्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति हो जाती है। भाववाच्य के वाक्य में भी कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होगी।

★(iv) कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जबकि कर्मवाच्य के वाक्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है। भाववाच्य के वाक्य में कर्म का अभाव होता है।

★(v) कर्तृवाच्य के वाक्य में कर्त्ता के अनुसार क्रिया का स्वरूप निर्धारित होगा तथा नियमानुसार धातु परस्मैपदी, आत्मनेपदी या उभयपदी होगी। जबकि कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार क्रिया का स्वरूप निर्धारित होगा तथा धातु नित्य रूप से आत्मनेपदी होगी। भाववाच्य के वाक्य में क्रिया नित्य रूप से प्रथम पुरुष एकवचन तथा आत्मनेपदी में होगी।

कर्तृवाच्य से	भाववाच्य में
सः हसति।	**तेन हस्यते।**
ते हसन्ति।	**तैः हस्यते।**
अहं पठामि।	**मया पठ्यते।**
त्वं पठसि।	**त्वया पठ्यते।**
सा उच्चैः हसति।	**तया उच्चैः हस्यते।**
सः गच्छति।	**तेन गम्यते।**

वाच्य परिवर्तन

(1) मोहनः ग्रन्थं ददाति। – **मोहनेन ग्रन्थः दीयते।**
(2) रामः जलं पिबति। – **रामेण जलं पीयते।**
(3) सः गीतां पठति। – **तेन गीता पठ्यते।**
(4) ते लेखं लिखन्ति। – **तैः लेखः लिख्यते।**
(5) सा धनं लभते। – **तया धनं लभ्यते।**
(6) कृष्णः मोदकं खादति। – **कृष्णेन मोदकः खाद्यते।**
(7) राधा अजां नयति। – **राधया अजा नीयते।**
(8) पण्डितः कुण्डलीं पश्यति।– **पण्डितेन कुण्डली दृश्यते।**
(9) छात्राः गुरुं नमन्ति। – **छात्रैः गुरुः नम्यते।**
(10) लता गीतं गायति। – **लतया गीतं गीयते।**
(11) श्यामः धनं प्राप्नोति। – **श्यामेन धनं प्राप्यते।**
(12) सुरेशः व्याकरणम् अधीते।– **सुरेशेन व्याकरणम् अधीयते।**
(13) पण्डितः कथां कथयति। – **पण्डितेन कथा कथ्यते।**
(14) लता पुस्तकानि क्रीणाति। – **लतया पुस्तकानि क्रीयन्ते।**
(15) चौरः धनं चौरयति। – **चौरेण धनं चौर्यते।**
(16) भक्तः ईश्वरं जपति। – **भक्तेन ईश्वरः जप्यते।**
(17) रामः लङ्कां जयति। – **रामेण लङ्का जीयते।**
(18) बालकः कन्दुकं क्षिपति। – **बालकेन कन्दुकं क्षिप्यते।**
(19) बालकः औषधिं गृह्णाति।– **बालकेन औषधिः गृह्यते।**
(20) बालिका पुष्पं जिघ्रति। – **बालिकया पुष्पं घ्रायते।**
(21) मोहनः गीतां जानाति। – **मोहनेन गीता ज्ञायते।**
(22) पण्डितः प्रमादं त्यजति। – **पण्डितेन प्रमादः त्यज्यते।**
(23) गोपालः दुग्धं दोग्धि। – **गोपालेन दुग्धं दुह्यते।**
(24) गीता भोजनं पचति। – **गीतया भोजनं पच्यते।**
(25) रक्षकः देशं पाति। – **रक्षकेण देशः पायते।**
(26) शिक्षकः प्रश्नं पृच्छति। – **शिक्षकेण प्रश्नः पृच्छ्यते।**

(27) छात्रः ईश्वरं भजति। – **छात्रेण ईश्वरः भज्यते।**
(28) पण्डितः यज्ञं यजति। – **पण्डितेन यज्ञः इज्यते।**
(29) पण्डितः दक्षिणां याचते। – **पण्डितेन दक्षिणा याच्यते।**
(30) कृषकः अन्नं रक्षति। – **कृषकेण अन्नं रक्ष्यते।**
(31) छात्रः ग्रन्थं लिखति। – **छात्रेण ग्रन्थः लिख्यते।**
(32) अहं सत्यं वदामि। – **मया सत्यम् उद्यते।**
(33) अध्यापकः विद्यालये वसति। – **अध्यापकेन विद्यालये उष्यते।**
(34) शिक्षकः पुस्तकानि वदति।– **शिक्षकेण पुस्तकानि उद्यन्ते।**
(35) सैनिकः स्वदेशं सेवते। – **सैनिकेन स्वदेशः सेव्यते।**
(36) बालकः वृक्षं स्पृशति। – **बालकेन वृक्षः स्पृश्यते।**
(37) पुत्रः मातरं स्मरति। – **पुत्रेण माता स्मर्यते।**
(38) रामः रावणं हन्ति। – **रामेण रावणः हन्यते।**
(39) रावणः सीतां हरति। – **रावणेन सीता ह्रियते।**
(40) अहं फलं खादामि। – **मया फलं खाद्यते।**
(41) त्वं पाठं पठसि। – **त्वया पाठः पठ्यते।**
(42) वयम् अजां नयामः। – **अस्माभिः अजा नीयते।**
(43) अहं कथां कथयामि। – **मया कथा कथ्यते।**
(44) त्वं विष्णुं जपसि। – **त्वया विष्णुः जप्यते।**
(45) अहं गीतां पठामि। – **मया गीता पठ्यते।**
(46) त्वं मां रक्षसि। – **त्वया अहं रक्ष्ये।**
(47) मोहनः त्वां पठति। **मोहनेन त्वं पठ्यसे।**
(48) अहं मां पठामि। **मया अहं पठ्ये।**
(49) सः अस्मान् पठति। **तेन वयं पठ्यामहे।**
(50) सः जपति। **तेन जप्यते।**
(51) अहं नमामि। **मया नम्यते।**
(52) सा ग्रामे वसति। **तया ग्रामे उष्यते।**
(53) सः तथा पठति। **तेन तथा पठ्यते।**
(54) त्वं तदा आगच्छसि। **त्वया तदा आगम्यते।**
(55) ते युष्मान् पठन्ति। – **तैः यूयं पठ्यध्वे।**
(56) अहं तस्मै धनं ददामि। **मया तस्मै धनं दीयते।**
(57) शिशुः जलं पिबति। **शिशुना जलं पीयते।**
(58) अहं ग्रामं गच्छामि। **मया ग्रामः गम्यते।**
(59) सः गृहं गच्छति। **तेन गृहं गम्यते।**

द्विकर्मक धातुओं के प्रसंग में वाच्य परिवर्तन

द्विकर्मक धातुओं के प्रसंग में दो-दो प्रकार के कर्म होते हैं। अतः कर्मवाच्य से रूप बनाते समय यह शंका होती है, कि कौनसे कर्म में प्रथमा विभक्ति हो। इसका निवारण दिया गया है कि–

- **गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नी-हृ - कृष् - वहाम्।** अर्थात् द्विकर्मक धातुओं में से दुह्, याच्, आदि प्रारंभिक 12 धातुओं का प्रयोग होने पर गौण कर्म (अकथित कर्म) में प्रथमा विभक्ति होगी। जबकि अंतिम चार धातुओं नी, हृ, कृष् और वह् का प्रयोग होने पर मुख्य कर्म (सर्वाधिक चाहा गया कर्म) में प्रथमा विभक्ति होगी।
- शेष बचे हुए कर्म में कर्मवाच्य के वाक्य में द्वितीया विभक्ति होगी।

सः गां दुग्धं दोग्धि	**तेन गौः दुग्धं दुह्यते**
सः मातरं रोटिकां याचते	**तेन माता रोटिकां याच्यते**
सः ग्रामम् अजां नयति	**तेन ग्रामम् अजा नीयते।**

Scanned by CamScanner

(वाच्यपरिवर्तन)

1. 'सीता लङ्कां गच्छति' अस्य कर्मवाच्ये रूपम् अस्ति–
(अ) सीता लङ्का गम्यते (ब) सीतया लङ्का गम्यते
(स) सीतेन लङ्का गम्यते (द) सीतायाः लङ्का गम्यते( )
2. 'अहं त्वां पाठयामि' अस्य कर्मवाच्ये रूपम् अस्ति–
(अ) मया त्वं पाठ्यते (ब) मया त्वां पाठ्यसे
(स) मया त्वं पाठ्यसे (द) अहं त्वया पाठ्यसे ( )
3. 'सीता अपि हसति' अस्य वाच्यपरिवर्तनम् अस्ति–
(अ) सीतया अपि हस्यते (ब) सीता अपिना हस्यते
(स) सीतया अपि हस्येते (द) सीतया अपि हस्यन्ते( )
4. 'बालकेन दुग्धं पीयते' अस्य कर्तृवाच्ये किं रूपम्–
(अ) बालकः दुग्धं पाति (ब) बालकः दुग्धः पिबति
(स) बालकः दुग्धं पिबति(द)बालकेन दुग्धः पिबति( )
5. 'ते ग्रामाद् धनं लभन्ते' वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) तैः ग्रामाद् धनं लभ्यन्ते
(ब) तैः ग्रामाद् धनं लभ्यते
(स) तेल ग्रामाद् धनं लभ्यते
(द) तैः ग्रामं धनं लभ्यते ( )
6. 'नृपः विप्राय गां ददाति'– वाच्यपरितर्वनं करोतु–
(अ) नृपेण विप्राय गौः दीयते
(ब) विप्रेण विप्रं गौः दीयते
(स) नृपेण विप्राय गां दीयते
(द) नृपाय विप्रेण गौः दीयते ( )
7. 'वयम् अजां नयामः' – वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) अस्माभिः अजा नयते
(ब) अस्माभिः अजा नीयते
(स) अस्माभिः अजां नीयते
(द) वयम् अजया नीयामहे ( )
8. 'त्वं विद्यालयं गच्छसि'– वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) त्वया विद्यालयः गम्यते
(ब) त्वया विद्यालयं गम्येते
(स) विद्यालयेन त्वं गम्यसे
(द) त्वया विद्यालयः गम्यसे ( )
9. 'अध्यापकः व्याकरणं पाठयति' वाक्यपरितर्वनं करोतु–
(अ) अध्यापकेन व्याकरणः पाठ्यते
(ब) अध्यापकेन व्याकरणं पाठ्यते
(स) अध्यापकं व्याकरणं पाठ्यसे
(द) अध्यापकः व्याकरणं पठ्यते ( )
10. 'लता कलमेन पत्रं लिखति'– वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) लतया कलमेन पत्रं लिख्यते
(ब) लतया कलमेन पत्रः लिख्यते
(स) लतया कलमेन पत्रं लिखति
(द) लतायाः कलमेन पत्रं लिख्यते ( )
11. 'शिष्याः गुरुं नमन्ति'– अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) शिष्येणः गुरुं नम्यन्ते (ब) शिष्यैः गुरुः नम्यन्ते
(स) शिष्येण गुरुः नम्यते (द) शिष्यैः गुरुः नम्यते ( )
12. 'छात्रः ग्रन्थं पठति'– अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) छात्रेण ग्रन्थः पठ्यते (ब) छात्रैः ग्रन्थः पठ्यते
(स) छात्राय ग्रन्थं पठ्यते (द) छात्रेण ग्रन्थं पठ्यते ( )
13. 'मोहनः कथां लिखति'– अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) मोहनेन कथां लिख्यते।
(ब) मोहनेन कथा लिख्यते।
(स) मोहनाय कथा लिख्यते।
(द) मोहनात् कथा लिख्यते। ( )
14. 'छात्रा नृत्यति'– अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) छात्रेण नृत्यते (ब) छात्रया नृत्यते
(स) छात्रायै नृत्यते (द) छात्रायाः नृत्यते ( )
15. 'अध्यापकः मानं लभते'– अस्य वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं करोतु–
(अ) अध्यापकेन मानं लभते।
(ब) अध्यापकेन मानः लभ्यते।
(स) अध्यापकेन मानं लभ्यते।
(द) अध्यापकात् मानं लभ्यते। ( )

उत्तर तालिका

(1) ब	(2) स	(3) अ	(4) स	(5) ब	(6) अ	(7) ब	(8) अ	(9) ब	(10) अ
(11) द	(12) अ	(13) ब	(14) ब	(15) स					

अध्याय 5

समास

समास

- 'समसनं समासः'।
- 'बहूनां पदानां मेलने एकपदभवनम्',
- 'परस्परान्वितानां पदानाम् एकत्रीकरणं समासः'।
परस्पर अन्वित (सम्बद्ध) पदों के बीच में स्थित विभक्ति आदि का लोप करके, एक पद बनाया जाना समास है।
- समास की प्रक्रिया में दो या दो से अधिक पदों को एक ही पद में समाविष्ट कर दिया जाता है।
- दो पदों में प्रथम पद को पूर्वपद तथा द्वितीय पद को उत्तरपद कहा जाता है। विग्रह वाक्य को व्यस्त पद तथा समास किये हुए पद को समस्त पद कहा जाता है।
- **विग्रह**–समास किये हुए पद (समस्त पद) के अर्थ को बताने के जिस वाक्य का प्रयोग किया जाता है, उसे विग्रह कहते हैं। **(वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः)।**
- अन्य अर्थ का जिसके द्वारा कथन किया जाता है, उसे वृत्ति कहते हैं। **(परार्थाभिधानं वृत्तिः)।** यह वृत्ति पाँच प्रकार की होती है–
(1) कृदन्त, (2) तद्धित, (3) समास, (4) एकशेष और (5) सनाद्यन्त धातुरूप।
- यह विग्रह दो प्रकार का होता है–

1. **लौकिक विग्रह**–लौकिक भाषा में प्रचलित शब्दों के समूह को लौकिक विग्रह कहा जाता है। जैसे राजपुरुषः समस्त पद का लौकिक विग्रह 'राज्ञः पुरुषः' है।
2. **अलौकिक विग्रह**–प्रत्यय का उल्लेख करके विग्रह, जो कि लौकिक भाषा में प्रचलित नहीं है, उसे अलौकिक विग्रह कहा जाता है। जैसे राजपुरुषः समस्त पद के लौकिक विग्रह राज्ञः पुरुषः में विभक्तियों का निर्देश– 'राजन् ङस् पुरुष सु' करना अलौकिक विग्रह कहलाता है।

समास के प्रकार एवं सामान्य अर्थ

समास को पाँच प्रकार का माना जाता है।

1. **केवल समास**– यह विशेष संज्ञा से रहित समास है।
2. **अव्ययीभाव समास**–यहाँ प्रायः पूर्व-पद प्रधान होता है।
3. **तत्पुरुष समास**–तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तरपद प्रधान होता है। तत्पुरुष का एक भेद **कर्मधारय** तथा कर्मधारय का एक भेद **द्विगु** समास होता है।
4. **बहुव्रीहि समास**–प्रायः बहुव्रीहि समास में पूर्वपद एवं उत्तरपद से भिन्न कोई अन्य तीसरा ही पद प्रधान होता है।
5. **द्वन्द्व समास**–इस समास में, प्रायः दोनों पद प्रधान होते हैं।

यहाँ सभी समासों की परिभाषा में, 'प्रायः' शब्द यह बताता है कि कुछ जगह इसके विपरीत अर्थ भी हो सकता है।

समासों में लिङ्ग-निर्धारण के सामान्य नियम

(समास किए हुए पद का लिङ्ग किस प्रकार निर्धारित करें?)

1. अव्ययीभाव समास में, समास किया हुआ पद अव्यय हो जाता है। अर्थात् सभी विभक्तियों तथा वचनों में रूप समान होता है। (सूत्र– **अव्ययीभावश्च**)
2. द्वन्द्व और तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तरपद के लिङ्ग के अनुसार, समास किये हुए पद का लिङ्ग निर्धारित होता है। (सूत्र– **परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः**)
3. बहुव्रीहि समास में, जिस अन्यपद (तृतीयपद) को लक्षित किया जाता है, उसके लिङ्ग के अनुसार समस्त पद का लिङ्ग निर्धारण होता है।

Scanned by CamScanner

1. अव्ययीभाव समास

- इस समास में प्रायः पूर्वपद प्रधान होता है। प्रायः इस समास का पूर्वपद अव्यय होता है।
- अव्ययीभाव समास में, समास में निष्पन्न पद **अव्यय** हो जाता है। (**सूत्र– अव्ययीभावश्च**)
- यहाँ बना रूप नपुंसक भी हो जाता है। (**सूत्र– अव्ययीभावश्च**)
- नपुंसकलिंग होने के कारण यदि अव्ययीभावसमास में बना पद दीर्घ-स्वरान्त है, तो उसका ह्रस्व भी हो जाता है। (**ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य**)
- 'अव्यय' बन जाने के कारण उसके बाद स्थित आदि विभक्तियों का लोप हो जाता है। (**अव्ययादाप्सुपः**)
- लेकिन अव्ययीभाव समास में ह्रस्व-अकारान्त शब्द से विभक्तियों का लोप न होकर उसके स्थान पर अम् हो जाता है। [अपवाद– पञ्चमी विभक्ति में नहीं] (**नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः**)
- **पूर्वप्रयोग**– समास विधायक सूत्र में, प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट पद की उपसर्जन सञ्ज्ञा तथा उसका पूर्व प्रयोग होता है। जैसे– ''अव्ययं विभक्ति ......'' सूत्र में 'अव्ययं' पद में प्रथमा विभक्ति है। अतः विग्रह में स्थित अव्यय पद का पूर्व-प्रयोग होगा।

अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु

- **अर्थ**–विभक्ति, समीप आदि अर्थों में, अव्यय पद का समास, किसी भी समर्थ पद के साथ हो जाता है।

अर्थ	अव्यय	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समस्त रूप
1. विभक्ति	अधि	हरौ इति	हरि ङि अधि	अधिहरि
		ग्रामे इति	ग्राम ङि अधि	अधिग्रामम्
		स्त्रियाम् इति	स्त्री ङि अधि	अधिस्त्रि
2. समीप	उप	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण ङस् उप	उपकृष्णम्
		गङ्गायाः समीपम्	गङ्गा ङस् उप	उपगङ्गम्
		यमुनायाः समीपम्	यमुना ङस् उप	उपयमुनम्
		अग्नेः समीपम्	अग्नि ङस् उप	उपाग्नि
3. समृद्धि	सु	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम् सु	सुमद्रम्
		केरलानां समृद्धिः	केरल आम् सु	सुकेरलम्
		मगधानां समृद्धिः	मगध आम् सु	सुमगधम्
		भिक्षाणां समृद्धिः	भिक्षा आम् सु	सुभिक्षम्
4. व्यृद्धि -अर्थ	दुर्	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् दुर्	दुर्यवनम्
		मूढानां व्यृद्धिः	मूढ आम् दुर्	दुर्मूढम्
		शकानां व्यृद्धिः	शक आम् दुर्	दुःशकम्
5. अभाव	निर्	मक्षिकाणाम् अभावः	मक्षिका आम् निर्	निर्मक्षिकम्
		जनानाम् अभावः	जन आम् निर्	निर्जनम्
		विघ्नानाम् अभावः	विघ्न आम् निर्	निर्विघ्नम्
		मशकानाम् अभावः	मशक आम् निर्	निर्मशकम्
6. अत्यय (ध्वंस/नाश)	अति	हिमस्य अत्ययः	हिम ङस् अति	अतिहिमम्
		शीतस्य अत्ययः	शीत ङस् अति	अतिशीतम्
		वर्षायाः अत्ययः	वर्षा ङस् अति	अतिवर्षम्
		छायायाः अत्ययः	छाया ङस् अति	अतिछायम्

अर्थ	अव्यय	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समस्त रूप
7. असंप्रति (असमयोचित)	अति	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा ङस् अति	अतिनिद्रम्
		क्रीडा सम्प्रति न युज्यते	क्रीडा ङस् अति	अतिक्रीडम्
		हासः सम्प्रति न युज्यते	हास ङस् अति	अतिहासम्
8. शब्दप्रादुर्भाव (प्रकाशित होना)	इति	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि ङस् इति	इतिहरि
		कपिलशब्दस्य प्रकाशः	कपिल ङस् इति	इतिकपिलम्
9. पश्चाद् (पीछे)	अनु	विष्णोः पश्चात्	विष्णु ङस् अनु	अनुविष्णु
		गुरोः पश्चात्	गुरु ङस् अनु	अनुगुरु
		पत्युः पश्चात्	पति ङस् अनु	अनुपति
		भार्यायाः पश्चात्	भार्या ङस् अनु	अनुभार्यम्
		रथानां पश्चात्	रथ आम् अनु	अनुरथम्
		पदानां पश्चात्	पद आम् अनु	अनुपदम्
10. यथा (चार अर्थ)				
योग्यता–	अनु	रूपस्य योग्यम्	रूप ङस् अनु	अनुरूपम्
		गुणस्य योग्यम्	गुण ङस् अनु	अनुगुणम्
वीप्सा–	प्रति	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थ अम् प्रति	प्रत्यर्थम्
		एकम् एकं प्रति	एक अम् प्रति	प्रत्येकम्
		दिनं दिनं प्रति	दिन अम् प्रति	प्रतिदिनम्
पदार्थानतिवृत्ति–	यथा	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति ङस् यथा	यथाशक्ति
		मतिम् अनतिक्रम्य	मति अम् यथा	यथामति
		रुचिम् अनतिक्रम्य	रुचि अम् यथा	यथारुचि
		विधिम् अनतिक्रम्य	विधि अम् यथा	यथाविधि
		अपराधम् अनतिक्रम्य	अपराध अम् यथा	यथापराधम्
सादृश्य–	सह	हरेः सादृश्यम्	हरि टा सह	सहरि
		विष्णोः सादृश्यम्	विष्णु टा सह	सविष्णु
11. आनुपूर्व्य (क्रम)	अनु	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	ज्येष्ठ ङस् अनु	अनुज्येष्ठम्
		कनिष्ठस्य आनुपूर्व्येण	कनिष्ठ ङस् अनु	अनुकनिष्ठम्
		दीर्घस्य आनुपूर्व्येण	दीर्घ ङस् अनु	अनुदीर्घम्
		वृद्धस्य आनुपूर्व्येण	वृद्ध ङस् अनु	अनुवृद्धम्

Scanned by CamScanner

अर्थ	अव्यय	लौकिक विग्रह	अलौकिक विग्रह	समस्त रूप
12. यौगपद्य (एक साथ होना)	सह	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	सचक्रम्
		गदया युगपत्	गदा टा सह	सगदम्
		पुस्तकेन युगपत्	पुस्तक टा सह	सपुस्तकम्
13. सादृश्य	सह	सदृशः सख्या	सखि टा सह	ससखि
		सदृशः हरिणा	हरि टा सह	सहरि
		सदृशः गुरुणा	गुरु टा सह	सगुरु
14. सम्पत्ति	सह	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र भिस् सह	सक्षत्रम्
15. साकल्य (सम्पूर्ण)	सह	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तृण टा सह	सतृणम्
		सिकताम् अपि अपरित्यज्य	सिकता टा सह	ससिकतम्
16. अन्तवचन (पर्यन्त)	सह	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	अग्नि टा सह	साग्नि
		तद्धितपर्यन्तम्	तद्धित टा सह	सतद्धितम्
		समासपर्यन्तम्	समास टा सह	ससमासम्

सङ्ख्या वंश्येन

- **संख्या–** एक, द्वि, बहु आदि।
- **वंश्य–** वंश में उत्पन्न वंश्य कहलाता है। यह वंश दो प्रकार से होता है–
  (i) विद्या से (गुरु परम्परा) (ii) जन्म से।
- सङ्ख्यावाची शब्द का वंश्यवाची शब्द के साथ, विकल्प से समास होता है।

द्वौ मुनी (वंश्यौ)	द्वि औ मुनि औ	द्विमुनि, द्वौ मुनी
त्रयः मुनयः (व्याकरणस्य)	त्रि जस् मुनि जस्	त्रिमुनि, त्रयः मुनयः
एकविंशतिः भारद्वाजाः	एकविंशति सु भारद्वाज जस्	एकविंशतिभारद्वाजम्, एकविंशतिः भारद्वाजाः

नदीभिश्च

- सङ्ख्यावाची शब्दों का, नदी विशेष को बताने वाले शब्दों के साथ, समाहार अर्थ में, समास होता है। (नित्य) **(समाहारे चायमिष्यते)**

द्वयोः यमुनयोः समाहारः	द्वि ओस् यमुना ओस्	द्वियमुनम्
सप्तानां गङ्गानां समाहारः	सप्तन् आम् गङ्गा आम्	सप्तगङ्गम्
पञ्चानां नदानां समाहारः	पञ्चन् आम् नद आम्	पञ्चनदम्
पञ्चानां नदीनां समाहारः	पञ्चन् आम् नदी आम्	पञ्चनदम्
सप्तानां गोदावरीणां समाहारः	सप्तन् आम् गोदावरी आम्	सप्तगोदावरम्

- **(गोदावरी और नदी शब्द से पहले संख्यावाची शब्द के होने पर इन शब्दों को अकारान्त आदेश हो जाता है।)**

2. तत्पुरुष-समास

- तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तरपद प्रधान होता है। अतः इस समास को उत्तरपदार्थ प्रधान समास भी कहा जाता है।
- यहाँ, समस्त पद के लिङ्ग का निर्धारण प्रायः उत्तरपद के लिङ्ग के अनुसार होता है।
  (परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः)
- **पूर्वप्रयोग**–समास विधायक सूत्र में जिस पद में प्रथमा विभक्ति होती है, उससे निर्दिष्ट पद की उपसर्जन संज्ञा होकर, उसका पूर्वप्रयोग होता है।
- यदि समास होने के बाद पूर्व शब्द के अन्त में न् हो तो उसका लोप भी हो जाता है।
  (नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य)
- सामान्यतः तत्पुरुष दो प्रकार का है–

1. **समानाधिकरण तत्पुरुष**–जब विग्रह वाक्य के पदों में विभक्तियाँ समान हों, तब समानाधिकरण तत्पुरुष समास होता है। समानाधिकरण तत्पुरुष को कर्मधारय समास भी कहा जाता है।
2. **व्यधिकरण तत्पुरुष**–जब विग्रह वाक्य के पदों में विभक्तियाँ अलग-अलग हो, तब व्यधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

तत्पुरुष

- **व्यधिकरण-तत्पुरुष** (विग्रह वाक्य में, पदों में अलग-अलग विभक्ति)
  - **प्रकार**
    - विभक्तितत्पुरुष (द्वितीया से सप्तमी तत्पुरुष)
    - अवयवावयवितत्पुरुष
    - नञ्तत्पुरुष
    - गतितत्पुरुष
    - प्रादितत्पुरुष
    - उपपदतत्पुरुष
    - अन्यपदार्थप्रधानतत्पुरुष
- **समानाधिकरण-तत्पुरुष** (विग्रह वाक्य में, पदों में समान विभक्ति) – इसे कर्मधारयसमास भी कहते है।
  - **प्रकार**
    - विशेषणपूर्वपदकर्मधारय
    - विशेष्यपूर्वपदकर्मधारय
    - विशेषणोभयपदकर्मधारय
    - उपमानपूर्वपदकर्मधारय
    - उपमेयपूर्वपदकर्मधारय
    - द्विगुसमास

Scanned by CamScanner

विभक्ति तत्पुरुष

- इस समास में पूर्वपद द्वितीया, तृतीया आदि विभक्ति वाला होता है। इन द्वितीयान्त, तृतीयान्त आदि पदों का ही पूर्व प्रयोग होता है। यहाँ विग्रह वाक्य में विभक्तियाँ अलग-अलग होती हैं। अतः यह विभक्ति तत्पुरुष व्यधिकरण तत्पुरुष का भेद है।

द्वितीया तत्पुरुष (कर्म तत्पुरुष)

- द्वितीया विभक्ति अन्त वाले शब्द का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न शब्दों के साथ समास हो जाता है। द्वितीया विभक्ति अन्त वाले शब्द का ही पूर्वप्रयोग होता है। (**द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः**)

कृष्णं श्रितः	कृष्ण अम् श्रित सु	कृष्णश्रितः (कृष्ण के सहारे)
दुःखम् अतीतः	दुःख अम् अतीत सु	दुःखातीतः (दुःख से दूर)
नरकं पतितः	नरक अम् पतित सु	नरकपतितः (नरक में पड़ा हुआ)
स्वर्गं गतः	स्वर्ग अम् गत सु	स्वर्गगतः (स्वर्ग में पहुँचा हुआ)
कूपम् अत्यस्तः	कूप अम् अत्यस्त सु	कूपात्यस्तः (कुएँ से पार)
सुखं प्राप्तः	सुख अम् प्राप्त सु	सुखप्राप्तः (सुख को प्राप्त किया हुआ)
सङ्कटम् आपन्नः	सङ्कट अम् आपन्न सु	सङ्कटापन्नः (सङ्कट में पडा हुआ)

तृतीया तत्पुरुष (करण तत्पुरुष)

- तृतीया विभक्ति अन्त वाले शब्द का, गुणवाची तत्कृत (उसके द्वारा सम्पन्न किये हुए) के साथ एवं अर्थ शब्द के साथ समास हो जाता है। तृतीया विभक्ति अन्त वाले शब्द का ही पूर्व प्रयोग होता है। (**तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन**)

शङ्कुलया खण्डः	शङ्कुला टा खण्ड सु	शङ्कुलाखण्डः (सरोते से किया हुआ टुकड़ा)
दण्डेन खण्डः	दण्ड टा खण्ड सु	दण्डखण्डः (डण्डे से किया हुआ टुकड़ा)
किरिणा काणः	किरि टा काण सु	किरिकाणः (किरि-रोग से काणा)
शलाकया काणः	शलाका टा काण सु	शलाकाकाणः (शलाका से काणा)
क्षारेण शुक्लः	क्षार टा शुक्ल सु	क्षारशुक्लः (क्षार से सफेद)
कुङ्कुमेन शोणः	कुङ्कुम टा शोण सु	कुङ्कुमशोणः (केसर से लाल)
पुण्येन अर्थः	पुण्य टा अर्थ सु	पुण्यार्थः (पुण्य के लिए)
पठनेन अर्थः	पठन टा अर्थ सु	पठनार्थः (पढ़ने के लिए)
धान्येन अर्थः	धान्य टा अर्थ सु	धान्यार्थः (धान्य के लिए)

- तृतीया विभक्ति अन्त वाले शब्द का, पूर्व, सदृश, सम, ऊनार्थक शब्द (कम अर्थ वाले-ऊन, विकल), कलह, निपुण, मिश्र और श्लक्ष्ण शब्दों के साथ समास होता है। (**पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः**)

मासेन पूर्वः	मास टा पूर्व सु	मासपूर्वः (महिनेभर पहले का)
मात्रा सदृशः	मातृ टा सदृश सु	मातृसदृशः (माता के समान)
पित्रा सदृशः	पितृ टा सदृश सु	पितृसदृशः (पिता के समान)
माषेण ऊनम्	माष टा ऊन सु	माषोणम् (एक उड़द भर कम)
पादेन ऊनम्	पाद टा ऊन सु	पादोनम् (एक चौथाई कम)
माषेण विकलम्	माष टा विकल सु	माषविकलम् (एक उड़द भर कम)
वाचा कलहः	वाच् टा कलह सु	वाक्कलहः (बोली का झगड़ा)

वाचा निपुणः	वाच् टा निपुण सु	वाङ्निपुणः (बोली से निपुण)
आचारेण निपुणः	आचार टा निपुण सु	आचारनिपुणः (आचरण से निपुण)
गुडेन मिश्रः	गुड टा मिश्र सु	गुडमिश्रः (गुड़ से मिश्रित)
आचारेण श्लक्ष्णः	आचार टा श्लक्ष्ण सु	आचारश्लक्ष्णः (आचरण से साफ)

- अनुक्त कर्ता तथा करण से होने वाली, तृतीया विभक्ति अन्त वाले पदों का, कृत् प्रत्यय वाले पदों के साथ समास होता है। (**कर्तृकरणे कृता बहुलम्**)

हरिणा त्रातः	हरि टा त्रात सु	हरित्रातः (हरि के द्वारा रक्षित)	(त्रा + क्त)
गुरुणा पालितः	गुरु टा पालित सु	गुरुपालितः (गुरु के द्वारा पाला हुआ)	(पाल् + क्त)
अहिना हतः	अहि टा हत सु	अहिहतः (सर्प से मारा हुआ)	(हन् + क्त)
नखैः भिन्नः	नख भिस् भिन्न सु	नखभिन्नः (नाखूनों से काटा हुआ)	(भिद् + क्त)
परशुना छिन्नः	परशु टा छिन्न सु	परशुछिन्नः (फरशे से काटा हुआ)	(छिद् + क्त)
तेन कृतम्	तत् टा कृत सु	तत्कृतम् (उसके द्वारा किया हुआ)	(कृ + क्त)
देवेन त्रातः	देव टा त्रात सु	देवत्रातः (देवता के द्वारा रक्षित)	(त्रा + क्त)
विद्यया विहीनः	विद्या टा विहीन सु	विद्याविहीनः (विद्या से विहीन)	(हा + क्त)
प्रज्ञया हीनः	प्रज्ञा टा हीन सु	प्रज्ञाहीनः (प्रज्ञा से हीन)	(धा + क्त)

चतुर्थी तत्पुरुष (सम्प्रदान तत्पुरुष)

- चतुर्थी विभक्ति अन्त वाले शब्द का, तदर्थ (प्रकृतिविकृतिभाव), अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित पदों के साथ समास हो जाता है। (**चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः**)
- चतुर्थी विभक्ति वाले पद का अर्थ पद के साथ समास होता है तथा विशेष्य के अनुसार लिङ्ग निर्धारित होता है। (**अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता च**)

यूपाय दारु	यूप ङे दारु सु	यूपदारु (खूंटे के लिए लकड़ी)
शङ्कवे काष्टम्	शङ्कु ङे काष्ट सु	शङ्कुकाष्टम् (खूंटी के लिए लकड़ी)
कुण्डलाय स्वर्णम्	कुण्डल ङे स्वर्ण सु	कुण्डलस्वर्णम् (कुण्डल के लिए सोना)
भूतेभ्यः बलिः	भूत भ्यस् बलि सु	भूतबलिः (भूतों को बलि)
गोभ्यः हितम्	गो भ्यस् हित सु	गोहितम् (गायों के लिए हितकारी)
गोभ्यः सुखम्	गो भ्यस् सुख सु	गोसुखम् (गायों के लिए सुखदायी)
गोभ्यः रक्षितम्	गो भ्यस् रक्षित सु	गोरक्षितम् (गायों के लिए सुरक्षित)
द्विजाय अयम्	द्विज ङे अर्थ सु	द्विजार्थः (द्विज के लिए यह) सूपः
द्विजाय इयम्	द्विज ङे अर्थ सु	द्विजार्था (द्विज के लिए यह) यवागूः
द्विजाय इदम्	द्विज ङे अर्थ सु	द्विजार्थम् (द्विज के लिए यह) वस्त्रम्

पञ्चमी तत्पुरुष (अपादान तत्पुरुष)

- पञ्चमी विभक्ति अन्त वाले शब्द का, भयवाची शब्दों (भय, भीति, भी, भीत) के साथ समास होता है। (**पञ्चमी भयेन**)

चौराद् भयम्	चौर ङसि भय सु	चौरभयम् (चौर से भय)
सिंहाद् भीतिः	सिंह ङसि भीति सु	सिंहभीतिः (सिंह से भय)
गुरोः भीतः	गुरु ङसि भीत सु	गुरुभीतः (गुरु से डरा हुआ)
वृकाद् भीतः	वृक ङसि भीत सु	वृकभीतः (भेड़िये से डरा हुआ)

Scanned by CamScanner

षष्ठी तत्पुरुष (सम्बन्ध तत्पुरुष)

- षष्ठी विभक्ति अन्त वाले शब्दों का, किसी भी समर्थ शब्द के साथ समास हो जाता है। (षष्ठी)
- यहाँ षष्ठी विभक्ति वाले पद का पूर्व प्रयोग होगा।

राज्ञः पुरुषः	राजन् ङस् पुरुष सु	राजपुरुषः (राजा का आदमी)
देवानां लोकः	देव आम् लोक सु	देवलोकः (देवताओं का लोक)
आत्मनः ज्ञानम्	आत्मन् ङस् ज्ञान सु	आत्मज्ञानम् (आत्मा का ज्ञान)
स्वामिनः सेवा	स्वामिन् ङस् सेवा सु	स्वामिसेवा (स्वामी की सेवा)
मनसः विकारः	मनस् ङस् विकार सु	मनोविकारः (मन का विकार)
तपसः वनम्	तपस् ङस् वन सु	तपोवनम् (तप का वन)
तस्य पुरुषः	तद् ङस् पुरुष सु	तत्पुरुषः (उसका पुरुष)
सतां सङ्गतिः	सत् आम् सङ्गति सु	सत्सङ्गतिः (सज्जनों की संगति)
राज्ञः धानी	राजन् ङस् धानी सु	राजधानी (राजधानी)

सप्तमी-तत्पुरुष (अधिकरण तत्पुरुष)

- सप्तमी विभक्ति अन्त वाले शब्दों का, शौण्डादि (शौण्ड, धूर्त, चपल, निपुण, चतुर, पण्डित, प्रवीण, पटु, कुशल आदि) शब्दों के साथ समास हो जाता है। (**सप्तमी शौण्डैः**)
- यहाँ सप्तमी विभक्ति वाले पद का पूर्व प्रयोग होगा।

अक्षेषु शौण्डः	**अक्ष सुप् शौण्ड सु**	**अक्षशौण्डः (जुएँ में निपुण)**
क्रीडायां धूर्तः	क्रीडा ङि धूर्त सु	क्रीडाधूर्तः (खेल में धूर्त)
भाषणे चपलः	भाषण ङि चपल सु	भाषणचपलः (भाषण में चालाक)
व्याकरणे निपुणः	व्याकरण ङि निपुण सु	व्याकरणनिपुणः (व्याकरण में निपुण)
कटे प्रवीणः	कट ङि प्रवीण सु	कटप्रवीणः (चटाई बनाने में कुशल)
व्याकरणे पण्डितः	व्याकरण ङि पण्डित सु	व्याकरणपण्डितः (व्याकरण में पण्डित)
वाचि पटुः	वाच् ङि पटु सु	वाक्पटुः (बोलने में चतुर)
धावने कुशलः	धावन ङि कुशल सु	धावनकुशलः (दौड़ने में कुशल)

- सप्तमी विभक्ति अन्त वाले पदों का सिद्ध, शुष्क, पक्व और बन्ध पदों के साथ समास होगा। (**सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च**)

साङ्काश्ये सिद्धः	साङ्काश्य ङि सिद्ध सु	साङ्काश्यसिद्धः
रसे सिद्धः	रस ङि सिद्ध सु	रससिद्धः
आतपे शुष्कः	आतप ङि शुष्क सु	आतपशुष्कः
स्थाल्यां पक्वः	स्थाली ङि पक्व सु	स्थालीपक्वः
चक्रे बन्धः	चक्र ङि बन्ध सु	चक्रबन्धः

नञ् तत्पुरुष

- 'नञ्' अव्यय का, दूसरे समर्थ शब्दों के साथ समास हो जाता है। (**नञ्**) यहाँ नञ् (न) का ही पूर्व प्रयोग होता है। नञ् की इत्संज्ञा तथा **नलोपो नञः** सूत्र से नकार का लोप होने पर 'अ' ही बचता है।
- इस 'अ' के आगे यदि कोई स्वर है तो न् (नुट्) का आगम भी हो जायेगा। (**तस्मान्नुडचि**)
- अर्थात् नञ् से आगे स्वर रहने पर वहाँ 'अन्' दिखाई देगा तथा व्यञ्जन रहने पर 'अ' दिखाई देगा।

न अश्वः	न अश्व सु	अनश्वः (अश्व से भिन्न)
न ईश्वरः	न ईश्वर सु	अनीश्वरः (ईश्वर से भिन्न)
न आर्यः	न आर्य सु	अनार्यः (आर्य से भिन्न)
न आगत्य	न आगत्य	अनागत्य (नहीं आकर)
न औत्सुक्यम्	न औत्सुक्य सु	अनौत्सुक्यम् (उत्सुकता से रहित)
न ब्राह्मणः	न ब्राह्मण सु	अब्राह्मणः (ब्राह्मण से भिन्न)
न सत्यम्	न सत्य सु	असत्यम् (सत्य से भिन्न)
न धर्मः	न धर्म सु	अधर्मः (धर्म से भिन्न)
न साधुः	न साधु सु	असाधुः (साधु से भिन्न)
न विवेकः	न विवेक सु	अविवेकः (विवेक से भिन्न)

प्रादितत्पुरुष समास

- यहाँ पूर्व पद प्र, अति, अव, परि, निर् आदि अव्यय होते है। इनका समर्थ सुबन्त के साथ अनेक अर्थों में समास होता है।

शोभनः पुरुषः → सुपुरुषः
सुष्ठु उक्तिः → सूक्तिः
सुष्ठु भाषितम् → सुभाषितम्
शोभनः राजा → सुराजा
दुष्टु जनः → दुर्जनः

- प्र आदि का गत आदि अर्थों में प्रथमान्त पद के साथ समास होता है। (**प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया**)

प्रगतः आचार्यः → प्राचार्यः (प्रधान आचार्य)
प्रगतः पितामहः → प्रपितामहः
विप्रकृष्टः देशः → विदेशः
विरुद्धः पक्षः → विपक्षः
विरुद्धा माता → विमाता
प्रकृष्टो यत्नः → प्रयत्नः
उपोच्चारितं पदम् → उपपदम्

- अति आदि अव्ययों का क्रान्त आदि अर्थों में द्वितीयान्त पद के साथ समास होता है। (**अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया**)

खट्वाम् अतिक्रान्तः → अतिखट्वः (खाट से बडा)
मालाम् अतिक्रान्तः → अतिमालः
प्रतिगतः अक्षम् → प्रत्यक्षः
अनुगतः स्वारम् → अनुस्वारः

- अव आदि प्रादियों का तृतीया विभक्ति अंत वाले पदों के साथ क्रुष्ट आदि अर्थों में समास होता है। (**अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया**)

अवक्रुष्टः कोकिलया → अवकोकिलः (कोयल से निनाद किया हुआ)
उपमितः प्रधानेन → उपप्रधानः
उपमितः अध्यक्षेण → उपाध्यक्षः
अनुगतम् अर्थेन → अन्वर्थम्
सङ्गतम् अर्थेन → समर्थम्
वियुक्तम् अर्थेन → व्यर्थम्

- परि आदि प्रादियों का चतुर्थी विभक्ति अन्त वाले पदों के साथ समास होता है। (**पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या**)

परिग्लानः अध्ययनाय → पर्यध्ययनः (पढ़ने में आलसी)
उद्युक्तः सङ्ग्रामाय → उत्सङ्ग्रामः

- निर् आदि प्रादियों का पञ्चमी विभक्ति अन्त वाले पदों के साथ समास होता है। (**निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या**)

निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः → निष्कौशाम्बिः (कौशाम्बी से निकला हुआ)
उत्क्रान्ता कुलात् → उत्कुला
अपगतं क्रमात् → अपक्रमम्
निष्क्रान्तः लङ्कायाः → निर्लङ्कः
निष्क्रान्तः वाराणस्याः → निर्वाराणसिः

उपपद तत्पुरुष

- यहाँ पूर्वपद 'उपपद' संज्ञा वाला तथा उत्तर पद कृत् प्रत्यय युक्त शब्द होता है। (**उपपदमतिङ्**)
- यहाँ उपपद से तात्पर्य कृत्प्रत्यय विधायक सूत्रों में जिस पद में सप्तमी है, विभक्ति से निर्दिष्ट पद है। (**तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्**)
- जैसे 'कर्मण्यण्' में कर्मणि में सप्तमी विभक्ति है, अतः विग्रह वाक्य में कर्म से निर्दिष्ट पद को उपपद कहा जायेगा। इसी उपपद का पूर्व प्रयोग होगा।
- कुम्भकारः में कुम्भ कर्म है, अतः कुम्भ का ही पूर्वप्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner

कुम्भं करोति इति	कुम्भ अम् कार सु	कुम्भकारः	प्रियं वदति	प्रिय अम् वद सु	प्रियंवदः
वार्तिकं करोति इति	वार्तिक अम् कार सु	वार्तिककारः	द्वाभ्यां पिबति इति	द्वि भ्याम् प सु	द्विपः
सूत्रं करोति इति	सूत्र अम् कार सु	सूत्रकारः	पादैः पिबति इति	पाद भिस् प सु	पादपः
कुरुषु चरति	कुरु सुप् चर सु	कुरुचरः	शम् करोति इति	शम् कर सु	शङ्करः
गां ददाति	गो अम् द सु	गोदः	उरसा गच्छति इति	उरस् टा ग सु	उरगः
पारं दृष्टवान्	पार अम् दृश्	पारदृश्वा	भुजं गच्छति इति	भुज अम् ग सु	भुजगः
राजानं योधितवान्	राजन् अम् युध्	राजयुध्वा			

अन्यपदार्थ-उभयपदार्थ-प्रधान तत्पुरुष समास

- इस समास में कही अन्य पद प्रधान रहता है, तो कही दोनों पद ही प्रधान हो जाते हैं।

न किञ्चन यस्य सः	→	अकिञ्चनः	(अन्यार्थप्रधान) जिसके पास कुछ भी नहीं है।
न कुतो भयं यस्य सः	→	अकुतोभयः	(अन्यार्थप्रधान) जिसको किसी से भय नहीं है।
उदक् च अवाक् च	→	उच्चावचम्	(उभयार्थप्रधान) ऊँचा और नीचा
निश्चितं च प्रचितं च	→	निश्चप्रचम्	(उभयार्थप्रधान) सुनिश्चित
अन्यो राजा	→	राजान्तरम्	(अन्य राजा)
अन्यो ग्रामः	→	ग्रामान्तरम्	(अन्य गांव)
अन्यद् रूपम्	→	रूपान्तरम्	(अन्य रूप)
अन्यः धर्म	→	धर्मान्तरम्	(अन्य धर्म)
अन्यः पाठः	→	पाठान्तरम्	(अन्य पाठ)
अन्यत् कार्यम्	→	कार्यान्तरम्	(अन्य कार्य)
अन्यद् नगरम्	→	नगरान्तरम्	(अन्य नगर)
चिद् एव	→	चिन्मात्रम्	(कुछ ही)

कर्मधारय (समानाधिकरण तत्पुरुष) समास

- यहाँ विग्रह वाक्य में दोनों पदों में समान विभक्ति होती है, अतः इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं। इसी का दूसरा नाम कर्मधारय है। (**तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः**)
- कर्मधारय समास में पूर्वपद यदि स्त्रीलिङ्ग का है तो उसे पुँल्लिङ्ग में कर दिया जाता है। अर्थात् उसका पुँल्लिङ्ग रूप संभव हो तो पुँल्लिङ्ग कर दिया जाएगा। (**पुंवत् कर्मधारयजातीयेषु**)
- दिशावाची और संख्यावाची शब्दों का सुबन्तों के साथ संज्ञा अर्थ में समास होता है। (**दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम्**)

उत्तराः पाञ्चालाः	उत्तर जस् पाञ्चाल जस्	उत्तरपाञ्चालाः (देशवाची)
पूर्वा ईषुकामशमी	पूर्वा सु ईषुकामशमी सु	पूर्वेषुकामशमी (ग्रामवाची)
सप्त ऋषयः	सप्तन् जस् ऋषि जस्	सप्तऋषयः, सप्तर्षयः
नव ग्रहाः	नवन् जस् ग्रह जस्	नवग्रहाः
पञ्च महायज्ञाः	पञ्चन् जस् महायज्ञ जस्	पञ्चमहायज्ञाः
षोडश संस्काराः	षोडशन् जस् संस्कार जस्	षोडशसंस्काराः
पञ्च कोशाः	पञ्चन् जस् कोश जस्	पञ्चकोशाः
पञ्च वायवः	पञ्चन् जस् वायु जस्	पञ्चवायवः
सप्तविंशतिः नक्षत्राणि	सप्तविंशति सु नक्षत्र जस्	सप्तविंशतिनक्षत्राणि

द्विगु समास

- ऐसा कर्मधारय समास, जिसका पूर्वपद सङ्ख्यावाची होता है। वहाँ द्विगु समास होता है। ('**सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः**')
- लेकिन यह द्विगु समास तीन प्रसंगों के कर्मधारय में, संख्या के पूर्व रहने पर ही होगा। ये है–
  1. तद्धितार्थ, 2. उत्तरपद और 3. समाहार।
- प्रायः समाहार अर्थ में होने वाला द्विगु समास ही प्रसिद्ध रहा है।
- समाहार अर्थ में, द्विगु समास होने पर, समास किया हुआ पद, नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन हो जायेगा। (**सः नपुंसकम्, द्विगुरेकवचनम्**)
- नपुंसक लिङ्ग में होने से अंतिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व भी हो जायेगा।
- यदि द्विगु समास अकारान्त है, तो पात्र, भुवन, युग, लवण, मूल, तन्त्र आदि शब्दों से ही नपुंसक होगा। शेष अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग होकर, ङीप् प्रत्यय हो जायेगा। (**अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः-स्त्रीत्व, द्वीगोः - ङीप्**)

पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चन् आम् पात्र आम्	पञ्चपात्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रि आम् भुवन आम्	त्रिभुवनम्
चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर् आम् युग आम्	चतुर्युगम्
दशानां मूलानां समाहारः	दशन् आम् मूल आम्	दशमूलम्
दशानां लवणानां समाहारः	दशन् आम् लवण आम्	दशलवणम्
पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः	पञ्चन् आम् तन्त्र आम्	पञ्चतन्त्रम्
पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चन् आम् गो आम्	पञ्चगवम्
त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रि आम् लोक आम्	त्रिलोकी
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	अष्टन् आम् अध्याय आम्	अष्टाध्यायी
पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चन् आम् वट आम्	पञ्चवटी
दशानां पूलानां समाहारः	दशन् आम् पूल आम्	दशपूली
पञ्चानां कुमारीणां समाहारः	पञ्चन् आम् कुमारी आम्	पञ्चकुमारि
त्रयाणां फलानां समाहारः	त्रि आम् फल आम्	त्रिफला
त्रयाणाम् अनीकानां समाहारः	त्रि आम् अनीक आम्	त्र्यनीका

विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

- विशेषणवाची शब्दों का विशेष्यवाची शब्दों के साथ समास होता है। (**विशेषणं विशेष्येण बहुलम्**) (विशेषण पद का पहले प्रयोग होगा)

नीलम् उत्पलम्	नील सु उत्पल सु	नीलोत्पलम्
कृष्णः सर्पः	कृष्ण सु सर्प सु	कृष्णसर्पः
रक्तम् उत्पलम्	रक्त सु उत्पल सु	रक्तोत्पलम्
गौरं मुखम्	गौर सु मुख सु	गौरमुखम्
रक्तं मुखम्	रक्त सु मुख सु	रक्तमुखम्
पीतं वस्त्रम्	पीत सु वस्त्र सु	पीतवस्त्रम्
सन् पुरुषः	सत् सु पुरुष सु	सत्पुरुषः
महान् वैयाकरणः	महत् सु वैयाकरण सु	महावैयाकरणः (महत् के त् को आ)
महान् पुरुषः	महत् सु पुरुष सु	महापुरुषः
नवं भवनम्	नव सु भवन सु	नवभवनम्
पापः पुरुषः	पाप सु पुरुष सु	पापपुरुषः

Scanned by CamScanner

उपमान पूर्वपद कर्मधारय

- उपमानवाची शब्दों का उपमेयवाची शब्दों के साथ समास होता है। (उपमानानि सामान्यवचनैः) यहाँ उपमानवाची शब्द का पूर्व प्रयोग होता है।

घन इव श्यामः	घन सु श्याम सु	घनश्यामः
चन्द्र इव मनोहरः	चन्द्र सु मनोहर सु	चन्द्रमनोहरः
गज इव स्थूलः	गज सु स्थूल सु	गजस्थूलः
नीरद इव श्यामः	नीरद सु श्याम सु	नीरदश्यामः
दुग्धम् इव धवलम्	दुग्ध सु धवल सु	दुग्धधवलम्
मृगी इव चपला	मृगी सु चपला सु	मृगचपला
कर्पूर इव गौरः	कर्पूर सु गौर सु	कर्पूरगौरः

उपमेय पूर्वपद कर्मधारय

उपमेयवाची शब्दों का उपमानवाची (व्याघ्र, सिंह आदि) शब्दों के साथ विशिष्ट प्रयोग में समास होता है। (**उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे**)

पुरुषः व्याघ्र इव	पुरुष सु व्याघ्र सु	पुरुषव्याघ्रः
पुरुषः सिंह इव	पुरुष सु सिंह सु	पुरुषसिंहः
मुखं कमलम् इव	मुख सु कमल सु	मुखकमलम्
करः किसलय इव	कर सु किसलय सु	करकिसलयः
पार्थिवः चन्द्र इव	पार्थिव सु चन्द्र सु	पार्थिवचन्द्रः

तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण

द्वयोः रात्र्योः समाहारः	द्विरात्रम् (द्विगु)	द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य	द्व्यङ्गुलम् (कर्मधारय)
नवानां रात्रीणां समाहारः	नवरात्रम् (द्विगु)	निर्गतम् अङ्गुलिभ्यः	निरङ्गुलम् (प्रादितत्पुरुष)
अतिक्रान्तः रात्रिम्	अतिरात्रः (प्रादि तत्पुरुष)	महान् राजा	महाराजः (कर्मधारय)
निष्क्रान्तः रात्रेः	नीरात्रः (प्रादि तत्पुरुष)	परमः राजा	परमराजः (कर्मधारय)
सर्वा रात्रिः	सर्वरात्रः (कर्मधारय)	योगिनां राजा	योगिराजः (षष्ठी तत्पुरुष)
रात्रेः पूर्वम्	पूर्वरात्रः (अवयवावयवितत्पुरुष)	परमम् अहः	परमाहः (कर्मधारय)
सङ्ख्याता रात्रिः	सङ्ख्यातरात्रः (कर्मधारय)	द्वयोः अह्नोः समाहारः	द्व्यहः (द्विगुः)
पुण्या रात्रिः	पुण्यरात्रः (कर्मधारय)	राज्ञः सखा	राजसखः (षष्ठी तत्पुरुष)
		कृष्णस्य सखा	कृष्णसखः (षष्ठी तत्पुरुष)
		पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चगवम् (द्विगु)
		सप्तानां गवां समाहारः	सप्तगवम् (द्विगु)
		दशानां गवां समाहारः	दशगवम् (द्विगु)

- **ध्यातव्य**–यदि रात्र से पूर्व सङ्ख्या है तो रूप नपुंसकलिङ्ग में तथा अन्य कुछ होने पर पुँल्लिङ्ग में रूप चलेगा। (**संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्**)

3. द्वन्द्व समास

- 'च' अर्थात् 'और' के अर्थ में, शब्दों का आपस में समास होता है। (**चार्थे द्वन्द्वः**)
- चूँकि इस समास में पूर्वपद एवं उत्तरपद (या अधिक पद), दोनों प्रधान होते हैं, अतः इस समास को उभयपद प्रधान समास कहते हैं।
- द्वन्द्व समास को अध्ययन की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास,
(ii) एकशेषद्वन्द्वसमास और
(iii) समाहारद्वन्द्वसमास।

1. **इतरेतरयोग**–

इतरेतरयोग द्वन्द्व समास में सभी पदों की प्रधानता होती है। यहाँ दोनों (या अधिक) पदों का पृथक्-पृथक् अस्तित्व एवं महत्त्व होता है। जैसे 'रामकृष्णौ गच्छतः।' (राम और कृष्ण जाते हैं।) यहाँ जाने की क्रिया में 'राम और कृष्ण' दोनों प्रधान हैं। अतः यहाँ इतरेतरयोग द्वन्द्व समास है।
(इतर + इतर + योग)

- इतरेतरयोग में दो शब्दों में समास होने पर द्विवचन तथा दो से अधिक शब्दों में समास होने पर बहुवचन हो जाता है।

2. **एकशेष द्वन्द्व समास** – दो या दो से अधिक पदों के स्थान पर एक ही पद शेष रह जाना एकशेष द्वन्द्व समास है। इस तरह का द्वन्द्व एकशेष द्वन्द्व कहलाता है। यह स्पष्ट है कि एकशेष द्वन्द्व इतरेतरयोग द्वन्द्व का ही दूसरा भेद है। क्योंकि यहाँ दोनों का अर्थ रहता है।

3. **समाहार द्वन्द्व** –समाहार में 'समूह' के अर्थ की प्रधानता रहती है।

- यद्यपि यहाँ भी घटक कई होते हैं, लेकिन उनमें भेद दिखाई नहीं देता हैं। उन घटकों का अलग-अलग कोई महत्त्व नहीं है। समूह में ही उनका महत्त्व रहता है। जैसे 'दाल-बाटी-चूरमा' में चूरमा आदि का अलग-अलग महत्त्व नहीं है, ये सब समूह के रूप में ही प्रधान होते हैं।
- समाहारद्वन्द्व में हमेशा एकवचन एवं नपुंसक लिङ्ग ही होगा।
- **द्वन्द्वसमास में लिङ्गनिर्धारण**–इतरेतरयोगद्वन्द्व समास में उत्तरपद के लिङ्ग के अनुसार समस्त पद के लिङ्ग का निर्धारण होता है। एकशेषद्वन्द्वसमास में, शिष्ट (बचे हुए) पद के अनुसार लिङ्ग का निर्धारण होता है। समाहारद्वन्द्व समास में नित्यरूप से नपुंसकलिङ्ग होता है। नपुंसक होने से अन्तिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व कार्य भी हो जाएगा। (**ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य**)

इतरेतरयोग द्वन्द्व, एकशेष द्वन्द्व और समाहार द्वन्द्व में तुलना

इतरेतरयोग	एकशेष	समाहार
1. घटकों का पृथक्-पृथक् महत्त्व	1. एक ही पद का महत्त्व	1. समूह के अर्थ का महत्त्व
2. घटक पूर्णतः स्वतंत्र, पृथक्-पृथक् अस्तित्व	2. एक ही पद शेष	2. घटक पूर्णतः स्वतंत्र न होकर एकदूसरे पर आश्रित, पृथक् अस्तित्व नहीं
3. घटकों की संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन	3. दो पदों स्थान पर एकशेष होने पर द्विवचन तथा दो से अधिक पदों के स्थान पर एकशेष होने पर बहुवचन	3. नित्यरूप से एकवचन
4. उत्तरपद के लिङ्ग के अनुसार समस्त पद के लिङ्ग का निर्धारण	4. शेष पद के अनुसार समस्त पद का लिंग निर्धारण होगा।	4. यहाँ नित्यरूप से नपुंसकलिङ्ग होगा।

Scanned by CamScanner

I. इतरेतर योग द्वन्द्व

हरिश्च हरश्च	हरि सु हर सु	हरिहरौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
विष्णुश्च रुद्रश्च	विष्णु सु रुद्र सु	विष्णुरुद्रौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
ईशश्च कृष्णश्च	ईश सु कृष्ण सु	ईशकृष्णौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
अश्वश्च रथश्च	अश्व सु रथ सु	अश्वरथौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
इन्द्रश्च वायुश्च	इन्द्र सु वायु सु	इन्द्रवायू	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
इन्द्रश्च अग्निश्च	इन्द्र सु अग्नि सु	इन्द्राग्नी	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
शिवश्च केशवश्च	शिव सु केशव सु	शिवकेशवौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
व्यासश्च कपिलश्च	व्यास सु कपिल सु	व्यासकपिलौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
वृक्षश्च वनस्पतिश्च	वृक्ष सु वनस्पति सु	वृक्षवनस्पती	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
हेमन्तश्च शिशिरश्च	हेमन्त सु शिशिर सु	हेमन्तशिशिरौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
कृतिका च रोहिणी च	कृतिका सु रोहिणी सु	कृतिकारोहिण्यौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
चित्रा च स्वातिश्च	चित्रा सु स्वाति सु	चित्रास्वाती	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
ग्रीष्मश्च वसन्तश्च	ग्रीष्म सु वसन्त सु	ग्रीष्मवसन्तौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
यवश्च माषश्च	यव सु माष सु	यवमाषौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
कुशश्च काशश्च	कुश सु काश सु	कुशकाशौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
तापसश्च पर्वतश्च	तापस सु पर्वत सु	तापसपर्वतौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	मातापितरौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
पिता च भ्राता च	पितृ सु भ्रातृ सु	पिताभ्रातरौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
रामश्च लक्ष्मणश्च	राम सु लक्ष्मण सु	रामलक्ष्मणौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
कुशश्च लवश्च	कुश सु लव सु	कुशलवौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
युधिष्ठिरश्च अर्जुनश्च	युधिष्ठिर सु अर्जुन सु	युधिष्ठिरार्जुनौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च	ब्राह्मण सु क्षत्रिय सु	ब्राह्मणक्षत्रियौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
वैश्यश्च शूद्रश्च	वैश्य सु शूद्र सु	वैश्यशूद्रौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
जाया च पतिश्च	जाया सु पति सु	जायापती, दम्पती, जम्पती	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
स्त्री च पुमान् च	स्त्री सु पुंस् सु	स्त्रीपुंसौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
धेनुश्च अनड्वान् च	धेनु सु अनडुह् सु	धेन्वनडुहौ	(इतरेतरयोगद्वन्द्व)
अश्वश्च वडवा च	अश्व सु वडवा सु	अश्ववडवम्, अश्ववडवौ	(समाहार, इतरेतर)
पूर्वं च अपरं च	पूर्व सु अपर सु	पूर्वापरम्, पूर्वापरे	(समाहार, इतरेतर)
कुशाश्च काशाश्च	कुश जस् काश जस्	कुशकाशम्, कुशकाशा:	(समाहार, इतरेतर)
व्रीहयश्च यवाश्च	व्रीहि जस् यव जस्	व्रीहियवम्, व्रीहियवा:	(समाहार, इतरेतर)
दधि च घृतं च	दधि सु घृत सु	दधिघृतम्, दधिघृते	(समाहार, इतरेतर)

II. एकशेषद्वन्द्वसमास

- यह इतरेतरयोग का ही एक भेद है।
- इसमें दो या दो से अधिक व्यस्त पदों के स्थान पर एक पद ही शेष रह जाता है।
- यह एकशेष अधोलिखित परिस्थितियों में होता है–
- एक ही विभक्ति में विद्यमान, समान शब्दों में से एक ही शब्द शेष रहता है। (**सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ**)
- लेकिन वचन वह ही होगा, जितने शब्दों के स्थान पर एकशेष रहा है।

शिवश्च शिवश्च	शिव सु शिव सु	शिवौ
रामश्च रामश्च	राम सु राम सु	रामौ
रामश्च रामश्च रामश्च	राम सु राम सु राम सु	रामा:
हरिश्च हरिश्च	हरि सु हरि सु	हरी
हरिश्च हरिश्च हरिश्च	हरि सु हरि सु हरि सु	हरय:

- एक ही शब्द से बने हुए पुँल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों में, द्वन्द्वसमास करने पर, पुँल्लिङ्ग वाला रूप ही शेष रहता है। (**पुमान् स्त्रिया**) पदों की संख्या के अनुसार वचन हो जायेगा।

हंसश्च हंसी च	हंस सु हंसी सु	हंसौ
नदश्च नदी च	नद सु नदी सु	नदौ
बालकश्च बालिका च	बालक सु बालिका सु	बालकौ
छात्रश्च छात्रा च	छात्र सु छात्रा सु	छात्रौ

- भ्रातृ और स्वसृ तथा पुत्र और दुहितृ शब्दों में द्वन्द्व होने पर पुंलिङ्ग वाले भ्रातृ और पुत्र शब्द का ही एकशेष होगा।

भ्राता च स्वसा च	भ्रातृ सु स्वसृ सु	भ्रातरौ
पुत्रश्च च दुहिता च	पुत्र सु दुहितृ सु	पुत्रौ

- मातृ शब्द का पितृ शब्द के साथ द्वन्द्व करने पर, विकल्प से, पितृ शब्द का एकशेष होता है। (**पिता मात्रा**)

माता च पिता च	मातृ सु पितृ सु	पितरौ, मातापितरौ, मातर-पितरौ

- इसी तरह श्वशुर और श्वश्रू में द्वन्द्व करने पर, विकल्प से श्वशुर शब्द का एकशेष रहता है।

श्वशुरश्च श्वश्रूश्च	श्वशुर सु श्वश्रू च	श्वशुरौ, श्वश्रूश्वशुरौ

- त्यदादि शब्दों (त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि) का किसी भी पद के साथ समास होने पर, त्यदादि शब्द का ही एकशेष रहता है। (**त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्**)

स च देवदत्तश्च	तद् सु देवदत्त सु	तौ
सा च रमा च	तद् सु रमा सु	ते
एष: च शिवश्च	एतद् सु शिव सु	एतौ
एषा च लता च	एतद् सु लता सु	एते

Scanned by CamScanner

III. समाहारद्वन्द्व

- द्वन्द्व समास में कुछ परिस्थितियों में, घटकों के बजाय, समूह की प्रधानता रहती है। यहाँ समाहार द्वन्द्व समास होता है।
- इसमें समस्त पद नित्य एकवचन एवं नपुंसकलिङ्ग होता है। यदि समस्त पद के अन्त में दीर्घ स्वर है तो उसका ह्रस्व भी हो जायेगा। अतः समाहार का तात्पर्य एकवद्भाव (एक की तरह होना) होना है।
- यह समाहार (एकवद्भाव) अधोलिखित परिस्थितियों में होता है–
- प्राणी के अङ्गवाची शब्दों, तूर्य (वाद्ययंत्र) वाची शब्दों तथा सेना के अङ्गवाची शब्दों में द्वन्द्व समास होने पर, समाहार द्वन्द्वसमास हो जाता है। (**द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्**)

पाणी च पादौ च	पाणि औ पाद औ	पाणिपादम्	[प्राणी–अङ्गवाची]
कण्ठश्च ओष्ठौ च	कण्ठ सु ओष्ठ औ	कण्ठौष्ठम्/कण्ठोष्ठम्	[प्राणी–अङ्गवाची]
कण्ठश्च तालु च	कण्ठ सु तालु सु	कण्ठतालु	[प्राणी–अङ्गवाची]
दन्ताश्च ओष्ठौ च	दन्त जस् ओष्ठ औ	दन्तौष्ठम्/दन्तोष्ठम्	[प्राणी–अङ्गवाची]
शिरश्च ग्रीवा च	शिरस् सु ग्रीवा सु	शिरोग्रीवम्	[प्राणी–अङ्गवाची]
वंशी च वीणा च	वंशी सु वीणा सु	वंशीवीणम्	[वाद्ययन्त्रवाची]
शङ्खश्च मुरजश्च	शङ्ख सु मुरज सु	शङ्खमुरजम्	[वाद्ययन्त्रवाची]
मार्दङ्गिकश्च पाणविकश्च	मार्दङ्गिक सु पाणविक सु	मार्दङ्गिकपाणविकम्	[वाद्ययन्त्रवाची]
गोलकं च विस्फोटकं च	गोलक सु विस्फोटक सु	गोलकविस्फोटकम्	[सेना अङ्गवाची]
सादयश्च पदाताश्च	सादि जस् पदात जस्	सादिपदातम्	[सेना–अङ्गवाची]

- छोटे-छोटे जन्तु (क्षुद्रजन्तु) वाचक शब्दों में द्वन्द्व होने पर समाहार द्वन्द्वसमास हो जाता है। (**क्षुद्रजन्तवः**)
- नेवले तक छोटे प्राणी क्षुद्रजन्तु माने जाते हैं। (**आनकुलात्क्षुद्रजन्तवः**)

यूकाश्च लिक्षाश्च	यूका जस् लिक्षा जस्	यूकालिक्षम्	[जूँ और लीख]
वृश्चिकश्च मूषकश्च	वृश्चिक सु मूषक सु	वृश्चिकमूषकम्	[बिच्छू और चूहा]

- जिन प्राणियों में, जन्मजात वैरभाव होता है, उनमें द्वन्द्व समास होने पर समाहार द्वन्द्वसमास हो जाता है। (**येषां च विरोधः शाश्वतिकः**)

अहिश्च नकुलश्च	अहि सु नकुल सु	अहिनकुलम्	[साँप और नेवला]
काकश्च उलूकश्च	काक सु उलूक सु	काकोलूकम्	[कौआ और उल्लू]
मार्जारश्च मूषकश्च	मार्जार सु मूषक सु	मार्जारमूषकम्	[बिलाव और चूहा]

- एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों में, द्वन्द्व समास करने पर, समाहार द्वन्द्वसमास हो जाता है। (**विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि**)

शीतं च उष्णं च	शीत सु उष्ण सु	शीतोष्णम्, शीतोष्णे	[सर्दी और गर्मी]
सुखं च दुःखं च	सुख सु दुःख सु	सुखदुःखम्, सुखदुःखे	[सुख और दुःख]
जीवनं च मरणं च	जीवन सु मरण सु	जीवनमरणम्, जीवनमरणे	[जीवन और मरण]

द्वन्द्वसमास के अन्य विशिष्ट उदाहरण

गौश्च अश्वश्च	गो सु अश्व सु	गवाश्वम्	(समाहार)
पुत्रश्च पौत्रश्च	पुत्र सु पौत्र सु	पुत्रपौत्रम्	(समाहार)
नक्तञ्च दिवा च	नक्तम् सु दिवा सु	नक्तन्दिवम्	(समाहार)
रात्रौ च दिवा च	रात्रि ङि दिवा ङि	रात्रिन्दिवम्	(समाहार)
वाक् च त्वक् च	वाच् सु त्वच् सु	वाक्त्वचम्	(समाहार)
छत्रं च उपानहौ च	छत्र सु उपानह् औ	छत्रोपानहम्	(समाहार)
संज्ञा च परिभाषा च	संज्ञा सु परिभाषा स	संज्ञापरिभाषम्	(समाहार)
त्वक् च स्रक् च	त्वच् सु स्रज् सु	त्वक्स्रजम्	(समाहार)
वाक् च त्विट् च	वाच् सु त्विष् सु	वाक्त्विषम्	(समाहार)
दाराश्च गावश्च	दार जस् गो जस्	दारगवम्	(समाहार)

4. बहुव्रीहि समास

अनेकमन्यपदार्थे

- अन्यपदार्थ की प्रधानता में, समर्थ पदों में का समास होता है।
- बहुव्रीहि समास में, पूर्वपद व उत्तरपद से भिन्न किसी तृतीयपद के अर्थ को बताया जाता है। अतः अन्यपद ही प्रधान हो जाता है।
- समास करने पर बने रूप का लिङ्गनिर्धारण भी अन्य पद के लिङ्ग के आधार पर ही किया जा सकता है।

यह बहुव्रीहि मुख्यतः दो प्रकार का होता है–

(i) **समानाधिकरण बहुव्रीहि समास**–बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य के पदों में, विभक्तियाँ समान होने पर, होने वाला समास समानाधिकरण बहुव्रीहि समास कहलाता है।

(ii) **व्यधिकरण बहुव्रीहि समास**–बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य के पदों में, विभक्तियाँ अलग-अलग होने पर, होने वाला समास व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहलाता है।

पूर्वप्रयोग का नियम

1. बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य में जिस पद में सप्तमी विभक्ति होती है एवं जो विशेषवाची पद होता है, उसका पूर्वप्रयोग होता है। (**सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ**) लेकिन गडु एवं चन्द्र शब्दों के साथ सप्तमी होने पर, सप्तमी विभक्ति अन्त वाले शब्द का बाद में प्रयोग होगा। (**गड्वादिभ्यः परा सप्तमी**)
2. बहुव्रीहि समास के विग्रह वाक्य में जिस पद में क्त प्रत्यय होता है, उसका पूर्वप्रयोग होता है। (**निष्ठा**)
3. **हथियारवाची** शब्दों के साथ सप्तम्यन्त निष्ठा के होने पर भी, हथियारवाची का ही पूर्वप्रयोग होगा।
4. बहुव्रीहि समास में सर्वनाम सञ्ज्ञक शब्द और सङ्ख्यावाची शब्दों का पूर्वप्रयोग होता है। यदि ये दोनों शब्द एक साथ हो तो सङ्ख्यावाची शब्द का पहले प्रयोग होगा। (**सर्वनामसङ्ख्ययोरुपसङ्ख्यानम्**)

समानाधिकरण बहुव्रीहि

प्राप्तम् उदकं यं सः	प्राप्त सु उदक सु	प्राप्तोदकः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
प्राप्तः रथः यं सः	प्राप्त सु रथ सु	प्राप्तरथः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
आरूढः वानरः यं सः	आरूढ सु वानर सु	आरूढवानरः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
ऊढः रथः येन सः	ऊढ सु रथ सु	ऊढरथः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
हुतः होमः येन सः	हुत सु होम सु	हुतहोमः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
विदितं वेदितव्यं येन सः	विदित सु वेदितव्य सु	विदितवेदितव्यः	(निष्ठा से पूर्व प्रयोग)

Scanned by CamScanner

सुतः सोमः येन सः	सुत सु सोम सु	सुतसोमः	(निष्ठा से पूर्व प्रयोग)
कृतं कृत्यं येन सः	कृत सु कृत्य सु	कृतकृत्यः	(निष्ठा से पूर्व प्रयोग)
कृतः कटः येन सः	कृत सु कट सु	कृतकटः	(निष्ठा से पूर्व प्रयोग)
युक्तः योगः अनेन इति	युक्त सु योग सु	युक्तयोगः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
अपहृतः पशुःयस्मै सः	अपहृत सु पशु सु	अपहृतपशुः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
पक्वाः अपूपाः यस्मै सः	पक्व जस् अपूप जस्	पक्वापूपः	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
उद्धृतः ओदनः यस्याः सा	उद्धृत सु ओदन सु	उद्धृतौदना	('निष्ठा' से पूर्वप्रयोग)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीत सु अम्बर सु	पीताम्बरः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
दिशः अम्बरं यस्य सः	दिश् जस् अम्बर सु	दिगम्बरः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
नीलम् अम्बरं यस्य सः	नील सु अम्बर सु	नीलाम्बरः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	श्वेत सु अम्बर सु	श्वेताम्बरः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
बहवः व्रीहयः यस्य सः	बहु जस् व्रीहि जस्	बहुव्रीहिः	(सङ्ख्यावाची का पूर्वप्रयोग)
चत्वारि मुखानि यस्य सः	चतुर् जस् मुख जस्	चतुर्मुखः	(सङ्ख्यावाची का पूर्वप्रयोग)
चत्वारि आननानि यस्य सः	चतुर् जस् आनन जस्	चतुराननः	(सङ्ख्यावाची का पूर्वप्रयोग)
दश आननाति यस्य सः	दशन् जस् आनन जस्	दशाननः	(सङ्ख्यावाची का पूर्वप्रयोग)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः	लम्ब औ कर्ण औ	लम्बकर्णः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
उद्विग्नं मनो यस्य सः	उद्विग्न सु मनस् सु	उद्विग्नमनाः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
विगतः धवः (पतिः) यस्याः सा	वि धव सु	विधवा	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
निर्गता स्पृहा यस्य सः	निर् स्पृहा सु	निस्पृहः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
दर्शनीया भार्या यस्य सः	दर्शनीया सु भार्या सु	दर्शनीयभार्यः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
पट्वी भार्या यस्य सः	पट्वी सु भार्या सु	पटुभार्यः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
वृद्धा जाया यस्य सः	वृद्धा सु जाया सु	वृद्धजानिः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः	वीर जस् पुरुष जस्	वीरपुरुषः	(विशेषणवाची का पूर्वप्रयोग)
बहवः पण्डिताः यस्मिन् सः	बहु जस् पण्डित जस्	बहुपण्डितः	(संख्यावाची का पूर्व प्रयोग)
सर्वे श्वेताः यस्मिन् सः	सर्व जस् श्वेत जस्	सर्वश्वेतः	(सर्वनाम-शब्द का पूर्व प्रयोग)

समानाधिकरण बहुव्रीहि समास के अन्य विशिष्ट उदाहरण

प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः	→	प्रपर्णः, प्रपतितपर्णः
अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः	→	अपुत्रः, अविद्यमानपुत्रः
द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	→	द्विमूर्धः
चन्द्रकान्तिः इव कान्तिः यस्य सः	→	चन्द्रकान्तिः
हंसस्य गमनमिव गमनं यस्याः सा	→	हंसगमना
हरिणस्य अक्षिणी इव अक्षिणी यस्याः सा	→	हरिणाक्षी
उष्ट्रमुखम् इव मुखं यस्य सः	→	उष्ट्रमुखः

सह पुत्रेण	→	सपुत्रः, सहपुत्रः
मीनस्य अक्षिणी इव अक्षिणी यस्य सः	→	मीनाक्षः (स्त्रीलिङ्ग में मीनाक्षी)
शोभनः गन्धः यस्य तत्	→	सुगन्धिः
व्याघ्रपादाः इव पादौ यस्य	→	व्याघ्रपात्
रूपवती भार्या यस्य सः	→	रूपवद्भार्यः
चित्राः गावः यस्य सः	→	चित्रगुः
स्त्री प्रमाणी यस्य सः	→	स्त्रीप्रमाणः
विशालम् उरः यस्य सः	→	विशालोरस्कः
प्रियं पयः यस्य सः	→	प्रियपयस्कः
प्रियं दधि यस्य सः	→	प्रियदधिकः
प्रियं मधु यस्य सः	→	प्रियमधुकः
प्रिया लक्ष्मीः यस्य सः	→	प्रियलक्ष्मीकः
व्यूढम् उरः यस्य सः	→	व्यूढोरस्कः
एका पत्नी यस्य सः	→	एकपत्नीकः
बहवः कर्तारः यस्य सः	→	बहुकर्तृकः
बह्व्यः कुमार्यः यस्मिन् सः	→	बहुकुमारीकः
बह्व्यः गोप्यः यस्मिन् सः	→	बहुगोपीकः

व्यधिकरण-बहुव्रीहि

कण्ठे कालः यस्य सः	कण्ठेकालः	(सप्तम्यन्त का पूर्व प्रयोग तथा विभक्ति-अलोप)
उदरे मणिः यस्य सः	उदरेमणि	(सप्तम्यन्त का पूर्व प्रयोग तथा विभक्ति-अलोप)
उरसि लोमानि यस्य सः	उरसिलोमा	(सप्तम्यन्त का पूर्व प्रयोग तथा विभक्ति-अलोप)
कण्ठे गडुः यस्य सः	गडुकण्ठः	(गडु का पूर्वप्रयोग) [गड्वादेः परा सप्तमी]
चक्रः पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः	(चक्र का पूर्वप्रयोग) [हथियार]
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः	(चन्द्र का पूर्वप्रयोग) [गड्वादेः परा सप्तमी]

5. केवल समास

- विशेष संज्ञा से मुक्त समास केवल समास है। अर्थात् अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व और बहुव्रीहि के विषय से बाहर समास होना, केवल समास है।
- यहाँ 'सह सुपा' सूत्र से समास होता है। अतः इसे सुप्सुपा समास भी कहा जाता है।

पूर्वं भूतः	पूर्वअम् भूत सु	भूतपूर्वः	[भूतपूर्वे चरट्-सूत्रनिर्देश से भूत का पूर्व प्रयोग]
पूर्वम् अभूतः	पूर्वअम् अभूत सु	अभूतपूर्वः	[भूतपूर्वे चरट्-सूत्रनिर्देश से भूत का पूर्व प्रयोग]
पूर्वं दृष्टः	पूर्व अम् दृष्ट सु	दृष्टपूर्वः	
पूर्वम् अदृष्टः	पूर्व अम् अदृष्ट सु	अदृष्टपूर्वः	

- किसी भी शब्द का इव अव्यय के साथ भी समास हो जाता है। यहाँ समास होने पर भी विभक्ति का लोप नहीं होता।

वागर्थौ इव	वागर्थ औ इव	वागर्थाविव	[विभक्ति-अलोप]
जीमूतस्य इव	जीमूत ङस् इव	जीमूतस्येव	[विभक्ति-अलोप]

Scanned by CamScanner

अभ्यासार्थ-प्रश्न

(समास प्रकरण)

1. प्रायः अन्यपदप्रधान समास होता है–
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) तत्पुरुष समास
(स) द्वन्द्व समास (द) बहुव्रीहि समास ( )

2. उपग्रामम् में समास है–
(अ) द्वन्द्व (ब) तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) अव्ययीभाव ( )

3. द्वन्द्व समास में समस्तपद का लिङ्ग निर्धारण होता है–
(अ) उत्तरपद के अनुसार (ब) पूर्वपद पद के अनुसार
(स) अव्यय (द) अन्यपद के अनुसार ( )

4. समास कितने प्रकार का है ?
(अ) 5 (ब) 4
(स) 6 (द) 7 ( )

5. 'निद्रा सम्प्रति न युज्यते' -विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) दुर्निद्रम् (ब) अतिनिद्रम्
(स) अतिनिद्रा (द) यथानिद्रम् ( )

6. मातापितरौ में समास है–
(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व
(स) कर्मधारय (द) बहुव्रीहि ( )

7. 'उपकृष्णम्'- में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) द्वन्द्व (द) कर्मधारय ( )

8. प्रायः उत्तरपदप्रधान समास होता है–
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) तत्पुरुष समास
(स) द्वन्द्व समास (द) बहुव्रीहि समास ( )

9. 'सप्तानां गङ्गानां समाहारः'-इस विग्रह में समास होगा
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) द्विगुसमास
(स) कर्मधारय समास (द) बहुव्रीहि समास ( )

10. 'राज्ञः समीपम्' - विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) उपराजा (ब) उपराजन्
(स) उपराजम् (द) उपराजानम् ( )

11. 'कृष्णस्य समीपम्' - का समस्त पद होगा–
(अ) उपकृष्णम् (ब) अपकृष्णम्
(स) अधिकृष्णम् (द) अतिकृष्णम् ( )

12. 'यूपदारु'-में समास कौनसा है ?
(अ) द्वितीयातत्पुरुष (ब) तृतीयातत्पुरुष
(स) चतुर्थीतत्पुरुष (द) सप्तमीतत्पुरुष ( )

13. समानाधिकरण तत्पुरुष समास को कहते हैं–
(अ) द्विगु (ब) बहुव्रीहि
(स) द्वन्द्व (द) कर्मधारय ( )

14. अनुद्योगाः में समास है–
(अ) कर्मधारय (ब) द्वन्द्व
(स) नञ् तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव ( )

15. 'चित्राः गावः यस्य सः'- इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) चित्रगौः (ब) चित्रगुः
(स) चित्रगोः (द) अ, ब दोनों ( )

16. अधोलिखित में से भिन्न है–
(अ) रूपवद्भार्यः (ब) चित्रगुः
(स) नीलकमलम् (द) दशाननः ( )

17. 'वागर्थाविव' में समास है–
(अ) बहुव्रीहि (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) केवलसमास ( )

18. 'स्वर्गगतः' में समास है
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (ब) पञ्चमी तत्पुरुष
(स) सप्तमी तत्पुरुष (द) बहुव्रीहि ( )

19. 'निर्मक्षिकम्-का लौकिक विग्रह है–
(अ) निष्क्रान्तः मक्षिकाभ्यः
(ब) निष्पत्तिः मक्षिकाणाम्
(स) मक्षिकाणाम् अभावः
(द) सदृशः मक्षिकाभिः ( )

20. प्रायः उभयपदप्रधान समास होता है–
(अ) तत्पुरुष समास (ब) द्वन्द्व समास
(स) बहुव्रीहि समास (द) अव्ययीभाव समास ( )

21. 'विधवा' में समास है–
(अ) बहुव्रीहि (ब) द्वन्द्व
(स) अव्ययीभाव (द) तत्पुरुष ( )

22. 'ससखि'-समस्त पद का लौकिक विग्रह है–
(अ) सदृशः सख्या (ब) सख्युः आनुपूर्व्येण
(स) सखिपर्यन्तम् (द) सख्या सह ( )

24. 'राज्ञः पुरुषः' - इस विग्रह में समास होगा–
(अ) बहुव्रीहि (ब) तत्पुरुष
(स) द्वन्द्व (द) अव्ययीभाव ( )

25. 'दश आननानि यस्य सः'-इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) दशाननः (ब) दशाननम्
(स) दशाननी (द) दशाननकः ( )

26. समानाधिकरण तत्पुरुष का भेद नहीं है–
(अ) कर्मधारय (ब) द्विगु
(स) प्रादितत्पुरुष (द) इनमें से कोई नहीं ( )

27. 'कृष्णश्चासौ सर्पश्च'- इस विग्रह में समास होगा–
(अ) समानाधिकरण तत्पुरुष
(ब) व्यधिकरणतत्पुरुष
(स) द्वन्द्वसमास (द) बहुव्रीहिसमास ( )

28. किस समास में निष्पन्न समस्त पद अव्यय हो जाता है ?
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) तत्पुरुष
(स) बहुव्रीहि (द) केवल समास ( )

29. द्वितीया-तत्पुरुष समास का उदाहरण है–
(अ) यूपदारु (ब) चौरभयम्
(स) राजपुरुषः (द) ग्रामगतः ( )

30. अधोलिखित में से भिन्न पद है–
(अ) अनश्वः (ब) अनुदरा
(स) अनार्यः (द) असत्यम् ( )

32. कर्मधारय समास का उदाहरण नहीं है–
(अ) दधिश्वेतः (ब) घनश्यामः
(स) पीताम्बरः (द) कृष्णसर्पः ( )

33. 'हिमस्य अत्ययः' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) दुर्हिमम् (ब) उपहिमम्
(स) सहिमम् (द) अतिहिमम् ( )

34. प्रायः पूर्वपदप्रधान समास होता है–
(अ) बहुव्रीहि समास (ब) द्वन्द्व समास
(स) तत्पुरुष समास (द) अव्ययीभाव समास ( )

36. तृतीया तत्पुरुष समास का उदाहरण है–
(अ) दुःखातीतः (ब) स्वर्गगतः
(स) यूपदारु (द) गुडमिश्रः ( )

40. 'सह पुत्रेण' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) सहपुत्रः (ब) पुत्रसहः
(स) सपुत्रः (द) अ, स दोनों ( )

41. 'छात्रश्च छात्रा च' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) छात्रछात्राः (ब) छात्रछात्रे
(स) छात्रे (द) छात्रौ ( )

42. 'माता च पिता च' - में समस्त पद होगा–
(अ) पितरौ (ब) मातापितरौ
(स) मातृपितरौ (द) अ, ब दोनों ( )

43. अधोलिखित में से भिन्न समस्त पद है–
(अ) सचक्रम् (ब) द्वियमुनम्
(स) त्रिमुनि (द) त्रिभुवनम् ( )

44. कर्मधारय समास किस समास का ही भेद है–
(अ) बहुव्रीहि का (ब) तत्पुरुष का
(स) द्वन्द्व का (द) द्विगु का ( )

45. 'सतृणम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) तृणानाम् अत्ययः
(ब) तृणैः सह
(स) तृणम् अपि अपरित्यज्य
(द) तृणानाम् अभावः ( )

46. अधोलिखित में से कर्मधारय का उदाहरण नहीं है–
(अ) पुरुषव्याघ्रः (ब) मुखकमलम्
(स) चन्द्रमनोहरः (द) चन्द्रशेखरः ( )

47. उत्तरपदप्रधान अव्ययीभाव समास है–
(अ) सचक्रम् (ब) यथाशक्ति
(स) शाकप्रति (द) यावच्छ्लोकम् ( )

48. 'त्रयाणां लोकानां समाहारः'- में समस्त पद होगा–
(अ) त्रिलोकम् (ब) लोकत्रयम्
(स) त्रिलोकी (द) लोकत्रयी ( )

49. सत्पुरुषः में समास है–
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) द्वन्द्व (द) बहुव्रीहि ( )

50. 'पञ्चगवम्' में समास है–
(अ) द्विगु समास (ब) अव्ययीभाव समास
(स) तत्पुरुष समास (द) केवल समास ( )

51. 'द्वियमुनम्' में समास है–
(अ) द्विगुसमास (ब) द्वन्द्व समास
(स) कर्मधारय समास (द) अव्ययीभाव समास ( )

52. 'राज्ञः सखा' - विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) राजसखा (ब) राजसखिः
(स) राजसखः (द) राजासखः ( )

53. पूर्वार्धम् में समास है–
(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) द्वन्द्व (द) बहुव्रीहि ( )

54. 'धन इव श्यामः' - में समास होगा–
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) कर्मधारय समास
(स) बहुव्रीहि समास (द) द्वन्द्व समास ( )

55. अधोलिखित में से समाहार द्वन्द्व का उदाहरण नहीं है–
(अ) वंशीवीणम् (ब) यूकालिक्षम्
(स) अहिनकुलम् (द) पितरौ ( )

56. 'गुरोः पश्चात्'-विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) अनुगुरुः (ब) अनुगुरुम्
(स) अनुगुरु (द) यथागुरुम् ( )

57. 'वाक् च त्वक् च' - विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) वाक्त्वकम् (ब) वाक्त्वचा
(स) वाक्त्वचम् (द) वाचित्वचम् ( )

Scanned by CamScanner

58. 'ईशश्च कृष्णश्च'- में पूर्व प्रयोग किस सूत्र से होगा ?
(अ) द्वन्द्वे घि (ब) अजाद्यदन्तम्
(स) अल्पाच्तरम् (द) लघ्वक्षरं पूर्वम् ( )

60. ''शङ्कुलाखण्डः'' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) शङ्कुलां खण्डः (ब) शङ्कुलाया: खण्डः
(स) शङ्कुलया खण्डः (द) शङ्कुलायां खण्डः ( )

61. 'मीनाक्षी' में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) बहुव्रीहि
(स) द्वन्द्व (द) तत्पुरुष ( )

62. समाहार द्वन्द्व में समस्त पद का लिङ्ग निर्धारित होता है–
(अ) उत्तरपद के अनुसार (ब) अव्यय
(स) अन्यपद के अनुसार (द) नपुंसकलिङ्ग ( )

63. 'कुशश्च काशश्च' - विग्रह में समास होगा–
(अ) समाहार द्वन्द्व (ब) एकशेषद्वन्द्व
(स) इतरेतरयोगद्वन्द्व (द) बहुव्रीहि ( )

64. 'पाणिपादम्' में समास है–
(अ) एकशेषद्वन्द्व (ब) समाहारद्वन्द्व
(स) इतरेतरयोग द्वन्द्व (द) द्विगु ( )

65. 'गोदावर्याः अनु' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) अनुगोदावर्यम् (ब) अनुगोदावरी
(स) अनुगोदावरिः (द) अनुगोदावरि ( )

66. 'अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) अविद्यमानपुत्रः (ब) अपुत्रः
(स) अ, ब दोनों (द) दोनों नहीं ( )

67. 'शिवश्च केशवश्च' - इस विग्रह में पूर्वप्रयोग किस सूत्र से होगा ?
(अ) द्वन्द्वे घि (ब) अल्पाच्तरम्
(स) अजाद्यदन्तम् (द) लघ्वक्षरं पूर्वम् ( )

68. 'दर्शनीया भार्या यस्य सः' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) दर्शनीयाभार्यः (ब) दर्शनीयाभार्या
(स) दर्शनीयभार्यः (द) दर्शनीयाभार्यकः ( )

69. अधोलिखित में से भिन्न समस्त पद है–
(अ) अहितः (ब) हरित्रातः
(स) नखभिन्नः (द) सङ्कटापन्नः ( )

70. अधोलिखित में से भिन्न समस्तपद है–
(अ) ग्रामगतः (ब) विद्याविहीनः
(स) प्राचार्यः (द) राजपुरुषः ( )

71. एकशेषसमास किस समास का दूसरा भेद है–
(अ) द्विगु समास का (ब) समाहार द्वन्द्व का
(स) इतरेतरयोग द्वन्द्व का (द) बहुव्रीहि का ( )

72. रक्षासूत्रम् में समास होगा–
(अ) अव्ययीभाव समास (ब) तत्पुरुष समास
(स) बहुव्रीहि समास (द) द्वन्द्व समास ( )

73. 'प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) प्रपर्णः (ब) प्रपतितपर्णः
(स) पर्णपतितः (द) अ, ब दोनों ( )

74. 'पीताम्बरः' में समास होगा–
(अ) कर्मधारय (ब) द्विगु
(स) द्वन्द्व (द) बहुव्रीहि ( )

75. पञ्चमीतत्पुरुष समास का उदाहरण है–
(अ) यूपदारुः (ब) राजपुरुषः
(स) अक्षशौण्डः (द) चौरभयम् ( )

76. 'च' के अर्थ में कौनसा समास होता है–
(अ) द्विगुसमास (ब) बहुव्रीहिसमास
(स) द्वन्द्व समास (द) कर्मधारय समास ( )

77. 'भयभीतम्' - इस विग्रह में समास होगा–
(अ) षष्ठीतत्पुरुष समास (ब) पञ्चमीतत्पुरुष समास
(स) कर्मधारय समास (द) अव्ययीभाव समास ( )

78. ''कटप्रवीणः'' में समास है–
(अ) कर्मधारय समास (ब) सप्तमी तत्पुरुष समास
(स) तृतीया तत्पुरुष समास (द) बहुव्रीहि समास ( )

79. 'राजकुमारी' में समास होगा–
(अ) बहुव्रीहि समास (ब) द्वन्द्व समास
(स) द्विगु समास (द) तत्पुरुष समास ( )

80. समाहार द्वन्द्व का उदाहरण नहीं है–
(अ) अहर्दिवम् (ब) अहिनकुलम्
(स) रात्रिन्दिवम् (द) दम्पती ( )

81. 'अस्त्रशस्त्रम्' - इस में समास होगा–
(अ) बहुव्रीहि (ब) इतरेतरयोगद्वन्द्व
(स) समाहार द्वन्द्व (द) एकशेष द्वन्द्व ( )

82. ''वाक्पटुः'' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) वाचा पटुः (ब) वाचि पटुः
(स) वाचे पटुः (द) वाचः पटुः ( )

83. 'अन्यो राजा' - विग्रह का समस्त पद होगा–
(अ) अन्यराजा (ब) राजान्यद्
(स) राजान्तरम् (द) अन्यो राजा ( )

84. 'कर्मफलम्' - में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) तत्पुरुष
(स) द्वन्द्व (द) बहुव्रीहि ( )

85. 'द्वयोः रात्र्योः समाहारः' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) द्विरात्रम् (ब) द्विरात्रिः
(स) रात्रिद्वयम् (द) द्विरात्री ( )

86. 'पितृसदृशः'- में समास है–
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (ब) तृतीया तत्पुरुष
(स) चतुर्थी तत्पुरुष (द) अव्ययीभाव ( )

87. अधोलिखित उदाहरणों में से किस में, प्रादि तत्पुरुष है–
(अ) नीलोत्पलम् (ब) पापपुरुषः
(स) महावैयाकरणः (द) विदेशः ( )

88. 'व्याकरणपण्डितः' - समस्त पद का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) व्याकरणे पण्डितः (ब) व्याकरणाय पण्डितः
(स) व्याकरणेन पण्डितः (द) व्याकरणात् पण्डितः ( )

89. 'महान् राजा' - विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) महाराजः (ब) महाराजानः
(स) महाराज्ञः (द) महाराज्ञाः ( )

92. ''वाक्कलहः'' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) वाचा कलहः (ब) वाचि कलहः
(स) वाचः कलहः (द) वाचे कलहः ( )

93. 'सिंहभीतिः' - में समास है–
(अ) चतुर्थी तत्पुरुष (ब) बहुव्रीहि
(स) पञ्चमी तत्पुरुष (द) कर्मधारय ( )

94. अधोलिखित में से भिन्न समस्त पद है–
(अ) त्रिभुवनम् (ब) त्रिलोकी
(स) पञ्चवटी (द) द्वियमुनम् ( )

95. विद्याविहीनः का विग्रह है–
(अ) विद्यायाःविहीनः (ब) विद्यां विहीनः
(स) विद्यया विहीनः (द) विद्या च विहीनश्च ( )

96. पञ्चगंगम् में समास है–
(अ) तत्पुरुष (ब) द्वन्द्व
(स) अव्ययीभाव (द) द्विगु ( )

97. महाकवि में समास है–
(अ) बहुव्रीहि (ब) द्विगु
(स) द्वन्द्व (द) कर्मधारय ( )

98. 'जाया च पतिश्च' - इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) जायापती (ब) दम्पती
(स) जम्पती (द) तीनों ( )

99. 'वागर्थाविव' -में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) केवल समास
(स) बहुव्रीहि समास (द) द्वन्द्व समास ( )

100. 'अभूतपूर्वः' - में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) केवल समास
(स) बहुव्रीहि समास (द) द्वन्द्व समास ( )

101. 'परमपुरुषः' में समास है–
(अ) तत्पुरुष (ब) कर्मधारय
(स) बहुव्रीहि (द) द्वन्द्व ( )

102. अधोलिखित में से भिन्न समास पद है–
(अ) वीरपुरुषः (ब) सुन्दरबालकः
(स) एकपुरुषः (द) राजपुरुषः ( )

103. कर्मधारय समास का उदाहरण नहीं है–
(अ) पीताम्बरम् (ब) नीलकमलम्
(स) शैलोन्नतः (द) चन्द्रशेखरः ( )

104. 'समानां दिनानां समाहारः' इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) सप्तदिनः (ब) सप्तदिनम्
(स) सप्तदिनमः (द) तीनो ( )

105. 'सचक्रम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) चक्रेन सह (ब) चक्रेण सुगपत्
(स) चक्रेण युगपद् (द) चक्रेन युगपद् ( )

106. तृतीया-तत्पुरुष समास का उदाहरण नहीं है–
(अ) पुण्यार्थः (ब) पादोनाम्
(स) स्वर्गगतः (द) वाक्कलहः ( )

107. चतुर्थी तत्पुरुष समास का उदाहरण है–
(अ) राजपुरुषः (ब) देवगातः
(स) द्विजार्थः (द) राजधानी ( )

108. 'द्विजार्थम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) द्विजाय अयम् (ब) द्विजाय इदम्
(स) द्विजाय इयम् (द) द्विजः इदम् ( )

109. 'चतुर्मुखः' – में समास होगा–
(अ) द्विगु (ब) द्वन्द्व
(स) तत्पुरुष (द) बहुव्रीहि ( )

110. 'जनानाम् अभावः' – विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) अर्जुनम् (ब) अतिजनम्
(स) निर्जनम् (द) निर्जनः ( )

111. 'सविनयम्' – में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) बहुव्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) प्रादि-तत्पुरुष ( )

112. 'चन्द्रः इव मुखं यस्याः सा' इस विग्रह में समस्त पद होगा–
(अ) चन्द्रमुखः (ब) चन्द्रमुखी
(स) चन्द्रमुखम् (द) तीनों ( )

113. 'कटे प्रवीणः' में समास है–
(अ) द्वितीया तत्पुरुष (ब) चतुर्थी तत्पुरुष
(स) सप्तमी तत्पुरुष (द) तृतीया तत्पुरुष ( )

114. 'प्रत्यक्षः' में समास हैं–
(अ) अव्ययीभाव (ब) बहुव्रीहि
(स) प्रादि तत्पुरुष (द) तत्पुरुष ( )

Scanned by CamScanner

115. अधोलिखित में से भिन्न समस्त पद है–
(अ) नवग्रहा: (ब) षोडशसंस्कारा:
(स) सप्तऋषय: (द) नवरात्रम् ( )

116. 'चक्रपाणि:' में समास है–
(अ) तत्पुरुष (ब) बहुव्रीहि
(स) अव्ययीभाव (द) कोई नहीं ( )

117. 'कण्ठतालु' में समास है–
(अ) एकशेष द्वन्द्व (ब) समाहार द्वन्द्व
(स) इतरेतर द्वन्द्व (द) तीनों ( )

118. 'मीनस्य अक्षिणी इव अक्षिणी यस्या: सा' में समस्त पद होगा–
(अ) मीनाक्षी (ब) मीनाक्ष:
(स) मीनाक्षम् (द) मीनाक्षी: ( )

119. 'भूतपूर्व:' में समास है–
(अ) तत्पुरुष (ब) अव्ययीभाव
(स) केवल समास (द) कोई नहीं ( )

120. 'अवकोकिल:' में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) प्रादि तत्पुरुष
(स) कर्मधारय (द) बहुव्रीहि ( )

121. 'चक्रबन्ध:' समस्त पद का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) चक्राय बन्ध: (ब) चक्रात् बन्ध:
(स) चक्रे बन्ध: (द) चक्रेण बन्ध: ( )

122. षष्ठी तत्पुरुष का उदाहरण नहीं हैं–
(अ) देवलोक: (ब) तत्पुरुष:
(स) तपोवनम् (द) सत्पुरुष: ( )

123. 'दशानन:' में समास है–
(अ) द्विगु (ब) बहुव्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) कर्मधारय ( )

124. 'हरित्रात:' का विग्रह है–
(अ) हरे: त्रात: (ब) हरये त्रात:
(स) हरिणा त्रात: (द) हरि त्रात: ( )

125. अधोलिखित में से भिन्न समस्त पद है–
(अ) सुमद्रम् (ब) अतिहिमम्
(स) समर्थम् (द) सहरि ( )

126. 'त्रिमुनि' में समास हैं–
(अ) तत्पुरुष (ब) द्विगु
(स) अव्ययीभाव (द) कर्मधारय ( )

127. 'बहुव्रीहि:' में समास है–
(अ) तत्पुरुष (ब) कर्मधारय
(स) बहुव्रीहि: (द) द्विगु ( )

128. 'काकोलूकम्' में समास है–
(अ) अव्ययीभाव (ब) बहुव्रीहि
(स) द्वन्द्व (द) कर्मधारय ( )

129. सप्तमी तत्पुरुष समास का उदाहरण हैं–
(अ) तत्पुरुष: (ब) अनर्थ:
(स) भाषणचपल: (द) पुण्यार्थ: ( )

130. 'आत्मज्ञानम्' का लौकिक विग्रह होगा–
(अ) आत्माय ज्ञानम् (ब) आत्मने ज्ञानम्
(स) आत्मना ज्ञानम् (द) आत्मन: ज्ञानम् ( )

उत्तर तालिका

(1) द	(2) द	(3) अ	(4) अ	(5) ब	(6) ब	(7) अ	(8) ब	(9) अ	(10) स
(11) अ	(12) स	(13) द	(14) स	(15) ब	(16) स	(17) द	(18) अ	(19) स	(20) ब
(21) अ	(22) अ	(23) स	(24) ब	(25) अ	(26) स	(27) अ	(28) अ	(29) द	(30) द
(31) ब	(32) स	(33) द	(34) द	(35) स	(36) द	(37) स	(38) अ	(39) ब	(40) द
(41) द	(42) द	(43) द	(44) ब	(45) स	(46) द	(47) स	(48) स	(49) अ	(50) अ
(51) द	(52) स	(53) अ	(54) ब	(55) द	(56) स	(57) स	(58) ब	(59) ब	(60) स
(61) ब	(62) द	(63) अ,स	(64) ब	(65) द	(66) स	(67) ब	(68) स	(69) द	(70) स
(71) स	(72) ब	(73) द	(74) द	(75) द	(76) स	(77) ब	(78) ब	(79) द	(80) द
(81) स	(82) ब	(83) स	(84) ब	(85) अ	(86) ब	(87) द	(88) अ	(89) अ	(90) द
(91) द	(92) अ	(93) स	(94) द	(95) स	(96) स	(97) द	(98) द	(99) ब	(100) ब
(101) ब	(102) द	(103) द	(104) ब	(105) स	(106) स	(107) स	(108) ब	(109) द	(110) स
(111) अ	(112) ब	(113) स	(114) स	(115) द	(116) ब	(117) ब	(118) अ	(119) स	(120) ब
(121) स	(122) द	(123) ब	(124) स	(125) स	(126) स	(127) स	(128) स	(129) स	(130) द

अध्याय 6

प्रत्यय

प्रत्यय

- धातु या शब्दों के बाद में होने वाले वर्ण या वर्ण समूह जो अर्थ को परिवर्तित या विशिष्टता सम्पादित करने का सामर्थ्य रखते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।
- प्रत्ययों का प्रयोग शब्द या धातु के बाद किया जाता है। (**प्रत्यय:, परश्च**)
- प्रत्ययों का सामान्य विभाजन धातुओं से होने वाले प्रत्यय तथा शब्दों से होने वाले प्रत्ययों में किया जाता है।

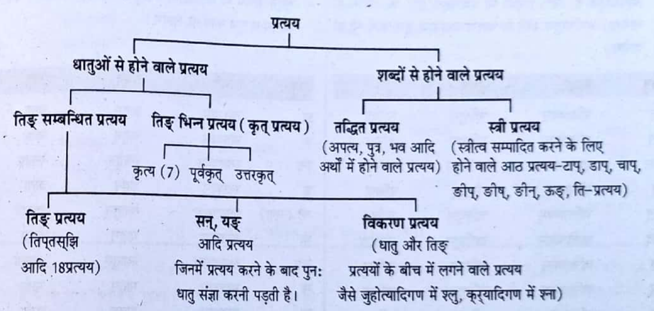

कृत् और तद्धित प्रत्ययों में अन्तर

कृत्प्रत्यय	तद्धित प्रत्यय
1. धातुओं से होते है	1. शब्दों से होते हैं।
2. भाव, कर्ता और कर्म अर्थ में होते हैं।	2. अपत्य, पुत्र, भव, जात आदि अर्थों में होते हैं।

कृत् प्रत्यय

- धातुओं से होने वाले तिङ् भिन्न (तिप् तस् झि० के अलावा) प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते है।
- अर्थात् तिङ्, सन आदि एवं विकरण प्रत्ययों के अलावा धातु से होने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय होते हैं। (**कृदतिङ् (कृत् + अतिङ्)**)

Scanned by CamScanner

तव्यत्, तृच् और तुमुन् - प्रत्यय

1. तव्यत् प्रत्यय

तव्यत्तव्यानीयरः

- 'चाहिए' एव 'योग्य' अर्थ में (भाव और कर्म में) धातुओं से तव्यत् प्रत्यय होता है। तव्यत् में 'त्' की इत्संज्ञा होने पर 'तव्य' शेष रहता है। इसी अर्थ में अनीयर् (अनीय) प्रत्यय होता है।
- तव्यत् प्रत्यय वलादि आर्धधातुक है, अतः यहाँ सेट् धातुओं से यथाप्राप्त 'इट्' का आगम हो जायेगा। आर्धधातुक होने के कारण यथाप्राप्त गुण कार्य हो जायेगा।

2. तृच्-प्रत्यय

ण्वुल्तृचौ

- 'कर्ता' अर्थ में धातुओं से 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र द्वारा तृच् प्रत्यय होता है। तृच् में चकार की इत्संज्ञा हो जाती है। तृच् भी वलादि आर्धधातुक है, अतः इसको भी यथाप्राप्त 'इट्' का आगम हो जायेगा। आर्धधातुक होने के कारण यथाप्राप्त गुण कार्य भी हो जायेगा।

3. तुमुन्-प्रत्यय

तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्

- "तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्" सूत्र के अनुसार, भविष्यत् अर्थ में, क्रियार्था क्रिया के उपपद रहने पर मुख्य क्रिया में तुमुन् प्रत्यय हो जाता है। मुख्य क्रिया को सिद्ध करने के लिए जो क्रिया होती है, उसे क्रियार्था क्रिया कहते है। जैसे–'मैं पढ़ने के लिए जाता हूँ'–यहाँ मुख्य क्रिया पढ़ना है तथा उसकी सहायक क्रिया 'जाना' क्रियार्था क्रिया है। अतः मुख्य क्रिया 'पढ़ना' में तुमुन् प्रत्यय होगा।
- तुमुन् में 'तुम्' शेष रहता है। मकारान्त कृत्प्रत्यय होने के कारण तुमुन् प्रत्यय से बनने वाले शब्द अव्यय हो जाते है। (**कृन्मेजन्तः**) अर्थात् तुमुन् प्रत्यय से बने रूप का सभी लिङ्ग–वचन–विभक्ति में रूप समान ही रहेगा।
- तुमुन् प्रत्यय भी वलादि आर्धधातुक है। अतः यथाप्राप्त इट् का आगम व गुण कार्य हो जायेंगे।

धातु	तव्यत्	तुमुन्	तृच्	धातु	तव्यत्	तुमुन्	तृच्
पठ्	पठितव्यम्	पठितुम्	पठिता	ज्ञा	ज्ञातव्यम्	ज्ञातुम्	ज्ञाता
हस्	हसितव्यम्	हसितुम्	हसिता	पा	पातव्यम्	पातुम्	पाता
शास्	शासितव्यम्	शासितुम्	शासिता	स्ना	स्नातव्यम्	स्नातुम्	स्नाता
रक्ष्	रक्षितव्यम्	रक्षितुम्	रक्षिता	त्रा	त्रातव्यम्	त्रातुम्	त्राता
चल्	चलितव्यम्	चलितुम्	चलिता	ग्लै (ग्ला)	ग्लातव्यम्	ग्लातुम्	ग्लाता
खाद्	खादितव्यम्	खादितुम्	खादिता	धा	धातव्यम्	धातुम्	धाता
जन्	जनितव्यम्	जनितुम्	जनिता	स्था	स्थातव्यम्	स्थातुम्	स्थाता
जप्	जपितव्यम्	जपितुम्	जपिता	मा	मातव्यम्	मातुम्	माता
पूज्	पूजितव्यम्	पूजितुम्	पूजिता	हा	हातव्यम्	हातुम्	हाता
जीव्	जीवितव्यम्	जीवितुम्	जीविता	गै (गा)	गातव्यम्	गातुम्	गाता
क्रीड्	क्रीडितव्यम्	क्रीडितुम्	क्रीडिता	ध्यै (ध्या)	ध्यातव्यम्	ध्यातुम्	ध्याता
कूज्	कूजितव्यम्	कूजितुम्	कूजिता	मन्	मन्तव्यम्	मन्तुम्	मन्ता
लिख्	लेखितव्यम्	लेखितुम्	लेखिता	हन्	हन्तव्यम्	हन्तुम्	हन्ता
सिव्	सेवितव्यम्	सेवितुम्	सेविता	गम्	गन्तव्यम्	गन्तुम्	गन्ता
शुच्	शोचितव्यम्	शोचितुम्	शोचिता	नम्	नन्तव्यम्	नन्तुम्	नन्ता
वृध्	वर्धितव्यम्	वर्धितुम्	वर्धिता	पच्	पक्तव्यम्	पक्तुम्	पक्ता
सृज्	स्रष्टव्यम्	स्रष्टुम्	स्रष्टा	त्यज्	त्यक्तव्यम्	त्यक्तुम्	त्यक्ता
दा	दातव्यम्	दातुम्	दाता	भज्	भक्तव्यम्	भक्तुम्	भक्ता

धातु	तव्यत्	तुमुन्	तृच्	धातु	तव्यत्	तुमुन्	तृच्
जि	जेतव्यम्	जेतुम्	जेता	छिद्	छेत्तव्यम्	छेत्तुम्	छेत्ता
चि	चेतव्यम्	चेतुम्	चेता	सिच्	सेक्तव्यम्	सेक्तुम्	सेक्ता
इ	एतव्यम्	एतुम्	एता	सिध्	सेद्धव्यम्	सेद्धुम्	सेद्धा
नी	नेतव्यम्	नेतुम्	नेता	दृश्	द्रष्टव्यम्	द्रष्टुम्	द्रष्टा
क्री	क्रेतव्यम्	क्रेतुम्	क्रेता	सृज्	स्रष्टव्यम्	स्रष्टुम्	स्रष्टा
भी	भेतव्यम्	भेतुम्	भेता	दह्	दग्धव्यम्	दग्धुम्	दग्धा
शी	शयितव्यम्	शयितुम्	शयिता	क्रुध्	क्रोद्धव्यम्	क्रोद्धुम्	क्रोद्धा
डी	डयितव्यम्	डयितुम्	डयिता	बुध्	बोद्धव्यम्	बोद्धुम्	बोद्धा
श्रि	श्रयितव्यम्	श्रयितुम्	श्रयिता	युध्	योद्धव्यम्	योद्धुम्	योद्धा
हु	होतव्यम्	होतुम्	होता	रुध्	रोद्धव्यम्	रोद्धुम्	रोद्धा
श्रु	श्रोतव्यम्	श्रोतुम्	श्रोता	शुध्	शोद्धव्यम्	शोद्धुम्	शोद्धा
स्तु	स्तोतव्यम्	स्तोतुम्	स्तोता	मुच्	मोक्तव्यम्	मोक्तुम्	मोक्ता
भू	भवितव्यम्	भवितुम्	भविता	भुज्	भोक्तव्यम्	भोक्तुम्	भोक्ता
पू	पवितव्यम्	पवितुम्	पविता	युज्	योक्तव्यम्	योक्तुम्	योक्ता
लू	लवितव्यम्	लवितुम्	लविता	प्रच्छ्	प्रष्टव्यम्	प्रष्टुम्	प्रष्टा
धू	धवितव्यम्	धवितुम्	धविता	यज्	यष्टव्यम्	यष्टुम्	यष्टा
स्मृ	स्मर्तव्यम्	स्मर्तुम्	स्मर्ता	लिह्	लेढव्यम्	लेढुम्	लेढा
भृ	भर्तव्यम्	भर्तुम्	भर्ता	(आ)रुह्	(आ)रोढव्यम्	(आ)रोढुम्	(आ)रोढा
सृ	सर्तव्यम्	सर्तुम्	सर्ता	सह्	सोढव्यम्	सोढुम्	सोढा
हृ	हर्तव्यम्	हर्तुम्	हर्ता	वह्	वोढव्यम्	वोढुम्	वोढा
कृ	कर्तव्यम्	कर्तुम्	कर्ता	ग्रह्	ग्रहीतव्यम्	ग्रहीतुम्	ग्रहीता
मृ	मर्तव्यम्	मर्तुम्	मर्ता	वस्	वस्तव्यम्	(कर्ता अर्थ में वास्तव्यः)	
भिद्	भेत्तव्यम्	भेत्तुम्	भेत्ता				

यत्, ण्यत् और क्यप् प्रत्यय

- ये तीनों प्रत्यय भाव और कर्म में होते है। यत् में 'त्' की इत्संज्ञा व लोप के बाद 'य' शेष रहता है। 'ण्यत्' में ण् और त् की इत्संज्ञा व लोप होने पर 'य' शेष रहता है। क्यप् में क् और प् की इत्संज्ञा तथा लोप होने के बाद 'य' शेष रहता है।
- **अचो यत्**–अजन्त (स्वर अन्त वाली) धातुओं से यत् प्रत्यय होता है।
- **ऋहलोर्ण्यत्**–ऋकारान्त (ऋ, ॠ अन्त वाली) धातुओं तथा हलन्त (व्यञ्जन अन्त वाली) धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।
- **पोरदुपधात्**–ऐसी हलन्त धातु, जिसके अन्त में पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) हो तथा उपधा में ह्रस्व अकार हो तो यत् प्रत्यय ही होगा।
- **एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्**–इ, स्तु, शास्, वृ, दृ और जुष् धातु से तो क्यप् ही होगा। ह्रस्व ऋ उपधावाली धातु से भी क्यप् प्रत्यय हो जाता है।
- इन तीनों प्रत्ययों में 'य' ही शेष रहता है, अतः यह वलादि नहीं। इसलिए यहाँ 'इट्' का आगम नहीं होगा।
- ण्यत् प्रत्यय णित् ('ण् इत्संज्ञक) है, अतः यथा प्राप्त वृद्धि कार्य भी हो जायेगा।
- क्यप् प्रत्यय कित् है, अतः यहाँ प्राप्त गुण कार्य नहीं होगा।
- यत् प्रत्यय के परे रहते तो यथा प्राप्त गुण कार्य हो जायेगा। आकारान्त धातु के आगे यत् रहने पर 'आ' ई हो जायेगा। (**ईद्यति**)
- इस 'ई' को यथाप्राप्त गुण 'ए' हो जायेगा।

Scanned by CamScanner

4. यत् प्रत्यय

जि+यत् → जेयम्
क्री + यत् → क्रेयम्
डी + यत् → डेयम्
श्रु + यत् → श्रव्यम्
भू + यत् → भव्यम्
धा + यत् → धेयम्
हा + यत् → हेयम्
गै (गा)+यत् → गेयम्
शप् + यत् → शप्यम्
रम् + यत् → रम्यम्
शक् + यत् → शक्यम्

चि + यत् → चेयम्
क्षि + यत् → क्षेयम्
श्रि + यत् → श्रेयम्
पू + यत् → पव्यम्
धू + यत् → धव्यम्
दा + यत् → देयम्
स्था + यत् → स्थेयम्
ग्लै (ग्ला) +यत् → ग्लेयम्
लभ् + यत् → लभ्यम्
वप् + यत् → वप्यम्
सह + यत् → सह्यम्

नी+यत् → नेयम्
भी + यत् → भेयम्
अधि इङ् + यत् → अध्येयम्
लू + यत् → लव्यम्
हु + यत् → हव्यम्
पा + यत् → पेयम्
स्ना + यत् → स्नेयम्
ध्यै (ध्या) + यत् → ध्येयम्
नम् + यत् → नम्यम्
जप् + यत् → जप्यम्

('शकिसहोश्च' सूत्र के द्वारा यत् प्रत्यय)

गद् + यत् → गद्यम्
मद् + यत् → मद्यम्
चर् + यत् → चर्यम्

हन् + यत् = वध्यः (हनो यद्वधश्च वक्तव्यः)

5. ण्यत् प्रत्यय

पठ् + ण्यत् → पाठ्यम्
वद्+ ण्यत् → वाद्यम्
वह् + ण्यत् → वाह्यम्
दह् + ण्यत् → दाह्यम्
यज् + ण्यत् → याज्यम्
त्यज् + ण्यत् → त्याज्यम्
याच् + ण्यत् → याच्यम्
प्रवच् + ण्यत् → प्रवाच्यम्

कृ + ण्यत् → कार्यम्
हृ + ण्यत् → हार्यम्
तृ + ण्यत् → तार्यम्
भृ + ण्यत् → भार्यम्
धृ + ण्यत् → धार्यम्
मृ + ण्यत् → मार्यम्

विद् + ण्यत् → वेद्यम्
लिख् + ण्यत् → लेख्यम्
छिद् + ण्यत् → छेद्यम्
भिद् + ण्यत् → भेद्यम्
कुप् + ण्यत् → कोप्यम्
मुद् + ण्यत् → मोद्यम्
गुप् + ण्यत् → गोप्यम्
बुध् + ण्यत् → बोध्यम्

वच्→ वाच्यम् (अशब्द संज्ञा)
वाक्यम् (शब्द संज्ञा)
भुज्→ भोज्यम् (भक्ष्य)
भोग्यम् (अभक्ष्य)
दुह् + ण्यत् → दोह्यम्
युध् + ण्यत् → योध्यम्
पुष् + ण्यत् → पोष्यम्
रुध् + ण्यत् → रोध्यम्

6. क्यप् प्रत्यय

इ + क्यप्	→ इत्यः	स्तु+क्यप्	→ स्तुत्यः	दृश् + क्यप्	→ दृश्यम्	वृध् + क्यप्	→ वृध्यम्
वृ + क्यप्	→ वृत्यः	दृ + क्यप्	→ दृत्यः	वृत् + क्यप्	→ वृत्यम्	स्पृश् + क्यप्	→ स्पृश्यम्
शास् + क्यप्	→ शिष्यः	जुष् + क्यप्	→ जुष्यः	कृत् + क्यप्	→ कृत्यम्	नृत् + क्यप्	→ नृत्यम्

- "मृजेर्विभाषा"–मृज् धातु से भाव और विकल्प से क्यप् प्रत्यय होता है। क्यप् के अभाव में यथाप्राप्त ण्यत् प्रत्यय हो जाता है। ण्यत् प्रत्यय होने पर यहाँ वृद्धिकार्य होगा। (मृजेर्वृद्धिः)

मृज् + क्यप् → मृज्यः मृज् + ण्यत् → मार्ग्यः (विकल्प से)

- 'ई च खनः'–खन् धातु से क्यप् प्रत्यय तथा 'न्' के स्थान पर 'ई' आदेश भी हो जाता है। यथाप्राप्त आद्गुणः सूत्र से गुणकार्य भी हो जाता है।

खन् + क्यप् → खेयम्

शतृ और शानच् प्रत्यय

लटः शतृशानचावप्रथमा समानाधिकरणे।

- वर्तमानकालिक निरन्तरता के अर्थ में धातुओं से शतृ शानच् प्रत्यय होते हैं। शतृ में 'अत्' तथा शानच् में 'आन' शेष रहता है। शतृ और शानच् प्रत्ययों को "सत्" भी कहा जाता है (तौ सत्)
- परस्मैपदी धातुओं से शतृ प्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओं से शानच् प्रत्यय होता है। उभयपदी धातुओं से शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय होते है।
- शतृ और शानच् प्रत्यय से बने शब्द क्रिया विशेषण शब्द होते हैं। ये विशेष्य पर आधारित होते है। विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन के अनुसार ही इनका लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन निर्धारित होते हैं।

- **शतृ प्रत्यय वाले शब्दों के रूप–**
  - **पुँल्लिङ्ग में**–भवत् शब्द की तरह (प्रथमा एकवचन को छोड़कर, शतृ प्रत्ययान्त में दीर्घ नहीं होता)।
  - **स्त्रीलिङ्ग में**–नदी शब्द की तरह।
  - **नपुंसकलिङ्ग में**–जगत् शब्द की तरह (प्रथमा एवं द्वितीया के द्विवचन में कुछ जगह नुम् का भेद)।
- **शानच् प्रत्यय वाले शब्दों के रूप–**
  - पुँल्लिङ्ग में राम, स्त्रीलिंग में रमा तथा नपुंसकलिङ्ग में फल की तरह रूप चलेंगे।

7. शतृ प्रत्यय

शतृ प्रत्यय से रूप बनाने का सामान्य नियम

- **शतृ प्रत्यय के साथ**–पुँल्लिङ्ग में प्रथमा एकवचन का रूप बनाने के लिए, उस धातु के लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन के 'ति' को हटाकर रूप ज्ञात किया जा सकता है।
- स्त्रीलिङ्ग का रूप बनाने में दो कार्य करने होते है–

1. प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप में 'ति' को 'ती' कर दिया जाता है।
2. यदि उसी धातु के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप में 'ति' से पहले ह्रस्व अकार है, तो शतृ प्रत्यय (स्त्री०) करने पर नुम् (न्) सहित रूप लिखते है। प्रथम पुरुष एकवचन में ति से पहले ह्रस्व अकार के अलावा और किसी के रहने पर नुम् (न्) नहीं होगा।

शतृ प्रत्यय के मुख्य उदाहरण

धातु	लट् लकार प्रथम पुरुष (एकवचन)	लट् लकार प्रथम पुरुष (बहुवचन)	शतृ (पु०)	शतृ (स्त्री०)	शतृ (नपु०)
पठ्	पठति	पठन्ति	पठन्	पठन्ती	पठत्
लिख्	लिखति	लिखन्ति	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
क्रीड्	क्रीडति	क्रीडन्ति	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
हृ	हरति	हरन्ति	हरन्	हरन्ती	हरत्
स्था	तिष्ठति	तिष्ठन्ति	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्
नृत्	नृत्यति	नृत्यन्ति	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
वद्	वदति	वदन्ति	वदन्	वदन्ती	वदत्
रक्ष्	रक्षति	रक्षन्ति	रक्षन्	रक्षन्ती	रक्षत्
प्रच्छ्	पृच्छति	पृच्छन्ति	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
कृ	करोति	कुर्वन्ति	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
श्रु	शृणोति	शृण्वन्ति	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
स्ना	स्नाति	स्नान्ति	स्नान्	स्नाती	स्नात्
चि	चिनोति	चिन्वन्ति	चिन्वन्	चिन्वती	चिन्वत्
आप्	आप्नोति	आप्नुवन्ति	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्

Scanned by CamScanner

धातु	लट् लकार प्रथम पुरुष (एकवचन)	लट् लकार प्रथम पुरुष (बहुवचन)	शतृ (पु०)	शतृ (स्त्री०)	शतृ (नपु०)
तन्	तनोति	तन्वन्ति	तन्वन्	तन्वती	तन्वत्
ज्ञा	जानाति	जानन्ति	जानन्	जानती	जानत्
क्री	क्रीणाति	क्रीणन्ति	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
हन्	हन्ति	घ्नन्ति	घ्नन्	घ्नती	घ्नत्
अस्	अस्ति	सन्ति	सन्	सती	सत्
शक्	शक्नोति	शक्नुवन्ति	शक्नुवन्	शक्नुवती	शक्नुवत्
स्वी+कृ	स्वीकरोति	स्वीकुर्वन्ति	स्वीकुर्वन्	स्वीकुर्वती	स्वीकुर्वत्
रुद्	रोदिति	रुदन्ति	रुदन्	रुदती	रुदत्
दा	ददाति	ददति	ददत्	ददती	ददत्
धा	दधाति	दधति	दधत्	दधती	दधत्
भी	बिभेति	बिभ्यति	बिभ्यत्	बिभ्यती	बिभ्यत्
हु	जुहोति	जुह्वति	जुह्वत्	जुह्वती	जुह्वत्

शतृ प्रत्यय के बने रूप अकारादि-क्रम में

धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप
अद्	अदन्	चल्	चलन्	पत्	पतन्	व्यध्	विध्यन्
अर्च्	अर्चन्	चि	चिन्वन्	पा	पिबन्	शक्	शक्नुवन्
अस्	सन्	छिद्	छिन्दन्	पाल्	पालयन्	शप्	शपन्
आप्	आप्नुवन्	जप्	जपन्	पूज्	पूजयन्	शम्	शाम्यन्
आरुह्	आरोहन्	जि	जयन्	प्रच्छ्	पृच्छन्	शुष्	शुष्यन्
आह्वे	आह्वयन्	जीव्	जीवन्	प्रेर्	प्रेरयन्	श्रि	श्रयन्
इ	यन्	ज्वल्	ज्वलन्	बन्ध्	बध्नन्	श्रु	शृण्वन्
इष्	इच्छन्	तप्	तपन्	भक्ष्	भक्षयन्	सद्	सीदन्
कुप्	कुप्यन्	तुद्	तुदन्	भज्	भजन्	सिच्	सिञ्चन्
कृ	कुर्वन्	तुष्	तुष्यन्				
कृष्	कर्षन्	तृ	तरन्	भिद्	भिन्दन्	सिव्	सीव्यन्
कॄ	किरन्	त्यज्	त्यजन्	भृ	भरन्	सृ	सरन्
क्रन्द्	क्रन्दन्	दण्ड्	दण्डयन्	सृज्	सृजन्		
क्रम्	क्राम्यन्	दह्	दहन्	भू	भवन्	सृप्	सर्पन्
क्रीड्	क्रीडन्	त्यज्	त्यजन्	भ्रम्	भ्रमन्, भ्राम्यन्	स्तु	स्तुवन्
क्रुध्	क्रुध्यन्	दिव्	दीव्यन्	मिल्	मिलन्	स्था	तिष्ठन्
क्षम्	क्षाम्यन्	दिश्	दिशन्	रक्ष्	रक्षन्	स्पृश्	स्पृशन्
क्षिप्	क्षिपन्	दुह्	दुहन्	रच्	रचयन्	स्मृ	स्मरन्
खन्	खनन्	दृश्	पश्यन्	रुद्	रुदन्	स्वप्	स्वपन्
खाद्	खादन्	धाव्	धावन्	लष्	लषन्	हन्	हनन्
गण्	गणयन्	धृ	धरन्	लिख्	लिखन्	हस्	हसन्
गम्	गच्छन्	ध्यै	ध्यायन्	लिह्	लिहन्	हा	जहत्

धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप	धातु	रूप
गर्ज्	गर्जन्	नम्	नमन्	वद्	वदन्	हिंस्	हिंसन्
गॄ	गिरन्	नश्	नश्यन्	वस्	वसन्	हु	जुह्वत्
गै	गायन्	निन्द्	निन्दन्	वह्	वहन्	हृ	हरन्
घ्रा	जिघ्रन्	नृत्	नृत्यन्	विश्	विशन्	हृष्	हृष्यन्
चर्	चरन्	पठ्	पठन्	वृष्	वर्षन्	ह्वे	ह्वयन्

8. शानच्-प्रत्यय

- आत्मनेपदी धातुओं से, वर्तमान कालिक अर्थ में शानच् प्रत्यय होता है। इस प्रत्यय से बना शब्द भी क्रिया विशेषण होता है। अतः विशेष्य के लिङ्ग के अनुसार पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग तथा वचन निर्धारित होता है।

शानच् प्रत्यय से रूप बनाने का सामान्य नियम

- धातु से शानच् प्रत्यय का रूप बनाने के लिए, उस धातु के लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में 'न्ते' हो उसके स्थान पर 'मान' लग जाता है तथा 'ते' के स्थान पर 'आन' लग जाता है।

शानच् प्रत्यय के उदाहरण

धातु	लट् लकार प्रथम पुरुष (एकवचन)	लट् लकार प्रथम पुरुष (बहुवचन)	शानच् (पु०)	शानच् (स्त्री०)	शानच् (नपुं०)
एध्	एधते	एधन्ते	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
कम्प्	कम्पते	कम्पन्ते	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
वन्द्	वन्दते	वन्दन्ते	वन्दमानः	वन्दमाना	वन्दमानम्
यत्	यतते	यतन्ते	यतमानः	यतमाना	यतमानम्
जन्	जायते	जायन्ते	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
याच्	याचते	याचन्ते	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
वृध्	वर्धते	वर्धन्ते	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
मुद्	मोदते	मोदन्ते	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
रम्	रमते	रमन्ते	रममाणः	रममाणा	रममाणम्
यज्	यजते	यजन्ते	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
नी	नयते	नयन्ते	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
वृत्	वर्तते	वर्तन्ते	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
कृ	कुरुते	कुर्वते	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
क्री	क्रीणीते	क्रीणते	क्रीणानः	क्रीणाना	क्रीणानम्
भुज्	भुङ्क्ते	भुञ्जते	भुञ्जानः	भुञ्जाना	भुञ्जानम्
चि	चिनुते	चिन्वते	चिन्वानः	चिन्वाना	चिन्वानम्
तन्	तनुते	तन्वते	तन्वानः	तन्वाना	तन्वानम्
ज्ञा	जानीते	जानते	जानानः	जानाना	जानानम्
मन्	मनुते	मन्वते	मन्वानः	मन्वाना	मन्वानम्
अधि+इ	अधीते	अधीयते	अधीयानः	अधीयाना	अधीयानम्
शी	शेते	शेरते	शयानः	शयाना	शयानम्
आस्	आस्ते	आसते	आसीनः	आसीना	आसीनम्

Scanned by CamScanner

उभयपदी धातु (शतृ और शानच् दोनों प्रत्यय)

धातु	शतृ प्रत्यय पुँल्लिङ्ग	शतृ प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग	शतृ प्रत्यय नपुंसकलिङ्ग	शानच् प्रत्यय पुँल्लिङ्ग	शानच् प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग	शानच् प्रत्यय नपुंसकलिङ्ग
याच्	याचन्	याचन्ती	याचत्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
पच्	पचन्	पचन्ती	पचत्	पचमानः	पचमाना	पचमानम्
कथ्	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्	कथयमानः	कथयमाना	कथयमानम्
चि	चिन्वन्	चिन्वती	चिन्वत्	चिन्वानः	चिन्वाना	चिन्वानम्
ब्रू	ब्रुवन्	ब्रुवती	ब्रुवत्	ब्रुवाणः	ब्रुवाणा	ब्रुवाणम्
चि	चिन्वन्	चिन्वती	चिन्वत्	चिन्वानः	चिन्वाना	चिन्वानम्
कृ	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
वृ	वृण्वन्	वृण्वती	वृण्वत्	वृण्वानः	वृण्वाना	वृण्वानम्
भृ	बिभ्रत्	बिभ्रती	बिभ्रत्	बिभ्राणः	बिभ्राणा	बिभ्राणम्
दा	ददत्	ददती	ददत्	ददानः	ददाना	ददानम्
धा	दधत्	दधती	दधत्	दधानः	दधाना	दधानम्
क्री	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्	क्रीणानः	क्रीणाना	क्रीणानम्
पू	पुनन्	पुनती	पुनत्	पुनानः	पुनाना	पुनानम्
ज्ञा	जानन्	जानती	जानत्	जानानः	जानाना	जानानम्

9. ण्वुल् प्रत्यय

"ण्वुल्तृचौ"

- "**ण्वुल्तृचौ**" सूत्र से 'कर्ता' अर्थ में, धातुओं से ण्वुल् व तृच् प्रत्यय होते हैं।
- ण्वुल् में 'ण्' एवं 'ल्' की इत्संज्ञा हो जाती है। शेष रहे 'वु' के स्थान पर "**युवोरनाकौ**" सूत्र से 'अक' आदेश हो जाता है। ण्वुल् प्रत्यय 'णित्' है, अत: यथाप्राप्त वृद्धि कार्य हो जायेगा। यह आर्धधातुक प्रत्यय है, अत: यथाप्राप्त गुणकार्य भी हो जायेगा।

'अत उपधाया:' से वृद्धि		'अचो ञ्णिति' से वृद्धि		लघूपध गुण	
पठ्	→ पाठकः	कृ	→ कारकः	मुद्	→ मोदकः
वद्	→ वादकः	हृ	→ हारकः	मुह्	→ मोहकः
पच्	→ पाचकः	मृ	→ मारकः	चुर्	→ चोरकः
यज्	→ याजकः	वृ	→ वारकः	पुष्	→ पोषकः
दह्	→ दाहकः	सृ	→ सारकः	युज्	→ योजकः
वह्	→ वाहकः	धृ	→ धारकः	लुभ्	→ लोभकः
चल्	→ चालकः	चि	→ चायकः	बुध्	→ बोधकः
भज्	→ भाजकः	जि	→ जायकः	छिद्	→ छेदकः
लभ्	→ लाभकः	हु	→ हावकः	सिच्	→ सेचकः
ग्रह्	→ ग्राहकः	श्रु	→ श्रावकः	लिख्	→ लेखकः
(उद्) पद्	→ उत्पादकः	पू	→ पावकः	नृत्	→ नर्तकः
तप्	→ तापकः	भू	→ भावकः	सृज्	→ सर्जकः
पत्	→ पातकः	नी	→ नायकः	भुज्	→ भोजकः
नह्	→ नाहकः	डी	→ डायकः	मुच्	→ मोचकः

विशेष रूप–		लघूपध गुण	
पा (रक्षा)	→ पालकः	शुष्	→ शोषकः
दा	→ दायकः	युध्	→ योधकः
गा	→ गायकः	शुध्	→ शोधकः
स्था	→ स्थापकः	विद्	→ वेदकः
मा	→ मापकः	स्विद्	→ स्वेदकः
वा	→ वाजकः	कृत्	→ कर्तकः
हन्	→ घातकः	दृश्	→ दर्शकः
		रुच्	→ रोचकः

अपवाद (अदुपध वृद्धि नहीं होगी)

जन्	→ जनकः	यम्	→ यमकः
वध्	→ वधकः	गम्	→ गमकः

10. घञ्- प्रत्यय

भावे

- भाव अर्थ में धातुओं से घञ् प्रत्यय होता है। घञ् प्रत्यय से बना शब्द नित्य पुँल्लिङ्ग होता है। घञ् में घ् और ञ् की इत्संज्ञा हो जाती है। घित् (घ् इत्संज्ञक) होने के कारण "चजोः कुः घिण्यतो:" सूत्र से धातु के अन्त में स्थित च् और ज् को कुत्व क्रमश: क् और ग् हो जाता है।
- ञित् (ञ्- इत्संज्ञक) होने के कारण "अचो ञ्णिति" तथा "अत उपधाया:" से प्राप्त वृद्धि कार्य भी हो जायेगी। जहाँ गुण प्राप्त होगा, वहाँ गुण हो जायेगा। यह 'घञ्' प्रत्यय संज्ञा के विषय में कर्ता के अलावा कारक के अर्थ में भी धातुओं से होता है। (**अकर्तरि च कारके सञ्ज्ञायाम्**)

'अत उपधाया:' से वृद्धि		'अचो ञ्णिति' से वृद्धि		लघूपध गुण	
पठ्	→ पाठः	कृ	→ कारः	मुद्	→ मोदः
वद्	→ वादः	हृ	→ हारः	तुद्	→ तोदः
पच्	→ पाकः	तृ	→ तारः	सिच्	→ सेकः
यज्	→ यागः	मृ	→ मारः	विद्	→ वेदः
दह्	→ दाहः	वृ	→ वारः	चुर्	→ चोरः
वह्	→ वाहः	भू	→ भावः	छिद्	→ छेदः
चल्	→ चालः	सृ	→ सारः	मुह्	→ मोहः
चर्	→ चारः	धृ	→ धारः	द्रुह्	→ द्रोहः
त्यज्	→ त्यागः	मृ	→ मारः	कुप्	→ कोपः
रम्	→ रामः			पुष्	→ पोषः
कम्	→ कामः			बुध्	→ बोधः
भज्	→ भागः			भिद्	→ भेदः
लभ्	→ लाभः			भुज्	→ भोगः
ग्रह्	→ ग्राहः			युज्	→ योगः

अपवाद

गम्	→ गमः
शम्	→ शमः
(सं) यम्	→ संयमः

- रञ्ज् + घञ् → **रागः** (भाव और करण अर्थ में)
- चि + घञ् → **कायः** (निवास, चिति, शरीर और उपसमाधान अर्थ में)

Scanned by CamScanner

11. ल्युट् प्रत्यय

ल्युट् च, करणाधिकरणयोश्च

- भाव अर्थ में तथा करण व अधिकरण कारक के अर्थ में ल्युट् प्रत्यय हो जाता है। ल्युट् में 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा हो जाती है, 'यु' मात्र ही शेष रहता है। इस 'यु' के स्थान पर **"युवोरनाकौ"** सूत्र से **'अन'** हो जाता है। आर्धधातुक होने के कारण यथाप्राप्त गुणकार्य हो जायेगा।
- भाव अर्थ में ल्युट् प्रत्यय से बनने वाले शब्द नित्यरूप से नपुंसकलिङ्ग में होते हैं।
- 'चाहिए' एवं योग्य के अर्थ में हुए, (भाव और कर्म में) अनीयर् प्रत्यय से बनने वाले रूप भी समानता के कारण यहाँ साथ में ही हैं। **(तव्यत्तव्यानीयरः)**

धातु		ल्युट् प्रत्यय	अनीयर् प्रत्यय	धातु		ल्युट् प्रत्यय	अनीयर् प्रत्यय
पठ्	→	पठनम्	पठनीयम्	लिख्	→	लेखनम्	लेखनीयम्
अद्	→	अदनम्	अदनीयम्	विद्	→	वेदनम्	वेदनीयम्
गम्	→	गमनम्	गमनीयम्	छिद्	→	छेदनम्	छेदनीयम्
चल्	→	चलनम्	चलनीयम्	चुर्	→	चोरणम्	चोरणीयम्
नम्	→	नमनम्	नमनीयम्	कुप्	→	कोपनम्	कोपनीयम्
हन्	→	हननम्	हननीयम्	दिव्	→	देवनम्	देवनीयम्
स्वप्	→	स्वपनम्	स्वपनीयम्	दुह्	→	दोहनम्	दोहनीयम्
सेव्	→	सेवनम्	सेवनीयम्	पुष्	→	पोषणम्	पोषणीयम्
सह्	→	सहनम्	सहनीयम्	मुह्	→	मोहनम्	मोहनीयम्
वच्	→	वचनम्	वचनीयम्	युज्	→	योजनम्	योजनीयम्
वह्	→	वहनम्	वहनीयम्	शी	→	शयनम्	शयनीयम्
रम्	→	रमणम्	रमणीयम्	नी	→	नयनम्	नयनीयम्
मा	→	मानम्	मानीयम्	जि	→	जयनम्	जयनीयम्
पा	→	पानम्	पानीयम्	हु	→	हवनम्	हवनीयम्
दा	→	दानम्	दानीयम्	श्रु	→	श्रवणम्	श्रवणीयम्
(गै)गा	→	गानम्	गानीयम्	धृ	→	धरणम्	धरणीयम्
ज्ञा	→	ज्ञानम्	ज्ञानीयम्	वृ	→	वरणम्	वरणीयम्
धा	→	धानम्	धानीयम्	कृ	→	करणम्	करणीयम्
जन्	→	जननम्	जननीयम्	हृ	→	हरणम्	हरणीयम्
मन्	→	मननम्	मननीयम्	सृ	→	सरणम्	सरणीयम्

12. क्त प्रत्यय और 13. क्तवतु प्रत्यय

- क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल के अर्थ में होते हैं। **(निष्ठा)**
- लेकिन क्त प्रत्यय भाव एवं कर्म में होता है, जबकि क्तवतु प्रत्यय 'कर्ता' में होता है।
- अर्थात् क्त प्रत्यय का प्रयोग भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में तथा क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों को निष्ठा भी कहा जाता है। **(क्तक्तवतू निष्ठा)**
- क्त में 'क्' तथा क्तवतु में 'क्' और 'उ' की इत्संज्ञा व लोप हो जाने से, क्रमशः 'त' एवं 'तवत्' ही शेष रहता है।
- दोनों में 'क्' की इत्संज्ञा होने के कारण, 'कित्' को मानकर होने वाले सभी कार्य हो जायेंगे।

- **कित् को मानकर होने वाले कार्य–**
  (1) यहाँ प्राप्त गुण का 'क्ङिति च' सूत्र में निषेध हो जायेगा।
  (2) **सम्प्रसारण**–यण् (य् व् र् ल्) के स्थान पर इक् (क्रमशः इ, उ, ऋ, ऌ) का हो जाना, सम्प्रसारण कहलाता है। यह यण् आदेश का विपरीत कार्य है। **(इग्यणः सम्प्रसारणम्)**
- कित् प्रत्ययों के परे रहते अधोलिखित धातुओं से सम्प्रसारण हो जाता है। सम्प्रसारण के बाद उसके आगे विद्यमान स्वर का "सम्प्रसारणाच्च" सूत्र से पूर्वरूप भी हो जाता है। कोष्ठक में सम्प्रसारण के बाद का रूप लिखा हुआ है–

वच् (उच्),	स्वप् (सुप्),	यज् (इज्),	वप् (उप्),
वह् (उह्),	वस् (उस्),	वे (उ),	ह्वे (हु)-हू,
वद् (उद्),	श्वि (शु)-शू,	ग्रह (गृह्),	ज्या (जि)-जी,
व्यध् (विध्),	वस् (उस्),	प्रच्छ (पृच्छ्)	

- **धातु में परिवर्तन–**

3. **द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति**–'त्' से प्रारंभ होने वाला (तादि) कित् प्रत्यय परे रहने पर, दो (दा), सो (सा), मा और स्था धातु के 'आ' का ह्रस्व 'इ' हो जाता है।
4. **दधातेर्हिः**–'धा' धातु को 'हि' आदेश होता है, तादि कित् प्रत्यय यदि आगे हो तो।
5. **दो दद्घोः** – घुसंज्ञक 'दा' धातु को 'दद्' आदेश हो जाता है।
6. गा, पा, हा, धातुओं के 'आ' को 'ई' आदेश हो जाता है।
7. जन्, सन्, खन् धातुओं के 'न्' के स्थान पर आ हो जाता है।
8. यम्, नम्, रम्, गम्, हन्, मन्, वन्, तन् आदि धातुओं के अनुनासिक वर्ण (म् या न्) का लोप हो जाता है।

धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
कृ	कृतः	कृतवान्
मृ	मृतः	मृतवान्
ज्ञा	ज्ञातः	ज्ञातवान्
भू, अस्	भूतः	भूतवान्
क्री	क्रीतः	क्रीतवान्
जि	जितः	जितवान्
स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
त्यज्	त्यक्तः	त्यक्तवान्
पठ्	पठितः	पठितवान्
लिख्	लिखितः	लिखितवान्
हस्	हसितः	हसितवान्
मुद्	मुदितः	मुदितवान्
शिक्ष	शिक्षितः	शिक्षितवान्
दह्	दग्धः	दग्धवान्

- यहाँ निष्ठा के 'त' को प्रसङ्गानुसार न, व, म, क आदि हो जाते हैं।
- क्त और क्तवतु प्रत्यय होने पर, कुछ सेट् धातुएँ (श्रि, कृ, मृ, भू आदि–**श्र्युकः किति**) भी, अनिट् हो जाती है।
- क्त और क्तवतु, वलादि आर्धधातुक हैं, अतः यथाप्राप्त इट् कार्य (कुछ अपवादों सहित) हो जायेगा।
- कुछ जगह क्त और क्तवतु को कित् नहीं माना जाता, अतः वहाँ यथाप्राप्त गुणकार्य हो जायेगा।
- क्त एवं क्तवतु प्रत्यय में बने शब्द तीनों लिङ्गों में चलते है। जैसे- कृतः, कृता, कृतम् तथा कृतवान्, कृतवती, कृतवत्। इसी तरह अन्य धातुओं के रूप भी समझने योग्य हैं।

निष्ठा को मानकर होने वाले कार्य–

1. धातु के अन्त में र् या द् होने पर त् के स्थान पर न् आदेश तथा अन्तिम द् के स्थान पर न् आदेश होगा। **(रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः)**
2. संयोगादि आकारान्त धातु, जिसमें यण् वर्ण भी हो, के आगे निष्ठा के त् के स्थान पर न् आदेश हो जाता है। **(संयोगादेरातोर्धातोर्यण्वतः)**
3. ल्वादिगण और ओदित् धातुओं के आगे निष्ठा के त् के स्थान पर न् आदेश होगा। **(ल्वादिभ्यश्च, ओदितश्च)**
4. शुष्, क्षा और पच् धातु के निष्ठा के त् के स्थान पर क्रमशः क्, म् और व् आदेश होता है। **(शुषः कः, क्षायो मः, पचो वः)**

धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
अद्	जग्धः	जग्धवान्
श्रु	श्रुतः	श्रुतवान्
दृश्	दृष्टः	दृष्टवान्
तप्	तप्तः	तप्तवान्
वच्	उक्तः	उक्तवान्
स्वप्	सुप्तः	सुप्तवान्
यज्	इष्टः	इष्टवान्
वप्	उप्तः	उप्तवान्
वह्	ऊढः	ऊढवान्
वस्	उषितः	उषितवान्
वद्	उदितः	उदितवान्
ग्रह	गृहीतः	गृहीतवान्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्

Scanned by CamScanner

धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
भ्रज्	भृष्टः	भृष्टवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्
भिद्	भिन्नः	भिन्नवान्
प्रसद्	प्रसन्नः	प्रसन्नवान्
खिद्	खिन्नः	खिन्नवान्
तृ	तीर्णः	तीर्णवान्
कृ	कीर्णः	कीर्णवान्
गृ	गीर्णः	गीर्णवान्
पृ	पूर्तः	पूर्तवान्
शृ	शीर्णः	शीर्णवान्
जृ	जीर्णः	जीर्णवान्
द्रा	द्राणः	द्राणवान्
ग्लै(ग्ला)	ग्लानः	ग्लानवान्
लू	लूनः	लूनवान्
भुज्	भुग्नः	भुग्नवान्
नुद्	नुन्नः, नुत्तः	नुन्नवान्, नुत्तवान्
विद्	विन्नः, वित्तः	विन्नवान्,वित्तवान्
घ्रा	घ्राणः, घ्रातः	घ्राणवान्, घ्रातवान्
त्रा	त्राणः, त्रातः	त्राणवान्, त्रातवान्
शुष्	शुष्कः	शुष्कवांन्
पच्	पक्वः	पक्ववान्
क्षा	क्षामः	क्षामवान्
पू(ङ्)	पवितः, पूतः	पवितवान्, पूतवान्
शी	शयितः	शयितवान्
स्विद्	स्वेदितः	स्वेदितवान्

धातु	क्त प्रत्यय	क्तवतु प्रत्यय
मिद्	मेदितः	मेदितवान्
धृष्	धर्षितः	धर्षितवान्
मुद्	मोदितः, मुदितः	मोदितवान्, मुदितवान्
दा	दितः	दितवान्
सा	सितः	सितवान्
मा	मितः	मितवान्
स्था	स्थितः	स्थितवान्
धा	हितः	हितवान्
दा	दत्तः	दत्तवान्
गा	गीतः	गीतवान्
पा	पीतः	पीतवान्
(ओ)हा(क्)	हीनः	हीनवान्
जन्	जातः	जातवान्
खन्	खातः	खातवान्
यम्	यतः	यतवान्
नम्	नतः	नतवान्
रम्	रतः	रतवान्
गम्	गतः	गतवान्
हन्	हतः	हतवान्
तन्	ततः	ततवान्
उद्(श्वि)	उच्छूनः	उच्छूनवान्
ज्या	जीनः	जीनवान्
रुज्	रुग्णः	रुग्णवान्
ह्री	ह्रीणः, ह्रीतः	ह्रीणवान्, ह्रीतवान्
मुह्	मूढः, मुग्धः	मूढवान्, मुग्धवान्

14. क्त्वा प्रत्यय

समानकर्तृकयोः पूर्वकाले

- जब एक ही कर्ता दो क्रियाओं को निरन्तरता से करता है, तब पहले वाली क्रिया की धातु से क्त्वा प्रत्यय हो जाता है। क्त्वा में 'क्' की इत्संज्ञा हो जाती है। अतः यहाँ त्वा ही शेष रहता है। यह वलादि आर्धधातुक होने के कारण सेट् धातुओं से, यथाप्राप्त 'इट्' का आगम भी हो जाता है।
- क्त्वा में 'क्' की इत्संज्ञा होने के कारण यह कित् प्रत्यय हो गया। फलस्वरूप 'क्ङिति च' से गुणकार्य का निषेध हो जायेगा।
- **क्त्वा** प्रत्यय से बनने वाले सारे रूप अव्यय हो जाते हैं।

15. ल्यप्-प्रत्यय

"समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्"

- समास होने पर (नञ् समास को छोड़कर) क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' प्रत्यय हो जाता है। इसका अर्थ भी वही रहेगा जो क्त्वा प्रत्यय का था। क्त्वा की तरह ल्यप् को भी कित् माना जायेगा।
- सामान्यतः धातु से पूर्व किसी उपसर्ग के रहने पर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय हो जाता है।
- यहाँ ल्यप् प्रत्यय में 'ल्' एवं 'प्' की इत्संज्ञा हो जाती है। 'य' मात्र ही शेष रहने के कारण यहाँ 'इट्' के आगम का प्रसङ्ग ही नहीं रहता (वलादि नहीं होने के कारण)। पित् ('प्' इत्संज्ञक) होने के कारण 'ल्यप्' से पूर्व में स्थित ह्रस्व स्वर अन्त वाली धातुओं को तुक् का आगम भी हो जायेगा। (**ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्**)
- क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय हो जाते हैं। अतः इनका सभी लिङ्गों, सभी विभक्तियों एवं सभी वचनों में एक ही रूप चलेगा। (**क्त्वातोसुन्कसुनः**)

धातु	क्त्वा	ल्यप्	उपसर्ग
पठ्	पठित्वा	संपठ्य	(सम्)
हस्	हसित्वा	विहस्य	(वि)
रक्ष्	रक्षित्वा	संरक्ष्य	(सम्)
मुद्	मुदित्वा	समुद्य	(सम्)
विद्	विदित्वा	संविद्य	(सम्)
यज्	इष्ट्वा	समिज्य	(सम्)
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य	(सम्)
स्वप्	सुप्त्वा	संसुप्य	(सम्)
वप्	उप्त्वा	समुप्य	(सम्)
वह्	ऊढ्वा	प्रोह्य	(प्र)
व्यध्	विद्ध्वा	आविध्य	(आ)
वद्	उदित्वा	अनूद्य	(अनु)
वस्	उषित्वा	उपोष्य	(उप)
ग्रह्	गृहीत्वा	संगृह्य	(सम्)
स्था	स्थित्वा	प्रस्थाय	(प्र)
धा	हित्वा	विधाय	(वि)
दा	दत्त्वा	आदाय	(आ)
(गै)गा	गीत्वा	प्रगाय	(प्र)
पा	पीत्वा	निपाय	(नि)
लिह्	लीढ्वा	आलिह्य	(आ)
सह्	सोढ्वा	संसह्य	(सम्)
अद्	जग्ध्वा	प्रजग्ध्य	(प्र)
रुध्	रुद्ध्वा	विरुध्य	(वि)
क्रुध्	क्रुद्ध्वा	संक्रुध्य	(सम्)

धातु	क्त्वा	ल्यप्	उपसर्ग
पू	पवित्वा, पूत्वा	विपूय	(वि)
लिख्	लेखित्वा,लिखित्वा	विलिख्य	(वि)
रुच्	रोचित्वा, रुचित्वा	विरुच्य	(वि)
भ्रम्	भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा	संभ्रम्य	(सम्)
क्रम्	क्रमित्वा, क्रान्त्वा	संक्रम्य	(सम्)
खन्	खनित्वा, खात्वा	उत्खन्य, उत्खाय	(उत्)
नम्	नत्वा	प्रणम्य, प्रणत्य	(प्र)
गम्	गत्वा	आगम्य, आगत्य	(आ)
यम्	यत्वा	संयम्य, संयत्य	(सम्)
रम्	रत्वा	विरम्य, विरत्य	(वि)
हन्	हत्वा	निहत्य	(नि)
तन्	तनित्वा	वितत्य, वितन्य	(वि)
क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य	(प्र)
गण्	गणयित्वा	विगण्य	(वि)
गृ	गीर्त्वा	उद्गीर्य	(उत्)
चुर्	चोरयित्वा	संचोर्य	(सम्)
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय	(वि)
जन्	जनित्वा	संजाय	(सम्)
तृ	तीर्त्वा	उत्तीर्य	(उत्)
नी	नीत्वा	आनीय	(आ)
रुह्	रूढ्वा	आरुह्य	(आ)
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य	(उप)
सह्	सोढ्वा	संसह्य	(सम्)
सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य	(वि)
सो	सित्वा	अवसाय	(अव)
ह्वे	हूत्वा	आहूय	(आ)
लिह्	लीढ्वा	आलिह्य	(आ)
ली	लीत्वा	निलीय	(नि)

Scanned by CamScanner

तद्धित प्रत्यय

- तस्य भावः, तद् अस्य अस्ति आदि अर्थों में शब्दों से होने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय होते है।
- यदि सन्धिकार्य प्राप्त हो, तो सन्धिकार्य होने के बाद ही तद्धित प्रत्यय होंगे।
- तद्धित प्रत्यय विकल्प से होते है। अतः इनके अभाव में वाक्य भी रह सकता है। यदि समास प्राप्त हो रहा हो, तो समास कार्य भी हो सकता है।

1. मतुप्-प्रत्यय

- तद् अस्य अस्ति (वह इसका है) तथा तद् अस्मिन् अस्ति (वह इसमें हैं) अर्थों में, मतुप् प्रत्यय होता है। (**''तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्''**) 'मतुप्' में मत् शेष रहता है। विभक्ति आदि कार्य करने के बाद प्रथमा विभक्ति के एकवचन में, पुँल्लिङ्ग में 'मान्'/'वान्', स्त्रीलिङ्ग में मती/वती तथा नपुंसकलिङ्ग में मत/वत् दिखाई देता है।
- **कब 'मत्' को 'वत्' हो जाता है ? (मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः)**

1. मकारान्त व अकारान्त शब्दों से, मतुप् प्रत्यय करने पर 'म्' को 'व्' हो जाता है।
2. मकारोपध (जिसकी उपधा में 'म्' हो) तथा अकारोपध (जिसकी उपधा में अकार हो) शब्दों से, मतुप् प्रत्यय करने पर 'म्' को 'व्' हो जाता है। अन्तिम वर्ण से पहले वाले वर्ण को उपधा कहा जाता है।
3. शब्द के अन्त में झय् (वर्गों के १,२,३,४) होने पर भी मतुप् के 'म्' को 'व्' हो जाता है। (झयः)

- लेकिन उक्त तीनों नियम यवादिगण में पठित शब्दों से नहीं लगते।

शब्द + मतुप्	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुं.
कुष्ठ + मतुप्	- कुष्ठवान्	कुष्ठवती	कुष्ठवत्
ज्ञान + मतुप्	- ज्ञानवान्	ज्ञानवती	ज्ञानवत्
धन + मतुप्	- धनवान्	धनवती	धनवत्
रस + मतुप्	- रसवान्	रसवती	रसवत्
रूप + मतुप्	- रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
गन्ध + मतुप्	- गन्धवान्	गन्धवती	गन्धवत्
किम् + मतुप्	- किंवान्	किंवती	किंवत्
शम् + मतुप्	- शंवान्	शंवती	शंवत्
वृक्ष + मतुप्	- वृक्षवान्	वृक्षवती	वृक्षवत्
माला + मतुप्	- मालावान्	मालावती	मालावत्
विद्या + मतुप्	- विद्यावान्	विद्यावती	विद्यावत्
माया + मतुप्	- मायावान्	मायावती	मायावत्
लज्जा + मतुप्	- लज्जावान्	लज्जावती	लज्जावत्
शमी + मतुप्	- शमीवान्	शमीवती	शमीवत्
लक्ष्मी + मतुप्	- लक्ष्मीवान्	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवद्
पयस् + मतुप्	- पयस्वान्	पयस्वती	पयस्वत्
वासस् + मतुप्	- वासस्वान्	वासस्वती	वासस्वत्
अर्शस् + मतुप्	- अर्शस्वान्	अर्शस्वती	अर्शस्वत्
तमस् + मतुप्	- तमस्वान्	तमस्वती	तमस्वत्

शब्द + मतुप्	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुं.
तपस् + मतुप्	- तपस्वान्	तपस्वती	तपस्वत्
यशस् + मतुप्	- यशस्वान्	यशस्वती	यशस्वत्
भास् + मतुप्	- भास्वान्	भास्वती	भास्वत्
विद्युत् + मतुप्	- विद्युत्वान्	विद्युत्वती	विद्युत्वत्
मरुत् + मतुप्	- मरुत्वान्	मरुत्वती	मरुत्वत्
विद्वस् + मतुप्	- विदुष्मान्	विदुष्मती	विदुष्मत्
गो + मतुप्	- गोमान्	गोमती	गोमत्
धी + मतुप्	- धीमान्	धीमती	धीमत्
श्री + मतुप्	- श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्
बुद्धि + मतुप्	- बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
शक्ति + मतुप्	- शक्तिमान्	शक्तिमती	शक्तिमत्
भक्ति + मतुप्	- भक्तिमान्	भक्तिमती	भक्तिमत्

यवादिगणीय शब्द

शब्द + मतुप्	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुं.
यव + मतुप्	- यवमान्	यवमती	यवमत्
भूमि + मतुप्	- भूमिमान्	भूमिमती	भूमिमत्
कृमि + मतुप्	- कृमिमान्	कृमिमती	कृमिमत्
ऊर्मि + मतुप्	- ऊर्मिमान्	ऊर्मिमती	ऊर्मिमत्
गरुत् + मतुप्	- गरुत्मान्	गरुत्मती	गरुत्मत्
ककुद् + मतुप्	- ककुद्मान्	ककुद्मती	ककुद्मत्

2. त्वत् प्रत्यय और 3. तल् प्रत्यय

- 'तस्य भावः' (उसका भाव) अर्थ में, शब्दों से तल् प्रत्यय हो जाता है। (**तस्य भावस्त्वतलौ**) 'तल्' में ल् की इत्संज्ञा हो जाती है। 'तल्' प्रत्यय से बना शब्द नित्यरूप से स्त्रीलिङ्ग में होता है। (तलन्तं स्त्रियाम्) अतः यहाँ स्त्रीत्व विवक्षा में टाप् प्रत्यय भी कर दिया जाता है। इस प्रकार 'तल्' प्रत्यय में 'ता' दिखाई देता है। इसी अर्थ में त्वत् (त्व) प्रत्यय होता है। त्वत् प्रत्ययान्त शब्द नित्यरूप में नपुंसकलिङ्ग होता है

अर्थ	त्वत् प्रत्यय	तल् प्रत्यय
मनुष्यस्य भावः	- मनुष्यता	मनुष्यत्वम्
ब्राह्मणस्य भावः	- ब्राह्मणता	ब्राह्मणत्वम्
स्त्रियाः भावः	- स्त्रीता	स्त्रीत्वम्
पुंसः भावः	- पुंस्ता	पुंस्त्वम्
क्लीबस्य भावः	- क्लीबता	क्लीबत्वम्
मृदोः भावः	- मृदुता	मृदुत्वम्
महतः भावः	- महत्ता	महत्त्वम्
पटोः भावः	- पटुता	पटुत्वम्
दृढस्य भावः	- दृढता	दृढत्वम्
विरोधिनः भावः	- विरोधिता	विरोधित्वम्
शीतस्य भावः	- शीतता	शीतत्वम्
नृपस्य भावः	- नृपता	नृपत्वम्
कटोः भावः	- कटुता	कटुत्वम्

अर्थ	त्वत् प्रत्यय	तल् प्रत्यय
पात्रस्य भावः	- पात्रता	पात्रत्वम्
दरिद्रस्य भावः	- दरिद्रता	दरिद्रत्वम्
प्रभोः भावः	- प्रभुता	प्रभुत्वम्
सत्यवादिनः भावः	- सत्यवादिता	सत्यवादित्वम्
समस्य भावः	- समता	समत्वम्

- **ध्यातव्य**–गज, सहाय, ग्राम, जन और बन्धु शब्द से **''तस्य समूहः''** (उसका समूह) अर्थ में तल् प्रत्यय होता है।

गजानां समूहः	- गजता
सहायानां समूहः	- सहायता
ग्रामाणां समूहः	- ग्रामता
जनानां समूहः	- जनता
बन्धूनां समूहः	- बन्धुता

4. तरप् प्रत्यय और 5. तमप् प्रत्यय

- **तरप् प्रत्यय**–दो व्यक्तियों (वस्तुओं) के मध्य, किसी एक को श्रेष्ठ बताने पर तरप् प्रत्यय होता है। यहाँ एक को दूसरे से अतिशयता से भिन्न किया जाता है। तरप् में 'तर' शेष रहता है। (**द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ**) इसके रूप तीनों लिङ्गों में चलते है। इसी अर्थ में ईयसुन् प्रत्यय भी होता है।
- **तमप् प्रत्यय**–जहाँ अनेकों में से किसी एक की श्रेष्ठता दिखाई जा रही हो, वहाँ तमप् प्रत्यय होता है। तमप् में 'तम' शेष रहता है। इसके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। (**अतिशायने तमबिष्ठनौ**) इसी अर्थ में इष्ठन् प्रत्यय भी होता है।
- तरप् और तमप् प्रत्ययों को 'घ' भी कहा जाता है। (**तरप्तमपौ घः**)
- तरप् और तमप् प्रत्यय, उपर्युक्त अर्थों में ही, तिङन्त पदों से भी हो जाते है। (**'तिङश्च'**) यहाँ इन प्रत्ययों के साथ 'आम्' प्रत्यय भी लगा दिया जाता है। जैसे–पचतितराम्, पचतितमाम्।

शब्द	तरप्	तमप्	शब्द	तरप्	तमप्
पटु	पटुतरः	पटुतमः	आढ्य	आढ्यतरः	आढ्यतमः
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतरः	श्रेष्ठतमः	महत्	महत्तरः	महत्तमः
गुरु	गुरुतरः	गुरुतमः	स्थूल	स्थूलतरः	स्थूलतमः
दीर्घ	दीर्घतरः	दीर्घतमः	लघु	लघुतरः	लघुतमः
बृहत्	बृहत्तरः	बृहत्तमः	कृश	कृशतरः	कृशतमः
सुन्दर	सुन्दरतरः	सुन्दरतमः	पठति	पठतितराम्	पठतितमाम्
प्रशस्य	प्रशस्यतरः	प्रशस्यतमः	बहु	बहुतरः	बहुतमः
ह्रस्व	ह्रस्वतरः	ह्रस्वतमः	दूर	दूरतरः	दूरतमः
समीप	समीपतरः	समीपतमः	क्षुद्र	क्षुद्रतरः	क्षुद्रतमः
अल्प	अल्पतरः	अल्पतमः	प्रिय	प्रियतरः	प्रियतमः

शब्द	तरप्	तमप्	शब्द	तरप्	तमप्
स्थिर	स्थिरतरः	स्थिरतमः	मृदु	मृदुतरः	मृदुतमः
भृश	भृशतरः	भृशतमः	दृढ	दृढतरः	दृढतमः
बहुल	बहुलतरः	बहुलतमः	वृद्ध	वृद्धतरः	वृद्धतमः
साधु	साधुतरः	साधुतमः	अणु	अणुतरः	अणुतमः
उरु	उरुतरः	उरुतमः	बलवत्	बलवत्तरः	बलवत्तमः
लिखति		लिखतितराम्		लिखतितमाम्	
नृत्यति		नृत्यतितराम्		नृत्यतितमाम्	
पचति		पचतितराम्		पचतितमाम्	
धावति		धावतितराम्		धावतितमाम्	

Scanned by CamScanner

अभ्यासार्थ- प्रश्न

(प्रत्यय प्रकरण)

1. क्त-प्रत्यय किस अर्थ में होता है–
(अ) भाव में (ब) कर्म में
(स) कर्ता में (द) भाव और कर्म में ( )

2. लिह् धातु से तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) लीढुम् (ब) लेढुम्
(स) लिहितुम् (द) लेहितुम् ( )

3. ग्रह्-धातु से तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) गृहीतुम् (ब) गृहितुम्
(स) ग्रहीतुम् (द) ग्रहितुम् ( )

4. भाव और कर्म में, चि धातु से प्रत्यय होगा–
(अ) यत् (ब) ण्यत्
(स) क्यप् (द) तीनों ( )

5. 'शिष्यः' - में प्रत्यय है–
(अ) यत् (ब) ण्यत्
(स) क्यप् (द) क्यष् ( )

6. सत्-संज्ञक प्रत्यय हैं–
(अ) शतृ (ब) शानच्
(स) कानच् (द) शतृ-शानच् ( )

7. निष्ठा-संज्ञक प्रत्यय हैं–
(अ) क्त (ब) क्तवतु
(स) क्त-क्तवतु (द) क्तिन् ( )

8. अनुद्धतः में प्रत्यय है–
(अ) क्त (ब) क्तवतु
(स) क्त्वा (द) क्तिन् ( )

9. कृ धातु से शतृ प्रत्यय (स्त्रीलिङ्ग) में रूप होगा–
(अ) कुर्वन्ती (ब) कुर्वती
(स) करोती (द) करवन्ती ( )

10. अधोलिखित में से किस धातु से विकल्प से क्यप् प्रत्यय होता है ?
(अ) शास् (ब)जुष्
(स) स्तु (द) मृज् ( )

11. दा धातु से शतृ प्रत्यय प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) ददन् (ब) दतन्
(स) ददत् (द) ददात् ( )

12. व्याकरणम् में प्रत्यय है–
(अ) अनीयर् (ब) क्त
(स) शतृ (द) ल्युट् ( )

13. एध् धातु से शानच् प्रत्यय में रूप होगा–
(अ) एधयानः (ब) एधानः
(स) एधमानः (द) एधिमानः ( )

14. जन् धातु से ण्वुल् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) जानकः (ब) जनकः
(स) घनकः (द) जनन् ( )

15. वच् धातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) वाच्यम् (ब) ओच्यम्
(स) वाक्यम् (द) वाच्यम्, वाक्यम् ( )

16. ग्रह् धातु से क्त प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) ग्रहीतः (ब) गृहीतः
(स) गृहितः (द) ग्रंहीतः ( )

17. समास होने पर क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर आदेश होता है–
(अ) क्यप् प्रत्यय (ब) तुमुन् प्रत्यय
(स) ल्यप् प्रत्यय (द) ल्युट् प्रत्यय ( )

18. 'कृ' धातु से ण्वुलप्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) कारकः (ब) कर्ता
(स) कृतिः (द) कर्तव्यम् ( )

19. विकृतम् में प्रत्यय है–
(अ) क्त
(ब) क्त्वा
(स) ल्युट्
(द) ल्यप् ( )

20. वह्-धातु से तव्यत् प्रत्यय करने पर रूप बनेगा–
(अ) वहितव्यम् (ब) वास्तव्यः
(स) वोढव्यम् (द) वाढव्यम् ( )

21. किस प्रत्यय से बना पद अव्यय नहीं होता–
(अ) क्त (ब) तुमुन्
(स) क्त्वा (द) ल्यप् ( )

22. अधोलिखित शतृप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग रूपों में अशुद्ध है–
(अ) चिन्वती (ब) नृत्यन्ती
(स) क्रीणती (द) शक्नुवन्ती ( )

23. वद्धातु से क्तवतु प्रत्यय में रूप होगा–
(अ) उदितवान् (ब) उक्तवान्
(स) ऊढवान् (द) वदितवान् ( )

24. ल्युट् प्रत्यय से बना पद किस लिङ्ग में होता है–
(अ) पुल्लिङ्ग (ब) स्त्रीलिङ्ग
(स) नपुंसकलिङ्ग (द) अव्यय ( )

25. लिख् धातु से क्त्वा प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) लिखित्वा (ब) लेखित्वा
(स) लिखत्वा (द) अ, ब दोनों ( )

26. अधोलिखित शानच् प्रत्ययान्त रूपों में अशुद्ध रूप है–
(अ) यजमानम् (ब) चिन्वानम्
(स) ज्ञायमानम् (द) अधीयानम् ( )

27. हन् धातु से यत् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) हन्यम् (ब) घात्यम्
(स) वध्यम् (द) धान्यम् ( )

28. अधोलिखित में से निष्ठान्त रूप नहीं है–
(अ) शुष्कः (ब) पूर्तः
(स) पूतः (द) क्षाणः ( )

29. घञ् प्रत्यय किस अर्थ में होता है–
(अ) कर्ता में (ब) भाव में
(स) कर्म में (द) भाव और कर्म में ( )

30. अधोलिखित शानच्-प्रत्ययान्त रूपों में अशुद्ध है–
(अ) कुर्वाणा (ब)क्रीणाना
(स) भोजमाना (द) जानाना ( )

31. आ+गम् धातु से ल्यप् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) आगम्य (ब) आगत्य
(स) आगम्य, आगत्य (द) आगच्छ्य ( )

32. कर्तुम् में प्रत्यय है–
(अ) तृच् (ब) तव्यत्
(स) तुमुन् (द) ल्यप् ( )

33. प्रच्छन्नम् में प्रत्यय है–
(अ) क्त्वा (ब) क्तिन्
(स) क्त (द) ल्युट् ( )

34. धृत्वा में प्रत्यय है–
(अ) क्त्वा
(ब) क्त
(स) क्तिन्
(द) ल्यप् ( )

35. सहधातु से तव्यत् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) सहितव्यम् (ब) सोढव्यम्
(स) साढव्यम् (द) इनमें से कोई नहीं ( )

36. ज्ञा धातु से शतृ प्रत्यय में स्त्रीलिङ्ग में रूप होगा–
(अ) ज्ञातवती (ब) ज्ञानती
(स) जानती (द) जानती ( )

37. अधोलिखित शतृ प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग रूपों में अशुद्ध है–
(अ) कुर्वन् (ब) स्नान्
(स) ददत् (द) रुदत् ( )

38. भुज् धातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर अभक्ष्य अर्थ में रूप होगा–
(अ) भोज्यम् (ब) भुज्यम्
(स) भोग्यम् (द) भुग्यम् ( )

39. निर्मितवान् में प्रत्यय है–
(अ) क्त
(ब) मतुप्
(स) शानच्
(द) क्तवतु ( )

40. अधोलिखित प्रत्ययों में से कृत्प्रत्यय नहीं है–
(अ) शानच् (ब) तृच्
(स) क्त्वा (द) तमप् ( )

41. भिन्न प्रत्यय है–
(अ) शतृ
(ब) शानच्
(स) ल्युट्
(द) क्त ( )

42. वच् धातु से क्त प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) उचितम् (ब) उक्तम्
(स) वचितम् (द) वक्तम् ( )

43. अधोलिखित में से सत्-संज्ञक प्रत्ययों का अशुद्ध समूह है–
(अ) बिभ्रत्, बिभ्राणः (ब) ददत्, ददानः
(स) दधन्, दधानः (द) पुनन्, पुनानः ( )

Scanned by CamScanner

44. घञ् प्रत्ययान्त शब्दों से बने रूपों में किस समूह में अशुद्ध पद है–
(अ) पाठः, वादः, कारः, मोदः
(ब) दाहः, रामः, शामः, कोपः
(स) सर्गः, योगः, गमः, कामः
(द) संयमः, लावः, चालः, छेदः ( )

45. अस्-धातु से शतृ प्रत्यय (पुँल्लिङ्ग) में रूप होगा–
(अ) असन् (ब) असत्
(स) सन् (द) सत् ( )

46. दा धातु से सत्-संज्ञक प्रत्यय होंगे/होगा
(अ) शतृ (ब) शानच्
(स) शतृ शानचौ (द) कानच् ( )

47. कित्-प्रत्ययों के परे रहते इस धातु को सम्प्रसारण नहीं होता–
(अ) वच् (ब) वद्
(स) वस् (द) इण् ( )

48. अधोलिखित में किसमें ण्वुल प्रत्यय नहीं है–
(अ) कारकः (ब) उत्पादकः
(स) लेखकः (द) शुष्कः ( )

49. क्त प्रत्ययान्त रूपों में से अशुद्ध है–
(अ) उक्तवती (ब) सुप्तवती
(स) गृहीतवती (द) क्षाणवती ( )

50. भ्रमन्तः में प्रत्यय है–
(अ) तव्यत् (ब) शानच्
(स) क्त (द) शतृ ( )

51. 'शयाना' में प्रत्यय है–
(अ) आनुक् (ब) ल्युट्
(स) शानच् (द) ण्वुल् ( )

52. तृच् प्रत्ययान्त रूपों में से अशुद्ध रूप किस समूह में है–
(अ) भर्ता, कर्ता, भेत्ता, छेत्ता
(ब) जेता, चेता, नेता, होता
(स) वोढा, सोढा, गृहीता, रोढा
(द) ज्ञाता, गन्ता, पठिता, लेखिता ( )

53. अधोलिखित क्त प्रत्ययान्त रूपों में अशुद्ध है–
(अ) तीर्णः (ब) शीर्णः
(स) कीर्णः (द) पीर्णः ( )

54. ण्वुल् प्रत्यय से निष्पन्न अशुद्ध पद है–
(अ) छेदकः (ब) चायकः
(स) सारकः (द) यामकः ( )

55. स्नानम् में प्रत्यय है–
(अ) ल्युट् (ब) शानच्
(स) क्त (द) आनच् ( )

56. शुष्-धातु से क्त प्रत्यय में रूप होगा–
(अ) शोषितम् (ब) शुष्टम्
(स) शुष्कम् (द) शुष्वम् ( )

57. मुद् धातु से क्तवतु प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) मुदितवान् (ब) मोदितवान्
(स) मुन्वान् (द) अ, ब दोनों ( )

58. 'शयानम्' में प्रत्यय है–
(अ) शतृ (ब) शानच्
(स) ल्युट् (द) ण्वुल् ( )

59. हन् धातु से शतृ प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग में रूप होगा–
(अ) हनती (ब) घ्नन्ती
(स) घ्नति (द) घ्नती ( )

60. पच्-धातु से निष्ठा में रूप होगा–
(अ) पचितम् (ब) पक्तम्
(स) पक्वम् (द) पकितम् ( )

61. नम् धातु से ल्यप् प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) प्रणम्य (ब) प्रणत्य
(स) विनम्य (द) तीनों रूप ( )

62. उद् पूर्वक श्वि धातु से क्त प्रत्यय करने पर रूप होगा–
(अ) उच्छूतः (ब) उच्छूनः
(स) उच्छूणः (द) उच्छ्वितः ( )

63. दृष्ट्वा में प्रत्यय है–
(अ) वतुप् (ब) क्त्वा
(स) ल्यप् (द) क्त ( )

64. महत्त्वम् में प्रत्यय है–
(अ) मतुप् (ब) क्त
(स) तल् (द) त्वत् ( )

65. किस समास के होने पर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय आदेश नहीं होता–
(अ) गतितत्पुरुष (ब) बहुव्रीहि
(स) नञ्तत्पुरुष (द) कर्मधारय ( )

66. कर्ता अर्थ में प्रत्यय होता है–
(अ) शप् (ब) शतृ
(स) शानच् (द) तृच् ( )

67. हा धातु से निष्ठा में रूप होगा–
(अ) हातम् (ब) हानम्
(स) हिनम् (द) हीनम् ( )

68. क्रियार्था क्रिया के उपपद रहने पर, होता है–
(अ) तुमुन् प्रत्यय (ब) क्त्वा प्रत्यय
(स) क्यप् प्रत्यय (द) तृच् प्रत्यय ( )

69. क्त प्रत्ययान्त रूपों में से अशुद्ध है–
(अ) स्थितः (ब) गतः
(स) खतः (द) हतः ( )

70. वृद्धिमती में प्रत्यय है–
(अ) तमप्
(ब) तरप्
(स) तल्
(द) मतुप् ( )

71. 'तद् अस्य अस्ति, तद् अस्मिन् अस्ति' - इन अर्थों में प्रत्यय होता है–
(अ) तरम्-तमप् (ब) मतुप्
(स) वतुप् (द) तल् ( )

72. अधोलिखित मतुप् प्रत्ययान्त रूपों में से अशुद्ध है–
(अ) धीमान् (ब) गोमान्
(स) धनवान् (द) विद्युत्मान् ( )

73. तल्- प्रत्ययान्त पद नित्य रूप से किस लिंग में होते है–
(अ) पुल्लिङ्ग (ब) स्त्रीलिङ्ग
(स) नपुंसकलिङ्ग (द) अव्यय ( )

74. 'घ' संज्ञक प्रत्यय है–
(अ) तरप्
(ब) तमप्
(स) मतुप्
(द) तरप्, तमप् दोनों ( )

75. 'श्रीः अस्ति अस्याः' - इस अर्थ में रूप होगा–
(अ) श्रीमान् (ब) श्रीमती
(स) श्रीमत् (द) श्रीवती ( )

76. दो में से एक की श्रेष्ठता बताने वाला प्रत्यय है–
(अ) तरप् (ब) तमप्
(स) मतुप् (द) तल् ( )

77. 'ज्ञानम् अस्ति अस्मिन्' इस अर्थ में रूप होगा–
(अ) ज्ञानवती (ब) ज्ञानमती
(स) ज्ञानवान् (द) ज्ञानमान् ( )

78. बहुतों के बीच अतिशयता दिखाने पर प्रत्यय होता है–
(अ) तरप् (ब) तमप्
(स) तरप् और तमप् (द) मतुप् ( )

79. तरप् और तमप् प्रत्यय होते है–
(अ) शब्दों से (ब) धातुओं से
(स) दोनों से (द) अव्ययों से ( )

80. भाव अर्थ में तल् प्रत्यय हुआ है–
(अ) मृदुता (ब) जनता
(स) सहायता (द) बन्धुता ( )

81. धातुओं से तरप् या तमप् प्रत्यय करने पर कौनसा कृत्प्रत्यय लगा दिया जाता है–
(अ) तराम् (ब) तमाम्
(स) अम् (द) आम् ( )

उत्तर तालिका

(1) द	(2) ब	(3) स	(4) अ	(5) स	(6) द	(7) स	(8) अ	(9) ब	(10) द
(11) स	(12) द	(13) स	(14) ब	(15) द	(16) ब	(17) स	(18) अ	(19) अ	(20) स
(21) अ	(22) द	(23) अ	(24) स	(25) द	(26) स	(27) स	(28) द	(29) ब	(30) स
(31) स	(32) स	(33) स	(34) अ	(35) ब	(36) द	(37) द	(38) स	(39) द	(40) द
(41) द	(42) ब	(43) स	(44) ब	(45) स	(46) स	(47) द	(48) द	(49) द	(50) द
(51) स	(52) स	(53) द	(54) द	(55) अ	(56) स	(57) द	(58) ब	(59) द	(60) स
(61) द	(62) ब	(63) ब	(64) द	(65) स	(66) द	(67) द	(68) अ	(69) स	(70) द
(71) ब	(72) द	(73) ब	(74) द	(75) ब	(76) अ	(77) स	(78) ब	(79) स	(80) अ
(81) द									

Scanned by CamScanner

अध्याय 7

शब्द-रूप

शब्दरूप

(1) राम (अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्/रामाद्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

(2) हरि (इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

(3) पति (इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

(4) सखि (इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

(5) गुरु (गुरु उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

(6) पितृ (ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्यां	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

(7) भूभृत् (तकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	हे भूभृत्!	हे भूभृतौ !	हे भूभृतः!

(8) गच्छत् (शतृ प्रत्ययान्त पुँल्लिङ्ग)

प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

गच्छत् (शतृ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग)

प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः
चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
पञ्चमी	गच्छन्त्याः	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्यः
षष्ठी	गच्छन्त्याः	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीनाम्
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्योः	गच्छन्तीषु
सम्बोधन	हे गच्छन्ति!	हे गच्छन्त्यौ!	हे गच्छन्त्यः!

गच्छत् (शतृ प्रत्ययान्त नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छती	गच्छन्ति
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छत्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

(9) आत्मन् (अन्नन्त पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

(10) रमा (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

(11) मति (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

(12) नदी (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

Scanned by CamScanner

(13) धेनु (उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

(14) वधू (ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

(15) स्त्री (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रीः/स्त्रियः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

(16) फल (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

(17) वारि (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

(18) मधु (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

(19) जगत् (तकारान्त नुपंसकलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

(20) अस्मद् (सर्वनाम शब्द)

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

(21) युष्मद् (सर्वनाम शब्द)

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

(22) सर्व (सर्वनाम पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/सर्वस्माद्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्वा (सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (सर्वनाम नपुंसकलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्/सर्वस्माद्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

(23) तद् (सर्वनाम शब्द पुँल्लिङ्ग)

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (सर्वनाम शब्द स्त्रीलिङ्ग)

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (सर्वनाम शब्द नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

(24) इदम् (सर्वनाम पुँल्लिङ्ग शब्द)

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

Scanned by CamScanner

इदम् (सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् (सर्वनाम नपुंसकलिङ्ग शब्द)

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्/अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

अभ्यासार्थ प्रश्न

(शब्द-रूप)

1. राम शब्द की पञ्चमी द्विवचन एवं सप्तमी द्विवचन का सही युगल है?
(अ) रामयोः, रामाणाम् (ब) रामाभ्याम्, रामयोः
(स) रामाभ्याम्, रामाभ्याम् (द) रामयोः, रामयोः ( )

2. गुरु शब्द का तृतीया एकवचन है–
(अ) गुरुना (ब) गुरुणा
(स) गुरूणा (द) गुरणा ( )

3. पति शब्द का षष्ठी एकवचन है–
(अ) पतेः (ब) पत्याः
(स) पत्युः (द) पत्यस्य ( )

4. सखि शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप होगा–
(अ) सखायाम् (ब) सख्याम्
(स) सख्यौ (द) सखायौ ( )

5. पितुः भयं करोति। पितुः में विभक्ति है–
(अ) षष्ठी (ब) तृतीया
(स) षष्ठी द्विवचन (द) पञ्चमी ( )

6. भूभृत् शब्द का चतुर्थी एकवचन एवं द्वितीया बहुवचन है–
(अ) भूभृते, भूभृतः (ब) भूभृताय भूभृतः
(स) भूभृते, भूभृताः (द) भूभृते, भूभृतान् ( )

7. गच्छतोः बालकयोः रमेशः श्रेष्ठः। गच्छतोः में विभक्ति है–
(अ) पञ्चमी (ब) सप्तमी
(स) षष्ठी (द) ब एवं स दोनों ( )

8. आत्मन् शब्द का सप्तमी बहुवचन है–
(अ) आत्मासु (ब) आत्मसु
(स) आत्मस्सु (द) आत्मषु ( )

9. "रमे गच्छतः" में विभक्ति है–
(अ) द्वितीया द्विवचन (ब) प्रथमा द्विवचन
(स) सम्बोधन (द) सम्बोधन द्विवचन ( )

10. हरि शब्द का सप्तमी एकवचन है–
(अ) हर्यौ (ब) हरौ
(स) हर्याम् (द) हरिणि ( )

11. गच्छति राजनि बाणं क्षिपति। गच्छति में विभक्ति है–
(अ) प्रथमा (ब) तृतीया
(स) चतुर्थी (द) सप्तमी ( )

12. "अध्यापिका बालिकाः पाठयति" में विभक्ति है–
(अ) प्रथमा बहुवचन (ब) द्वितीया बहुवचन
(स) सम्बोधन बहुवचन (द) इनमें से कोई नहीं ( )

13. अस्मद् शब्द का प्रथमा एकवचन, तृतीया द्विवचन तथा सप्तमी एकवचन।
(अ) अस्मद्, आवाभ्याम्, मयि
(ब) अहम्, आवाभ्याम्, मयि
(स) अहम्, आभ्याम्, मयि
(द) अहम् आवाभ्याम्, अस्मिन् ( )

14. युष्मद् शब्द का पञ्चमी एकवचन है–
(अ) युष्मदः (ब) तव
(स) त्वत् (द) इनमें से कोई नहीं ( )

15. सर्व शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठी बहुवचन है–
(अ) सर्वासाम् (ब) सर्वाषाम्
(स) सर्वाणाम् (द) सर्वसाम् ( )

16. तद् शब्द का नपुंसकलिङ्ग चतुर्थी बहुवचन है–
(अ) ताभ्यः (ब) तुभ्यम्
(स) तेभ्यः (द) त्वत् ( )

17. धेनु शब्द का द्वितीया बहुवचन है–
(अ) धेनूः (ब) धेनून्
(स) धेनुः (द) धेनू ( )

18. वध्वै/वध्वे रूप है–
(अ) चतुर्थी द्विवचन (ब) चतुर्थी बहुवचन
(स) तृतीया एकवचन (द) चतुर्थी एकवचन ( )

19. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। नार्यः में प्रातिपदिक एवं विभक्ति है–
(अ) नारी, प्रथमा (ब) नारि, प्रथमा
(स) नारी, द्वितीया (द) अ एवं ब दोनों ( )

20. वारि शब्द का सप्तमी एकवचन है–
(अ) वारिणि (ब) वारीणि
(स) वारिणी (द) वारीणी ( )

21. जगत् शब्द का षष्ठी बहुवचन है–
(अ) जगतानाम् (ब) जगताम्
(स) जगताणाम् (द) सभी सही ( )

22. एताभिः सह। यहाँ एताभिः रूप है–
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) तृतीया (द) इनमें से कोई नहीं ( )

23. इदम् शब्द का पुँल्लिङ्ग तृतीया बहुवचन है–
(अ) एतैः (ब) एभिः
(स) तैः (द) एनैः ( )

24. रामाभ्याम्(परशुराम, राम)सह जनाः गच्छन्ति। रामाभ्याम् में विभक्ति हैं–
(अ) चतुर्थी (ब) पञ्चमी
(स) तृतीया (द) तृतीया, चतुर्थी ( )

25. हरि शब्द का पञ्चमी बहुवचन है–
(अ) हरीभ्यः (ब) हरिभ्यः
(स) हारिभ्यः (द) हरिभ्य ( )

26. पति शब्द का तृतीया एकवचन है–
(अ) पतिना (ब) पत्या
(स) पत्यै (द) पतया ( )

27. सखि शब्द का द्वितीया बहुवचन है–
(अ) सखीण् (ब) सखीनः
(स) सखिन् (द) सखीन् ( )

28. गुरु शब्द की पञ्चमी बहुवचन तथा सप्तमी द्विवचन है–
(अ) गुरुभ्यः, गुर्वोः (ब) गुरुभ्यः, गुरे
(स) गुरुभ्यः गुर्वोः (द) गुरुभ्यः, गुरौ ( )

29. पितृ शब्द का षष्ठी एकवचन तथा चतुर्थी द्विवचन है–
(अ) पितरस्य, पितृभ्याम् (ब) पितस्य, पितृभ्याम्
(स) पितुः पितृभ्याम् (द) पितुः पितृभ्याम् ( )

30. भूभृत् शब्द का सप्तमी एकवचन है–
(अ) भूभृते (ब) भूभृत्यौ
(स) भूभृति (द) भूभृत्याम् ( )

31. आत्मन् शब्द का प्रथमा बहुवचन है–
(अ) आत्मनः (ब) आत्माः
(स) आत्मानाः (द) आत्मानः ( )

32. मति शब्द पञ्चमी एकवचन में उचित दो रूप है–
(अ) मत्याः/मतये (ब) मत्याः/मतेः
(स) मत्याः/मत्याः (द) मत्याः/मत्योः ( )

33. नदी शब्द का तृतीया एकवचन है–
(अ) नदीना (ब) नद्या
(स) नद्याया (द) नदया ( )

34. आत्मन् शब्द का तृतीया द्विवचन है–
(अ) आत्माभ्याम् (ब) आत्मोभ्याम्
(स) आत्मभ्याम् (द) आत्मभ्याम् ( )

35. मति शब्द का सम्बोधन द्विवचन है–
(अ) मती (ब) हे मत्यौ!
(स) हे मती! (द) हे मते ( )

36. धेनु शब्द का तृतीया एकवचन एवं पञ्चमी द्विवचन है–
(अ) धेन्वा, धेनूनाम् (ब) धेन्वा धेनुभ्याम्
(स) धेन्या धेनुभ्याम् (द) धन्वा धेनुभ्याम् ( )

Scanned by CamScanner

37. द्वितीया विभक्ति है–
(अ) फलानि भुङ्क्त्वा
(ब) फलानि सन्ति
(स) मधुराणि फलानि
(द) पक्वानि फलानि ( )

38. स्त्री शब्द का सम्बोधन का उचित रूप है–
(अ) हे स्त्री! (ब) हे स्त्रि!
(स) हे स्त्रियौ! (द) ब एवं स दोनों ( )

39. मधु शब्द की षष्ठी विभक्ति है–
(अ) मधो: मधुनो: मधूनाम्
(ब) मधुन: मधुनो: मधूनाम्
(स) मधुन: मध्वो: मधूनाम्
(द) मधुन: मधुनो: मधूणाम् ( )

40. जगत् शब्द का पञ्चमी द्विवचन तथा तृतीया एकवचन है–
(अ) जगद्भ्याम् जगता
(ब) जगद्भ्याम् जगतेन
(स) पूर्वोक्त दोनों सही
(द) जगत्भ्याम्, जगता ( )

41. जगत् शब्द का प्रथमा द्विवचन एवं सप्तमी एकवचन है, क्रमश:
(अ) जगती जगते (ब) जगति जगती
(स) जगाती जगति (द) जगती जगति ( )

42. फल शब्द है–
(अ) अकारान्त पुँल्लिङ्ग
(ब) अकारान्त नपुँसकलिङ्ग
(स) मकारान्त नपुँसकलिङ्ग
(द) ब एवं स दोनों ( )

43. वारि शब्द का द्वितीया बहुवचन, पञ्चमी एकवचन तथा षष्ठी बहुवचन है–
(अ) वारिणी, वारिण:, वारिणाम्
(ब) वारीणि, वारिणी:, वारिणाम्
(स) वारिण, वारे: वारीणाम्
(द) वारीणि, वारिण:, वारीणाम् ( )

44. "मधुप: मधु पिबति" मधु में विभक्ति है–
(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया
(स) तृतीया (द) चतुर्थी ( )

45. उचित विकल्प है–
(अ) अस्मदे, मत् (ब) अह्यम्, अस्मद:
(स) मह्यम् मत् (द) मह्यम् मत्त: ( )

46. अस्मद् शब्द चतुर्थी बहुवचन है–
(अ) अस्मभ्यम् (ब) अस्म्भ्य:
(स) अस्मभ्य (द) अस्मत् ( )

47. युष्मद् शब्द की प्रथमा विभक्ति है–
(अ) त्वम् युवाम् युयम्
(ब) त्वाम् यूवाम् यूयम्
(स) त्वम् युवाम् यूयम्
(द) त्वम् युवाम यूयम् ( )

48. भारतस्य ते द्वे प्रतिष्ठे स्त:। यहाँ "ते" में है–
(अ) प्रथमा बहुवचन पुल्लिङ्ग
(ब) प्रथमा द्विवचन नुपंसकालिङ्ग
(स) प्रथमा द्विवचन स्त्रीलिङ्ग
(द) पूर्वोक्त सभी ( )

49. सर्व शब्द का पुँल्लिङ्ग प्रथमा बहुवचन, नपुँसकलिङ्ग प्रथमा द्विवचन तथा स्त्रीलिङ्ग प्रथमा द्विवचन है–
(अ) सर्वे सर्वे सर्वे (ब) सर्वा सर्वे सर्वे
(स) सर्वे सर्वौ सर्वे (द) सर्वौ सर्वे सर्वे ( )

उत्तर तालिका

(1) ब	(2) ब	(3) स	(4) स	(5) द	(6) अ	(7) द	(8) ब	(9) ब	(10) ब
(11) द	(12) ब	(13) ब	(14) स	(15) अ	(16) स	(17) अ	(18) द	(19) अ	(20) अ
(21) ब	(22) स	(23) ब	(24) स	(25) ब	(26) ब	(27) द	(28) अ	(29) द	(30) स
(31) द	(32) ब	(33) ब	(34) द	(35) स	(36) ब	(37) अ	(38) द	(39) ब	(40) अ
(41) द	(42) ब	(43) द	(44) ब	(45) स	(46) अ	(47) स	(48) स	(49) अ	

अध्याय 8

धातु रूप

(1) भू (होना)

लट्लकार (वर्तमान)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	भवति	भवत:	भवन्ति
म0 पु0	भवसि	भवथ:	भवथ
उ0 पु0	भवामि	भवाव:	भवाम:

लोट्लकार (आज्ञा अर्थ)

प्र0 पु0	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म0 पु0	भव	भवतम्	भवत
उ0 पु0	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्लकार (भूतकाल, अनद्यतन)

प्र0 पु0	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म0 पु0	अभव:	अभवतम्	अभवत
उ0 पु0	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्लकार (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

प्र0 पु0	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
म0 पु0	भवे:	भवेतम्	भवेत
उ0 पु0	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट्लकार (भविष्यत्)

प्र0 पु0	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
म0 पु0	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उ0 पु0	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

(2) पच् (पकाना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

प्र0 पु0	पचति	पचत:	पचन्ति
म0 पु0	पचसि	पचथ:	पचथ
उ0 पु0	पचामि	पचाव:	पचाम:

लोट्लकार (आज्ञार्थक)

प्र0 पु0	पचतु/पचतात्	पचताम्	पचन्तु
म0 पु0	पच	पचतम्	पचत
उ0 पु0	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्लकार (भूतकाल)

प्र0 पु0	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म0 पु0	अपच:	अपचतम्	अपचत
उ0 पु0	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्लकार (आज्ञा या चाहिए)

प्र0 पु0	पचेत्	पचेताम्	पचेयु:
म0 पु0	पचे:	पचेतम्	पचेत
उ0 पु0	पचेयम्	पचेव	पचेम

लृट्लकार (भविष्यत्काल)

प्र0 पु0	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
म0 पु0	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उ0 पु0	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

(3) नम् (झुकना, प्रणाम करना)

लट्लकार

प्र0 पु0	नमति	नमत:	नमन्ति
म0 पु0	नमसि	नमथ:	नमथ
उ0 पु0	नमामि	नमाव:	नमाम:

लोट्लकार

प्र0 पु0	नमतु/नमतात्	नमताम्	नमन्तु
म0 पु0	नम	नमतम्	नमत
उ0 पु0	नमानि	नमाव	नमाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म0 पु0	अनम:	अनमतम्	अनमत
उ0 पु0	अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	नमेत्	नमेताम्	नमेयु:
म0 पु0	नमे:	नमेतम्	नमेत
उ0 पु0	नमेयम्	नमेव	नमेम

लृट्लकार

प्र0 पु0	नंस्यति	नंस्यत:	नंस्यन्ति
म0 पु0	नंस्यसि	नंस्यथ:	नंस्यथ
उ0 पु0	नंस्यामि	नंस्याव:	नंस्याम:

Scanned by CamScanner

(4) गम् (जाना)

लट्लकार

प्र0 पु0	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म0 पु0	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ0 पु0	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
म0 पु0	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ0 पु0	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म0 पु0	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ0 पु0	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म0 पु0	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ0 पु0	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट्लकार

प्र0 पु0	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म0 पु0	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ0 पु0	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

(5) दृश् (देखना)

लट्लकार

प्र0 पु0	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म0 पु0	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ0 पु0	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	पश्यतु/पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु
म0 पु0	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ0 पु0	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म0 पु0	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ0 पु0	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म0 पु0	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ0 पु0	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट्लकार

प्र0 पु0	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म0 पु0	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ0 पु0	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

(6) पा (पीना)

लट्लकार

प्र0 पु0	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
म0 पु0	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ0 पु0	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	पिबतु/पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
म0 पु0	पिब	पिबतम्	पिबत
उ0 पु0	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म0 पु0	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ0 पु0	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
म0 पु0	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उ0 पु0	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट्लकार

प्र0 पु0	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म0 पु0	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ0 पु0	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

(7) जि (जीतना)

लट्लकार

प्र0 पु0	जयति	जयतः	जयन्ति
म0 पु0	जयसि	जयथः	जयथ
उ0 पु0	जयामि	जयावः	जयामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	जयतु/जयतात्	जयताम्	जयन्तु
म0 पु0	जय	जयतम्	जयत
उ0 पु0	जयानि	जयाव	जयाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
म0 पु0	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ0 पु0	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म0 पु0	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ0 पु0	जयेयम्	जयेव	जयेम

लृट्लकार

प्र0 पु0	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म0 पु0	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ0 पु0	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

(8) श्रु (सुनना)

लट्लकार

प्र0 पु0	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म0 पु0	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ0 पु0	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः

लोट्लकार

प्र0 पु0	शृणोतु/शृणुतात्	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म0 पु0	शृणु/शृणुतात्	शृणुतम्	शृणुत
उ0 पु0	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म0 पु0	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ0 पु0	अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व	अशृणुम, अशृण्म

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म0 पु0	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ0 पु0	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

लृट्लकार

प्र0 पु0	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म0 पु0	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ0 पु0	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

(9) सेव् (सेवा करना)

लट्लकार

प्र0 पु0	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म0 पु0	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ0 पु0	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट्लकार

प्र0 पु0	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म0 पु0	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ0 पु0	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्लकार

प्र0 पु0	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म0 पु0	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ0 पु0	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म0 पु0	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ0 पु0	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लृट्लकार

प्र0 पु0	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म0 पु0	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ0 पु0	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

(10) लभ् (पाना)

लट्लकार

प्र0 पु0	लभते	लभेते	लभन्ते
म0 पु0	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ0 पु0	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्लकार

प्र0 पु0	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म0 पु0	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ0 पु0	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्लकार

प्र0 पु0	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म0 पु0	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ0 पु0	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म0 पु0	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ0 पु0	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट्लकार

प्र0 पु0	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म0 पु0	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ0 पु0	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

Scanned by CamScanner

(11) नी (ले जाना)

परस्मैपद

लट्लकार

प्र0 पु0	नयति	नयतः	नयन्ति
म0 पु0	नयसि	नयथः	नयथ
उ0 पु0	नयामि	नयावः	नयामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	नयतु/नयतात्	नयताम्	नयन्तु
म0 पु0	नय	नयतम्	नयत
उ0 पु0	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
म0 पु0	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ0 पु0	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म0 पु0	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ0 पु0	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट्लकार

प्र0 पु0	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म0 पु0	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उ0 पु0	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

आत्मनेपद

लट्लकार

प्र0 पु0	नयते	नयेते	नयन्ते
म0 पु0	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ0 पु0	नये	नयावहे	नयामहे

लोट्लकार

प्र0 पु0	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म0 पु0	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ0 पु0	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्लकार

प्र0 पु0	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म0 पु0	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ0 पु0	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म0 पु0	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ0 पु0	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लृट्लकार

प्र0 पु0	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म0 पु0	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ0 पु0	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

(12) हन् (मारना)

लट्लकार

प्र0 पु0	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म0 पु0	हन्सि	हथः	हथ
उ0 पु0	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट्लकार

प्र0 पु0	हन्तु/हतात्	हताम्	घ्नन्तु
म0 पु0	जहि/हतात्	हतम्	हत
उ0 पु0	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म0 पु0	अहन्	अहतम्	अहत
उ0 पु0	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म0 पु0	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ0 पु0	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लृट्लकार

प्र0 पु0	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म0 पु0	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ0 पु0	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

(13) दा (देना)

परस्मैपद

लट्लकार

प्र0 पु0	ददाति	दत्तः	ददति
म0 पु0	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ0 पु0	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट्लकार

प्र0 पु0	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
म0 पु0	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उ0 पु0	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म0 पु0	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ0 पु0	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म0 पु0	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ0 पु0	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट्लकार

प्र0 पु0	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म0 पु0	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ0 पु0	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

आत्मनेपद

लट्लकार

प्र0 पु0	दत्ते	ददाते	ददते
म0 पु0	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ0 पु0	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट्लकार

प्र0 पु0	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म0 पु0	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ0 पु0	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्लकार

प्र0 पु0	अदत्त	अददाताम्	अददत
म0 पु0	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ0 पु0	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म0 पु0	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ0 पु0	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लृट्लकार

प्र0 पु0	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म0 पु0	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ0 पु0	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

(14) नृत् (नाचना)

लट्लकार

प्र0 पु0	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म0 पु0	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ0 पु0	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लोट्लकार

प्र0 पु0	नृत्यतु/नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म0 पु0	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ0 पु0	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्लकार

प्र0 पु0	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म0 पु0	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ0 पु0	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्लकार

प्र0 पु0	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म0 पु0	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ0 पु0	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

लृट्लकार

प्र0 पु0	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
म0 पु0	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उ0 पु0	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः
	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

(15) जन् (उत्पन्न होना)

लट्लकार (जन् को जा)

प्र0 पु0	जायते	जायेते	जायन्ते
म0 पु0	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ0 पु0	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट्लकार (जन् को जा)

प्र0 पु0	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म0 पु0	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ0 पु0	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्लकार (जन को जा)

प्र0 पु0	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म0 पु0	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ0 पु0	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्लकार (जन् को जा)

प्र0 पु0	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म0 पु0	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ0 पु0	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

लृट्लकार

प्र0 पु0	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म0 पु0	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ0 पु0	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

Scanned by CamScanner

लृट्लकार

प्र० पु०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० पु०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उ० पु०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

(21) कथ् (कहना)

परस्मैपद

लट्लकार

प्र० पु०	कथयति	कथयत:	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथ:	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयाव:	कथयाम:

लोट्लकार

प्र० पु०	कथयतु/कथयतात्	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्लकार

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० पु०	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधिलिङ्लकार

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु:
म० पु०	कथये:	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लृट्लकार

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ:	कथयिस्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	कथयिष्याम:

आत्मनेपद

लट्लकार

प्र० पु०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० पु०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० पु०	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लोट्लकार

प्र० पु०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म० पु०	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उ० पु०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

लङ्लकार

प्र० पु०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० पु०	अकथयथा:	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० पु०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

विधिलिङ्लकार

प्र० पु०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म० पु०	कथयेथा:	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० पु०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

लृट्लकार

प्र० पु०	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म० पु०	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ० पु०	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

अभ्यासार्थ प्रश्न

(धातु-रूप)

1. भू धातु का लोट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन है–
(अ) भवमि (ब) भवेयम्
(स) भवानि (द) अभवम् ( )

2. त्यज् धातु लृट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन है–
(अ) त्यजिष्यति (ब) तक्ष्यन्ति
(स) त्यज्ष्यन्ति (द) तजिष्यन्ति ( )

3. गम् धातु लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन–
(अ) अगच्छत् (ब) अगमत्
(स) अगमत (द) अगच्छत ( )

4. जि धातु विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन–
(अ) जयेरन् (ब) जयेयु:
(स) जयन्तु (द) जेययु: ( )

5. दृश् धातु लृट्लकार उत्तम पुरुष द्विवचन–
(अ) पश्यिष्याव: (ब) द्रक्ष्याव:
(स) दर्शिष्याव: (द) इनमें से कोई नहीं ( )

6. नी धातु लट्लकार उत्तम पुरुष एकवचन–
(अ) नयामि (ब) नेयामि
(स) नीये (द) नायामि ( )

7. "अपचथा:" है–
(अ) लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन
(ब) विधिलिङ् मध्यम पुरुष एकवचन
(स) लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन
(द) लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन ( )

8. पच् धातु आत्मनेपद विधिलिङ् प्रथम पुरुष एकवचन–
(अ) पचेत् (ब) पचेत
(स) पच्यते (द) पचेरन् ( )

9. पा धातु विधिलिङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) पिबेया: (ब) पिबे:
(स) पिबे (द) पिब: ( )

10. लभ् धातु लोट्लकार प्रथम पुरुष है–
(अ) लभतु लभेताम् लभन्तु
(ब) लभताम् लभेताम् लभन्तु
(स) लभताम् लभताम् लभन्ताम्
(द) लभताम् लभेताम् लभन्ताम् ( )

11. वृत् लोट् लकार प्र. पुरुष एकवचन तथा लङ्लकार प्र. पुरुष एकवचन है–
(अ) वर्ततु अवर्तत् (ब) वर्तताम्, अवर्तत
(स) वर्तध्व अवर्तयत् (द) वर्तस्व अवर्तत ( )

12. पच् धातु लिङ्लकार मध्यम पुरुष एकवचन है (आत्मने पद में)
(अ) पचथा: (ब) पचाथा:
(स) पचेथा: (द) पचे: ( )

13. वृत धातु लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) वर्तस्व (ब) वर्तताम्
(स) वर्तध्व (द) वर्ततु ( )

14. सेवेरन् रूप है–
(अ) विधिलिङ् प्रथम पुरुष एकवचन
(ब) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन
(स) विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन
(द) विधिलिङ् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन ( )

15. शुद्ध रूप है–
(अ) श्रण्वन्ति (ब) शृण्वन्ति
(स) शृणवन्ति (द) श्रृण्वन्ति ( )

16. दा धातु परस्मैपद तथा आत्मनेपद में प्रथम पुरुष बहुवचन–
(अ) ददाति ददते (ब) ददति ददन्ते
(स) ददति ददते (द) ददन्ति ददते ( )

17. हन् धातु लङ्लकार उत्तम पुरुष–
(अ) अहनम् अहनाव अहन्म
(ब) अहनम् अहन्व अहनाम
(स) अहनम् अहन्व अहन्म
(द) अहन् अहन्व अहन्म ( )

18. नृत् धातु लृट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) नर्त्स्यसि/नर्तिष्यसि
(ब) नर्तस्यति/नर्तिष्यसि
(स) नर्त्स्यस्यति/नर्तिष्यसि
(द) नर्त्स्यस्यसि/नृतिष्यसि ( )

19. नृत् धातु लङ्लकार मध्यम पुरुष बहुवचन–
(अ) अनृत्यताम् (ब) अनृत्यतम्
(स) अनृत्यत (द) अनृत्यथ ( )

Scanned by CamScanner

20. जन् धातु लङ्लकार उत्तम पुरुष–
(अ) अजाये अजावहि अजामहि
(ब) अजाये अजायावहि अजायामहि
(स) अजाये अजावहे अजामहे
(द) अजायम् अजायाव अजायाम ( )

21. क्रुध् धातु लट्लकार एकवचन–
(अ) क्रोधति (ब) क्रुधति
(स) क्रुध्यति (द) क्रुध्यते ( )

22. अशुद्ध रूप है–
(अ) शक्ष्यति (ब) शक्स्यति
(स) शक्ष्यामि (द) शक्ष्यामः ( )

23. कृ धातु लट्लकार उत्तम पुरुष (आत्मने पद में)–
(अ) कुर्मे कुर्वहे कुर्महे (ब) कुर्वे कुर्वावहे कुर्मावहे
(स) करोमि कुर्वः कुर्मः (द) कुर्वे कुर्वहे कुर्महे ( )

24. विरराज में लकार है–
(अ) लट् (ब) लङ्
(स) लिट् (द) विधिलिङ् ( )

25. जानन्ति में धातु है–
(अ) जान् (ब) जन्
(स) जा (द) ज्ञा ( )

26. अवतारयत् में धातु है–
(अ) तृ (ब) अवतृ
(स) अवतार (द) अव ( )

27. भू धातु लङ्लकार मध्यम पुरुष–
(अ) अभवत् अभवताम् अभवत,
(ब) अभवः अभवतम् अभवथ
(स) अभवत् अभवथः अभवथ
(द) अभवः अभवतम् अभवत ( )

28. त्यज् धातु लङ्लकार उत्तम पुरुष बहुवचन–
(अ) अत्यजाम (ब) अत्यजाय:
(स) आत्यजाम (द) अत्यजामहि ( )

29. गम् धातु लोट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) गच्छ (ब) गच्छस्व
(स) गमस्व (द) गच्छद्व ( )

30. जि धातु लृट्लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) जयिष्यति (ब) जेष्यति
(स) जयिष्यसि (द) जेष्यसि ( )

31. दृश धातु विधिलिङ् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन–
(अ) दृश्यतम् (ब) दृश्येताम्
(स) दृश्ये: (द) पश्येतम् ( )

32. नी धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन–
(अ) अनयन् (ब) अनयन्ते
(स) अनयान् (द) अनीयन् ( )

33. सही युग्म है–
(अ) पक्ष्यति, पक्ष्यते
(ब) पचिष्यति, पचिष्यते
(स) पचिष्यति पक्ष्यते
(द) अ एवं ब दोनों ( )

34. पा धातु लृट्लकार का शुद्ध रूप है–
(अ) पायिष्यति (ब) पास्यति
(स) पिबिस्यति (द) पास्यते ( )

35. लभ् धातु है–
(अ) पस्मैपदी (ब) आत्मनेपदी
(स) उभयपदी (द)कोई भी नहीं ( )

36. वृत् धातु लङ्लकार उत्तम पुरुष–
(अ) अवर्ते अवर्तावहे अवर्तामहे
(ब) अवर्तेयम् अवर्तावहि अवर्तामहि
(स) अवर्ते अवर्तावहि अवर्तामहि
(द)अवर्ते अवर्तावहे अवर्तामहि ( )

37. अहर्निशं सेवामहे। सेवामहे लट्लकार का रूप है–
(अ) उत्तम पुरुष एकवचन
(ब) मध्यम पुरुष एकवचन
(स) उत्तम पुरुष बहुवचन
(द)मध्यम पुरुष एकवचन ( )

38. शुद्ध युगल है–
(अ) श्राविष्यति श्रृण्वन्तु
(ब) श्राविष्यसि श्रृण्वन्तु
(स) श्रोस्यति श्रृणवन्तु
(द)श्रोष्यति श्रृण्वन्तु ( )

39. श्रु धातु विधिलिङ्लकार मध्यम पुरुष एकवचन–
(अ) श्रृणुया: (ब) श्रुणुया:
(स) श्रृणुया: (द)श्रृणो: ( )

40. दा धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन आत्मने पद में–
(अ) ददे (ब) दत्ते
(स) ददाते (द)ददते ( )

41. हन् धातु का शुद्ध रूप है–
(अ) घनन्ति (ब) हनन्ति
(स) जहन्ति (द)घ्नन्ति ( )

42. ''जायन्ते'' यहाँ धातु है–
(अ) जाय् (ब) जी
(स) जि (द) जन् ( )

43. प्राप्नोति में धातु है–
(अ) आप् (ब) प्राप्
(स) पाप (द) पना ( )

44. अभवत् में लकार है–
(अ) लङ् (ब) लट्
(स) लिट् (द) लुट् ( )

45. भी धातु प्रथम पुरुष द्विवचन–
(अ) बिभीत: (ब) बिभ्यत:
(स) बिभेते (द) बिभ्यताम् ( )

46. वलादि इट् आगम होता है–
(अ) शब्द को (ब) धातु को
(स) तद्धित को (द) समास को ( )

47. पठेयु: में लकार है–
(अ) लट् (ब) लङ्
(स) विधिलिङ् (द) लुङ् ( )

48. अकर्मक धातु नहीं है–
(अ) शीङ् (ब) चल्
(स) पत् (द) लिख् ( )

49. निन्दन्तु में लकार है–
(अ) लट् (ब) लोट्
(स) लङ् (द) लृट् ( )

50. भूषयन्ति में लकार है–
(अ) लट् (ब) लिट्
(स) लङ् (द) लोट् ( )

उत्तर तालिका

(1) स	(2) ब	(3) अ	(4) ब	(5) ब	(6) अ	(7) अ	(8) ब	(9) ब	(10) द
(11) ब	(12) स	(13) अ	(14) ब	(15) ब	(16) स	(17) स	(18) अ	(19) स	(20) ब
(21) स	(22) ब	(23) द	(24) स	(25) द	(26) अ	(27) द	(28) अ	(29) अ	(30) द
(31) द	(32) अ	(33) अ	(34) ब	(35) ब	(36) स	(37) स	(38) द	(39) अ	(40) ब
(41) द	(42) द	(43) अ	(44) अ	(45) अ	(46) ब	(47) स	(48) द	(49) ब	(50) अ

Scanned by CamScanner

अध्याय 9

अव्यय

अव्यय

"सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।"

- जो पद तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा सभी वचनों में समान रहता है, किसी भी प्रकार के विकार को प्राप्त नहीं होता है, वह अव्यय है। अव्ययों के सम्बन्ध में यह धारणा कि अव्यय से विभक्तियाँ नहीं होती, गलत है। क्योंकि अव्ययों को पद बनाने के लिए उनसे सु आदि प्रत्यय लाये जाते है, चाहे उनका लोप हो जाता है।
- अव्ययों के आगे स्थित स्वादि (सुप्) प्रत्ययों तथा टाप्, डाप् व चाप् स्त्री प्रत्ययों का लोप हो जाता है। (**अव्ययादाप्सुपः**)
- ध्यातव्यः–अव्यय का मौलिक स्वरूप ही अव्ययत्व के गुण से युक्त होता है। यदि अव्ययों से पहले किसी भी प्रकार का विशेषण जोड़ दिया जाये तो उसका अव्ययत्व नष्ट हो जायेगा। इस प्रकार के शब्द का सभी विभक्तियों एवं वचनों में रूप अलग-अलग होंगे। जैसे-'उच्चैस्' एक अव्यय है। यदि इससे से पूर्व 'अति' विशेषण जोडकर 'अत्युच्चैस्' रूप बना दिया जाये, तो यह अव्यय नहीं रहेगा। अत्युच्चैः, उत्युच्चैसौ, उत्युच्चैसः इत्यादि रूप बन जायेंगे।

1. स्वरादिगण में पठित शब्द एवं निपात संज्ञक शब्दों की अव्यय' संज्ञा होती है। (**स्वरादिनिपातमव्ययम्**) स्वरादिगण में अधोलिखित शब्द मुख्य है–

अव्यय		अर्थ	अव्यय		अर्थ
स्वर् (स्वः)	→	स्वर्ग	युगपत्	→	एक साथ
हेतौ	→	निमित्त	नाना	→	अनेक
अन्तर् (अन्तः)	→	मध्य	आरात्	→	दूर और समीप
वत् प्रत्ययान्त	→	ब्राह्मणवत्, क्षत्रियवत् आदि	स्वस्ति	→	मङ्गल
प्रातर् (प्रातः)	→	सुबह	पृथक्	→	अलग से
तिरस्	→	पराभव	स्वधा	→	पितरों को हवि
पुनर् (पुनः)	→	दोबारा	ह्यस् (ह्यः)	→	बीता हुआ कल
अन्तरा	→	मध्य	अलम्	→	पर्याप्त, निषेध
उच्चैस् (उच्चैः)	→	ऊँचा	श्वस् (श्वः)	→	आने वाला कल
अन्तरेण	→	बिना	वषट्, वौषट्, श्रौषट्	→	देवताओं को आहुति
नीचैस् (नीचैः)	→	नीचा	दिवा	→	दिन
शम्	→	सुख	अन्यद्	→	अन्य
शनैस् (शनैः)	→	धीरे	रात्रौ	→	रात में
सहसा	→	आकस्मिक	उपांशु	→	रहस्य, मौन उच्चारण
ऋते	→	बिना	सायम्	→	शाम
विना	→	बिना	क्षमा	→	क्षमा

अव्यय		अर्थ	अव्यय		अर्थ
चिरम्	→	बहुत समय तक	सार्धम्	→	साथ
विहायसा	→	आकाश	आशु	→	शीघ्र
ईषत्	→	अल्प	नमस् (नमः)	→	नमस्कार
दोषा	→	रात्रि	संवत्	→	वर्ष
तूष्णीम्	→	चुप (मौन)	हिरुक्	→	बिना
मृषा	→	झूठा	अनिशम्	→	निरन्तर
बहिस् (बहिः)	→	बाहर	धिक्	→	निन्दा, भर्त्सना
मिथ्या	→	झूठा	नित्यम्	→	निरन्तर
समया	→	समीप	अम्	→	शीघ्र, कम
पुरा	→	पुराने समय में	सदा	→	निरन्तर
निकषा	→	समीप	आम्	→	स्वीकार (हाँ)
मिथो, मिथः	→	साथ	अजस्रम्	→	निरन्तर
स्वयम्	→	खुद	माङ्, मा	→	निषेध
प्रायस् (प्रायः)	→	प्रायः	सन्ततम्	→	निरन्तर
वृथा	→	व्यर्थ	अवस् (अवः)	→	नीचे
मुहुस् (मुहुः)	→	पुनः	उषा	→	रात्रि
नक्तम्	→	रात्रि	सामि	→	आधा
भूयस् (भूयः)	→	पुनः	ओम्	→	ब्रह्म स्वीकारना
नञ् (न)	→	अभाव	अवश्यम्	→	जरूर
साम्प्रतम्	→	उचित/न्याय्य	झटिति	→	शीघ्रता से
आर्यहलम्	→	बलात्कार	सुष्ठु	→	अच्छा
परम्	→	किन्तु	वदि/बदि	→	कृष्णपक्ष
आभीक्ष्णम्	→	पुनः पुनः	दुष्ठु	→	बुरा
साक्षात्	→	प्रत्यक्ष	सुदि/शुदि	→	शुक्लपक्ष
साकम्	→	साथ	असाम्प्रतम्	→	अयुक्त
सत्यम्	→	स्वीकारना	वरम्	→	अच्छा

निपात

- द्रव्यवाची शब्दों से भिन्न, च, वा, ह आदि तथा प्र परा आदि 22 प्रादियों को निपात कहा जाता है। इन्हीं निपातों को अव्यय कहा जाता है। (**चादयोऽसत्त्वे, प्रादयः**)

चादि–

च	→	और	नूनम्	→	निश्चय
अथ	→	मङ्गलारम्भ	इ	→	सम्बोधन, विस्मय
वा	→	विकल्प	शश्वत्	→	पुनः पुनः
अथो	→	मङ्गलारम्भ	पशु	→	सम्यग्
ह	→	प्रसिद्ध	युगपत्	→	एक साथ
अ	→	सम्बोधन	शुकम्	→	शीघ्र
एव	→	निश्चयन	भूयस्	→	पुनः
आ	→	वाक्य, स्मरण	यथाकथाच	→	अनादर
			कूपत्	→	प्रशंसा
			है, हे, भोः	→	सम्बोधन
			नेत्	→	शंका
			चेत्	→	यदि

Scanned by CamScanner

किञ्चित्	→	कुछ
हन्त	→	दुःख
खलु	→	निषेध, निश्चय
किल	→	वार्ता

2. अव्ययीभाव समास में निष्पन्न समस्त पद अव्यय हो जाता है। जैसे-उपकृष्णम्, अधिहरि, सुमद्रम् आदि। अव्यय होने से विभक्ति लोप (ह्रस्व अकारान्त समस्त को छोड़कर) होता है। (**अव्ययीभावश्च**)

3. तद्धित प्रत्यय से बना ऐसा रूप, जिससे सभी विभक्तियाँ नहीं होती हो, भी अव्यय हो जाते है। अर्थात् किसी विभक्ति विशेष को मानकर होने वाले तद्धित प्रत्यय से बने शब्द को भी अव्यय कहा जाता है। (**तद्धितश्चासर्वविभक्तिः**)

- जैसे-(i) '**पञ्चम्यास्तसिल्**' से पञ्चमी के अर्थ में तसिल् (तस्) प्रत्यय से बने रूप अव्यय है।
- इतः, ततः, सर्वतः, कुतः, यतः, ग्रामतः, अन्यतः, परितः, अभितः, उभयतः आदि।

(ii) '**सप्तम्यास्त्रल्**' सूत्र से सप्तमी के अर्थ में 'त्रल्' प्रत्यय से बने रूप अव्यय है। इसी तरह सप्तमी के अर्थ में होने वाले अन्य प्रत्ययों से बने शब्द भी अव्यय हो जाते हैं। इसी तरह अन्य प्रत्ययों से बने शब्द भी अव्यय हो जाते हैं।

अत्र,	तत्र,	सर्वत्र,	कुत्र,	यत्र,	एकत्र,
अमुत्र,	बहुत्र,	क्व,	इह,	कुह,	यदा,
तदा,	सर्वदा,	कदा,	सदा,	एकदा,	अन्यदा,
एतर्हि,	कर्हि,	तर्हि,	यर्हि,	अधुना,	इदानीम्,
सद्यः,	अद्य,	यथा,	तथा,	सर्वथा,	उभयथा,

अन्यथा, कथम्, इत्थम्, पुरस्तात्, अधस्तात्, दक्षिणतः, उपरि, उपरिष्टात्, पश्चात्, दक्षिणा, दक्षिणाहि, पुरः, अधः, अवः, एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, द्वेधा, त्रेधा, द्वि, त्रिः, चतुः।

4. क्त्वा प्रत्यय (उसके स्थान पर होने वाले ल्यप् से भी) तोसुन् और कसुन् प्रत्ययों से बने शब्द भी अव्यय हो जाते है। जैसे-पठित्वा, लिखित्वा, संपठ्य, विलिख्य आदि। (**क्त्वातोसुन्कसुनः**)

उत् + इण् + तोसुन् (तोस्)	→	उदेतोः
प्र + चर् + तोसुन्	→	प्रचरितोः
वि + सृप् + कसुन् (अस्)	→	विसृपः
आ + तृद् + कसुन्	→	आतृदः

5. 'म्' अन्त वाले तथा एजन्त (ए ओ ऐ औ अन्त वाले) कृत् प्रत्ययों के रूप को अव्यय कहा जाता है। (**कृन्मेजन्तः**)

- **मकारान्त**–जैसे-तुमुन्, णमुल्, आम् आदि प्रत्ययों में।
- पठितुम्, दसितुम्, पातुम् दातुम् (तुमुन् प्रत्ययान्त)
- स्मृ + णमुल्– स्मारं स्मारम्,
  श्रु + णमुल्– श्रावं श्रावम् (णमुल्प्रत्ययान्त)
- **एजन्त**– जीव्+असे - जीवसे,
  पा (पिब्) +शध्यै (अध्यै) → पिबध्यै

(6) **व्यतीहार बहुव्रीहि** में बनने वाले समस्त पद भी अव्यय हो जाते है।

- केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् – केशाकेशि।
- दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् – दण्डादण्डि।
- इसी तरह कचाकचि, मुष्टीमुष्टि, बाहूबाहवि आदि।

वाक्य प्रयोग

अव्यय	अर्थ	वाक्य प्रयोग
1. अत्र	यहाँ	भवतां पुस्तकम् **अत्र** वर्तते।
		भवान् अत्र एव उपविशतु।
2. अद्य	आज	**अद्य** मम जन्मदिवसः वर्तते।
		श्वः कार्यमद्य कुर्वीत।
		मोहनः अद्य एव गृहं गतवान्।
		अद्य अहं व्याकरणं पाठयिष्यामि।
3. इतः	यहाँ से	मोहनः **इतः** एव गतवान्।
		मोहनः इतः एव प्रतिदिनं गच्छति।
4. इत्थम्	इस प्रकार	कार्यम् **इत्थं** करणीयम्, तथा न।
5. इदानीम्	अब	**इदानीम्** अहं जयपुरे वसामि।
		इदानीं तूष्णीं भव।
		इदानीं सः पाठं पठति।
6. शनैः	धीरे	शिवः **शनैः** धावति।
		यानं शनैः शनैः चलति।
		शनैर्याति पिपीलिका।
		कुरु पदानि घनोरु! शनैः शनैः।
7. उच्चैः	ऊँचा	नरेशः **उच्चैः** वदति।
		सा उच्चैः विहस्य गतवती।
		किञ्चिद् उच्चैः वदतु।

अव्यय	अर्थ	वाक्य प्रयोग
		स्थितिः उच्चैः पयोदानाम्।
		सिंहः उच्चैः गर्जति।
		शङ्खध्वनिः उच्चैः भवति।
	महान्	विपदि उच्चैः धैर्यम्।
		किं पुनर्यस्तथोच्चैः।
8. नीचैः	नीचा	दिनेशः **नीचैः** शब्दं करोति।
		नद्याः जलं नीचैः गच्छति।
		पूरिका नीचैः पतति।
	मन्दगति	नीचैः वाति समीरणः।
	निम्नकोटि	प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।
9. नमः	नमस्कार	श्रीगणेशाय **नमः**।
		हरये नमः।
		नमश्शिवाय।
10. कथम्	कैसे	सन्तापस्य निवारणं **कथम्?**
		कथमपि भुवनेऽस्मिन् तादृशाः सम्भवन्ति।
		कथं कथमपि उत्थाय चलितः।
		कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः?
11. कदापि	कभी भी	**कदापि** चिन्ता न करणीया।
		सः कदापि असत्यं न वदति।
12. किल	वार्ता	एकदा **किल** एकः राजा आसीत्।
		बभूव योगी किल कार्त्तवीर्यः।
		जघान कंसं किल वासुदेवः।
	निश्चय	इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः।
		विद्वांसं किल आश्रयेयुः विद्यार्थिनः।
	अलीक/असत्य	प्रसह्य सिंह किल तां चकर्ष।
	सम्भावना	पार्थः किल विजेष्यते कुरून्।
		गुरून् किलातिशेते शिष्यः।
13. पुनः	दोबारा	सः **पुनः** विद्यालयं न आगतवान्।
		भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।
		गच्छतु भवान् पुनर्दर्शनाय।
14. यथा	जैसे	**यथा** करोति, तथैव प्राप्नोति।
		यथा राजा, तथा प्रजाः।
		यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
		तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

अव्यय	अर्थ	वाक्य प्रयोग
15. तथा	वैसे	यथा करोति, **तथा** एव प्राप्नोति।
		यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।
		तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रुषुरधिगच्छति।।
16. खलु	निश्चय	सः **खलु** पठिष्यति।
		प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।
		सर्वं खल्विदं ब्रह्म।
		उत्सवप्रिया खलु मनुष्याः।
		सन्देहदग्धमनस्का एवमेव खलु चिन्तयन्ति।
		संयमः खलु जीवनम्।
	निषेध	पीत्वा खलु।
	अनुनय	न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतद्।
	कारण	न विदीर्ये कठिनाः खलु स्त्रियः।
17. धिक्	धिक्कार	दुर्जनं **धिक्**।
		धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।
		धिक् चौरान्।
		मिथ्यापवादकारिणं धिक् तम् असत्यभाषिणम्।
18. प्रातः	सुबह	सः अत्रः **प्रातः** एव आगतवान्।
		सः प्रातः विद्यालयं गच्छति।
19. चिरम्	बहुत समय तक	**चिरं** जीव त्वम्।
		मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्।
		चिरं जीवतु मे भर्ता।
		सः रात्रौ चिरं पठति।
20. किमर्थम्	क्यों	भवान् **किमर्थं** हसति?
21. कुतः	कहाँ से	भवान् **कुतः** आगच्छति?
		तद्धितश्चासर्वविभक्तिः
		कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
22. कदा	कब	भवान् **कदा** शेते?
		कदा गुरोकसो भवन्तः?

Scanned by CamScanner

अभ्यासार्थ प्रश्न
(अव्यय प्रकरण)

1. अधोलिखित में से अव्यय नहीं है–
(अ) च (ब) उच्चैः
(स) अत्युच्चैः (द) दिवा ( )

2. अव्यय के स्वरूप में परिवर्तन होता है–
(अ) लिङ्ग में (ब) विभक्ति में
(स) वचन में (द) कहीं नहीं ( )

3. 'सः प्रातः उत्थाय, स्नात्वा च दिवा एव शेते' वाक्य में कितने अव्यय पद है–
(अ) 4 (ब) 5
(स) 6 (द) 7 ( )

4. किस समास के सभी रूप अव्यय हो जाते हैं–
(अ) अव्ययीभाव (ब) केवल समास
(स) तत्पुरुष समास (द) द्विगु समास ( )

5. अधोलिखित में से किस समूह में अव्यय पद नहीं है–
(अ) कुत्र, तत्र, कदा, सदा
(ब) इह, क्व, यतः, ततः
(स) पठिता, योद्धा, गन्ता, श्रोता
(द) पठितुम्, पठित्वा, उपकृष्णम् ( )

6. अधोलिखित में से अव्यय पद है–
(अ) पठितव्यम् (ब) स्तुतिः
(स) कृत्वा (द) पाठकः ( )

7. अव्यय नहीं है–
(अ) दिवा (ब) रात्रौ
(स) सायम् (द) दिवसे ( )

8. "मोहनः निशा रात्रौ वा शेते, दिवा च नित्यं पठति"- वाक्य में कितने अव्यय पद है–
(अ) 5 (ब) 6
(स) 4 (द) 7 ( )

9. अव्यय पद नहीं है–
(अ) लिखित्वा (ब) विलिख्य
(स) पातुम् (द) पीतम् ( )

10. अधोलिखित में से अव्यय नहीं है–
(अ) चेत् (ब) चित्तम्
(स) यथाकथाच (द) किल ( )

11. समीपार्थक अव्यय है–
(अ) समया (ब) निकषा
(स) युगपत् (द) अ,ब दोनों ( )

12. अव्यय नहीं है–
(अ) नमस् (ब) स्वस्ति
(स) स्वकीयम् (द) स्वधा ( )

13. "मौन उच्चारण' अर्थ वाला अव्यय है–
(अ) उपांशु (ब) तूष्णीम्
(स) शनैः (द) आशु ( )

14. निरन्तर अर्थ वाला अव्यय पद नहीं है–
(अ) अनिशम् (ब) अजस्रम्
(स) सन्ततम् (द) साम्प्रतम् ( )

15. 'ग्रामं समया वनम् अस्ति।' वाक्य में अव्यय पद है–
(अ) 1 (ब) 3
(स) 4 (द) 2 ( )

16. अव्यय पद नहीं है–
(अ) स्वर्गगतः (ब) स्वः
(स) नीचैः (द) प्रायः ( )

17. अव्यय पद नहीं है–
(अ) उपकृष्णम् (ब) पञ्चपात्रम्
(स) मुहुः (द) क्षमा ( )

18. 'रात्रि' अर्थ वाले अव्यय है–
(अ) नक्तम् (ब) उषा
(स) दोषा (द) तीनों ( )

19. कौनसे कृत् प्रत्ययान्त रूप अव्यय हो जाते है–
(अ) क्त्वा, ल्यप् (ब) तुमुन्, णमुल्
(स) तोसुन्, कसुन् (द) तीनों सही ( )

20. अधोलिखित में से (अव्यय-अर्थ) गलत समूह है–
(अ) ह्यः - गत दिवस
(ब) श्वः - आने वाला दिवस
(स) नक्तम् - दिन
(द) आरात्-दूर और समीप ( )

21. किस समूह में अव्यय पद नहीं है–
(अ) अन्तरा, अन्तरेण (ब) समया, निकषा
(स) दोषा, नक्तम् (द) दिनम्, दिवसः ( )

22. क्रियायोग के अभाव में प्रादि कहलाते है–
(अ) अव्यय (ब) निपात
(स) उपसर्ग (द) अव्यय, निपात ( )

23. अधोलिखित में से अव्यय पद है–
(अ) चन्द्रशेखरः (ब) अपुत्रः
(स) केशाकेशि (द) उन्नसः ( )

24. अधोलिखित में से अव्यय नहीं है–
(अ) स्मर्तुम् (ब) आम्
(स) कस्मिन् (द) विलिख्य ( )

उत्तर तालिका

(1) स	(2) द	(3) स	(4) अ	(5) स	(6) स	(7) द	(8) ब	(9) द	(10) ब
(11) द	(12) स	(13) अ	(14) द	(15) अ	(16) अ	(17) ब	(18) द	(19) द	(20) स
(21) द	(22) द	(23) स	(24) स						

संस्कृत की पत्र-पत्रिकाएँ

दैनिक

सुधर्मा	– मैसूर से, 1970 से, वरदराजैय्यङ्गार्य द्वारा	विश्वस्य वृत्तान्तम्	– गुजरात से (On Net)
जयन्ती	– तिरुवनन्तपुरम् (प्रथम दैनिक पत्रिका, 1907 से)	संस्कृत वार्तापत्रम्	– गुजरात से (On Net)
		संस्कृतिः	– पूना से (1961 से)
		साप्ताहिक विश्ववाणी	– अमरीका से (On Net)
भवितव्यम्	– नागपुर से	संस्कृतम्	– अयोध्या से
भाषा	– गुन्टूर से		

काशीविद्या सुधानिधि/पण्डित पत्रिका – काशी से (प्रथम संस्कृत पत्रिका, 1866 से)

पाक्षिक

अमरभारती	– त्रिवेन्द्रम से (1910 से)	मित्रम्	– पटना से (1918 से)
भारतवाणी	– पूना से (1858 से)	शारदा	– पुणे, बम्बई से (1959 से)
विद्वन्मनोरञ्जनी	– कांची से (1970 से)	मनोरञ्जनी	– मद्रास से (1907)
सहस्रांशुः	– वाराणसी से (1926 से)	वाङ्मयम्	– वाराणसी से (1940 से)

मासिक

मञ्जूषा	– कलकत्ता से	भारती	– जयपुर से (1950 से)
संस्कृतरत्नाकर	– दिल्ली से	बालसंस्कृतम्	– बम्बई से
मधुरवाणी	– गदक, कर्नाटक से	उद्यानपत्रिका	– तिरुवैयक-तंजोर से
सूर्योदय	– वाराणसी से	वैदिक मनोहरा	– कांजीवरम् से
भारतोदय	– हरिद्वार से	सम्भाषणसन्देश	– बंगलोर से
पारिजात	– कानपुर से	संस्कृतायुतम्	– दिल्ली से
दिव्यज्योति	– शिमला से	चन्दामामा	– चैन्नई से
श्री पण्डित	– वाराणसी से	सर्वगन्धा	– लक्ष्मणपुर से

त्रैमासिक

सरस्वती सुषमा	– वाराणसी से	ब्रह्मविद्या	– अडयार से
महाराज	– मैसूर से	स्वरमङ्गला	– जयपुर से।

अर्द्धवार्षिक

संस्कृतप्रतिभा – साहित्य अकादमी, दिल्ली

वार्षिक

जयन्ती – रा. सं. सं., जयपुर परिसर से

अध्याय 10

उपसर्ग

उपसर्ग

- प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप– इन 22 प्रादियों के साथ क्रिया का योग रहने पर, ये उपसर्ग कहलाते है। **(उपसर्गाः क्रियायोगे)**
- अत: जब तक इन 22 प्रादियों के साथ धातु को नहीं लगाया जायेगा, तब तक इन्हें उपसर्ग नहीं कहा जा सकता है। धातु से रहित ये 22 प्रादि निपात होकर अव्यय होते है।
- इन सभी उपसर्गों को गति भी कहा जाता है। **(गतिश्च)**
- उपसर्गों का प्रयोग धातु से पूर्व में किया जाता है। **(ते प्राग्धातोः)**। लेकिन वैदिक प्रयोग में उपसर्ग बाद में या बीच में भी लगाये जा सकते है। **(छन्दसि परेऽपि, व्यवहिताश्च)**
- धातु और उपसर्ग के कार्य को अन्तरङ्ग कार्य भी कहा जाता है।
- धातु और उपसर्ग के मध्य सन्धि कार्य नित्यरूप से होता है **(नित्या धातूपसर्गयोः)**
- धातु से पहले एक से ज्यादा उपसर्ग भी हो सकते है।

उपसर्गों का सामान्य अर्थ

उपसर्ग	सामान्य अर्थ	उदाहरण	उपसर्ग	सामान्य अर्थ	उदाहरण
प्र	प्रकृष्ट, अधिक, प्रगत	प्रणमति	नि	नीचे, निषेध	निषेधयति
परा	निषेध, विरोध, विपरीत	पराजयते	अधि	प्रधानता, उपरिभाव, समीनता	अधिगच्छति
अप	कम, न्यूनता, हीनता	अपहरति	अपि	छिपाना, ढँकना	अपिदधाति
सम्	सुष्ठु, अच्छा, उचित	संपठति	अति	अतिशय, उत्कर्ष, बहुत	अतिशेते
अनु	पीछे, अनुगमन	अनुगच्छति	सु	सुष्ठु, उचित, अच्छा	सुशोभते
अव	नीचे, समझना	अवगच्छति	उद्	ऊँचा, ऊपर	उत्तिष्ठति
निस्, निर्	मनाही, निषेध	निर्गच्छति	अभि	समीप, समक्ष, सामने	अभिगच्छति
दुस्, दुर्	कठिन, दुष्कर	दुराचरति	प्रति	विपरीत, प्रत्येक, परिवर्तन	प्रतिभाषते
वि	विशिष्ट, विभिन्न, रहित	विलपति, विजयते	परि	नजदीक, चारों ओर, आस–पास	परिचरति
आङ्	विपरीत, सीमा	आगच्छति	उप	समीप, द्वितीयक, छोटा	उपगच्छति

- वस्तुत: उपसर्गों का कोई पृथक् अर्थ नहीं होता है। लेकिन कभी–कभी ये धातु के अर्थ को परिवर्तित करने की क्षमता रखते है। कहा भी गया है कि–उपसर्ग के माध्यम से, धातु के अर्थ को बलपूर्वक दूसरी तरफ ले जाया जा सकता है।

''उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्।।''

- जिस प्रकार 'हृ' धातु का अर्थ हरण करना है, लेकिन इससे पूर्व प्र उपसर्ग लगाने पर 'आघात करना', आ उपसर्ग लगाने पर भक्षण (भोजन) अर्थ, सम् उपसर्ग लगाने पर वध (संहार करना), वि उपसर्ग लगाने पर भ्रमणादि क्रीडा तथा परि उपसर्ग लगाने पर 'परित्याग' अर्थ हो जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि उपसर्ग का एक विशिष्ट महत्त्व है।
- यहाँ हम कुछ धातुओं के साथ, उपसर्ग के कारण हुए अर्थ में परिवर्तन को देखेंगे।

हृ (हृञ् हरणे) धातु = हरण करना (उभयपदी)

प्र + हृ → प्रहरति (प्रहार या आघात करता है।)
आ + हृ → आहरति (लाता है या खाता है।)
सम् + हृ → संहरति (नष्ट करता है)
वि + हृ → विहरति (घूमता है या विहार करता है)
परि + हृ → परिहरति (त्यागता है, हटाता है)
उप + हृ → उपहरति (उपहार देता है)
अनु + हृ → अनुहरते (अनुकरण करता है)
अप + हृ → अपहरति (दूर करता है)
वि + अव + हृ → व्यवहरति (व्यवहार करता है)
उद् + आ + हृ → उदाहरति (उदाहरण देता है)
उप + सम् + हृ → उपसंहरति (इकट्ठा करता है, उपसंहार करता है)
निर् + आ + हृ → निराहरति (भूखा रहता है)
अभि + अव + हृ → अभ्यवहरति (खाता है)

कृ (डुकृञ् करणे) धातु = करना (उभयपदी)

अनु+कृ → अनुकरोति (अनुकरण करता है)
उप+कृ → उपकरोति (उपकार करता है)
अप+कृ → अपकरोति (अपकार करता है)
सम्+कृ → संस्करोति (संस्कार करता है)
परि+कृ → परिष्करोति (परिष्कार करता है)
अधि+कृ → अधिकरोति (अधिकार करता है)
वि + कृ → विकरोति (विकृत करता है)
निर् + आ + कृ → निराकरोति (दूर/निराकरण करता है)

स्था (ष्ठा गतिनिवृत्तौ) = ठहरना (गतिनिवृत्ति)

स्था को तिष्ठ आदेश होता है।

उद् + स्था → उत्तिष्ठति (उठता है)
अनु + स्था → अनुतिष्ठति (करता है)
प्र + स्था → प्रतिष्ठते (प्रस्थान करता है)
उप + स्था → उपतिष्ठते (पूजा करना है या मिलता है)

भू (सत्तायाम्) = सत्ता (होना) अर्थ में

प्र + भू → प्रभवति (निकलता है, उत्पन्न होता है)
सम् + भू → सम्भवति (सम्भव होता है)
उद् + भू → उद्भवति (उत्पन्न होता है)
अनु + भू → अनुभवति (अनुभव करता है)
परि + भू → परिभवति (तिरस्कार करता है)
परा + भू → पराभवति („ „ , हराता है)
अभि + भू → अभिभवति („ „)

धा (डुधाञ्) धारणपोषणयोः (धारण व पोषण करना)

सम् + धा → सन्दधाति, सन्धत्ते (सन्धि करता है)
वि + धा → विदधाति, विधत्ते (करता है)
अभि + धा → अभिदधाति, अभिधत्ते (कहता है)
नि + धा → निदधाति, निधत्ते (रखता है)
अनु + सम् + धा → अनुसन्दधाति, अनुसन्धत्ते (खोज करता है)
सम् + आ + धा → समादधाति, समाधत्ते (समाधान करता है)

गम् (गम्लृ गतौ) धातु = जाना

(गम् को गच्छ आदेश)

आ + गम् → आगच्छति (आता है)
अव + गम् → अवगच्छति (जानता है)
उप + गम् → उपगच्छति (समीप जाता है)
अनु + गम् → अनुगच्छति (साथ–साथ जाता है)
निर् + गम् → निर्गच्छति (निकलता है)
उद् + गम् → उद्गच्छति (ऊपर निकलता है)
अधि + गम् → अधिगच्छति (प्राप्त करता है)
सम् + गम् → सङ्गच्छति (मिलता है)
अप + गम् → अपगच्छति (दूर हटता है)
प्रति + आ + गम् → प्रत्यागच्छति (लौटकर आता है)

चि (चिञ् चयने) धातु = चुनना

निस् + चि → निश्चिनोति (निश्चय करना है)
सम् + चि → सञ्चिनोति (इकट्ठा करता है)
अव + चि → अवचिनोति (चुनता है)
परि + चि → परिचिनोति (परिचय करता है)
वि + चि → विचिनोति (तलाशी लेता है, चुनता है)

दिश् (दिश अतिसर्जने) धातु = त्याग करना

आ + दिश् → आदिशति (आदेश देता है)
उप + दिश् → उपदिशति (उपदेश देता है)
निर् + दिश् → निर्दिशति (निर्देश देता है)
सम् + दिश् → सन्दिशति (सन्देश देता है)
अति + दिश् → अतिदिशति (देता है)
वि + अप + दिश् → व्यपदिशति (बहाना बनाता है)
प्रति + आ + दिश् → प्रत्यादिशति (खण्डन करता है)
अधि + आ + दिश् → अध्यादिशति (अध्यादेश देता है)

Scanned by CamScanner

पद् (पद गतौ) धातु - (जानना, या जाना)

निस् + पद् → निष्पद्यते (निष्पादित/पूर्ण होता है)
उद् + पद् → उत्पद्यते (उत्पन्न होता है)
वि + पद् → विपद्यते (विपत्ति में होता है)
उप + पद् → उपपद्यते (स्वीकार करता है)
सम् + पद् → सम्पद्यते (सम्पन्न होता है)
प्र + पद् → प्रपद्यते (प्राप्त करता है)
प्रति + पद् → प्रतिपद्यते (प्राप्त करता है)

वृत् (वृतु वर्तने) धातु = होना

प्र + वृत् → प्रवर्तते (प्रवृत्त होता है)
अभि + वृत् → अभिवर्तते (सामने आता है)
अनु + वृत् → अनुवर्तते (अनुकरण करता है)
परि + वृत् → परिवर्तते (बदलता है)
अभि + नि + वृत् → अभिनिवर्तते (लौटता है)
प्रति + नि + वृत् → प्रतिनिवर्तते (लौटता है)
सम् + आ + वृत् → समावर्तते (पढ़ाई करके गुरुकुल से लौटता है)

नी (णीञ् प्रापणे) धातु = ले जाना

अनु + नी → अनुनयति (मनाता है)
वि + नी → विनयति (विनय करता है)
निर् + नी → निर्णयति (निर्णय करता है)
अभि + नी → अभिनयति (नाटक करता है)
उप + नी → उपनयति/ उपनयते (समीप ले जाता है, उपनयन संस्कार करता है)
आ + नी → आनयति (लाता है)
उद् + नी → उन्नयति (ऊपर ले जाता है)
अप + नी → अपनयति (दूर करता है)
प्र + नी → प्रणयति (प्रेम करता है)
परि + नी → परिणयति (विवाह करता है)

अभ्यासार्थ प्रश्न

(उपसर्ग)

1. प्रादि कितने है ?
(अ) 20 (ब) 21
(स) 22 (द) 24 ( )

2. प्रादि में नही है–
(अ) प्र (ब) प्रा
(स) अप (द) सम् ( )

3. प्रादि के साथ किसका योग होने पर ही, वे उपसर्ग होंगे–
(अ) क्रिया का (ब) कर्ता का
(स) कर्म का (द) अव्यय का ( )

4. वेदों में उपसर्ग प्रयुक्त होते है–
(अ) धातु से पहले (ब) धातु के बाद में
(स) बीच में (द) तीनों जगह ( )

5. जि धातु से पहले किस उपसर्ग के रहने पर वह आत्मनेपदी धातु हो जाती है–
(अ) वि (ब) परा
(स) अप (द) वि, परा दोनों ( )

6. 'व्यायामः' में उपसर्ग हैं–
(अ) एक (ब) एक भी नहीं
(स) तीन (द) दो ( )

7. उपसर्गों को कहा जाता है–
(अ) गति (ब) अव्यय
(स) गति, अव्यय (द) निपात ( )

8. 'तिरस्कार करता है' - अर्थ में पद होगा–
(अ) परिभवति (ब) पराभवति
(स) अनुभवति (द) संभवति ( )

9. 'व्याकरणम्' में उपसर्ग नहीं है–
(अ) व्या (ब) वि
(स) आङ् (द) वि + आङ् ( )

10. 'विहारः' का तात्पर्य है–
(अ) आघात (ब) भ्रमण
(स) भक्षण (द) वध ( )

11. 'संस्कृतम्' में उपसर्ग है–
(अ) सम (ब) संस्
(स) स (द) सम् ( )

12. उपसर्गयुक्त पद नहीं है–
(अ) उपकृष्णम् (ब) उपकारः
(स) अपगच्छति (द) प्रकारः ( )

13. 'संहरति' से तात्पर्य है–
(अ) लाना (ब) त्यागना
(स) नष्ट करना (द) खाना ( )

14. किस समूह में प्रादि नहीं है–
(अ) प्र, परा, सम्,अनु
(ब) अव, निस्, निर्, दुस्
(स) वि, नि, अभि, अपि
(द) अति, प्रति, परि, सम ( )

15. 'अभ्यवहरति' में उपसर्ग है–
(अ) अभि (ब) अव
(स) अभ्य (द) अभि + अव ( )

16. 'कहने' अर्थ में रूप होगा–
(अ) अभिधत्ते (ब) अभिदधाति
(स) विदधाति (द) अ, ब दोनों ( )

17. 'प्रतिष्ठते' से तात्पर्य है–
(अ) प्रतिष्ठा (ब) उत्थान
(स) प्रस्थान (द) मिलन ( )

18. 'उपसंहरति' से तात्पर्य है–
(अ) भूखा रहना (ब) उपहार देना
(स) समीप जाना (द) इकट्ठा करना ( )

19. 'पूजा करने' अर्थ में स्था धातु से रूप होगा–
(अ) अनुतिष्ठति (ब) उत्तिष्ठति
(स) प्रतिष्ठते (द) उपतिष्ठते ( )

20. 'उपपद्यते' से तात्पर्य है–
(अ) स्वीकार करना (ब) उत्पन्न होना
(स) अनुकरण करना (द) सम्पन्न होना ( )

21. 'परिहरति' से तात्पर्य है–
(अ) अनुकरण (ब) भ्रमण
(स) खाना (द) त्यागना ( )

23. धातु से पहले कितने उपसर्ग लगाये जा सकते है–
(अ) एक (ब) दो
(स) एकाधिक (द) एक या अधिक ( )

24. 'जानने' के अर्थ में पद होगा–
(अ) आगच्छति (ब) उपगच्छति
(स) अवगच्छति (द) अनुगच्छति ( )

25. 'परिचय करता है' के अर्थ में पद होगा–
(अ) परिचिनोति (ब) विचिनोति
(स) अवचिनोति (द) सञ्चिनोति ( )

26. लौकिक प्रक्रिया में उपसर्ग, धातु से लगाया जाता है–
(अ) अन्त में (ब) पहले
(स) बीच में (द) तीनों जगह ( )

27. उपसर्ग रहित पद है–
(अ) विरागः (ब) अतिरागः
(स) प्रतिरागः (द) परागः ( )

28. संस्कृति में उपसर्ग है–
(अ) सम् (ब) स
(स) संस् (द) कृ ( )

29. निर्गताः में उपसर्ग है–
(अ) निर् (ब) निस्
(स) नि (द) नी ( )

30. व्यायामः में उपसर्ग है–
(अ) वि (ब) आ
(स) वि + आ (द) व्या ( )

उत्तर तालिका

(1)	स	(2)	ब	(3)	अ	(4)	द	(5)	द	(6)	द	(7)	अ	(8)	अ	(9)	अ	(10)	ब
(11)	द	(12)	अ	(13)	स	(14)	द	(15)	द	(16)	द	(17)	स	(18)	द	(19)	द	(20)	अ
(21)	द	(22)	द	(23)	द	(24)	स	(25)	अ	(26)	ब	(27)	द	(28)	अ	(29)	अ	(30)	स

Scanned by CamScanner

अध्याय 11

अशुद्धि-संशोधन

सन्धिगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप
अत्योक्तिः	अत्युक्तिः
उपरोक्तम्	उपर्युक्तम्
मनज्ञः	मनोज्ञः
यशगानम्	यशोगानम्
यशलाभः	यशोलाभः
रजगुणः	रजोगुणः
तमगुणः	तमोगुणः
मनहरः	मनोहरः
पयोपानम्	पयःपानम्
अन्तकरणम्	अन्तःकरणम्
अधोपतनम्	अधःपतनम्
प्रातकालम्	प्रातःकालम्
छत्र छाया	छत्रच्छाया
अन्तर्राष्ट्रियम्	अन्ताराष्ट्रियम्
मनवाञ्छितम्	मनोवाञ्छितम्

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप
मनोकामना	मनःकामना
पुलिङ्गम्	पुँल्लिङ्गम्/पुंलिङ्गम्
सदोपदेशः	सदुपदेशः
निरोपमा	निरुपम
निरवः	नीरवः
निरसः	नीरसः
निरोगः	नीरोगः
निरोत्साही	निरुत्साहः
आशिर्वादः	आशीर्वादः
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
अतैव	अत एव
संस्कृतछात्रः	संस्कृतच्छात्रः
पुनर्रचना	पुना रचना
पुनः रोषः	पुना रोषः
अन्तः राज्यीयम्	अन्ताराज्यीयम्
पुनः रूपम्	पुना रूपम्

समासगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	
पथप्रदर्शकः	पथिप्रदर्शकः	(पथिन् शब्द का समास)
पथप्रेरकः	पथिप्रेरकः	(पथिन् शब्द का समास)
विषयनिष्ठम्	विषयस्थम्	(विषय पद, न कि विषयन्)
कर्तृनिष्ठम्	कर्तृस्थम्	(कर्तृ मूल पद, न कि कर्तृन्)
महिमायुक्तम्	महिमयुक्तम्	(मूल पद महिमन्)
गरिमायुक्तम्	गरिमयुक्तम्	(मूल पद गरिमन्)
मंत्रीमण्डलम्	मंत्रिमण्डलम्	(मंत्रिन्+ मण्डल)
श्रोतागणः	श्रोतृगणः	(श्रोतृ + गण)
वक्तागणः	वक्तृगणः	(वक्तृ + गण)

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	
नेतागणः	नेतृगणः	(नेतृ + गण)
स्वामीभक्तः	स्वामिभक्तः	(स्वामिन् + भक्त)
योगीराजः	योगिराजः	(योगिन् + राज)
महाराजा	महाराजः	(समासान्त प्रत्यय होने पर अकारान्त)
भ्रातागणः	भ्रातृगणः	(भ्रातृ + गण)
माताहीनः	मातृहीनः	(मातृ + हीन)
जगतजननी	जगज्जननी	(जगत् + जननी)
भगवतीगीता	भगवद्गीता	(भगवत् + गीता)
पक्षीवृन्दः	पक्षिवृन्दः	(पक्षिन् + वृन्द)

शास्त्रीपरीक्षा	शास्त्रिपरीक्षा	(शास्त्रिन् + परीक्षा)
शास्त्रीमहोदयः	शास्त्रिमहोदयः	(शास्त्रिन् + महोदय)
दम्पतिः	दम्पती, जम्पती, जायापती	
दृढनिश्चयी	दृढनिश्चयः	
सशंकितः	सशंकः	
निर्दयी	निर्दयः	

सानन्दितः	सानन्दः
निरपराधी	निरपराधः
पतीव्रता	पतिव्रता
प्रत्येकस्य	प्रत्येकम्
मीनाक्षिणी	मीनाक्षी

प्रत्ययगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	
महत्वम्	महत्त्वम्	(महत् + त्व)
सत्वम्	सत्त्वम्	(सत् + त्व)
तत्वम्	तत्त्वम्	(तत् + त्व)
कित्वम्	कित्त्वम्	(कित् + त्वम्)
छित्वा	छित्त्वा	(छिद् + त्वा)
दत्वा	दत्त्वा	(दद् + त्वा)
उत्पतिः	उत्पत्तिः	(उत्पत् + ति)
प्रवृतिः	प्रवृत्तिः	(प्रवृत् + ति)
व्यवहारिकः	व्यावहारिक :	(आदिवृद्धि)
इतिहासिकः	ऐतिहासिकः	(आदिवृद्धि)
सप्ताहिकः	साप्ताहिकः	(आदिवृद्धि)
भूगोलिकः	भौगोलिकः	(आदिवृद्धि)
एकान्तिकः	ऐकान्तिकः	(आदिवृद्धि)
अलोकिकः	अलौकिकः	(आदिवृद्धि)
परलोकिकः	पारलौकिकः	(आदिवृद्धि)
ऐश्वर्यता	ऐश्वर्यम्/ईश्वरता	
प्राधान्यता	प्राधान्यम्/प्रधानता	
प्रावीण्यता	प्रावीण्यम्/प्रवीणता	
वैधव्यता	वैधव्यम्	
बुद्धिमानता	बुद्धिमत्ता	
आरोग्यता	आरोग्यम्	
औदार्यता	औदार्यम्/उदारता	
साफल्यता	साफल्यम्	
सृजनम्	सर्जनम्	(सृज् धातु + ल्युट् → गुण)
स्थायीत्वम्	स्थायित्वम्	(स्थायिन् + त्वम्)
प्रवृत्तनीयम्	प्रवर्तनीयम्	(वृत् + अनीयर् → गुण)
अनुगृहः	अनुग्रहः	(सम्प्रसारण नहीं होगा)
अनुग्रहितः	अनुगृहीतः	(क्त प्रत्यय रहने पर सम्प्रसारण होगा)

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अन्ताक्षरी	अन्त्याक्षरी
पूज्यनीयः	पूजनीयः/पूज्यः
मान्यनीयः	माननीयः/मान्यः
संग्रहितः	संगृहीतः
सृजनात्मकम्	सर्जनात्मकम्
अत्रतः	अत्र/अतः
एकत्रितः	एकत्र
तत्रतः	तत्र/ततः
उपरितः	उपरिष्टात्
पुनीतम्	पूतम्
पाश्चिमात्या:	पाश्चात्याः
औत्तरेयाः	औत्तराहाः
राष्ट्रीयः	राष्ट्रियः
संस्कृतिकरणम्	संस्कृतीकरणम्
संक्षिप्तिकरणम्	संक्षिप्तीकरणम्
शुद्धिकरणम्	शुद्धीकरणम्
श्रीमान	श्रीमान्
महान	महान्
बुद्धिमान	बुद्धिमान्
श्रीमतिः	श्रीमती
कवियत्री	कवयित्री
पैत्रिकः	पैतृकः
विशिष्ठः	विशिष्टः
पत्नि	पत्नी
संगठनम्	सङ्घटनम्
आकर्षितः	आकृष्टः
क्रोधितः	क्रुद्धः
संयमितः	संयतः
त्रसितः	त्रस्तः
ग्रसितः	ग्रस्तः

Scanned by CamScanner

उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	
उज्जवलः	उज्ज्वलः	(उद् + ज्वलः)
प्रज्ज्वलः	प्रज्वलः	(प्र+ज्वलः)
सन्यासी	संन्यासी	(सम् + न्यासी)
परिक्षा	परीक्षा	(परि + ईक्षा)
उलङ्घनम्	उल्लङ्घनम्	(उद् + लङ्घनम्)

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	
अनुदितम्	अनूदितम्	(अनु + उदित)
दुखम्	दुःखम्	(दुर् + खम्)
निश्वासः	निःश्वासः/निश्श्वासः	(निर् + श्वास)
अतिन्द्रियम्	अतीन्द्रियम्	(अति + इन्द्रिय)
निरिक्षणम्	निरीक्षणम्	(निर् + ईक्षण)

वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप	
1. रमा **वर्षायां** क्रीडति	रमा वर्षासु क्रीडति	(वर्षा-नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)
2. देवदत्तः **शक्तुं** पिबति	देवदत्तः शक्तून् पिबति	(सक्तू-नित्य बहुवचन व पुँल्लिङ्ग)
3. रामस्य **दारा** सीता	रामस्य दाराः सीता	(दारा-नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)
4. **अक्षतं** समर्पयामि	अक्षतान् समर्पयामि	(अक्षत - नित्य बहुवचन व पुँल्लिङ्ग)
5. **प्रजा आगतवती**	प्रजाः आगतवत्यः	(प्रजा - नित्य बहुवचन व स्त्रीलिङ्ग)
6. सः **प्राणम्** अत्यजत्	सः प्राणान् अत्यजत्	(प्राण-नित्य बहुवचन व पुँल्लिङ्ग)

- **ध्यातव्य–** कुछ नित्य द्विवचन शब्द - (पाद, कर्ण, बाहु, चक्षुष् और चरण)

लिङ्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप
1. मया विसर्गसन्धिः **पठिता**	मया विसर्गसन्धिः पठितः।
2. तस्याः ध्वनिः **मधुरा**	तस्याः ध्वनिः मधुरः।
3. वृत्तस्य परिधिः **का** ?	वृत्तस्य परिधिः कः?
4. बीजेभ्यः **अङ्कुराणि** उत्पद्यन्ते	बीजेभ्यः अङ्कुराः उत्पद्यन्ते।
5. तस्य महिमा **उत्कृष्टा**	तस्य महिमा उत्कृष्टः।
6. देशस्य गरिमा **रक्षणीया**	देशस्य गरिमा रक्षणीयः।
7. कालिदासः **कविरत्नः** आसीत्	कालिदासः कविरत्नम् आसीत्।
8. हस्ताद् **दर्पणं** पतितम्	हस्ताद् दर्पणः पतितः

- **कुछ पद उभयलिङ्गी (पुँल्लिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग) होते हैं–**

मोदकः, मोदकम्	शकटः, शकटम्	दिवसः दिवसम्
कण्टकः, कण्टकम्	चषकः, चषकम्	ध्वजः, ध्वजम्
मण्डपः, मण्डपम्	शाकः, शाकम्	तीर्थः, तीर्थम्
पीठः, पीठम्	नीडः, नीडम्	मण्डपः मण्डपम्
तडागः, तडागम्	पङ्कः, पङ्कम्	यूपः, यूपम्
सूत्रः, सूत्रम्	पात्रः, पात्रम्	देहः, देहम्

- मित्र शब्द का 'सखा' अर्थ होने पर नपुंसकलिङ्ग तथा सूर्य अर्थ होने पर पुँल्लिङ्ग में प्रयोग होता है।

मम मित्रं विनोदः। मित्रः दिनं करोति।

कारकगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप	
सः बसयानात् आगतवान्	बसयानेन	(बसयान करण है)
कालिदासात् लिखितः	कालिदासेन	(कालिदास अनुक्तकर्ता है)
गोः दुग्धं दोग्धि	गां दुग्धं दोग्धि	(अकथित कर्म)
रमेशात् रुप्यकाणि याचते	रमेशम्	(अकथित कर्म)
तण्डुलैः ओदनं पचति	तण्डुलान्	(अकथित कर्म)
छात्रेभ्यः शतं दण्डयति	छात्रान्	(अकथित कर्म)
रामात् मार्गं पृच्छति	रामम्	(अकथित कर्म)
राकेशात् कुशलं पृच्छति	राकेशम्	(अकथित कर्म)
विनोदः महिष्याः दुग्धं दोग्धि	महिषीम्	(अकथित कर्म)
रविः मुकेशात् शतं रुप्यकाणि जयति	मुकेशम्	(अकथित कर्म)
मोहनः शिवात् रुप्यकाणि मुष्णाति	शिवम्	(अकथित कर्म)
दिनेशः अनिलात् रुप्यकाणि आनयति	अनिलम्	(अकथित कर्म)
ग्रामाद् अजां नयति रमेशः	ग्रामम्	(अकथित कर्म)
क्षेत्रात् पुष्पाणि चोरयति	क्षेत्रम्	(अकथित कर्म)
शिवः पर्यङ्के अधिशेते	पर्यङ्कम्	('अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' से कर्म)
मोहनः कक्षे अध्यास्ते	कक्षम्	('अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' से कर्म)
हरिः बैकुण्ठे अधितिष्ठति	बैकुण्ठम्	('अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' से कर्म)
हरिः बैकुण्ठं शेते	बैकुण्ठे	(आधार)
मोहनः कक्षम् आस्ते	कक्षे	(आधार)
सुरेशः कक्षायाम् अधिशेते	कक्षाम्	('अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म' से कर्म)
अहं गृहे उपवसामि	गृहम्	(उपान्वध्याङ्वसः)
रविः नगरे अनुवसति	नगरम्	(उपान्वध्याङ्वसः)
विनोदः क्षेत्रेषु अधिवसति	क्षेत्रान्	(उपान्वध्याङ्वसः)
सीता ग्रामे आवसति	ग्रामम्	(उपान्वध्याङ्वसः)
लता ग्रामं वसति	ग्रामे	(आधारोऽधिकरणम्)
कृष्णस्य सर्वतः मित्राणि सन्ति	कृष्णम्	(उपपदद्वितीया–उभसर्वतसोः ....)
ग्रामस्य सर्वतः वनम् अस्ति	ग्रामम्	(उपपदद्वितीया–उभसर्वतसोः ....)
दुर्जनाय धिक्	दुर्जनम्	(उपपदद्वितीया–उभसर्वतसोः ....)
वने सर्वतः वृक्षाः सन्ति	वनम्	(उपपदद्वितीया–उभसर्वतसोः ....)
लोकस्य उपर्युपरि भगवान्	लोकम्	(उपपदद्वितीया–उभसर्वतसोः ....)
ग्रामस्य निकषा वनम्	ग्रामम्	(अभितःपरितःसमया .....)
नगरस्य समया उद्योगः	नगरम्	(अभितःपरितःसमया .....)
मासाय अधीते मोहनः	मासम्	(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे)
क्रोशाय कुटिला नदी	क्रोशम्	(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे)
शङ्करस्य सह पार्वती आगच्छति	शङ्करेण	(सहयुक्तेऽप्रधाने)
पुत्रस्य सह पिता गच्छति	पुत्रेण	(सहयुक्तेऽप्रधाने)

Scanned by CamScanner

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप	
मुख्यमन्त्रिण: सह राष्ट्रपति: आगत:	- मुख्यमंत्रिणा	(सहयुक्तेऽप्रधाने)
नेत्रात् काण:	- नेत्रेण	(येनाङ्गविकार:)
पादात् खञ्ज:	- पादेन	(येनाङ्गविकार:)
नृप: विप्रं गां ददाति	- विप्राय	(सम्प्रदान-कर्मणा यमभिप्रैति)
पिता बालकं मोदकं ददाति	- बालकाय	(सम्प्रदान-कर्मणा यमभिप्रैति)
बालकं मोदकं रोचते	- बालकाय	(रुच्यर्थानां प्रीयमाण:)
मां शयनं रोचते	- मह्यम्	(रुच्यर्थानां प्रीयमाण:)
शिवात् क्रुध्यति	- शिवाय	(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप:)
शत्रौ क्रुध्यति	- शत्रवे	(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप:)
राकेश: रवौ क्रुध्यति	- रवये	(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप:)
विनोद: सुरेशे असूयति	- सुरेशाय	(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप:)
श्रीगणेशाय नमस्करोति	- श्रीगणेशम्	(कर्म)
गुरवे नमस्करोति	- गुरुम्	(कर्म)
शिवं नम:	- शिवाय	(नम:स्वस्ति .....)
अश्वेन पतति	- अश्वात्	(अपादान)
हस्तेन पतितं फलम्	- हस्तात्	(अपादान)
हिमालयेन गङ्गा उद्भवति	- हिमालयात्	(अपादान)
क्रोधेन सम्मोह: जायते	- क्रोधात्	(अपादान)
कामेन क्रोध: जायते	- कामात्	(अपादान)
कृष्णस्य ऋते गतिर्नास्ति	- कृष्णात्	(उपपद पञ्चमी)
ज्ञानस्य ऋते न मुक्ति:	- ज्ञानात्	(उपपद पञ्चमी)
स: छात्रेण इतर: चौर:	- छात्रात्	(उपपद पञ्चमी)
ग्रामस्य पूर्वं वनम्	- ग्रामात्	(उपपद पञ्चमी)
चैत्रेण पूर्व: फाल्गुन:	- चैत्रात्	(उपपद पञ्चमी)
कृष्ण: मातुलाय असाधु:	- मातुले	(साध्वसाधुप्रयोगे च)
कृष्ण: मात्रे साधु:	- मातरि	(साध्वसाधुप्रयोगे च)
नृप: दुर्जनाय असाधु:	- दुर्जने	(साध्वसाधुप्रयोगे च)
नृप: सज्जनाय साधु:	- सज्जने	(साध्वसाधुप्रयोगे च)
धनाय बालम् अपहरति	- धने	(निमित्तात्कर्मयोगे)
नीरस्य उपर्युपरि स्नेहबिन्दव: तरन्ति	- नीरम्	(उपपदद्वितीया)
मृग: मार्गे अधिशेते	- मार्गम्	(अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म से कर्म)
गुरव: शिष्ये कुप्यन्ति	- शिष्याय	(सम्प्रदान)
मोहन: कर्णयो: बधिर:	- कर्णाभ्याम्	(येनाङ्गविकार:)
प्रासादे परित: वृक्षा: सन्ति	- प्रासादम्	(उपपदद्वितीया)
अहं गुरो: सह गमिष्यामि	- गुरुणा	(सहयुक्तेऽप्रधाने)
पापिनं न धनं दद्यात्	- पापिने	(सम्प्रदान)
मृत्युना न परं भयम्	- मृत्यो:	(पञ्चमी)
बालक: सिंहेन भीत:	- सिंहात्	(पञ्चमी)
शिष्य: गुरुशालायाम् अध्यास्ते	- गुरुशालाम्	(अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्म)
धर्मे ऋते न सुखम्	- धर्मात्	(उपपद पञ्चमी)

अशुद्ध (अपाणिनीय) रूप	शुद्ध (पाणिनीय) रूप	
बाला: स्वमातरि क्रुध्यन्ति	- स्वमात्रे	(सम्प्रदान)
ग्रामस्य निकषा सर: वर्तते	- ग्रामम्	(उपपद द्वितीया)
मोहनं सङ्गीतं प्रतिभाति	- मोहनाय	(सम्प्रदान)
क्रोशेन कुटिला सरित्	- क्रोशम्	(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे)
कर्ण: कृष्णाय अभिक्रुध्यति	- कृष्णम्	(क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयो: कर्म)
शिव: किराताय अभिक्रुध्यति	- किरातम्	(क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयो: कर्म)
मौनेन सत्यं विशिष्यते	- मौनात्	(पञ्चमी विभक्ते)
रामस्य विना गतिर्न	- रामं/रामेण/रामात्	(पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्)
दुर्गस्य परित: परिखा	- दुर्गम्	(परित: के योग में द्वितीया)
आचार्य: आसने अध्यास्ते	- आसनम्	(अधिशीङ्.)
यतय: गृहे नाधितिष्ठन्ति	- गृहम्	(अधिशीङ्.)
ब्रह्मचारी शय्यायाम् अधिशेते	- शय्याम्	(अधिशीङ्.)
चर्मणे द्वीपिनं हन्ति	- चर्मणि	(निमित्तात्कर्मयोगे)
दन्ताभ्यां गजं हन्ति	- दन्तयो:	(निमित्तात्कर्मयोगे)

लिङ्गनिर्धारण

पुँल्लिङ्ग

- **घञ् प्रत्ययान्त** - पाक:, राग:, पाठ:, नाश:, दाह:।
- **अप् प्रत्ययान्त** - कर:, गर:, यव:, लव:, पव:।
- **अच् प्रत्ययान्त** - चय:, जय:, क्षय: (अपवाद-भयम्)
- **नङ् प्रत्ययान्त** - यज्ञ:, विश्न:, प्रश्न:, यत्न: (अपवाद-याच्ञा)
- **कि प्रत्ययान्त** - सन्धि:, विधि:, निधि:, व्याधि:, आधि:, प्रधि:।

स्त्रीलिङ्ग

- **क्तिन् प्रत्ययान्त** - स्तुति:, कृति:, प्रसूति:, दृष्टि:।
- **'ई' प्रत्ययान्त** - अवी:, तरी:, तन्त्री:, लक्ष्मी:
- **ऊङ् प्रत्ययान्त** - कुरू:, पङ्गू:, श्वश्रू:।
- **आप् प्रत्ययान्त (टाप् डाप् चाप्)** - विद्या, लता, जरा, त्वरा आदि।
- विंशति: से नवनवति: तक स्त्रीलिङ्ग। (एकोनविंशति: भी स्त्रीलिङ्ग में)
- **तल् प्रत्ययान्त** - शुक्लता, जडता, मृदुता, जनता, ग्रामता, देवता
- **मि और नि प्रत्ययान्त** - भूमि:, हानि:, ग्लानि:।
- **अप्सरस्** - नित्य बहुवचन एवं स्त्रीलिङ्ग

नपुंसकलिङ्ग

- **भाव में ल्युट् प्रत्ययान्त** - गमनम्, हसनम्, पठनम्।
- **त्व प्रत्ययान्त** - शुक्लत्वम्।
- **ष्यञ् प्रत्ययान्त** - साफल्यम्, शौक्ल्यम्, जाड्यम्।
- **अव्ययीभाव** - अधिहरि।
- **समाहार द्वन्द्व** - पाणिपादम्।
- **संख्यापूर्वा रात्रि:** - द्विरात्रम्, चतूरात्रम्, त्रिरात्रम्।

Scanned by CamScanner

वाक्यशुद्धिः

भाषा को अभिव्यक्त करने के लिए शुद्ध उच्चारण की जितनी उपादेयता है, उतनी ही उपादेयता रचना की दृष्टि से शुद्ध/परिशुद्ध लेखन की है। जिस प्रकार हम भाषा के मानक स्वरूप (शुद्ध रूप) का उच्चारण नहीं करेंगे तो हम अपने विचारों एवं भावों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं, उसी प्रकार परिशुद्ध लेखन के बिना भी अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक भाषा के मानक स्वरूप को जानने के लिए तत्सम्बन्धित व्याकरण आवश्यक होती है, क्योंकि अधिकांशतः अशुद्धियाँ व्याकरणगत ही होती हैं। इस प्रकार संस्कृत भाषा की भी व्याकरण है, जिसे पाणिनीय व्याकरण के नाम से अभिहित किया जाता है। शुद्ध स्वरूप लेखन हेतु व्याकरण अंश सन्धि, कारक, समास तथा धातुरूपादि का ज्ञान होना परमावश्यक है।

प्रथमा-विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) प्राणिनि प्राण: अस्ति। (प्राणी में प्राण हैं।)	(1) प्राणिनि प्राणाः सन्ति। (प्राण नित्य बहुवचन।)
(2) ऋषय: मन्त्रद्रष्टा: सन्ति। (ऋषि मन्त्रों के द्रष्टा हैं।)	(2) ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः सन्ति। (ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द।)
(3) मन्त्रद्रष्टारेषु किञ्चिद् महर्षि: भवति। (मन्त्र द्रष्टाओं में कोई महर्षि होता है।)	(3) मन्त्रद्रष्टारेषु कश्चिद् महर्षिः भवति। (विशेष्यानुसार लिङ्ग।)
(4) कृष्णबलरामौ योद्धौ आस्ताम्। (कृष्ण और बलराम योद्धा थे।)	(4) कृष्णबलरामौ योद्धारौ आस्ताम्। (ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द।)
(5) विद्याधनं सर्वधनप्रधान:। (विद्या सभी धनों में श्रेष्ठ है।)	(5) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्। (विशेष्यानुसार लिङ्ग।)
(6) किं किं न साधयन्ति कल्पलतेव विद्या? (कल्पलतावत् विद्या क्या-क्या नहीं साधती?)	(6) किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या? (कर्त्ता एकवचन।)
(7) रामायणी रम्यं कथा। (रामायणी कथा सुन्दर है।)	(7) रामायणी रम्या कथा। (विशेष्य के अनुसार लिङ्ग।)
(8) कियन्त: बालिका: गतवत्य:। (कितनी बालिकाएँ चली गई।)	(8) कियत्यः बालिकाः गतवत्यः। (संख्यावाची विशेषण विशेष्यानुसार।)
(9) राजस्थाने बहूनि भूभृत: अजायन्त। (राजस्थान में बहुत राजा हुए।)	(9) राजस्थाने बहवः भूभृतः अजायन्त। (विशेष्यानुसार लिङ्ग।)
(10) त्वं किं किं लभते? (तुम क्या-क्या प्राप्त करते हो।)	(10) त्वं किं किं लभसे? (मध्यम पुरुषैकवचन)
(11) वयं वृद्धान् सेवन्ते। (हम वृद्धों की सेवा करते हैं।)	(11) वयं वृद्धान् सेवामहे। (उत्तमपुरुष बहुवचन।)
(12) शीतल: वारि सर्वेभ्य: रोचते। (ठण्डा जल सभी को अच्छा लगता है।)	(12) शीतलं वारि सर्वेभ्यः रोचते। (विशेष्यानुसार लिङ्ग।)
(13) कालिदासस्य कलत्रं गुणवती आसीत्। (कालिदास की पत्नी गुणवती थी।)	(13) कालिदासस्य कलत्रं गुणवत् आसीत्। (कलत्र नपुंसकलिङ्ग है।)

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(14) एते कन्या: प्रश्नं कुर्वन्ति। (ये कन्याएँ प्रश्न करती हैं।)	(14) एताः कन्याः प्रश्नं कुर्वन्ति। (स्त्रीलिङ्ग बहुवचन ''एताः''।)
(15) इयम् आत्मा शाश्वत:। (यह आत्मा शाश्वत है।)	(15) अयम् आत्मा शाश्वतः। (आत्मा पुँल्लिङ्ग शब्द है।)
(16) राममहिमां श्रुत्वा पुनीमहे। (राममहिमा सुनकर पवित्र करते हैं।)	(16) राममहिमानं श्रुत्वा पुनीमहे। (महिमन् आत्मवत् पुँल्लिङ्ग शब्द है।)
(17) दम्पती शिवम् उपासते। (पति-पत्नी शिव की उपासना करते हैं।)	(17) दम्पती शिवम् उपासेते। (दम्पती द्विवचन है।)
(18) माते! क्व याति। (माता! कहाँ जा रही हो।)	(18) मातः! क्व याति। (सम्बोधन में 'मातः'।)
(19) वाण्येकम् अलङ्करोति। (एक वाणी अलङ्कार करती है।)	(19) वाण्येका अलङ्करोति। (वाणी स्त्रीलिङ्ग है अतः एका भी स्त्रीलिंग)
(20) प्रभु:! यथेच्छति तथा कुरुताम्। (प्रभु! जैसा चाहो वैसा करो।)	(20) प्रभो! यथेच्छति तथा कुरुताम्। (प्रभु का सम्बोधन 'प्रभो'।)

द्वितीया विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) देशभक्ता: स्वर्गे अगच्छन्। (देशभक्त स्वर्ग में चले गये।)	(1) देशभक्ताः स्वर्गं अगच्छन्। (गत्यर्थक धातु।)
(2) भूभृत: भगवते प्रणमन्ति। (राजा भगवान् को प्रणाम करते हैं।)	(2) भूभृतः भगवन्तं प्रणमन्ति। (ईप्सिततम कर्म।)
(3) ग्रामाद् अजां नयति। (गाँव में बकरी ले जाता है।)	(3) ग्रामम् अजां नयति। (नी धातु के योग में अकथित कर्म)
(4) सेनापति राज्ञ: धनं हरति। (सेनापति राजा से धन चुराता है।)	(4) सेनापतिः राजानं धनं हरति। (हृ धातु के योग में अकथित कर्म)
(5) भारवाहक: बसस्थानके भारं वहति। (कुली बसस्थान से भार वहता है।)	(5) भारवाहकः बसस्थानकं भारं वहति। (वह् धातु के योग में अकथित कर्म)
(6) दीनानां प्रति उदारता विधेया। (दीन लोगों के प्रति उदारता करनी चाहिए।)	(6) दीनान् प्रति उदारता विधेया। (प्रति के योग में द्वितीया।)
(7) पापाचारिण: नरके यान्ति। (पापाचारी नरक में जाते हैं।)	(7) पापाचारिणः नरकं यान्ति। (गत्यर्थक धातु के योग में।)
(8) पुण्यानि मनुष्यं स्वर्गे गमयन्ति। (पुण्य मनुष्य को स्वर्ग में ले जाते हैं।)	(8) पुण्यानि मनुष्यं स्वर्गं गमयन्ति। (ण्यन्त प्रयोग से द्वितीया।)
(9) गो: दोग्धि पय:। (गाय से दूध दुहता है।)	(9) गां दोग्धि पयः। (दुह् द्विकर्मक धातु के योग में।)
(10) देवदत्तात् शतं मुष्णाति। (देवदत्त से धन चुराता है।)	(10) देवदत्तं शतं मुष्णाति। (मुष् धातु के योग में अकथित कर्म)

Scanned by CamScanner

(11) मम गृहस्य अभितः उद्याने स्तः। (मेरे घर के दोनों ओर बगीचे हैं।)	(11) मम गृहम् अभितः उद्याने स्तः। (अभितः के योग में द्वितीया।)
(12) मम निकषा तिष्ठ। (मेरे पास बैठो।)	(12) मां निकषा तिष्ठ। (निकषा के योग में द्वितीया।)
(13) पुष्पस्य परितः भ्रमराः सन्ति। (पुष्प के चारों ओर भ्रमर हैं।)	(13) पुष्पं परितः भ्रमराः सन्ति। ('परितः' के योग में द्वितीया।)
(14) धिक् तस्याश्च तस्य च, मदनस्य च अस्याश्च मम च। (उसको, उसको, कामदेव को तथा इसको, मुझको धिक्कार।)	(14) धिक् ताञ्च तञ्च मदनञ्च इमाञ्च माञ्च। (धिक् के योग में द्वितीया।)
(15) धर्मस्य अन्तरेण गच्छति। (धर्म के बिना जाता है।)	(15) धर्मम् अन्तरेण गच्छति। (अन्तरेण के योग में द्वितीया।)
(16) वामनः राज्ञः भूमिम् अयाचत। (वामन ने राजा से भूमि माँगी।)	(16) वामनः राजानं भूमिम् अयाचत। (याच् धातु के योग में अकथित कर्म)
(17) लोकस्य अधोऽधः ईश्वरः। (लोक के नीचे-नीचे ईश्वर है।)	(17) लोकम् अधोऽधः ईश्वरः। (अधोऽधः के योग में।)
(18) गुरुः शिष्येभ्यः पाठं पाठयति। (गुरु शिष्यों को पाठ पढाता है।)	(18) गुरुः शिष्यान् पाठं पाठयति। (णिजन्त प्रयोग के कारण द्वितीया।)

तृतीया विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) रामः बाणात् रावणं मारितवान्। (राम ने बाण से रावण को मारा।)	(1) रामः बाणेन रावणं मारितवान्। (करण में तृतीया।)
(2) सः पुस्तकं पठ्यते। (वह पुस्तक पढ़ता है।)	(2) तेन पुस्तकं पठ्यते। (कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया।)
(3) लवः रूपे यज्ञदत्तेन सदृशः। (लव रूप से यज्ञदत्त की तरह है।)	(3) लवः रूपेण यज्ञदत्तेन सदृशः। (गुणवाचक शब्द में तृतीया।)
(4) मनसः ध्यानं करोति। (मन से ध्यान करता है।)	(4) मनसा ध्यानं करोति। (साधन में तृतीया।)
(5) पण्डितः गोत्राद् भारद्वाजः। (पण्डित गोत्र से भारद्वाज है।)	(5) पण्डितः गोत्रेण भारद्वाजः। (गोत्र से तृतीया।)
(6) अलम् अतिविस्तराय। (विस्तार रहने दो।)	(6) अलम् अतिविस्तरेण। "अलम्" के योग में तृतीया (केवल निषेधार्थक)
(7) पाण्डवानां सह द्रौपदी विराटनगरे उषितवती। (द्रौपदी विराटनगर में पाण्डवों के साथ रही।)	(7) पाण्डवैः सह द्रौपदी विराटनगरे उषितवती। (सह के योग में तृतीया।)
(8) दशभ्यः दिनेभ्यः पण्डितः जातः। (दश दिनों में पण्डित हो गया।)	(8) दशभिः दिनैः पण्डितः जातः। (अपवर्ग में तृतीया।)
(9) द्वादशभ्यः वर्षेभ्यः शङ्कराचार्यः भाष्यं कृतवान्। (बारह वर्ष में शङ्कराचार्य ने भाष्य पढ़ लिया था।)	(9) द्वादशभिः वर्षैः शङ्कराचार्यः भाष्यं कृतवान्। (अपवर्ग में तृतीया।)

(10) परशुरामः पराक्रमे विष्णुना सदृशः। (परशुराम पराक्रम में विष्णु की तरह हैं।)	(10) परशुरामः पराक्रमेण विष्णुना सदृशः। (गुणवाचक शब्द से तृतीया।)
(11) आवां पुस्तकानि अपठ्यन्त। (हम दोनों ने पुस्तक पढ़ी।)	(11) आवाभ्यां पुस्तकानि अपठ्यन्त। (कर्मवाच्य में कर्त्ता में तृतीया।)
(12) एकलव्यः धनुर्विद्यायाः आश्रमे उषितवान्। (एकलव्य धनुर्विद्या के लिए आश्रम में रहा।)	(12) एकलव्यः धनुर्विद्यया आश्रमे उषितवान्। (हेतु में तृतीया।)
(13) अलं महीपाल! तव श्रमात्। (महीपाल/राजा परिश्रम मत करो।)	(13) अलं महीपाल! तव श्रमेण। (निषेधार्थक अलम् के योग में तृतीया।)
(14) त्वं वानरस्य साकं वानरः प्रतीयसे। (तुम बन्दर के साथ बन्दर दिखते हो।)	(14) त्वं वानरेण साकं वानरः प्रतीयसे। (साकम् के योग में तृतीया।)
(15) धर्माद् हीनाः पशुभिः समानाः। (धर्म से हीन पशु तुल्य होते हैं।)	(15) धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः। (हीन के योग में तृतीया।)
(16) नखेभ्यः राक्षसः प्रतीयते। (नाखूनों से राक्षस लगता है।)	(16) नखैः राक्षसः प्रतीयते। (लक्षणवाचक में तृतीया।)
(17) गीता पृष्ठात् कुब्जा। (गीता पीठ से कुबडी है।)	(17) गीता पृष्ठेन कुब्जा। (अङ्ग विकार में अंगवाचक शब्द में तृतीया।)

चतुर्थी विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) राजा याचकान् वस्त्राणि ददाति। (राजा भिक्षुकों को वस्त्र देता है।)	(1) राजा याचकेभ्यः वस्त्राणि ददाति। (दा धातु के योग में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(2) रावणः विभीषणे क्रुध्यति। (रावण विभीषण पर क्रोध करता है।)	(2) रावणः विभीषणाय क्रुध्यति। (क्रुध् धातु के योग में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(3) त्वां रसगोलकं रोचते। (तुम को रसगुल्ला अच्छा लगता है।)	(3) तुभ्यं रसगोलकं रोचते। (रुच् धातु के योग में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(4) अशोकः वसुन्धरायाः असूयति। (अशोक वसुन्धरा से ईर्ष्या करता है।)	(4) अशोकः वसुन्धरायै असूयति। (असूय् के योग में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(5) युवां पितरौ पत्रं लिखथः। (तुम दोनों माता-पिता को पत्र लिखते हो।)	(5) युवां पितृभ्यां पत्रं लिखथः। (अभिप्रेतार्थ में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(6) पितॄन् स्वधा। (पितरों को स्वधा।)	(6) पितृभ्यः स्वधा। (स्वधा के योग में उपपद चतुर्थी।)
(7) अलं मल्लो मल्लात्। (पहलवान के लिए पहलवान् पर्याप्त हैं।)	(7) अलं मल्लो मल्लाय। (अलम् के योग में उपपद चतुर्थी (सामर्थ्यार्थ में))
(8) नृपतिः मन्त्रिणं ग्रन्थं समर्पयति। (राजा सेनापति को ग्रन्थ देता है।)	(8) नृपतिः मन्त्रिणे ग्रन्थं समर्पयति। (दानार्थे सम्प्रदान चतुर्थी।)
(9) पत्या शेते। (पति के लिए सोती है।)	(9) पत्ये शेते। (शयन अकर्मक क्रिया का अभिप्रेत पति है, अतः पति में सम्प्रदान चतुर्थी।)

Scanned by CamScanner

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(10) बालक: दुग्धं क्रन्दति। (बालक दूध के लिए रोता है।)	(10) बालक: दुग्धाय क्रन्दति। (प्रयोजन में चतुर्थी।)
(11) सर्वे धनं प्रयतन्ते। (सभी धन के लिए प्रयास करते हैं।)	(11) सर्वे धनाय प्रयतन्ते। (प्रयोजन में चतुर्थी।)
(12) पुत्र: सुखं भवेत्। (पुत्र के लिए सुख दो।)	(12) पुत्राय सुखं भवेत्। (सुख के योग में चतुर्थी।)
(13) कवयो: काव्यं रोचते। (दो कवियों को काव्य अच्छा लगता है।)	(13) कविभ्यां काव्यं रोचते। (रुच् के योग में सम्प्रदान चतुर्थी।)
(14) ग्रामीणा: दधि स्पृह्यति। (गाँव वालों को दही अच्छा लगता है।)	(14) ग्रामीणेभ्य: दधि स्पृहयति। (स्पृह् के योग में चतुर्थी।)
(15) नम: शिवम्। (शिव को नमस्कार।)	(15) नम: शिवाय। (नम: के योग में उपपद चतुर्थी।)
(16) दुर्जनानां सज्जन: शक्त:/समर्थ:। (दुर्जनों के लिए सज्जन पर्याप्त है।)	(16) दुर्जनेभ्य: सज्जन: शक्त:/समर्थ:। (शक्त/समर्थ के योग में उपपद चतुर्थी।)

पञ्चमी विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) पर्वते निर्झरिण्य: निस्सरन्ति। (पर्वत से झरने निकलते हैं।)	(1) पर्वताद् निर्झरिण्य: निस्सरन्ति। (अपादान में पञ्चमी।)
(2) पन्था: ग्रामस्य आगच्छति। (पथिक गाँव से आता है।)	(2) पन्था: ग्रामाद् आगच्छति। (अपादान में पञ्चमी।)
(3) राक्षसा: देवताभि: बिभ्यति। (राक्षस देवताओं से डरते हैं।)	(3) राक्षसा: देवताभ्य: बिभ्यति। (भयार्थक धातु के योग में पञ्चमी।)
(4) मरणस्य भयं नास्ति। (मरने से भय नहीं है।)	(4) मरणाद् भयं नास्ति। (भयार्थे पञ्चमी।)
(5) विष्णु: विपदां त्रायते। (विष्णु विपत्तियों से रक्षा करते हैं।)	(5) विष्णु: विपद्भ्य: त्रायते। (रक्षार्थक धातु के योग में पञ्चमी।)
(6) पदो: शूद्रा: अजायन्त:। (पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए।)	(6) पद्भ्यां शूद्रा: अजायन्त। (जन् धातु के योग में पञ्चमी।)
(7) कामेन क्रोधोऽभिजायते। (काम से क्रोध उत्पन्न होता है।)	(7) कामात् क्रोधोऽभिजायते। (जन् धातु के योग में पञ्चमी।)
(8) हिमवता गङ्गा प्रभवति। (हिमालय से गङ्गा निकलती है।)	(8) हिमवत: गङ्गा प्रभवति। (प्रभव के योग में पञ्चमी।)
(9) शाखानां पत्राणि प्रभवन्ति। (शाखाओं से पत्ते निकलते हैं।)	(9) शाखाभ्य: पत्राणि प्रभवन्ति। (प्रभव के योग में पञ्चमी।)
(10) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गास्यापि गरीयसी। (माता और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती है।)	(10) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। (तुलना में पञ्चमी।)

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(11) गच्छता वाहनेन पतति। (चलते हुए वाहन से गिरता है।)	(11) गच्छत: वाहनात् पतति। (अपादान में पञ्चमी।)
(12) ऋते ज्ञानं न मोक्ष:। (ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं।)	(12) ऋते ज्ञानाद् न मोक्ष:। (ऋते के योग में पञ्चमी।)
(13) शब्दब्रह्मणा अन्य कोऽस्ति? (शब्दब्रह्म को छोड़कर कौन है।)	(13) शब्दब्रह्मण: अन्य: कोऽस्ति? (अन्य के योग में पञ्चमी।)
(14) छात्रा: अध्यापकेन संस्कृत पठन्ति। (छात्रा अध्यापक से संस्कृत पढ़ते हैं।)	(14) छात्रा: अध्यापकात् संस्कृतं पठन्ति। (नियमपूर्वक अध्ययन जिससे करते हैं उसमें अपादान पञ्चमी।)
(15) रामस्य विना सीता कृशाङ्गी जाता। (राम के बिना सीता कमजोर हो गईं।)	(15) रामाद् विना सीता कृशाङ्गी जाता। (विना के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमी।)
(16) रामस्य विना अयोध्या शून्या जाता। (राम के बिना अयोध्या सूनी हो गई।)	(16) रामाद् विना अयोध्या शून्या जाता। (विना के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमी।)
(17) शङ्कराचार्य: बाल्येन प्रभृति विलक्षण: आसीत्। (शङ्कराचार्य बचपन से ही विलक्षण थे।)	(17) शङ्कराचार्य: बाल्यात् प्रभृति विलक्षण: आसीत्। (प्रभृति के योग में पञ्चमी।)
(18) पापेन निवारयति योजयते हिताय। (पाप से हटाकर हित में प्रवृत्त कराता है।)	(18) पापान् निवारयति योजयते हिताय। (विरामार्थ में पञ्चमी।)
(19) यवै: गां वारयति। (जौं से गाय हटाता है।)	(19) यवेभ्य: गां वारयति। (वारण अर्थ में पञ्चमी।)

षष्ठी विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) श्वेतकेतु: उद्यालकात् पुत्र: बभूव। (श्वेतकेतु उद्यालक का पुत्र था।)	(1) श्वेतकेतु: उद्यालकस्य पुत्र: बभूव। (सम्बन्ध में षष्ठी।)
(2) रामेण सहोदरा शान्ता आसीत्। (राम की बहिन शान्ता थी।)	(2) रामस्य सहोदरा शान्ता आसीत्। (सम्बन्ध में षष्ठी।)
(3) अल्पं हेतु: बहुदातुमिच्छन्। (थोड़े के लिए बहुत देने वाला।)	(3) अल्पस्य हेतो: बहुदातुमिच्छन्। (हेतु वाचक शब्द के योग में षष्ठी।)
(4) कस्य कारणात् वसति? (किस कारण से रहता है?)	(4) कस्य कारणस्य/ केन कारणेन वसति? (हेतुवाचक शब्द + सर्वनाम, में षष्ठी या तृतीया।)
(5) राजस्थानात् दक्षिणत: गुर्जरप्रदेश:। (राजस्थान के दक्षिण में गुजरात है।)	(5) राजस्थानस्य दक्षिणत: गुर्जरप्रदेश:। (दिशावाची अतस् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी।)
(6) मत् पुरस्तात् नीरस: तरु: विलसति। (मेरे सामने सूखा पेड़ शोभायमान है।)	(6) मम पुरस्तात् नीरस: तरु: विलसति। (पुरस्तात् के योग में।)
(7) वृक्षेभ्य: अध: मृगा: शेरते। (वृक्षों के नीचे मृग सोते हैं।)	(7) वृक्षाणाम् अध: मृगा: शेरते। ('अध:' के योग में षष्ठी।)
(8) अहं दु:खे भगवन्तं स्मरामि। (मैं दु:ख में भगवान् का स्मरण करता हूँ।)	(8) अहं दु:खे भगवत: स्मरामि। (दु:ख पूर्ण स्मृ धातु के योग में षष्ठी।)

Scanned by CamScanner

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(9) भूभृत् प्रजा: उपकरोति। (राजा प्रजा का भला करता है।)	(9) भूभृत् प्रजानाम् उपकरोति। (उप + कृ के योग में षष्ठी।)
(10) अर्जुन: पाशुपताय कृते इन्द्रकीलं गच्छति। (अर्जुन पाशुपत के लिए इन्द्रकील (पर्वत) जाता है।)	(10) अर्जुन: पाशुपतस्य कृते इन्द्रकीलं गच्छति। (कृते के योग में षष्ठी।)
(11) ''वीरभूमिकाव्यम्'' शोभालालशास्त्रिणा कृति:। (वीरभूमिकाव्यम् शोभालालशास्त्री की कृति है।)	(11) ''वीरभूमिकाव्यम्'' शोभालालशास्त्रिण: कृति:। (क्तिन् के योग में कर्त्ता में षष्ठी।)
(12) जनेभ्य: भद्रम्। (लोगों का कल्याण हो।)	(12) जनानां भद्रम्। (भद्र के योग में षष्ठी।)
(13) यतद्भ्य: सिद्धेभ्य: कश्चिद् यतते सिद्धये। (प्रयत्न करने वालों में से कोई सिद्धि के लिए यत्न करता है।)	(13) यततां सिद्धानां कश्चिद् यतते सिद्धये। (निर्धारण में षष्ठी/सप्तमी।)
(14) पुरुषेभ्य: राम: उत्तम:। (पुरुषों में राम श्रेष्ठ हैं।)	(14) पुरुषाणां पुरुषेषु वा राम: उत्तम:। (निर्धारण में षष्ठी/सप्तमी।)
(15) एतस्मात् पुरत: वृक्षा: सन्ति। (इसके सामने वृक्ष हैं।)	(15) एतस्य पुरत: वृक्षा: सन्ति। (''पुरत:'' के योग में षष्ठी।)

सप्तमी विभक्ति

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) देहात् देही अस्ति। (शरीर में आत्मा है।)	(1) देहे देही अस्ति। (अधिकरण में सप्तमी।)
(2) सर्षपेभ्य: तैलमस्ति। (सरसों में तेल है।)	(2) सर्षपेषु तैलमस्ति। (अधिकरण में सप्तमी।)
(3) उदितस्य नैषधस्य काव्यस्य क्व माघ: क्व च भारवि:? (नैषधकाव्य के उदित होने पर माघ कहाँ और भारवि कहाँ?)	(3) उदिते नैषधे काव्ये क्व माघ: क्व च भारवि:? (भावलक्षण में सप्तमी।)
(4) स अधुना कार्यात् आयुक्त:/कुशल:। (वह अब कार्य में कुशल व युक्त है।)	(4) स अधुना कार्ये आयुक्त:/कुशल:। (आयुक्त कुशल के योग में सप्तमी।)
(5) रामस्य वनं गतस्य सति दशरथ: अम्रियत। (राम के वन में जाने पर दशरथ मर गये।)	(5) रामे वनं गते सति दशरथ: अम्रियत। (भाव लक्षण में सप्तमी।)
(6) यक्ष: स्वामिने असाधु: आसीत्। (साधु स्वामी में असाधु था।)	(6) यक्ष: स्वामिनि असाधु आसीत्। (साध्वसाधु योग में सप्तमी।)
(7) कृष्ण: मातुलाय असाधु:। (कृष्ण मामा में असाधु।)	(7) कृष्ण: मातुले असाधु:। (असाधु के योग में सप्तमी।)
(8) चन्द्रमा: रात्रिम् उदेति। (चन्द्रमा रात को निकलता है।)	(8) चन्द्रमा: रात्रौ उदेति। (कालवाचक शब्द में सप्तमी।)
(9) श्रावणमासं शिवस्य अर्चना भवति। (श्रावणमास में शिव की पूजा होती है।)	(9) श्रावणमासे शिवस्य अर्चना भवति। (कालवाचक शब्दों में सप्तमी।)

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(10) भारतम् अधुनाऽपि पाकिस्तानं विश्वसिति। (भारत आज भी पाकिस्तान पर विश्वास करता है।)	(10) भारतम् अधुनाऽपि पाकिस्ताने विश्वसिति। (विश्वास के योग में वैषयिक सप्तमी (जिसमें विश्वास किया जाए))
(11) चार्वाकस्य भगवत: श्रद्धा नास्ति। (चार्वाक की भगवान् में श्रद्धा नहीं है।)	(11) चार्वाकस्य भगवति श्रद्धा नास्ति। (श्रद्धा के योग में वैषयिक सप्तमी।)
(12) योग: कर्मभ्य: कौशलम्। (योग कर्मों में श्रेष्ठ?)	(12) योग: कर्मसु कर्मणां वा कौशलम्। (निर्धारण में षष्ठी/सप्तमी।)
(13) दुष्यन्त: मृगेभ्य: शरान् क्षिपति स्म। (दुष्यन्त मृगों पर बाण चलाता था।)	(13) दुष्यन्त: मृगेषु शरान् क्षिपति स्म। (क्षिप् के योग में सप्तमी।)

सङ्ख्यागत अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) त्रय: अप्सरस: स्वर्गाद् आगता:। (तीन अप्सराएँ स्वर्ग से आईं।)	(1) तिस्र: अप्सरस: स्वर्गाद् आगता:। (विशेष्य के अनुसार संख्या विशेषण।)
(2) चतस्र: बालकान् आह्वयतु। (चार बालकों को बुलाओ।)	(2) चतुर: बालकान् आह्वयतु। (विशेष्य के अनुसार संख्या विशेष्ण)
(3) अध्यापिका विंशती: छात्रा: ताडयति। (अध्यापिका बीस छात्राओं को पीटती है।)	(3) अध्यापिका विंशतिं छात्रा: ताडयति। (विंशति एकवचन में ही होता है।)
(4) दशेषु विद्यालयेषु संस्कृतपाठ: न प्रचलति। (दश विद्यालयों में संस्कृत पाठ नहीं चल रहा है।)	(4) दशसु विद्यालयेषु संस्कृतपाठ: न प्रचलति। (दश का सप्तमी बहुवचन दशसु, दशेषु नहीं।)
(5) एकशता: छात्रा: सन्ति। (एक सौ छात्र है।)	(5) एकशतं छात्रा: सन्ति। (शत नपुंसकल्लिङ्ग एकवचन होता है।)
(6) शतानि आयुधानि प्रयोक्तव्यानि। (सौ शस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।)	(6) शतं आयुधानि प्रयोक्तव्यानि। (शत एकवचन एवं नपुँसकलिङ्ग।)
(7) सप्ते महाद्वीपेषु एशियामहाद्वीपं वृहत्तमम्। (सात महाद्वीपों में एशियामहाद्वीप बड़ा है।)	(7) सप्तसु महाद्वीपेषु एशियामहाद्वीपं वृहत्तमम्। (सप्तन् नित्य बहुवचन शब्द।)
(8) बालकत्रयं स्त:। (दो बालक हैं।)	(8) बालकत्रयं अस्ति। (अयच् प्रत्ययान्त शब्द नपुँसकलिङ्ग तथा एकवचन)
(9) कति जन: अस्ति? (कितने लोग हैं?)	(9) कति जना: सन्ति? (कति नित्य बहुवचनान्त शब्द।)
(10) अहं चतस्र: वेदान् पठामि। (मैं चार वेद पढ़ता हूँ।)	(10) अहं चतुर: वेदान् पठामि। (वेद पुँल्लिङ्ग है तो संख्या भी पुँल्लिङ्ग के अनुसार)
(11) चतसृणां वेदानां साम उत्तमम्। (चारों वेदों में सामवेद श्रेष्ठ है।)	(11) चतुर्णाम्/चतुर्णां वेदानां साम उत्तमम्। (वेद पुँल्लिङ्ग है अत: चतुर्णाम्।)
(12) पञ्चभ्य: भिक्षुकाय कम्बलं देहि। (पाँचवें भिक्षुक को कम्बल दो।)	(12) पञ्चमाय भिक्षुकाय कम्बलं देहि। (पूरण प्रत्ययान्त है अत: पञ्चमाय।)

Scanned by CamScanner

(13) एकविंशतिः बालिका उत्तिष्ठतु। (इक्कीसवीं बालिका उठो।)	(13) एकविंशतितमी बालिका उत्तिष्ठतु। (पूरण प्रत्ययान्त।)
(14) पङ्क्तौ द्वात्रिंशत् प्रेषयतु। (पंक्ति में बत्तीसवें को भेजो।)	(14) पङ्क्तौ द्वात्रिंशत्तमं प्रेषयतु। (पूरण प्रत्ययान्त।)
(15) कृष्णस्य द्वि भार्या सत्यभामा आसीत्। (कृष्ण की दूसरी पत्नी का नाम सत्यभामा था।)	(15) कृष्णस्य द्वितीया भार्या सत्यभामा आसीत्। (पूरण प्रत्ययान्त।)

अव्ययगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(1) अन्यथया गतिः नास्ति। (और गति नहीं है।)	(1) अन्यथा गतिः नास्ति। (अन्यथा अव्यय है।)
(2) अहं दिवायां गच्छामि। (मैं दिन में जाता हूँ।)	(2) अहं दिवा गच्छामि। (अव्यय है।)
(3) प्राते काले पठामि। (सुबह पढ़ता हूँ।)	(3) प्रातः काले पठामि। (प्रातः अव्यय है।)
(4) कुतस्तात् अस्ति? (कहाँ से हो?)	(4) कुतः अस्ति? (कुतः अव्यय)
(5) जलम् ईषदम् अस्ति। (जल कम है।)	(5) जलम् ईषद् अस्ति। (ईषद् अव्यय)
(6) रामः पठति, अतस्तात् श्रेष्ठः। (राम पढ़ता है इसलिए श्रेष्ठ है।)	(6) रामः पठति, अतः श्रेष्ठः। (अतः अव्यय)
(7) गुरवः प्रतिदिने पाठयन्ति। (गुरु जी प्रतिदिन पढ़ाते हैं।)	(7) गुरवः प्रतिदिनं पाठयन्ति। (प्रतिदिन अव्यय)
(8) गुरुः अकस्मादात् आगतः। (गुरु जी अचानक आ गये।)	(8) गुरुः अकस्मात् आगतः। (अकस्मादात् नहीं अकस्मात् अव्यय है।)
(9) यदि पठति उत्तीर्णो भविष्यति। (यदि पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।)	(9) यदि पठति तर्हि उत्तीर्णो भविष्यति। (यदि-तर्हि का युगल होता है।)
(10) ह्यो मया प्रतिपादितम्। (कल मैंने बताया था।)	(10) ह्यः मया प्रतिपादितम्। (ह्यो नहीं होता।)
(11) तूष्णी भव। (चुप रहो।)	(11) तूष्णीं भव। (तूष्णी नहीं तूष्णीम् शुद्ध है)
(12) परश्वे सोमवासरः अस्ति। (परसों सोमवार है।)	(12) परश्वः सोमवासरः अस्ति। (परश्वे नहीं परश्वः शुद्ध है)
(13) सद्यं गच्छन्तु। (शीघ्र जाओ।)	(13) सद्यः गच्छन्तु। (सद्यम् नहीं सद्यः शुद्ध है)

अभ्यासार्थ प्रश्न

(अशुद्धि-संशोधन)

1. अशुद्ध पद का चयन करो–
(अ) मनोज्ञः (ब) यशोलाभः
(स) मनोकामना (द) सदुपदेशः ( )

2. अशुद्ध पद है–
(अ) कर्तृनिष्ठम् (ब) वस्तुनिष्ठम्
(स) श्रोतृगणः (द) प्रत्येकम् ( )

3. शुद्ध वाक्य है–
(अ) गोपालकः गोः दुग्धं दोग्धि
(ब) शिवः पर्यङ्के अधिशेते
(स) धने बालम् अपहरति
(द) ग्रामस्य सर्वतः वृक्षा सन्ति ( )

4. - - - ऋते न मुक्तिः - उचित पद होगा–
(अ) ज्ञानम् (ब) ज्ञानस्य
(स) ज्ञानेन (द) ज्ञानात् ( )

5. 'तस्याः ध्वनिः मया श्रुता'- यहाँ अशुद्धि है–
(अ) वचनकृत (ब) लिङ्गकृत
(स) कारककृत (द) सन्धिकृत ( )

6. अशुद्ध वाक्य है–
(अ) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति
(ब) सीम्नि पुष्कलकं हन्ति
(स) रामेण विना न गतिः
(द) मौनेन सत्यं विशिष्यते ( )

7. अशुद्ध पद है–
(अ) रजोगुणः (ब) तमोगुणः
(स) यशोलाभः (द) पयोपानम् ( )

8. शुद्ध पद है–
(अ) दुखम् (ब) निश्वासः
(स) अतिन्द्रियम् (द) उल्लङ्घनम् ( )

9. राकेशात् कुशलं पृच्छति- शुद्ध पद होगा–
(अ) राकेशम् (ब) राकेशेन
(स) राकेशे (द) राकेशाय ( )

10. शुद्ध वाक्य है–
(अ) लता ग्रामे वसति (ब) वनस्य सर्वतः वृक्षाः सन्ति
(स) नेत्रात् काणः (द) विप्रं गां ददाति ( )

11. शुद्ध पद है–
(अ) महिमायुक्तम् (ब) पथप्रदर्शकः
(स) मार्गदर्शकः (द) महाराजा ( )

12. मृगः . . . . . अधिशेते - उचित पद होगा–
(अ) मार्गम् (ब) मार्गे
(स) मार्गेण (द) मार्गः ( )

13. शुद्ध पद है–
(अ) निरोपमा (ब) आशिर्वाद
(स) अत एव (द) निरोगः ( )

14. शुद्ध वाक्य है–
(अ) गुरवः शिष्ये कुप्यन्ति
(ब) गुरोः सह गमिष्यामि
(स) कर्णः कृष्णम् अभिक्रुध्यति
(द) ग्रामस्य निकषा वनम् ( )

15. 'दुर्जनाय धिक्' - शुद्ध पद होगा–
(अ) दुर्जनेन (ब) दुर्जनस्य
(स) दुर्जने (द) दुर्जनम् ( )

16. ब्रह्मचारी . . . . . . शेते - उचित पद होगा–
(अ) शय्यायाम् (ब) शय्याम्
(स) शय्यायै (द) शय्यायाः ( )

17. शुद्ध पद है–
(अ) अन्तकरणम् (ब) अतैव
(स) अन्ताराज्यीयम् (द) निरवः ( )

18. शुद्ध पद नहीं है–
(अ) छत्रच्छाया (ब) मन्त्रीमण्डलम्
(स) निर्दयः (द) पतिव्रता ( )

19. अशुद्ध पद है–
(अ) ऐश्वर्यम् (ब) प्रवीणता
(स) ऐकान्तिकः (द) सृजनम् ( )

20. उभयलिङ्गी नहीं है–
(अ) मोदकः (ब) पीठः
(स) भावः (द) यूपः ( )

Scanned by CamScanner

21. शुद्ध पदों का समूह है–
(अ) अत्योक्ति:, नीरस:
(ब) निरोग:, ज्योत्सना
(स) नीरव:, पुना रचना
(द) आशिर्वाद:, मनवाञ्छितम् ( )

22. अशुद्ध पद है–
(अ) तत्त्वम् (ब) कित्वम्
(स) उत्पत्ति: (द) प्रवृत्ति: ( )

23. अधोलिखित वाक्यों में से अशुद्ध है–
(अ) सीता वर्षासु क्रीडति
(ब) रमा शक्तुं पिबति
(स) पण्डित: अक्षतान् समर्पयति
(द) वृद्ध: प्राणान् त्यक्तवान् ( )

24. ..... पतति - उचित पद होगा–
(अ) अश्वात् (ब) अश्वेन
(स) अश्वस्य (द) अश्वे ( )

25. महनीया महिमा भारतवर्षस्य वर्तते' - अशुद्धि है–
(अ) कारकगत (ब) क्रियागत
(स) लिङ्गगत (द) सन्धिगत ( )

26. अशुद्ध पदों का समूह है–
(अ) गरिमायुक्तम्, महिमायुक्तम्
(ब) वक्तृगण:, श्रोतृगण:
(स) योगिराज:, महाराज:
(द) दम्पती ( )

27. अधोलिखित पदों में से शुद्ध पद है–
(अ) विन्यास: (ब) सन्यासी
(स) शुद्धिकरणम् (द) निरीक्षणम् ( )

28. अधोलिखित में से अशुद्ध है–
(अ) अनुग्रह: (ब) अनुगृहीत:
(स) अन्त्याक्षरी (द) पूज्य: ( )

29. शुद्ध पद समूह है–
(अ) श्रीमान्, कवियित्री (ब) श्रीमती, पत्नी
(स) क्रोधित:, ग्रसित: (द) विशिष्ठ:, महान ( )

30. शुद्ध वाक्य है–
(अ) कालिदास: कविरत्न: आसीत्
(ब) देशस्य गरिमा रक्षणीया
(स) तस्य महिमा वर्णनीया
(द) वृत्तस्य परिधि: क: ? ( )

31. ...... बालम् अपहरति - उचित पद होगा–
(अ) धनम् (ब) धनाय
(स) धनस्य (द) धने ( )

32. ..... क्रुध्यति-उचित पद होगा–
(अ) शिवम् (ब) शिवेन
(स) शिवाय (द) शिवस्य ( )

33. शुद्ध वाक्य है–
(अ) हिमालयेन गङ्गा उद्भवति
(ब) कामेन क्रोध: जायते
(स) कृष्ण: मातरि साधु:
(द) क्रोशेन कुटिला सरित् ( )

34. किस समूह में सभी पद शुद्ध हैं–
(अ) सृजनम्, व्यावहारिक:, पारलौकिक:
(ब) तत्रत:, राष्ट्रिय:, स्थायित्वम्
(स) महत्त्वम्, एकत्र, तत:
(द) पूतम्, उपरित:, प्रावीण्यता ( )

35. मित्र शब्द का अर्थ सखा होने पर लिङ्ग होगा–
(अ) पुँल्लिङ्ग (ब) स्त्रीलिङ्ग
(स) नपुंसकलिङ्ग (द) अव्यय ( )

36. बालक: .... भीत: - उचित पद होगा–
(अ) सिंहाद् (ब) सिंहेन
(स) सिंहस्य (द) सिंहे ( )

37. अशुद्ध वाक्य है–
(अ) लङ्कां निकषा जलम्
(ब) क्रोशाय कुटिला नदी
(स) पुत्रेण सहागत: पिता
(द) श्रीगणेशं नमस्करोति ( )

38. ..... मोदका: रोचन्ते - उचित पद होगा–
(अ) बालकम् (ब) बालकेन
(स) बालकाय (द) बालकस्य ( )

39. शुद्ध वाक्य है–
(अ) मह्यं शयनं रोचते (ब) शिवात् क्रुध्यति
(स) ग्रामस्य पूर्वं वनम् (द) नृप: सज्जनाय साधु: ( )

40. हरि: ..... शेते- उचित पद होगा–
(अ) बैकुण्ठम् (ब) बैकुण्ठे
(स) बैकुण्ठेन (द) बैकुण्ठाय ( )

41. शुद्ध पद नहीं है–
(अ) उज्ज्वल: (ब) प्रज्ज्वल:
(स) संन्यासी (द) परीक्षा ( )

42. शुद्ध वाक्य है–
(अ) रमेशात् शतं याचते
(ब) रामाद् मार्गं पृच्छति
(स) तण्डुलान् ओदनं पचति
(द) शिवात् शतं मुष्णाति ( )

43. शुद्ध पदों का समूह नहीं है–
(अ) पक्षिवृन्द:, शास्त्रीमहोदय:
(ब) मातृहीन:, स्वामिभक्त:
(स) नेतृगण:, जगज्जननी
(द) भगवद्गीता, सशङ्क: ( )

44. अशुद्ध वाक्य है–
(अ) अत्र का सन्धि:? (ब) अत्र क: समास:?
(स) अत्र क: प्रत्यय:? (द) अत्र किं कारकम्? ( )

45. ..... पुष्पाणि चोरयति - उचित पद होगा–
(अ) क्षेत्रात् (ब) क्षेत्रे
(स) क्षेत्रम् (द) क्षेत्रेण ( )

46. शुद्ध पद है–
(अ) व्यवहारिक: (ब) प्राधान्यम्
(स) ऐश्वर्यता (द) एकत्रित: ( )

47. शुद्ध वाक्य है–
(अ) महिष्या: दुग्धं दोग्धि
(ब) शिवात् शतं जयति
(स) ग्रामम् अजां नयति
(द) कक्षे तिष्ठति ( )

48. शुद्ध पद है–
(अ) शुद्धिकरणम् (ब) वृद्धिकरणम्
(स) सिद्धिकरणम् (द) संस्कृतीकरणम् ( )

49. अशुद्ध पद है–
(अ) दम्पत्ति: (ब) दम्पती
(स) जम्पती (द) जायापती ( )

50. शुद्ध पद है–
(अ) निर्दय: (ब) सानन्दित:
(स) सशंकित: (द) पतीव्रता ( )

निम्नलिखितस्य रेखाङ्कितस्य पदस्य शुद्धरूपं लिखत–

51. छात्र: विद्यालय: गच्छति।
(अ) विद्यालयेन (ब) विद्यालयम्
(स) विद्यालयस्य (द) विद्यालयाय ( )

52. भवान् अत्र आगच्छ।
(अ) आगच्छसि (ब) आगच्छताम्
(स) आगच्छन्तु (द) आगच्छतु ( )

53. पुष्पानि विकसितानि सन्ति।
(अ) पुष्पानी (ब) पुष्पाणी
(स) पुष्पाणि (द) पूष्पाणि ( )

54. दम्पत्ति: पुत्रम् अवदताम्
(अ) दम्पत्यौ (ब) दम्पती
(स) दम्पती (द) दम्पति: ( )

55. इमे चित्राणि।
(अ) तानि (ब) आनि
(स) इमानि (द) एतानि ( )

56. पापेन निवारयति।
(अ) पापस्य (ब) पापात्
(स) पापं (द) पापाय ( )

57. भूपत्यु: सह आलपति।
(अ) भूपत्या (ब) भूपतिणा
(स) भूपतिना (द) पापाय ( )

58. तपस्वि वाग्विदां वरम्।
(अ) तपस्वि: (ब) तपसवी
(स) तपस्वी (द) तप्स्वी ( )

59. चारित्राय क: युक्त:?
(अ) चरित्रेन (ब) चारीत्रेण
(स) चित्रेण (द) चारित्रेण ( )

60. बहुनि दुर्लभा: सन्ति।
(अ) बहव्य: (ब) बहवा:
(स) वहवय: (द) बहू ( )

61. "राम" इति नाम: जनै: श्रुतम्।
(अ) नामम् (ब) नाम्नम्
(स) नामानि (द) नाम ( )

62. स: चन्दमा: अवलोकयति।
(अ) चन्द्रमाम् (ब) चन्द्रमसाम्
(स) चन्द्रमम् (द) चन्द्रमसम् ( )

Scanned by CamScanner

63. आत्मैः प्राप्यते ज्ञानम्।
(अ) आत्मभिः (ब) आत्माभिः
(स) आत्मानैः (द) आत्मना ( )

64. भूभृतेषु हरिश्चन्द्रः श्रेष्ठः।
(अ) भूभृदेषु (ब) भूभृतासु
(स) भुवृत्सु (द) भूभृत्सु ( )

65. अम्बः! अहं गच्छामि।
(अ) अम्ब (ब) अम्बे
(स) अम्बा (द) अम्बौ ( )

66. नदी सह अवकरः वहति।
(अ) नदिना (ब) नदया
(स) नद्यै (द) नद्या ( )

67. रामस्य पिता नाम दशरथ।
(अ) पितरस्य (ब) पितायाः
(स) पितुः (द) पितस्य ( )

68. पक्षयः खे उड्डयन्ति।
(अ) पक्षिनः (ब) पक्षयः
(स) पक्षीणः (द) पक्षिणः ( )

69. मम् पृच्छति गुरुः।
(अ) माम (ब) माम्
(स) मम (द) मत् ( )

70. गुरुणा छात्राः बिभेति।
(अ) गुरुणाम्, बिभ्यति (ब) गुरोः, बिभीतः
(स) गुरोः, बिभ्यति (द) गुरोः बिभ्यन्ति ( )

71. ''अश्वारोही'' प्रातिपदिक है।
(अ) अश्वारोहीन् (ब) अश्वारोहिण्
(स) अश्वरोहिन् (द) अश्वारोहि ( )

72. ''विद्वांसः'' प्रातिपदिक है।
(अ) विद्वस् (ब) विद्वान्
(स) विद्वत् (द) विद्वम् ( )

73. ''धेनवः'' शब्द है।
(अ) पुँल्लिङ्ग, एकवचन (ब) पुँल्लिङ्ग, बहुवचन
(स) स्त्रीलिङ्ग, एकवचन (द) स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन ( )

74. वारि शब्द का द्वितीया बहुवचन
(अ) वाराणि (ब) वारणि
(स) वारीणि (द) वारिणी ( )

75. गच्छन् कालेन सर्वं परिवर्त्यते।
(अ) गच्छद्भ्याम् (ब) गच्छेन
(स) गच्छता (द) गच्छतेन ( )

76. उपनिषद् पद में लिङ्ग है
(अ) नंपुसकलिङ्ग (ब) पुँल्लिङ्ग
(स) स्त्रीलिङ्ग (द) नपुंसक पुँल्लिङ्ग ( )

77. वररुचिः वार्तिकाणि व्यरचयत्।
(अ) वार्तिकाणी (ब) वार्तिकान्
(स) वार्तिकानि (द) वार्तिकाणी ( )

78. इयम् आत्मा नित्यः अजश्च।
(अ) असौ (ब) अयम्
(स) एषः (द) सः ( )

79. भारतस्य प्रतिष्ठौ द्वे संस्कृतिः संस्कृतञ्च।
(अ) प्रतिष्ठ्यौ (ब) प्रतिष्ठे
(स) प्रतिष्ठाः (द) प्रतिष्ठा ( )

80. अप्सराः नृत्यन्ति।
(अ) अप्सरसः (ब) अप्सरा
(स) अप्सरसाः (द) अप्सरयः ( )

साधु वाक्यं चिनुत। (प्रश्नः 81 तः 132 पर्यन्तम्)

81. (अ) हे रामः! आगच्छन्तु (ब) हे राम! आगच्छन्तु
(स) हे रामाः! आगच्छन्तु (द) हे राम! आगच्छताम् ( )

82. (अ) रामेण पुस्तकं पठति (ब) रामस्य पुस्तकं पठति
(स) रामः पुस्तकं पठति (द) राम पुस्तकं पठति ( )

83. (अ) रामेण पाठः पठ्यते (ब) रामेण पाठं पठ्यते
(स) रामेण पाठः पठ्येत् (द) रामेण पाठः पठ्येते। ( )

84. (अ) लता छात्राम् गीतानी पाठयति
(ब) लता छात्रान् गीतानी पाठयति।
(स) लता छात्रान् गीतानि पाठयति
(द) लता छात्रान् गीतानि पाठयन्ति। ( )

85. (अ) अप्सरसः देवान् वन्दते
(ब) अप्सरसः देवान् वन्द्यन्ते
(स) अप्सरसः देवान् वन्देते।
(द) अप्सरसः देवान् वन्दन्ते। ( )

86. (अ) शिष्यः आचार्य क्षमां याचते।
(ब) शिष्यः आचार्यात् क्षमां याचते।
(स) शिष्यः आचार्य क्षमां याचते।
(द) शिष्यः आचार्येण क्षमां याचते ( )

87. (अ) चिटिकां विना परिचालकः माम शतं दण्डयति।
(ब) चिटिकेन विना परिचालकः मम् शतं दण्डयति।
(स) चिटिकां विना परिचालकः मां शतं दण्डयति।
(द) चिटिकां विना परिचालकः माम् शतानि दण्डयति। ( )

88. (अ) बालकः हस्तभ्याम् आनयति
(ब) बालकः हस्तात् आनयति
(स) बालकः हस्तस्य आनयति।
(द) बालकः हस्ताभ्याम् आनयति। ( )

89. (अ) गुरु : शिष्यं धर्मेण शास्ति।
(ब) गुरु : शिष्येण धर्म शास्ति।
(स) गुरुः शिष्याय धर्मं शास्ति।
(द) गुरु : शिष्यं धर्मं शास्ति। ( )

90. (अ) नृपः नृपात् नगरं जयति।
(ब) नृपः नृपेण नगरं जयति।
(स) नृपः नृपं नगरं जयति।
(द) नृपः नृपाय नगरं जयति। ( )

91. (अ) हरिः सागरं सुधां मथ्नाति।
(ब) हरिणा सागरं सुधां मथ्यते।
(स) हरिः सागरात् सुधां मथ्नाति।
(द) हरिः सागरस्य सुधां मथ्नाति। ( )

92. (अ) आभा चन्द्रेण सह भवति।
(ब) आभा चन्द्रस्य सह भवति।
(स) आभा चन्द्रेन सह भवति।
(द) आभा चन्द्रेण सह भवती। ( )

93. (अ) माम् अभितः द्वौ बालकौ स्तः।
(ब) मम् अभितः द्वौ बालकौ स्तः।
(स) मत् अभितः द्वौ बालकौ स्तः।
(द) मत्तः अभितः द्वौ बालकौ स्तः। ( )

94. (अ) विंशतीषु बालकेषु कमलः श्रेष्ठः।
(ब) विंशत्यां बालकेषु कमलः श्रेष्ठः।
(स) विंशतिषु बालकेषु कमलः श्रेष्ठः।
(द) विंशते बालकेषु कमलः श्रेष्ठः। ( )

95. (अ) वीर्ये परशुरामः विष्णोः सदृशः।
(ब) वीर्ये परशुरामः विष्णौ सदृशः।
(स) वीर्ये परशुरामः विष्णुना सदृशः।
(द) वीर्ये परशुरामः विष्णुः सदृशः। ( )

96. (अ) अलं तव आपनात्।
(ब) अलं तव आलपनेन।
(स) अलम् तव आलपनस्य।
(द) अलं तव आलपनम्। ( )

97. (अ) वानरेभ्यः कदलिफलानि ददामि।
(ब) वानरान् कदलिफलानि ददामि।
(स) वानराणां कदलिफलानि ददामि।
(द) वानरैः कदलिफलानि ददामि। ( )

98. (अ) भगवताय नमः (ब) भगवन्ताय नमः।
(स) भगवते नमः (द) भगवतः नमः। ( )

99. (अ) हिमालयस्य गङ्गा निस्सरति।
(ब) हिमालयेन गङ्गा निस्सरति।
(स) हिमालये गङ्गा निस्सरति।
(द) हिमालयाद् गङ्गा निस्सरति। ( )

100. (अ) बाहौ शूद्राः अजायन्त।
(ब) बाहूभ्यां शूद्राः अजायन्त।
(स) बाहवोः शूद्राः अजायन्त।
(द) बाहूनां शूद्राः अजायन्त। ( )

101. (अ) पालनकर्त्री मातस्य श्रेष्ठा।
(ब) पालनकर्त्री मातरस्य श्रेष्ठा।
(स) पालनकर्त्री मातुः श्रेष्ठा।
(द) पालनकत्री मात्रा श्रेष्ठा। ( )

102. (अ) विलपन् बालकः मातरं स्मरति।
(ब) विलपन् बालकः मात्रं स्मरति।
(स) विलपन् बालकः मात्रा स्मरति।
(द) विलपन् बालकः मातुः स्मरति। ( )

103. (अ) पाठनस्य अनन्तरम् (ब) पाठनेन अनन्तरम्
(स) पाठनाद् अनन्तरम् (द) पाठनम् अनन्तरम् ( )

104. (अ) शरीरात् शरीरी अस्ति।
(ब) शरीरस्य शरीरी अस्ति।
(स) शरीरे शरिरी अस्ति।
(द) शरीरे शरीरी अस्ति। ( )

105. (अ) योगः कर्मसु कौशलम्।
(ब) योगः कर्मभ्यः कौशलम्।
(स) योगः कर्मणः कौशलम्।
(द) योगः कर्मभिः कौशलम्। ( )

Scanned by CamScanner

106. (अ) मामका: पाण्डवाश्चैव किम् अकुर्वन्त।
(ब) मामका: पाण्डवाश्चैव किम् अक्रियन्त।
(स) मामका: पाण्डवाश्चैव किम् अक्रियन्ताम्
(द) मामका: पाण्डवाश्चैव किम् अकुर्वत। ( )

107. (अ) मनमोहन: अर्थशास्त्रात् कुशल:।
(ब) मनमोहन: अर्थशास्त्रेण कुशल:।
(स) मनमोहन: अर्थशास्त्राय कुशल:।
(द) मनमोहन: अर्थशास्त्रे कुशल:। ( )

108. (अ) बालकचतुष्टयं सन्ति (ब) बालकद्वयं स्त:।
(स) बालकत्रयं सन्ति (द) बालकद्वयम् अस्ति। ( )

109. (अ) कति पुस्तकम्? (ब) कति पुस्तके?
(स) कति पुस्तकानि? (द) कति पुस्तक? ( )

110. (अ) तस्मात् पुरस्तात् नीरस: तरु: विलसति
(ब) त्वत् पुरस्तात् नीरस: तुरु: विलसति।
(स) तस्य पुरस्तात् नीरस: तरु: विलसति।
(द) तस्मै पुरस्तात् नीरस: तरु: विलसति। ( )

111. (अ) यावता: श्लोका:। (ब) यावत्य: श्लोका:।
(स) यावन्त: श्लोका:। (द) यावत: श्लोका। ( )

112. (अ) धिक् तेन तया च।
(ब) धिक् तज्ञ ताञ्च।
(स) धिक् तस्मै तस्यै च।
(द) दिक् तस्य तस्याश्च। ( )

113. (अ) लोकात् उपर्युपरि हरि:।
(ब) लोकस्य उपर्युपरि हरि:।
(स) लोकम् उपर्युपरि हरि:।
(द) लोकानाम् उपर्युपरि हरि:। ( )

114. (अ) लोकम् अधोऽध: (ब) लोकस्य अधोऽध:।
(स) लोकात् अधोऽध:। (द) लोकाय अधोऽध:। ( )

115. (अ) वृक्षम् अध:। (ब) वृक्षस्य अध:।
(स) वृक्षात् अध: (द) वृक्षे अध:। ( )

116. (अ) बालकै: हस्यन्ते। (ब) बालकै: हस्यते।
(स) बालकै: हसयन्ति। (द) बालकै: हसन्ति। ( )

117. (अ) स पुस्तकम् अपठयत्।
(ब) तेन पुस्तकम् अपठ्यन्ताम्।
(स) तेन पुस्तकम् अपठ्यत।
(द) तेन पुस्तकम् अपठ्यन्त। ( )

118. (अ) रोहन: मोहनस्य सह विद्यालयं गच्छति।
(ब) रोहन: मोहनेन सह विद्यालयं गच्छति।
(स) रोहन: मोहनाथ सह विद्यालयं गच्छति।
(द) रोहन: मोहन: सह विद्यालयं गच्छति। ( )

119. (अ) केशभि: तपस्वी।
(ब) केशेभ्य: तपस्वी।
(स) केशै: तपस्वी।
(द) केशेषु तपस्वी। ( )

120. (अ) पुत्रप्राप्तये यज्ञं करोति।
(ब) पुत्रप्राप्तया यज्ञं करोति।
(स) पुत्रप्राप्ते: यज्ञं करोति।
(द) पुत्रप्राप्त्या: यज्ञं करोति। ( )

121. (अ) अहं प्रतिदिन प्रात: पुष्पाणि स्पृहयामि
(ब) अहं प्रतिदिनं प्रात: पुष्पेभ्य: स्पृहयामि।
(स) अहं प्रतिदिन प्रात: पुष्पाणां स्पृहयामि
(द) अहं प्रतिदिन प्रात: पुष्पेषु स्पृहयामि। ( )

122. (अ) सोहन: मोहनं सहस्रं धारयति।
(ब) सोहन: मोहनात् सहस्रं धारयति।
(स) सोहन: मोहनाय सहस्रं धारयति।
(द) सोहन: मोहनस्य सहस्रं धारयति। ( )

123. (अ) कौरवा: भीमाय क्रुध्यन्ति स्म।
(ब) कौरवा: भीमं क्रुध्यन्ति स्म।
(स) कौरवा: भीमेन क्रुध्यन्ति स्म।
(द) कौरवा: भीमे क्रुध्यन्ति स्म। ( )

124. (अ) कृष्ण: राधां राध्यति/ईक्षते।
(ब) कृष्ण: राधायै राध्यति/ईक्षते।
(स) कृष्ण: राधाया: राध्यति/ईक्षते।
(द) कृष्ण: राधया राध्यति/ईक्षते। ( )

125. (अ) अहं त्वां तृणेन मन्ये।
(ब) अहं त्वां तृणस्य मन्ये।
(स) अहं त्वां तृणे मन्ये।
(द) अहं त्वां तृणाय मन्ये। ( )

126. (अ) जना: कस्य बिभ्यति।
(ब) जना: कस्माद् बिभ्यति।
(स) जना: किं बिभ्यति।
(द) जना कं बिभ्यति। ( )

127. (अ) अपकीर्ति: मरणाय अतिरिच्यते।
(ब) अपकीर्ति: मरणम् अतिरिच्यते।
(स) अपकीर्ति: मरणाद् अतिरिच्यते।
(द) अपकीर्ति: मरणे अतिरिच्यते। ( )

128. (अ) विराटनगरात् प्रभृति अलवरं पर्यन्तं वृक्षा: सन्ति।
(ब) विराटनगरेण प्रभृति अलवरं पर्यन्तं वृक्षा: सन्ति।
(स) विराटनगरस्य प्रभृति अलवरं पर्यन्तं वृक्षा: सन्ति।
(द) विराटनगराय प्रभृति अलवरं पर्यन्तं वृक्षा: सन्ति। ( )

129. (अ) क्षणाद् ऊर्ध्वम्। (ब) क्षणस्य ऊर्ध्वम्।
(स) क्षणम् ऊर्ध्वम्। (द) क्षणेन ऊर्ध्वम्। ( )

130. (अ) रामस्य पुत्री लवकुशौ आस्ताम्।
(ब) रामस्य पुत्री लवकुशौ आसीत्।
(स) रामस्य पुत्री लवकुशो आस्ताम्।
(द) रामस्य पुत्री लवकुशौ आसीत्। ( )

131. (अ) रथम् उपरि (ब) रथस्य उपरि
(स) रथात् उपरि (द) रथे उपरि। ( )

132. (अ) नगरात् दक्षिणत: वनमस्ति।
(ब) नगरस्य दक्षिणत: वनमस्ति।
(स) नगरे दक्षिणत: वनमस्ति।
(द) नगरं दक्षिणत: वनमस्ति। ( )

उत्तर तालिका

(1) स	(2) अ	(3) स	(4) द	(5) ब	(6) द	(7) द	(8) द	(9) अ	(10) अ
(11) स	(12) अ	(13) स	(14) स	(15) द	(16) अ	(17) स	(18) ब	(19) द	(20) स
(21) स	(22) ब	(23) ब	(24) अ	(25) स	(26) अ	(27) द	(28) अ	(29) ब	(30) द
(31) द	(32) स	(33) स	(34) स	(35) स	(36) अ	(37) ब	(38) स	(39) अ	(40) ब
(41) ब	(42) स	(43) अ	(44) अ	(45) स	(46) ब	(47) स	(48) द	(49) अ	(50) अ
(51) ब	(52) द	(53) स	(54) स	(55) स	(56) ब	(57) स	(58) स	(59) द	(60) अ
(61) द	(62) द	(63) द	(64) द	(65) अ	(66) द	(67) स	(68) द	(69) ब	(70) स
(71) स	(72) अ	(73) द	(74) स	(75) स	(76) स	(77) स	(78) ब	(79) ब	(80) अ
(81) स	(82) स	(83) अ	(84) स	(85) द	(86) अ	(87) स	(88) द	(89) द	(90) स
(91) अ	(92) अ	(93) अ	(94) ब	(95) स	(96) ब	(97) अ	(98) स	(99) द	(100) ब
(101) स	(102) द	(103) स	(104) द	(105) अ	(106) द	(107) द	(108) द	(109) स	(110) स
(111) स	(112) ब	(113) स	(114) अ	(115) ब	(116) ब	(117) स	(118) ब	(119) स	(120) अ
(121) ब	(122) स	(123) अ	(124) ब	(125) द	(126) ब	(127) स	(128) अ	(129) अ	(130) अ
(131) ब	(132) ब								

Scanned by CamScanner

अध्याय 12

छन्द

छन्द परिचय

- "यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः" अर्थात् जहाँ अक्षरों की गिनती की जाती है या परिगणन किया जाता है, वह छन्द है। 'छन्दस्' का शाब्दिक अर्थ 'आच्छादन' या 'आह्लादन' है।
- वेदों के छः अंगों में छन्द को वेदों का पैर (पाद्) माना गया है। (**छन्दः पादौ तु वेदस्य**)। जिस तरह पैरों के बिना हमारा शरीर गति नहीं कर सकता, उसी तरह छन्दों के बिना वेद भी गति नहीं कर सकते।
- छन्दों के आदि आचार्य **पिङ्गलमुनि** को माना जाता है। इनकी पुस्तक का नाम '**छन्दःशास्त्रम्**' या '**छन्दःसूत्रम्**' था।

लौकिक छन्द

लौकिक छन्द दो प्रकार के होते है–मात्रिक (जाति) छन्द एवं वार्णिक (वृत्त) छन्द।

मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गणना के आधार पर छन्द का निर्धारण किया जाता है, जबकि वार्णिक छन्दों में, पाद में वर्णों के गण बनाकर छन्द का निर्धारण किया जाता है।

यह वार्णिक **छन्द तीन** प्रकार का होता है–

(i) **समवृत्त**–यहाँ श्लोक के चारों पदों में वर्णों की संख्या बराबर होती है। जैसे-इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका आदि।

(ii) **अर्धसमवृत्त छन्द**–यहाँ श्लोक के प्रथम एवं तृतीय पाद तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में, वर्णों की संख्या बराबर होती है। जैसे-वियोगिनी, पुष्पिताग्रा आदि।

(iii) **विषमवृत्त छन्द**–यहाँ श्लोक के प्रत्येक पाद में, वर्णों की संख्या अलग-अलग होती है। जैसे-गाथा, उद्गाथा आदि।

पाद–श्लोक का चतुर्थांश पाद कहलाता है। (**ज्ञेयः पादश्चतुर्थोंऽशः**) इस तरह एक श्लोक में कुल चार पाद होते है। इनमें प्रथम एवं तृतीय पाद को अयुक् तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पाद को युक् कहा जाता है। अर्थात् श्लोक के विषम पादों को अयुक् तथा सम पादों को युक् कहा जाता है।

यति–एक पाद को पढ़ने के लिए, बीच में लिए जाने वाला विराम 'यति' कहलाता है।

छन्दों में लघु- गुरु व्यवस्था

ह्रस्वं लघु–ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ, लृ) को लघु माना जाता है। लघु के लिए 'ı' चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

संयोगे गुरु–लेकिन ह्रस्व स्वर के आगे संयोग के रहने पर, उस ह्रस्व को भी गुरु मान लिया जाता है। अर्थात् ह्रस्व स्वर के आगे यदि हलन्त वर्ण, अनुस्वार या विसर्ग रहे, तो उस ह्रस्व स्वर को भी गुरु मान लिया जाता है। गुरु के लिए 'ऽ' चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

दीर्घं च–दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ) को गुरु माना जाता है। पाद का अंतिम लघु स्वर भी आवश्यकता के अनुसार गुरु मान लिया जाता है।

छन्दों में गणव्यवस्था

छन्दों में कुल 8 गण होते हैं। इन गणों को इस सूत्र द्वारा जाना जा सकता है–**यमाताराजभानसलगम्**। ये गण अधोलिखित है–

ı ऽ ऽ ऽ ı ऽ ı ı ı ऽ

य मा ता रा ज भा न स ल ग म्

1.	यगण	– ıऽऽ	[आदिलघु–प्रारम्भ में लघु होने के कारण]
2.	मगण	– ऽऽऽ	[त्रिगुरु–तीनों गुरु होने के कारण]
3.	तगण	– ऽऽı	[अन्तलघु– अन्तिम वर्ण लघु होने के कारण]
4.	रगण	– ऽıऽ	[लघुमध्य–मध्य में लघु होने के कारण]
5.	जगण	– ıऽı	[गुरुमध्य– मध्य में गुरु होने के कारण]
6.	भगण	– ऽıı	[आदिगुरु–प्रारम्भ में गुरु होने के कारण]
7.	नगण	– ııı	[त्रिलघु–तीनों वर्ण लघु होने के कारण]
8.	सगण	– ııऽ	[अन्तगुरु–अन्तिम वर्ण गुरु होने के कारण]

छन्दों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से निर्दिष्ट सङ्ख्या ज्ञान

	शब्द		सङ्ख्या
1.	चन्द्रमा, पृथ्वी	–	एक
2.	पक्ष, नेत्र	–	दो
3.	गुण, अग्नि, राम	–	तीन
4.	वेद, आश्रम, वर्ण, युग	–	चार

	शब्द		सङ्ख्या
5.	शर, इन्द्रिय, भूत, तत्त्व	–	पाँच
6.	शास्त्र, रस, ऋतु	–	छः
7.	अश्व, मुनि, लोक, स्वर	–	सात
8.	वसु, याम, सिद्धि, भोगी	–	आठ
9.	अङ्क, ग्रह, द्रव्य, निधि	–	नौ
10.	दिशा, अवतार	–	दस
11.	रुद्र	–	ग्यारह
12.	सूर्य, मास	–	बारह

मात्रिक छन्द

1. आर्या

यस्याः प्रथमे पादे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।।

जहाँ श्लोक में प्रथम व तृतीय पाद में 12, 12 मात्राएँ तथा द्वितीय पाद में 18 व चतुर्थ पाद में 15 मात्राएँ होती है, वहाँ आर्या छन्द होता है। चूंकि इस छन्द में मात्राओं की गणना की जाती है, अतः इसे मात्रिक छन्द कहते हैं।

आर्या छन्द = प्रथम पाद12 मात्राएँ + द्वितीय पाद 18 मात्राएँ।
= तृतीय पाद12 मात्राएँ + चतुर्थ पाद 15 मात्राएँ।

२१२२ २ १ १२ १ २१ २ २ १२१ २ २ २
आ परितोषाद् विदुषां, न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
१ १ १ १ २ २ १ २ २ २ २ २ १ २ २ २
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः।।

वार्णिक छन्द

2. अनुष्टुप्

(प्रत्येक पाद में 8 वर्ण/स्वर)

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अनुष्टुप् छन्द में प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते है। इसके प्रत्येक पाद का षष्ठ वर्ण गुरु तथा पञ्चम वर्ण लघु होता है। सप्तम वर्ण द्वितीय और चतुर्थ पाद में ह्रस्व तथा प्रथम और तृतीय पाद में दीर्घ होता है।

ıऽऽ ıऽı
अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं, विशेषात्सङ्गतं रहः।
ıऽऽ ıऽı
अज्ञातहृदयेष्वेवं, वैरीभवति सौहृदम्।।

3. इन्द्रवज्रा

(प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)

'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।'

इस छन्द में प्रत्येक पाद में कुल 11 वर्ण होते है। ये वर्ण क्रमशः तगण, तगण, जगण, दो गुरु के रूप में होते हैं।

त त ज ग ग
ऽऽı ऽऽı ıऽı ऽऽ
"अर्थो हि कन्या परकीय एव,
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।"

4. उपेन्द्रवज्रा

(प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)

'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।'

इस छन्द में प्रत्येक पाद में कुल 11 वर्ण होते है। यहाँ वर्ण जगण, तगण, जगण और दो गुरु के रूप में होते है।

ज त ज ग ग
ıऽı ऽऽı ıऽı ऽऽ
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देवः।।

5. उपजाति

(प्रत्येक पाद में 11 वर्ण)

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

इस छन्द में प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते है। यह छन्द इन्द्रवज्रा एवं उपेन्द्रवज्रा छन्दों का मिश्रित स्वरूप है। इसमें किसी पाद में इन्द्रवज्रा, तो किसी पाद में उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है।

येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

इस श्लोक के प्रथम तीन पादों में इन्द्रवज्रा तथा अन्तिम चतुर्थ पाद में उपेन्द्रवज्रा का लक्षण घटित होता है। अतः यहाँ उपजाति छन्द हुआ है।

6. वंशस्थम्

(प्रत्येक पाद में 12 वर्ण)

"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।"

यहाँ प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते है। ये वर्ण क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण के रूप में होते है।

Scanned by CamScanner

ज त ज र
I SIS SIISISI S

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा,
यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु,
प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥

7. द्रुतविलम्बितम्

(प्रत्येक पाद में 12 वर्ण)

"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ"

इस छन्द में, प्रत्येक पाद में कुल 12 वर्ण होते है। ये वर्ण क्रमशः नगण, भगण, भगण और रगण के रूप में होते है।

न भ भ र
I IIS I I SIISIS

अभिमुखे मयि संहतमीक्षितं
हसितमन्यनिमित्तकृतोदयम्।
विनयवारितवृत्तिरतस्तया
न विवृतो मदनो न च संवृतः॥

8. भुजङ्गप्रयातम्

(प्रत्येक पाद में 12 वर्ण)

"भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः"

इसमें प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते है। यहाँ चारों गण यगण होते है।

य य य य
ISSISSISSISS

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥

9. वसन्ततिलका

(प्रत्येक पाद में 14 वर्ण)

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः

इस छन्द में प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते है। ये वर्ण क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण और 2 गुरु के रूप में होते है।

त भ ज ज ग ग
S S I S I I S I I S I S S S

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना–
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु॥

10. मालिनी

(प्रत्येक पाद में 8+7 = 15 वर्ण)

"ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।"

इस छन्द में प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते है। इन 15 वर्णों में 8 वें तथा 15वें वर्ण के बाद यति (,) होती है। इसमें वर्ण क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण और यगण के रूप में होते है। लक्षण में भोगी 8 को तथा लोक 7 को इंगित करता है।

न न म य य
I I I I I I S S S I S S I S S

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥

11. मन्दाक्रान्ता

(4+6+7 = 17 वर्ण)

"मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद्गुरू चेत्।"

यहाँ जलधि = 4, षट् = 6, अग = 7 है। अतः इस छन्द में कुल 17 वर्ण होते है। 4, 6, 7 पर यति होती है। अर्थात् चौथे, 10 वें और 17वें वर्ण पर यति होती है। इस छन्द में वर्ण क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु के रूप में होते है।

म भ न त त ग ग
S S S S I I I I I S S I S S I S S

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

12. शिखरिणी

(6+11 = 17 वर्ण)

'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।'

यहाँ रस = 6 तथा रुद्र = 11 है। अतः इस छन्द में कुल 17 वर्ण होते है। 6,11 के रूप में यति होती है। इसमें वर्ण क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा एकलघु एक गुरु होता है।

य म न स भ ल ग
I S S S S S I I I I I S S I I I S

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै–
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥

13. शार्दूलविक्रीडितम्

(12+7 = 19 वर्ण)

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

यहाँ सूर्य = 12 तथा अश्व = 7 है। इस छन्द में प्रत्येक पाद में 19 वर्ण होते है। 12, 7 के रूप में यति होती है। ये वर्ण क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा एक गुरु के रूप में होते हैं।

म स ज स त त ग
S S S I I S I S I I I S S S I S S I S

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं, संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः,
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः॥

14. स्रग्धरा

(7+7+7 = 21 वर्ण)

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

इस छन्द में प्रत्येक पाद में 21 वर्ण होते है। यहाँ यति 7,7,7 के रूप में होती है मुनि = 7, त्रिमुनि = 3 × 7 = 21। ये वर्ण क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण और यगण के रूप में होते है।

म र भ न य य य
S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S S

ग्रीवाभङ्गाभिरामं, मुहुरनुपतति, स्यन्दने दत्तदृष्टिः,
पश्चार्धेन प्रविष्टः, शरपतनभयाद्, भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुख-भ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा,
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्, वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥

छन्द सार (वार्णिक छन्द)

छन्द	प्रत्येक पाद में वर्ण	यति	गण/वर्ण
अनुष्टुप्	8	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	सभी पादों में षष्ठ वर्ण गुरु तथा पञ्चम वर्ण लघु, सप्तम वर्ण १,३ पाद में दीर्घ, २, ४ पाद में ह्रस्व
इन्द्रवज्रा	11	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	त - त- ज - दो गुरु
उपेन्द्रवज्रा	11	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	ज - त - ज -दो गुरु
उपजाति	11	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण
वंशस्थ	12	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	ज-त-ज-र
द्रुतविलम्बित	12	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	न-भ-भ-र
भुजङ्गप्रयात	12	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	य-य-य-य
वसन्ततिलका	14	मध्य में यति नहीं, पाद के अन्त में यति	त-भ-ज-ज-दो गुरु
मालिनी	15	8, 7 (भोगी = 8, लोक =7)	न-न-म-य-य
मन्दाक्रान्ता	17	4,6,7 (जलधि = 4, षट् = 6, अग = 7)	म-भ-न-त-त- दो गुरु
शिखरिणी	17	6,11 (रस = 6, रुद्र = 11)	य-म-न-स-भ- एक लघु एक गुरु
शार्दूलविक्रीडित	19	12, 7 (सूर्य = 12, अश्व = 7)	म-स-ज-स-त-त - एक गुरु
स्रग्धरा	21	7, 7, 7 (मुनि = 7, तीन बार)	म-र-भ-न-य-य-य

Scanned by CamScanner

अभ्यासार्थ प्रश्न

(छन्द)

1. 'छन्दः' को वेदों का कौनसा अंग माना गया है–
(अ) मुख (ब) पाद
(स) हस्त (द) चक्षु ( )

2. छन्दः शास्त्र के आदि आचार्य माने जाते है–
(अ) डिंगल मुनि (ब) पिङ्गलमुनि
(स) लगधमुनि (द) कालिदास ( )

3. छन्द कितने प्रकार का होता है–
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच ( )

4. किस छन्द के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण नहीं होते–
(अ) इन्द्रवज्रा (ब) उपजाति
(स) वंशस्थ (द) उपेन्द्रवज्रा ( )

5. किस छन्द के प्रत्येक पाद में 21 वर्ण होते हैं–
(अ) शिखरिणी (ब) स्रग्धरा
(स) मन्दाक्रान्ता (द) वसन्ततिलका ( )

6. किस छन्द में केवल यगण ही होते है–
(अ) द्रुतविलम्बित (ब) वंशस्थ
(स) भुजङ्गप्रयात (द) मालिनी ( )

7. 'अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहम्' में छन्द है–
(अ) मालिनी (ब) वसन्ततिलका
(स) मन्दाक्रान्ता (द) वंशस्थ ( )

8. 'न तातो न माता न बन्धुर्न दाता' में छन्द है–
(अ) द्रुतविलम्बित (ब) वंशस्थ
(स) भुजङ्गप्रयात (द) उपजाति ( )

9. 'येषां न विद्या न तपो न दानम्' श्लोक में छन्द है–
(अ) इन्द्रवज्रा (ब) उपेन्द्रवज्रा
(स) वंशस्थ (द) उपजाति ( )

10. उपजाति छन्द में मिश्रण होता है–
(अ) मालिनी व स्रग्धरा का
(ब) उपेन्द्रवज्रा तथा आर्या का
(स) इन्द्रवज्रा व उपेन्द्रवज्रा का
(द) वंशस्थ और अनुष्टुप् का ( )

11. इनमें से मात्रिक छन्द है–
(अ) अनुष्टुप् (ब) मालिनी
(स) भुजङ्गप्रयात (द) आर्या ( )

12. श्लोक का चतुर्थांश कहलाता है–
(अ) यति (ब) पाद
(स) गति (द) जाति ( )

13. 'युक्' कहा जाता है–
(अ) पहले पाद को
(ब) दूसरे पाद को
(स) चौथे पाद को
(द) दूसरे व चौथे पाद को ( )

14. 'ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः' में छन्द है–
(अ) मन्दाक्रान्ता (ब) मालिनी
(स) स्रग्धरा (द) शिखरिणी ( )

15. यगण में गुरु-लघु व्यवस्था होगी–
(अ) ISS (ब) SSS
(स) SSI (द) ISI ( )

16. 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया' - में छन्द है–
(अ) शार्दूलविक्रीडित (ब) मालिनी
(स) शिखरिणी (द) स्रग्धरा ( )

17. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' में छन्द है–
(अ) उपजाति (ब) उपेन्द्रवज्रा
(स) इन्द्रवज्रा (द) मालिनी ( )

18. वंशस्थ छन्द में गणव्यवस्था होती है–
(अ) ज-त-ज-र (ब) ज-र-ज-त
(स) ज-त-त-ज (द) य-य-य-य ( )

19. 'शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्' - में छन्द है–
(अ) मन्दाक्रान्ता (ब) शिखरिणी
(स) स्रग्धरा (द) मालिनी ( )

20. 'आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' में छन्द है–
(अ) अनुष्टुप् (ब) आर्या
(स) जगती (द) बृहती ( )

21. द्रुतविलम्बित छन्द में गणव्यवस्था होती है–
(अ) भ-न-भ-र (ब) न-भ-र-भ
(स) न-भ-भ-र (द) ज-त-ज-र ( )

22. नगण में गुरु-लघुव्यवस्था होगी–
(अ) SSS (ब) III
(स) IIS (द) SSI ( )

23. मन्दाक्रान्ता छन्द में एक पाद में कितने वर्ण होते है–
(अ) 17 (ब) 19
(स) 21 (द) 15 ( )

24. अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक पाद का कौनसा वर्ण हमेशा गुरु होता है–
(अ) पञ्चम (ब) षष्ठ
(स) सप्तम (द) अष्टम ( )

25. 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' - में छन्द है–
(अ) इन्द्रवज्रा (ब) उपजाति
(स) वंशस्थ (द) उपेन्द्रवज्रा ( )

26. अधोलिखित में से गलत मेल छाँटिए–
(अ) यगण - ISI (ब) मगण - SSS
(स) नगण - III (द) सगण- IIS ( )

उत्तर तालिका

(1) ब	(2) ब	(3) अ	(4) स	(5) ब	(6) स	(7) अ	(8) स	(9) द	(10) स
(11) द	(12) ब	(13) द	(14) स	(15) अ	(16) अ	(17) स	(18) अ	(19) अ	(20) ब
(21) स	(22) ब	(23) अ	(24) ब	(25) द	(26) अ				

Scanned by CamScanner

अध्याय 13

सूक्ति

सूक्ति

1. **उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।**
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
काम करने से ही कार्यों की सिद्धि होती है, केवल मनोरथ से नहीं। सोते हुए सिंह के मुख में कोई पशु (मृग) प्रवेश नहीं करता।

2. **आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।**
शरीर में स्थित आलस्य ही मनुष्यों का सबसे बड़ा शत्रु है।

3. **गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति।**
गुणों को जानने वालों के लिए ही गुण गुण होते हैं।

4. **गुणाः सर्वत्र पूज्यते।**
गुणों की सभी जगह पूजा होती है।

5. **साहित्य-सङ्गीत-कलाविहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।**
साहित्य, संगीत और कला से रहित व्यक्ति, पूंछ और सींगों से हीन साक्षात् पशु होता है।

6. **लुब्धस्य प्रणश्यति यशः।**
लोभी की कीर्ति नष्ट हो जाती है।

7. **पुण्यैः यशो लभते।**
पुण्यों से ही यश की प्राप्ति होती है।

8. **सन्तः समसज्जनदुर्जनानां वचः श्रुत्वा मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।**
सज्जन और दुर्जनों की समयवाणी को सुनकर सन्त व्यक्ति मधुर सूक्तियों का सर्जन करते हैं।

9. **स्त्रियां रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।**
स्त्री की सुन्दरता ही परिवार की सुन्दरता है।

10. **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**
शरीर धर्म का प्राथमिक साधन है।

11. **न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।**
रत्न ढूँढ़ता नहीं है, खोजा जाता है।

12. **प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।**
प्रिय व्यक्ति को सुन्दर लगना सौभाग्य का फल है।

13. **पुराणमित्येव न साधु सर्वम्।**
कोई बात पुरानी मात्र होने से सही नहीं होती।

14. **रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।**
रिक्त व्यक्ति लघु होता है। पूर्णता गौरव के लिए होती है।

15. **सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।**
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।
सत्य से ही पृथ्वी धारण करती है, सत्य से ही सूर्य तपता है, सत्य से ही वायु बहती है, सब कुछ सत्य में ही प्रतिष्ठित है।

16. **बहुरत्ना वसुन्धरा।**
यह पृथ्वी अनेक रत्नों से युक्त है।

17. **धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।**
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।।
धन धान्य के प्रयोग में, विद्या के संग्रह में, भोजन में तथा व्यवहार में लज्जा से दूर रहने वाला व्यक्ति हमेशा सुखी रहता है।

18. **विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।**
अपण्डितों का चुप रहना ही आभूषण है।

19. **मूर्खो हि शोभते तावद् यावत् किञ्चिन्न भाषते।।**
मूर्ख तभी तक सुशोभित होता है, जब तक कि वह कुछ नहीं बोलता।

20. **श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।।**
कल के कार्य को आज करें तथा शाम के कार्य को सुबह करें।

21. **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।**
सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए। कभी भी अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए।

22. **मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।**
मित्र के साथ कलह करके कोई व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता।

23. **अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।**
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।
यह मेरा है, यह तुम्हारा है–ऐसा चिन्तन तो संकीर्ण बुद्धिवालों का है। उदार चरित वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही परिवार की तरह है।

24. **विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।**
विद्याधन सभी धनों में श्रेष्ठ धन है।

25. **विद्याविहीनः पशुः।**
विद्या से विहीन व्यक्ति पशु ही होता है।

26. **वाग्भूषणं भूषणम्।**
वाणी का भूषण ही सबसे श्रेष्ठ भूषण है।

27. **सत्यमेव जयते नानृतम्।**
सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।

28. **न हि सत्यात् परो धर्मः।**
सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

29. **तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।**
हमेशा प्रिय ही बोलना चाहिए, बोलने में किस बात की गरीबी।

30. **नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः।**
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।
फलों वाले वृक्ष ही झुकते हैं तथा गुणों से युक्त व्यक्ति ही झुकते हैं। सूखे पेड़ और मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं झुकते।

31. **अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।
वृद्धों की नित्य सेवा करने वाले तथा उनका अभिवादन करने वाले के आयु, विद्या, यश और बल–ये चारों बढ़ते हैं।

32. **काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।**
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।
बुद्धिमान् लोगों का समय काव्यशास्त्र की बातों में गुजरता है। जबकि मूर्ख व्यक्तियों का समय व्यसन, निद्रा या कलह में गुजरता है।

33. **आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं भवति दुःखदम्।**
तस्मात् सद्व्यवहर्तव्यं मानवेन सुखैषिणा।
अपने दुर्व्यवहार का फल भी दुःखदायी होता है। अतः सुख प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को हमेशा अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

34. **व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा।**
व्यवहार से ही मित्र और शत्रु बनते हैं।

35. **स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।**
राजा अपने देश में ही पूजा जाता है, जबकि विद्वान् सभी जगह पूजा जाता है।

36. **हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।**
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्।।
हाथ का आभूषण दान है, कण्ठ का आभूषण सत्य बोलना है तथा कानों का आभूषण शास्त्र है। अन्य आभूषणों से क्या?

37. **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
सभी सुखी होवें, सभी नीरोगी होवें तथा सभी का कल्याण हो। किसी को भी दुःख की प्राप्ति नहीं हो।

38. **वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।**
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।
प्रयास करके अपने आचरण की रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता है एवं चला जाता है। धन चले जाने पर तो कुछ भी नष्ट नहीं होता। आचरण से हीन व्यक्ति वास्तव में मर ही जाता है।

39. **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**
स्वयं के प्रतिकूल कभी दूसरों के साथ आचरित न करें।

40. **परोपकाराय सतां विभूतयः।**
सज्जन परोपकार के लिए ही होते हैं।

41. **परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।**
परोपकार पुण्य तथा परपीड़न पाप देने वाला होता है।

Scanned by CamScanner

42. गुणेष्वेव हि कर्तव्यं प्रयत्नः पुरुषैः सदा।
मनुष्य को हमेशा गुणों में ही प्रयत्न करना चाहिए।

43. संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति।
संसर्ग से ही दोष एवं गुण उत्पन्न होते हैं।

44. क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणाम्।
मनुष्यों का प्रथम शत्रु क्रोध ही है।

45. संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
बड़े लोग सम्पत्ति और विपत्ति दोनों में समान रहते हैं।

46. अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
आधा घड़ा आवाज करता है।

47. अहिंसा परमो धर्मः।
अहिंसा सबसे श्रेष्ठ धर्म है।

48. आज्ञा गुरूणाम् अविचारणीया।
गुरुजनों की आज्ञा बिना विचारें मान लेनी चाहिए।

49. ज्ञानं भारः क्रियां विना।
क्रिया के बिना ज्ञान भारस्वरूप है।

50. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है। बुद्धिहीन के लिए तो कोई बल नहीं।

51. संघे शक्तिः कलौ युगे।
कलियुग में संघ में ही शक्ति है।

52. महाजनो येन गतः स पन्थाः।
जिस मार्ग से बड़े लोग चले, वो ही अच्छा मार्ग है।

53. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।
सारे गुण धन को आश्रित करके ही होते हैं।

54. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

55. धर्मो रक्षति रक्षितः।
बचाया हुआ धर्म ही रक्षा करता है।

56. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

57. पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।
सापों को दूध पिलाना, जहर को बढ़ाना ही है।

58. छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति।
छेदों में अनेक अनर्थ होते हैं।

59. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
हितकारी एवं मनोहारी वचन काफी दुर्लभ हैं।

60. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः।
धैर्यशील व्यक्ति अपने प्रयोजन से दूर नहीं होते।

61. कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।
कुपुत्र हो सकता है, लेकिन कुमाता कहीं पर भी नहीं होती।

62. क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।
कमजोर व्यक्ति ही दयाहीन होते हैं।

63. दुर्बलस्य बलं राजा।
दुर्बल का बल राजा होता है।

64. न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह वर्तते।
इस संसार में ज्ञान से ज्यादा पवित्र कुछ नहीं है।

65. सत्संगतिः हि कथय किं न करोति पुंसाम्।
सत्संगति से मनुष्यों का क्या काम नहीं हो सकता।

अध्याय 14

पर्यायवाची एवं विलोम शब्द

पर्यायवाचि-शब्दाः

1. **सर्पः–** भुजगः, व्यालः, विषधरः, चक्री, अहिः, पवनाशनः, भोगी।
2. **लोकः–** संसारः, जगत्, भुवनम्, विश्वम्, विष्टपम्।
3. **शरीरम्–** देहः, तनुः, गात्रम्, वपुः, कायः, विग्रहः, कलेवरम्।
4. **भूः–** धरा, पृथिवी, धरणी, अचला, अनन्ता, धरित्री, वसुधा, वसुन्धरा
5. **क्षिप्रम्–** द्रुतम्, शीघ्रम्, त्वरितम्, सत्वरम्, चपलम्, तूर्णम्, अविलम्बितम्।
6. **गगनम्–** आकाशः, अन्तरिक्षम्, गगणम्, व्योमः, अम्बरम्, द्यौः, नभः
7. **चन्द्रः–** निशाकरः, चन्द्रमाः, सोमः, शशिः, इन्दुः, विधुः, शशाङ्कः, राकेशः
8. **सूर्यः–** दिवाकरः, सविता, मित्रः, भास्करः
9. **मेघः–** जलदः, अम्बुदः, वारिदः, वारिवाहः, घनः, नीरदः, जलधरः
10. **हरिणः–** मृगः, कुरङ्गः, वातायुः, अजिनयोनिः
11. **मन्दिरम्–** देवालयः
12. **वनम्–** विपिनम्, अटवी, अरण्यम्, गहनम्।
13. **जलम्–** सलिलम्, वारि, उदकम्, आपः, पयः, तोयः, नीरम्।
14. **सरस्वती–** वाणी, गिरा, भारती, वीणापाणिः, शारदा, वागीशा, वागीश्वरी
15. **वायुः–** पवनः, समीरः, मारुतः, वातः, श्वसनः, अनिलः, मातरिश्वा
16. **आम्रम्–** रसालः, सहकारः, अमृतफलम्, पिकप्रियः, फलश्रेष्ठः
17. **तटः–** तीरम्, कूलम्, रोधः, प्रतीरम्।
18. **भ्रमरः–** अलीनः, मधुकरः, मधुपः, अली, षट्पदः, मधुव्रतः, द्विरेफः
19. **पाकशाला–** महानसः
20. **पर्वतः–** नगः, अद्रिः, गिरिः, शैलः, अचलः, महीध्रः, शिखरी, धरः
21. **इन्द्रः–** शक्रः, मघवा, जिष्णुः, पुरन्दरः, वृत्रहा, मेघवाहनः
22. **राजा–** भूपतिः, नृपः, भूपः, नरेशः, नृपतिः, पार्थः, क्षितीशः, महीपः
23. **वृक्षः–** तरुः, द्रुमः, महीरुहः, पादपः, द्रुः, द्रुमः, विटपी, अनोकहः
24. **नदी–** सरित्, तटिनी, तरङ्गिणी, आपगा, कूलङ्कषा, सरस्वती
25. **इदानीम्–** अधुना, साम्प्रतम्, सम्प्रति
26. **गजः–** करी, हस्ती, दन्ती, नागः।
27. **अश्वः–** तुरगः, हयः, घोटकः।
28. **अग्निः–** वह्निः, दाहकः, पावकः, कृशानुः, अनलः, शिखावान्, वैश्वानरः
29. **विद्वान्–** सुधीः, विज्ञः, अभिज्ञः।
30. **मित्रम्–** सखा, बन्धुः, सुहृद्।
31. **शत्रुः–** रिपुः, अरिः, वैरिः
32. **कमलम्–** अरविन्दम्, उत्पलम्, सरसम्, पुष्करम्, नलिनम्, पद्मम्।

Scanned by CamScanner

विलोम-शब्दाः

पुरतः	–	पृष्ठतः
स्वकीयम्	–	परकीयम्
भीतिः	–	साहसः
अनुरक्तिः	–	विरक्तिः
गमनम्	–	आगमनम्
उपरि	–	अधः
आदानम्	–	प्रदानम्
परकीयम्	–	स्वकीयम्
विषमता	–	समानता
व्यक्तिगतम्	–	सर्वगतम्
आरोहः	–	अवरोहः
उदयः	–	अस्तम्
अचलः	–	चलः
अन्धकारः	–	प्रकाशः
स्थिरः	–	गतिशीलः
उच्चैः	–	नीचैः
अन्तः	–	बहिः
दुर्बुद्धिः	–	सुबुद्धिः
दुर्लभम्	–	सुलभम्
उन्नतः	–	अवनतः
गगनम्	–	पृथ्वी
सुन्दरः	–	असुन्दरः
चित्वा	–	विकीर्य
दुःखी	–	सुखी
हर्षः	–	शोकः
शत्रुता	–	मित्रता
पुरा	–	अधुना
मानवाः	–	दानवाः
उदारचरितः	–	लघुचेतः
मन्दम्	–	क्षिप्रम्
इदानीम्	–	तदानीम्
कठोरम्	–	स्निग्धम्
पुरातनम्	–	नूतनम्
पर्याप्तम्	–	अपर्याप्तम्
यत्र/अत्र	–	तत्र
अद्य	–	श्वः
प्रातः	–	सायम्
शत्रुः	–	मित्रम्
समर्थः	–	असमर्थः
दूरम्	–	समीपम्
क्रयः	–	विक्रयः
पूर्णः	–	अपूर्णः
धनिकः	–	निर्धनः
विद्या	–	अविद्या
सत्यम्	–	असत्यम्
मित्रम्	–	शत्रुः, रिपुः, अरिः
स्वदेशः	–	विदेशः
जन्म	–	मृत्युः
अमृतम्	–	गरलम्, विषम्
आदरः	–	अनादरः
कठोरम्	–	मृदु
कटु	–	मधुरम्
प्राचीनम्	–	अर्वाचीनम्
नीरसः	–	सरसः
गर्हितः	–	प्रशंसितः
प्रवृत्तः	–	निवृत्तः
अभ्यासः	–	अनभ्यासः
गरिष्ठः	–	लघिष्ठः/अणिष्ठः
सम्पन्नम्	–	विपन्नम्
आदरः	–	अनादरः
दोषः	–	गुणः
पूर्वम्	–	पश्चात्
अधरम्	–	उत्तरम्
सत्यम्	–	असत्यम् /अनृतम्

अध्याय 15

संस्कृत शिक्षण विधि

भाषा कौशल

- **भाषा कौशल** के चार क्रमशः चरण है– (LSRW)

1. श्रवणम् (Listen)
2. वदनम् (Speak)
3. पठनम् (Read) एवं
4. लेखनम् (Write)

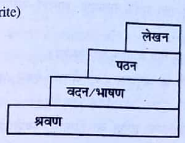

- ये चारों कौशल क्रमशः सोपान के रूप में अनुकरण योग्य हैं। इनका क्रमशः पालन करने से ही किसी भी भाषा का आत्मसाक्षात्कार हो सकता है। भाषा के अधिगम के लिए इन चारों को इसी प्राथमिकता क्रम में रखकर अभ्यास करना होगा।
- भाषण से पूर्व श्रवण का होना तो अत्यावश्यक है ही, लेकिन लेखन से पूर्व पठन का भी होना अत्यावश्यक है। लेखन से पूर्व वर्णों तथा शब्दों का पठन जरूरी है।
- इन चारों कौशलों में से श्रवण और वदन/भाषण कौशल ध्वनिविज्ञान से जुड़े हुए हैं, जबकि पठन एवं लेखन कौशल लिपिविज्ञान से जुड़े हुए हैं।
- यहाँ श्रवण और पठन कौशल का उद्देश्य 'ग्रहण' है तथा भाषण और लेखन का उद्देश्य 'अभिव्यक्ति' है।

कौशल	उद्देश्य	सम्बद्धता
1. श्रवण	श्रुत्वा ग्रहणम्	ध्वनिविज्ञान
2. भाषण	मौखिकाभिव्यक्तिः	ध्वनिविज्ञान
3. पठन	पठित्वा ग्रहणम्	लिपिविज्ञान
4. लेखन	लिखिताभिव्यक्तिः	लिपिविज्ञान

- यहाँ श्रवण और पठन कौशल बुद्धि के आधार हैं, तथा श्रवण और पठन बुद्धि के लिए 'इनपुट' हैं तथा भाषण और लेखन बुद्धि के लिए 'आउटपुट' हैं।
- यद्यपि भाषा-शिक्षण में इन चारों कौशलों पर विशेष बल दिया जाता है। लेकिन संस्कृत शिक्षण में अभिव्यक्ति से ज्यादा ग्रहण पर बल दिया जाता है। डॉ. रघुनाथ सफाया ने लिखा है– "संस्कृत में ग्रहण अधिक आवश्यक है, अभिव्यक्ति नहीं। यहाँ संस्कृतच्छात्रों से आशा करते है कि वे संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर ग्रन्थों का अध्ययन कर सकें। अपने मौलिक विचारों को संस्कृत में अभिव्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।" लेकिन केवल ग्रहण पर बल देकर, अभिव्यक्ति की उपेक्षा करके किसी भाषा का सम्पूर्ण विकास सम्भव नहीं हैं। हमें प्रयास करना चाहिए कि ग्रहण करने के साथ-साथ, हम सरल एवं मनोवैज्ञानिक तरीके से अभिव्यक्त भी कर सकें।

1. श्रवणकौशल

उद्देश्यम्–श्रुत्वा अर्थग्रहणम्

- भाषा का ग्रहण प्रायः श्रवण के माध्यम से ही होता है। अतः इस प्रक्रिया में श्रवणेन्द्रिय का अत्यधिक महत्त्व है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जन्म से बहरा व्यक्ति कभी भी बोल नहीं सकता। बालक भी लगभग एक वर्ष तक अपने आस-पास से शब्दों का अवगमन स्वयं का मस्तिष्क अवश्य करता है। आंखों को मूंदकर देखने में बाधा उत्पन्न की जा सकती हे। लेकिन कानों को बन्द करके भी श्रवण में पूर्णतया बाधा उत्पन्न नहीं की जा सकती।
- लेकिन केवल सुनना मात्र श्रवण कौशल नहीं है, बल्कि ध्यानपूर्वक सुनकर वक्ता के आशय को ग्रहण करना ही श्रवण-कौशल है।

Scanned by CamScanner

श्रवण में बाधाएँ–

(1) वक्ता द्वारा तीव्रता से शब्दों का उच्चारण।
(2) वक्ता द्वारा अस्पष्ट बोला जाना।
(3) वक्ता द्वारा बहुत तेज या बहुत धीरे बोला जाना।
(4) वक्ता की भाषा का तुतलायी हुई या स्खलित (Stammering) होना।
(5) श्रोता का ध्यान, सुनने के बजाय और कहीं होना।
(6) श्रोता का बहरा होना या वातावरण में ज्यादा कोलाहल का होना।

श्रवण-कौशल के विकास के तत्त्व–

(1) वक्ता के प्रति श्रद्धा।
(2) विषय का रुचिकर होना।
(3) वक्ता के सम्प्रेषण की शैली।
(4) आकाशवाणी, दूरदर्शन, नाटक, चलचित्र आदि के माध्यम से सम्प्रेषण।

2. भाषण कौशल

उद्देश्यम्–'मौखिकाभिव्यक्तिः'

- अपने आशय को प्रकट करने के लिए शब्दों का संघटित प्रयोग किया जाना ही भाषण-कौशल है। भाषण-कौशल के संवर्धन हेतु वातावरण या पारिवारिक कारक ज्यादा प्रभावकारी है। गाँव के माहौल में रहने वाला ग्राम्य भाषा तथा शहरी वातावरण में रहने वाला शहरी भाषा का प्रयोग करता है।
- छात्रों को भाषा-कौशल की शिक्षा प्रारम्भ से ही देनी चाहिए। यदि प्राथमिक स्तर पर उनके उच्चारण सही नहीं रहेंगे तो माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर पर उनके उच्चारण को सुधार पाना कठिनतर होगा।
- शब्दों का उच्चारण करना मात्र भाषण कौशल नहीं है, बल्कि उनका शुद्ध उच्चारण करना ही भाषण कौशल है। कहां भी गया है–

यद्यपि बहु नाधीषे ग्रन्थान् तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।

- भाषा-कौशल के विकास के लिए वर्णों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान अत्यावश्यक है। यद्यपि क्षेत्रीय प्रभावों से वर्णों के उच्चारण का वैविध्य है, लेकिन व्यक्तिगत-भिन्नता को यहाँ से दूर किया जाना चाहिए।
- भाषण-कौशल के विकास के लिए निरन्तर सम्भाषण पर बल देना चाहिए। कथा या कहानियों को भाषा-प्रवाह के साथ कहना चाहिए। छात्रों को कोई चित्र दिखाकर उसके बारे में बोलने के लिए करना चाहिए। भाषाक्रीड़ा, नाटकों का अभिनय आदि अनेक माध्यम है, जिनसे भाषण-कौशल का विकास सम्भव है।

3. पठन कौशल

उद्देश्यम्–पठित्वा अर्थग्रहणम्।

- छात्र पढ़कर ही, अर्थ का अन्वेषण करता है।
- श्रवण मात्र से अशुद्धियाँ संभाव्य हैं, अतः उनका निवारण पठन से हो जाता है।
- श्रवण की अपेक्षा पठन से अधिक स्थायी ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- पठन कौशल में 'ध्वनि' का महत्त्व ज्यादा है।

पठन कौशल के उद्देश्य

(1) गति-लय-पूर्वक उच्चारण- सामर्थ्य-सम्पादन (प्राथमिक स्तर हेतु)।
(2) समान गति से पढ़ने का सामर्थ्य।
(3) भावों के अनुकूल शब्दों में यति देकर, तथा अभिनय पूर्वक पठन करना (माध्यमिक स्तर हेतु)।
(4) सर्जनात्मक शक्ति का विकास, स्वशैली का विकास तथा आनन्दानुभूति (उच्च स्तर हेतु)।
(5) निष्कर्ष ग्रहण।

पठन → सस्वर पठन (3) / मौन पठन (3)

सस्वर पठन (3)	मौन पठन (3)
1. आदर्शवाचन (शिक्षक के द्वारा)	1. सामान्य मौन पठन
2. अनुकरण वाचन (छात्रों के द्वारा)	2. गम्भीर मौन पठन
3. समवेतवाचन (समूह में छात्रों के द्वारा)	3. द्रुत मौन पठन

पठनकौशल के सोपान

(1) आदर्शवाचन	(शिक्षक के द्वारा)
(2) अनुकरणवाचन	(छात्रों के द्वारा)
(3) मौनवाचन	(छात्रों के द्वारा)
(4) पुनःवाचन	(छात्रों के द्वारा)

(1) आदर्शवाचन–शिक्षक पदों का आदर्श उच्चारण करता है। यह उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए ताकि छात्र उसका अनुकरण कर सकें।

(1) कक्षा में पूर्णतया शांति रहें।
(2) सभी शब्दों को सुस्पष्ट उच्चारण हो।
(3) अल्पप्राण-महाप्राण व्यञ्जनों के उच्चारण में विशेष सावधानी रहे।
(4) ह्रस्व/दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
(5) दन्त्य, तालव्य व मूर्धन्य ऊष्म वर्णों (श, ष, स) के उच्चारण में सावधानी रहें।
(6) पाठगत विराम चिह्नों व अन्य चिह्नों को ध्यान में रखकर पाठन में सावधानी रहें।
(7) भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए। भावानुकूल पाठ आदर्शवाचन का अत्यावश्यक तत्व हैं।

(2) अनुकरणवाचन–छात्र शिक्षक के द्वारा किए गये वाचन का अनुकरण करते हैं। यहाँ भी कक्षा में अनुशासन बनाये रखना आवश्यक है।

(3) मौनवाचन–मुख से आवाज निकाले बिना छात्रों के द्वारा पाठ का वाचन होता है। मौनवाचन में यद्यपि नीरसता होती है, क्योंकि छात्र पढ़े हुए पाठ को ही पुनः पढ़ते हैं। लेकिन मौनवाचन के माध्यम से अर्थग्रहण शीघ्रता से एवं सुखपूर्वक हो जाता है। यह मौनवाचन भी तीन प्रकार का होता है–

(i) सामान्य मौन वाचन,
(ii) गम्भीर मौन वाचन तथा
(iii) द्रुत मौन वाचन।

(4) पुनः वाचन (समवेत वाचन)

सभी छात्रों से शिक्षक कभी मौन, कभी उच्चैःस्वर में भावों के अधिगम के लिए समवेत वाचन करवाता है।

पठनकौशल की विधि

1. **अक्षर बोध विधि/वर्णबोधविधि-/वर्णसमाम्नाय विधि**
   - सबसे प्राचीन, वर्णप्रधान।
   - पहले वर्णमाला में एक-एक वर्ण का ज्ञान।
   - धीरे-धीरे दीर्घतर शब्दों का पठन।
   - फिर वाक्यों का पठन।

   → वर्ण → पद → वाक्य

2. **पदपद्धति–**
   - चित्रों के माध्यम से शब्दों का ज्ञान।
   - पूर्वप्राथमिक स्तर के लिए उपयोगी।
   - देखों और पढ़ो विधि।
3. **वाक्य पद्धति–**
   - वाक्यों के आधार पर पठन
   - लेकिन वाक्य में प्रयुक्त पदों का पूर्वज्ञान आवश्यक है।
   - सर्वश्रेष्ठ विधि।
4. **कथापद्धति–**
   - सुनी हुई कथा को भाषा के माध्यम से सरल शब्दों में सुनाया जाता है।
   - वाक्य छोटे-छोटे, पद परिचित हो।
   - यहाँ शिक्षक कथा सम्बद्ध चित्रों का भी प्रयोग करें।

अधम पाठक व श्रेष्ठ पाठक के लक्षण

पाणिनीय-शिक्षा में अधम पाठक के छः लक्षण बताये गये हैं। ये है–

(1) गद्य को भी गीतरूप में पढ़ना।
(2) अत्यन्त तीव्रता से पढ़ना।
(3) पढ़ते समय सिर को हिलाना।
(4) लेखन-मुद्रण के दोषों को सोचे-विचारे बिना, जैसे लिखा हुआ हो, उसको वैसे पढ़ना।
(5) अर्थ को बिना जाने ही बोलना।
(6) अल्पकण्ठ से धीरे-धीरे पढ़ना।

कहा गया है–

"गीती शीघ्री शिरःकम्पी यथालिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।"

पाणिनीय शिक्षा में ही श्रेष्ठ पाठक के भी छः गुण बताये गये हैं।

"माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः।।"

श्रेष्ठ पाठन में मधुरता, अक्षरों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, पदों का विच्छेद, अच्छा स्वर, धीरता तथा लय-ये गुण होते हैं।

4. लेखन कौशल

उद्देश्यम्–पठितस्य लिखिताभिव्यक्तिः।

- चार कौशलों में अन्तिम कौशल-लेखन कौशल।
- भाषा को लिपिबद्ध करना ही, लेखन है।
- भाषा के स्वरूप को स्थायित्व प्रदान किया जाता है।
- यहाँ वर्तनी का महत्त्व है।

उद्देश्य

(1) अक्षर-शब्द-वाक्य के स्वरूप का ज्ञान
(2) भावों को लिपिबद्ध करके स्थायित्व प्रदान करना
(3) पढ़े हुए विषय को लिखित रूप में अभिव्यक्त करना।

Scanned by CamScanner

लेखनकौशल की विधि

1. **दृष्टलेखन विधि (जेकाटॉट पद्धति)**
    - अध्यापक के द्वारा लिखे गये शब्दों का अनुकरण करके छात्र लिखता है। या पुस्तक में देखकर छात्र अभ्यास करता है।
    - अशुद्धियाँ कम होती है।
    - विराम चिह्न आदि का ज्ञान भी हो जाता है। (प्राथमिक स्तर के लिए सर्वश्रेष्ठ)
2. **श्रुतलेखनविधि (उक्त लेखन विधि)**
    - अध्यापक के पदों या वाक्यों को सुनकर लिखना।
    - अध्यापक मध्यम गति से वाचन करें।
    - वाक्य या पद पाठ्यपुस्तक से ही हों।
    - विरामचिह्नों को न बोले। बल्कि छात्र उन्हें समझने का प्रयत्न करें।
    - छात्र स्वयं भावानुकूल विराम चिह्नादि का प्रयोग करे।
    - उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के लिए श्रेष्ठ।
3. **अक्षरस्वरूपानुकरण पद्धति (Tracing Method)**
    - पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक कक्षाओं हेतु उपयोगी।
    - वर्कबुक में छपे वर्णों की बिन्दुमाला पर पङ्क्तियों के द्वारा जुड़ाव करके, वर्णों का लेखन।
    - सर्वाधिक रुचिकर पद्धति।

लेखन कौशल के विकास के उपाय

1. अध्यापक अधिकाधिक श्यामपट्ट का प्रयोग करें।
2. गृहकार्य के अतिरिक्त अन्य विषयों पर लिखने का अभ्यास छात्रों से करवाया जावे।
3. संस्कृत की पत्रिकाओं से हास्यकणिकाओं, कथाओं, अनुभवों आदि को लिखने हेतु छात्रों को प्रेरित किया जावे।
4. छात्रों को संस्कृत भाषा में डायरी लिखवाने का अभ्यास करवाया जावे।
5. छात्रों को मित्रों के बीच संस्कृत भाषा में ही पत्र व्यवहार हेतु प्रेरित किया जावे।

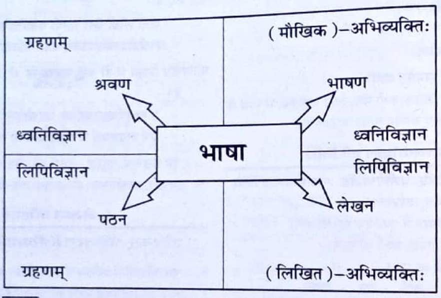

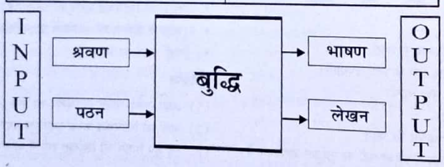

संस्कृत शिक्षण विधि

- संस्कृत शिक्षण की विधियों को दो भागों में विभाजित किया जाता है।
- परम्परागत शिक्षण विधियों में **पाठशाला विधि, भण्डारकरविधि** तथा **पाठ्यपुस्तक विधि** है।
- आधुनिक शिक्षण विधियों में **प्रत्यक्ष विधि** (निर्बाध विधि), **संरचनात्मक उपागम** तथा **नियोजित अध्ययन विधि** है।

पम्परागत शिक्षण विधियाँ

1. पाठशाला विधि/पण्डित /गुरुकुल पद्धति

- **संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य–**
- संस्कृत के अन्तःतत्त्व का अध्ययन करके ज्ञान को हृदयंगम करना हैं।
- संस्कृति का ज्ञान करके एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में हस्तांतरित करना।
- शास्त्रार्थ के द्वारा आदर्श पण्डित बनना मुख्य उद्देश्य।
- यहाँ व्याकरण शिक्षण की प्रधानता होने के कारण कुछ लोग इसे व्याकरण पद्धति भी कहते हैं।
- रटने एवं स्मरण पर बल दिया गया, इससे स्मरण शक्ति का चरम विकास हुआ। (**कण्ठस्था तु या विद्या**)
- **गुरु-शिष्य सम्बन्ध। (पूर्ण संवाद)।**
  शिष्य पुत्रवत्। गुरु ईश्वरवत्। दृढ। स्नेहपूर्ण। गुरु के प्रति असीम श्रद्धा।
- **मानसिक एवं कठोर अनुशासन**–शिष्य मानसिक रूप से अनुशासित रहता था, गुरु आदि के डर से नहीं।
- **श्रवण व भाषण कौशल का विकास**–पूरा अध्ययन-अध्यापन मौखिक रूप से होता था। अतः केवल श्रवण एवं भाषण कौशल का विकास हो पाया। लिपि का अभाव होने के कारण पठन एवं लेखन कौशल पूर्णतः विकसित नहीं हुए।
- **प्रशिक्षण स्थानान्तरण** (Training Transfer)–गुरु के द्वारा शिष्य को दी गई विद्या मौखिक रूप से अन्य शिष्यों के पास पहुँचती थी। इस तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ज्ञान का स्थानान्तरण होना ही प्रशिक्षण का स्थानान्तरण कहलाता है।
- **नकदी का रूपक**–जिस तरह जेब में स्थित नकद रुपये ही बाजार में खरीद इत्यादि में काम आ सकते हैं, उसी तरह यदि कोई विद्या रटी हुई है तो शास्त्रार्थ के समय काम आएगी। रटा हुआ ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है।
- लेकिन केवल रटने पर बल देना, जीवन के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को दिखाता है। इससे विद्यार्थी कूपमण्डूक बन जाता है। मनोविज्ञान रटने की बजाय समझने पर बल देता है।
- वर्तमान में साप्ताहिक केवल छः कालांश व्यवस्था में यह सम्भव नहीं है।
- संस्कृत आयोग ने भी इसे कुछ सुधारों के साथ स्वीकृत माना है।

2. भण्डारकर विधि (व्याकरणानुवाद विधि)

- **प्रवर्तक**–रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर।
- **समर्थक**–वामन शिवराम आप्टे।
- रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर ने पाश्चात्य पद्धति को अपनाकर तुलनात्मक भाषा विज्ञान तथा नियमों का समावेश करके इस विधि का प्रवर्तन किया है।
- पाश्चात्य विधि का अनुकरण करके, केवल व्याकरण और अनुवाद पर बल दिया गया है। अतः इस विधि को व्याकरणानुवाद विधि भी कहा जाता है।
- व्याकरण और अनुवाद के माध्यम से संस्कृत पठन-पाठन।
- छात्रों को केवल व्याकरण तथा अनुवाद की प्रक्रिया सिखा दो, विस्तृत संस्कृत साहित्य का अध्ययन वह स्वयं कर लेगा।
- यहाँ शिक्षण गुरु के बिना भी संभव है।

Scanned by CamScanner

- रटनप्रणाली का अभाव।
- अनुवादों में ही संस्कृत साहित्य का परिचय करवा दिया जाता है।
- **भण्डारकर की दो पुस्तकें–**

  (1) मार्गोपदेशिका–31 पाठ

  (2) संस्कृतमंदिरान्तःप्रवेशिका–26 पाठ

  प्रत्येक पाठ के चार भाग थे। ये चार पाठ अधोलिखित पाठयोजना के रूप में थे।
- **भण्डारकर विधि में शिक्षण योजना–**

  * व्याकरण का सोदाहरण ज्ञान।

  * संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद।

  * अंग्रेजी से संस्कृत में अनुवाद।

  * शब्दकोष का ज्ञान।
- इस विधि में संस्कृत का स्वतंत्र शिक्षण होता है। कम समय में भी पूर्णतया संस्कृत का ज्ञान संभव है।
- लेकिन बिना साहित्य के शिक्षण में नीरसता हो जाती है।
- भाषा के विभिन्न कौशलों का विकास अवरुद्ध हो जाता है।
- पूरे नियमों के बजाय अत्यावश्यक नियमों का पहले ज्ञान किया जाता है।
- प्रत्येक विषय एवं सभी छात्रों के लिए अनुपयुक्त।
- केवल माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के लिए उपयोगी।

3. पाठ्यपुस्तक विधि

- **समर्पण मूल्य** (Surrender Value)–अध्ययन बीच में ही छोड़ देने पर वह जीवन में कितना उपयोगी हुआ।
- समर्पण मूल्य की सुरक्षा हेतु, पाठों के निर्माण करके पाठ्यपुस्तकें बनाकर शिक्षण करवाया जाना चाहिए।
- अनुच्छेदों को समझने पर जोर देकर, वाचन कौशल पर बल।
- शिक्षण का केन्द्र पाठ्यपुस्तक।
- केवल वाचन पर बल। (उच्चारणसौष्ठव व वाचनकौशल पर बल)
- नवीन शब्दों की व्याख्या मातृभाषा के द्वारा।
- व्याकरण का ज्ञान प्रसंग आने पर ही।
- इस विधि से शब्दावली का संग्रह सुगम हो जाता है, छात्रों को नये विषय की जिज्ञासा होती है, साहित्य के प्रति छात्र आकर्षित होते हैं।
- अनुवाद का आश्रय होने के कारण कक्षा में निष्क्रियता एवं नीरसता आ जाती है।

आधुनिक-शिक्षण विधियाँ

1. प्रत्यक्ष विधि/निर्बाध विधि/मातृ पद्धति

- **प्रवर्तक**–प्रो. वी.पी. बोकील (मुम्बई में)
- **समर्थक**–जेस्परसन, गेटे,
- **विरोधी**–वामन शिवराम आप्टे
- भाषा का स्वरूप स्वाभाविक होता है। अतः भाषा का ज्ञान, उसी भाषा में किया जाना चाहिए।
- इस विधि में शिक्षण में मातृभाषा का पूर्णतः बहिष्कारः किया जाता है।
- बिना किसी सहायक भाषा की सहायता से अध्ययन या अध्यापन करवाया जाता है।
- अतः यहाँ एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना निषिद्ध माना गया है। क्योंकि अनुवाद करने से भाषा का मौलिक स्वरूप विनष्ट हो जाता है।
- विचार एवं अभिव्यक्ति तथा अनुभव एवं भाषा में साक्षात् सम्बन्ध होता है। अतः संस्कृत में ही विचार-विमर्श करने की परम्परा प्रारम्भ की गई।
- छात्र संस्कृत में ही पढ़े, संस्कृत में ही चिन्तन-मनन करें।
- सभी आदेश व वार्तालाप संस्कृत में ही।
- व्याख्या एवं काठिन्यनिवारण के लिए स्थूल वस्तुओं का प्रदर्शन, दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग, अभिनय, पर्यायवाची एवं पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग।
- मौखिक अभ्यास पर बल।
- प्रारम्भिक स्तर पर ज्यादा उपयोगी, क्योंकि छात्रों में स्वाभाविक रुचि का उत्पादन हो जाता है।
- बालोद्यान (किंडरगार्टेन स्कूल) में ज्यादा प्रयोग।
- इस विधि से शुद्ध उच्चारण एवं अभिव्यक्ति का विकास सम्भव है।
- लेकिन प्रत्यक्ष विधि में सभी शब्दों का ज्ञान असंभव होता है, यह विधि केवल बुद्धिमानों के लिए है।
- यह विधि अंग्रेजी में ज्यादा सफल हुई, क्योंकि अंग्रेजी विश्लेषणात्मक भाषा है। संस्कृत एक संश्लेषणात्मक भाषा है।

मौखिक विधि (Oral Method)–

- यदि प्रत्यक्ष विधि में व्याख्या हेतु मातृभाषा का प्रयोग किया जाये तो इसे मौखिक विधि कहा जाता है।
- संवादविधि/वार्तालाप विधि इसके अन्य नाम हैं।

संयुक्त विधि/समन्वय पद्धति (Eclectic Method)

- बोकील की नवीन विधि, आप्टे की मनोवैज्ञानिक विधि तथा हू परिकर की विश्लेषण-संश्लेषणात्मक विधि का मिश्रण होने पर संयुक्त विधि कहलाती है।

2. संरचनात्मक उपागम

- इस उपागम में **वाक्यों की संरचना** के ऊपर बल दिया जाता है।
- वाक्य की रचना के दौरान ही व्याकरणात्मक एवं शब्दकोशात्मक ज्ञान को प्रस्तुत किया गया।
- वस्तुतः इस विधि के द्वारा प्रत्यक्ष विधि को बल प्रदान किया गया, क्योंकि वाक्यों की संरचना का ज्ञान होने के बाद छात्रों को उस भाषा को समझने में ज्यादा श्रम नहीं करना पड़ेगा।
- वाक्य की संरचना के दौरान कर्त्ता, कर्म इत्यादि का तथा अव्यय, उपसर्ग निपात इत्यादि का ज्ञान प्रस्तुत कर दिया जाता है।
- अतः यह विधि प्रत्यक्ष विधि को सफल बनाने के लिए ही है।

3. नियोजित अध्ययन विधि (Programmed Learning Method)

- नियोजित अध्ययन विधि में पाठ को खण्डों (उपविभागों) में विभाजित करके अध्ययन करवाया जाता है।
- यहाँ सामान्यतः पाठ को छः खण्डों में विभाजित किया जाता है।
- इन खण्डों को चौखट या फ्रेम (Frame) में विभाजित किया जाता है।
- पहली चौखट के बाद ही दूसरी चौखट में प्रवेश किया जा सकता है।
- यहाँ प्रस्तावना एवं प्रस्तुतीकरण के बाद अनेक प्रश्न बनाकर उनके उत्तर भी प्रस्तुत किये जाते हैं, ताकि छात्र स्वयं का मूल्यांकन कर सके। गलत उत्तर दिये जाने पर भी छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाया जाता है।
- वर्तमान दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में इसी विधि का प्रयोग करके पाठों का निर्माण किया जाता है।
- इसी विधि का प्रयोग करके Teaching Software एवं Teaching Machine का निर्माण किया जाता है।
- इस विधि में विशेष प्रकार की पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करके अध्यापन करवाया जाता है। जिनकी सहायता से छात्र स्वयं भी अध्ययन करने में समर्थ हो जाते हैं।
- यह विधि मनोवैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक आधारों पर निर्भर है।
- यह विधि उद्दीपन एवं अनुक्रिया दोनों पर निर्भर है। इसमें शिक्षक छात्रों को उद्दीपित करता है। छात्र पुनर्बलन के द्वारा अनुक्रिया करते हैं।

Scanned by CamScanner

अध्यापन विधि एवं पाठ योजना

1. व्याकरण-शिक्षण

उद्देश्यम्-भाषाज्ञानम्।

व्याकरण-परिचय

- व्याक्रियन्ते = व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेनेति व्याकरणम्।
- वि + आङ् + कृ + ल्युट् = व्याकरणम्।
- वेदों का मुख - ''मुखं व्याकरणं स्मृतम्'' (पाणिनीय शिक्षा)।
- दूसरा नाम - शब्दानुशासनम् (पतञ्जलि ने कहा है।)
- व्याकरण के त्रिमुनि - पाणिनि - कात्यायन-पतञ्जलि
  तदुक्ति - अष्टाध्यायी - वार्तिक - महाभाष्य (क्रमश:)
- पतञ्जलि के अनुसार - **5 मुख्य प्रयोजन** (महाभाष्य में)।
  (रक्षा, ऊह, आगम, लघु, असन्देह)
  (रक्षोहागमलघ्वसन्देहा: प्रयोजनम्)
- **13. गौण प्रयोजन**–1. तेऽसुरा:, 2. दुष्ट: शब्द:, 3. यदधीतम्, 4. यस्तु प्रयुङ्क्ते, 5. अविद्वान्स:, 6. विभक्तिं कुर्वन्ति, 7. यो वा इमाम्, 8. चत्वारि, 9. उत त्व, 10. सक्तुमिव, 11. सारस्वतीम्, 12. दशम्यां पुत्रस्य एवं 13. सुदेवोऽसि वरुण।
- ब्रह्मा ने बृहस्पति को, बृहस्पति ने इन्द्र को, इन्द्र ने भारद्वाज मुनि को व्याकरण का ज्ञान दिया। (ऋक् तंत्र)
- सायण के अनुसार इन्द्र ही प्रथम वैयाकरण थे।
- अन्य वैयाकरण - धन्वन्तरि, कश्यप, वशिष्ट, भृगु, अत्रि, काशकृत्स्न, वैयाघ्रपाद, माध्यन्दिनी, शौनक, गौतम, व्याड़ि।
- वैदिक शब्दों की व्याख्या निघण्टु में।
- निरुक्त के प्रणेता यास्क है, जिसका एक भाग निघण्टु है।
- पाणिनि ने 'वाक्य' को ही भाषा की इकाई माना है।
- पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 10 वैयाकरणों का नाम लिखा है- गालव व शाकल्य का चार बार, शाकटायन और गार्ग्य का तीन बार।

व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य भाषा ज्ञान –

(1) भाषा के ध्वनितत्त्व का परिचय,
(2) शुद्ध रूपों का ज्ञान तथा वाक्य रचना में सामर्थ्य सम्पादन,
(3) तर्कशक्ति, रचनात्मक प्रवृत्ति व मूल्याङ्कन शक्ति का विकास करना।

व्याकरणशिक्षण की विधि

प्राचीनविधि

1. **परायण विधि**
   - पाणिनि के समय प्रचलित।
   - परायण करने वाला-'पारायणिक'।
   - परायण में नियमों को रटना तथा उनकी बार-बार आवृत्ति करना। (पंचक-सप्तक- अष्टक आदि परायण)
   - परीक्षा में एक अशुद्धिकर्ता छात्र -ऐकानयिक, दो अशुद्धिकर्ता छात्र - दैनयिक तथा तीन अशुद्धिकर्ता छात्र - त्रैनयिक कहलाता था।
   - ब्रह्मचारी पूर्वाभिमुख होकर कुशासन पर बैठकर परायण करते थे।
   - परायण के बीच में, अन्य विषयक वार्ता नहीं हो सकती थी।
2. **सूत्र विधि–**
   - प्राचीन विधि/पाण्डित्य विधि/परम्परागत विधि
   - व्याकरण के नियमों को सूत्रों के माध्यम से बताया जाता है।
   - सामान्य से विशेष की ओर (सामान्याद् विशेषं प्रति)।
   - अध्यापक अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करता है।
   - मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल।
   - सूत्र– **अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रविदो विदु:॥**
   - **सूत्र के छ: प्रकार–**
     संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च। अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥
3. **व्याख्या विधि–**
   - व्याख्या के चार अङ्ग थे–चर्चा, उदाहरण, प्रत्युदाहरण तथा वाक्याध्याहार।
   - पतञ्जलि ने इसी विधि का अनुकरण किया है।
   - इसमें भाषा के प्रायोगिक पक्ष की बजाय व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।
   - यह विधि आधुनिक निगमनात्मक विधि के समकक्ष है।
4. **अव्याकृतविधि–**(भाषा संसर्गविधि)
   - भाषा के साथ-साथ व्याकरण का भी ज्ञान दिया जाता है।
   - इस विधि में अभ्यास पर बल दिया जाता है।

5. **व्याकरणानुवाद विधि–(भण्डारकरविधि)**
   - प्रवर्तक श्रीरामकृष्ण गोपाल भण्डारकर थे।
   - व्याकरण और अनुवाद पर बल दिया जाता है।
   - भण्डारकर की पुस्तकें– मार्गोपदेशिका, संस्कृतमन्दिरांत:प्रवेशिका
   - इस विधि में संस्कृत व्याकरण की सोदाहरण व्याख्या, संस्कृत से अंग्रेजी व अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद तथा शब्दकोश का ज्ञान होता है।

आधुनिकविधि

1. **आगमन विधि–**
   - उदाहरणों के माध्यम से नियमों का ज्ञान।
   - विशिष्टों का अध्ययन करके सामान्य का ज्ञान।
   - प्रत्यक्षों के आधार पर प्रमाण स्थापित करना।
   - स्थूल तत्त्वों के आधार पर सूक्ष्म तत्त्व का निर्माण।
   - **शिक्षण सूत्र–**

उदाहरणाद् नियमं प्रति	(उदाहरण से नियम की ओर)
ज्ञाताद् अज्ञातं प्रति	(ज्ञात से अज्ञात की ओर)
विशिष्टात् सामान्यं प्रति	(विशिष्ट से सामान्य की ओर)
प्रत्यक्षात् प्रमाणं प्रति	(प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर)
स्थूलात् सूक्ष्मं प्रति	(स्थूल से सूक्ष्म की ओर)
मूर्ताद् अमूर्तं प्रति	(मूर्त से अमूर्त की ओर)

   - यह विधि सरल एवं स्वाभाविक है। बार-बार प्रयोग के कारण कण्ठस्थीकरण की आवश्यकता नहीं होती। यह विधि आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुकूल है, अत: इसे व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि कहा जाता है। इस विधि से छात्रों में उत्साह जागृत होता है तथा वे सक्रिय होते हैं। लेकिन शिक्षक का प्रशिक्षित होना तथा अत्यधिक काल (समय) का होना आवश्यक है।
2. **निगमन विधि–(नियम से उदाहरण की ओर)**
   - इस विधि में शिक्षक पहले सामान्य नियमों व सिद्धान्तों को बताता है, फिर उदाहरण देता है।
   - इस विधि में समय व परिश्रम कम लगता है। उच्च कक्षाओं के लिए यह श्रेष्ठ विधि है।
   - लेण्डन् ने इस विधि का परिशोधन किया है।
   - निगमन विधि के चार सोपान है–
     (1) नियमबोधन, (2) नियमस्पष्टीकरण,
     (3) नियम परीक्षण एवं (4) सत्यापन।
   - **निगमन विधि के शिक्षण सूत्र–**

1. नियमाद् उदाहरणं प्रति	(नियम से उदाहरण की ओर)
2. सामान्याद् विशिष्टं प्रति	(सामान्य से विशिष्ट की ओर)
3. प्रमाणात् प्रत्यक्षं प्रति	(प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर)
4. सूक्ष्मात् स्थूलं प्रति	(सूक्ष्म से स्थूल की ओर)
5. अमूर्ताद् मूर्तं प्रति	(अमूर्त से मूर्त की ओर)
6. अज्ञाताद् ज्ञातं प्रति	(अज्ञात से ज्ञात की ओर)

3. **आगमन निगमन विधि–**
   - उक्त दोनों विधियाँ (आगमन एवं निगमन) का मिश्रण।
   - उदाहरणों से नियम तथा नियमों से उदाहरण की ओर।
   - ज्ञान स्थायी व रोचक होगा।
   - व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि।
4. **अनौपचारिक विधि–**
   - व्याकरण का कोई औपचारिक अध्यापन नहीं।
   - **सम्भाषण** में ही व्याकरण का ज्ञान होता है।
   - संस्कृत सम्भाषण शिविरों में इसी विधि से व्याकरण का ज्ञान होता है।
5. **समवाय विधि–**
   - यहाँ पर भी व्याकरण का नियमित अध्ययन नहीं होता।
   - **प्रसंग आने पर**, उस विषय में व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है।
   - शिक्षक पाठ के दौरान ही व्याकरण के नियमों को यथास्थान बताता रहता है।

व्याकरण पाठयोजना

व्याकरण की पाठयोजना के सोपान

I- प्रस्तावना
II- उद्देश्य कथनम्
III- प्रस्तुतीकरणम् (उदाहरण प्रस्तुति) = (प्रमुख सोपान)
IV- सामान्यीकरणम्
V- नियमीकरणम्
VI- पुनरावृत्ति:
VII- गृहकार्यम्

Scanned by CamScanner

2. गद्यशिक्षण

उद्देश्यम्–ग्रहणम् अभिव्यक्तिश्च

गद्यसाहित्य परिचय

- गद्य का प्रथम दर्शन - यजुर्वेद में।
- गद्यात्मको यजुः।
- ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों में भी गद्य मिलता है।
- श्रीमद्भागवत और विष्णु पुराण में भी गद्य प्रयोग।
- **'गद व्यक्तायां वाचि'**-धातु से यत् प्रत्यय करने पर गद्य शब्द बनता है।
- दण्डी- **अपादः पदसन्तानो लक्षणम्।**
- **ओजस्समासभूयस्त्वम् एतद्गद्यस्य जीवितम्।**
- विश्वनाथ-**वृत्तबन्धरहितं गद्यम्।**
- गद्य दो प्रकार का होता है- कथा और आख्यायिका।

उद्देश्य-ग्रहण+अभिव्यक्ति

- शुद्ध पदों का ज्ञान व उच्चारण।
- नये-नये शब्दों के प्रति आकर्षित करके छात्रों में अभिरुचि पैदा करना।
- शब्दभण्डार व सूक्तियों का ज्ञान प्रदान करना।
- भावाभिव्यक्ति तथा कल्पना शक्ति का वर्धन करना।
- विवेचनात्मक तथा समीक्षात्मक शक्ति का विकास

गद्यशिक्षणविधयः

गद्यशिक्षण की विधियाँ वस्तुतः काठिन्यनिवारण की विधियाँ हैं-

1. **उद्बोधनविधि/अर्थबोधविधि-(प्राथमिक स्तर हेतु श्रेष्ठ)**
   - इस विधि में अध्यापक कठिन शब्दों के अर्थों को बताने के लिए अनेक साधनों का सहारा लेता है-

     (अ) चित्र- रेखाचित्र - मानचित्र दिखाकर-
     (महापुरुष, गणितीय आकृतियाँ, देश-प्रदेशों के नाम)

     (ब) प्रतिकृति (मॉडल) दिखाकर-
     (ज्वालामुखी, आपदा प्रबन्धन, यातायात व्यवस्था आदि)

     (स) प्रत्यक्ष अभिनय करके-
     (हंसकर, गाकर, दौड़कर, पढ़कर आदि क्रियाएँ करके)

     (द) पदार्थ का प्रत्यक्ष कराकर-
     (पुष्प, फल, पुस्तक, फर्नीचर आदि को दिखाकर)
   - **इस विधि के गुण-**
     (1) मनोवैज्ञानिक विधि, छात्र सक्रिय होता है।
     (2) रुचिकर शिक्षण के कारण ज्ञान में स्थायित्व आता है।
2. **प्रवचनविधि/कथनविधि-**
   - इस विधि में अध्यापक विभिन्न प्रविधियों के द्वारा काठिन्यविनिवारण करता है।

   (अ) अनुवाद विधि- (प्राथमिक स्तर हेतु)
   अध्यापक संस्कृत पदों का सरल भाषा में अनुवाद करता है। लेकिन इसमें छात्र निष्क्रिय रहते है तथा उन्हें व्याकरणात्मक ज्ञान नहीं मिल पाता है।

   (ब) कोष विधि (उच्च स्तर हेतु)
   पाठ में आये पदों के कोष का ज्ञान कराया जाता है। लेकिन यह विधि उच्च स्तरीय कक्षाओं के लिए ही उपयोगी है।

   (स) टीकाविधि–इस विधि में अध्यापक प्राचीन टीकाओं तथा भाष्यों का प्रयोग कर काठिन्यनिवारण करता है। यह भी उच्च स्तरीय कक्षाओं हेतु ही उपयोगी है।

   (द) परिभाषाविधि–पाठ में आये परिभाषिक शब्दों को उदाहरण सहित समझाया जाता है। (उच्च स्तर हेतु)
3. **स्पष्टीकरण विधि-**
   - इस विधि में अध्यापक अनेक उपविधियों का सहारा लेकर पाठ में आये पदों को स्पष्ट करता है।

   (अ) व्युत्पत्ति के द्वारा–सन्धि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग, संज्ञापद, क्रियापद आदि की अलग-अलग व्युत्पत्ति करके अर्थ को स्पष्ट किया जाता है। (उच्च स्तर हेतु)

   (ब) वाक्यप्रयोग के द्वारा–पाठ में आये कठिन पदों किसी दूसरे सरल वाक्यों में प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट किया जाता है।

   (स) तुलना के द्वारा–यहाँ समानार्थक व विलोम शब्द आदि के द्वारा तुलना की जाती है।

   (द) **उदाहरण, अन्तः कथाओं व प्रसङ्गों** के माध्यम से भी काठिन्यनिवारण किया जाता है।
4. **प्रश्नोत्तरविधि/संवादविधि/सुकराती विधि (डायलेक्टिक मैथड)**
   - इस पद्धति में शिक्षक विविध प्रश्नों के माध्यम से छात्रों से उत्तर प्राप्त करके पाठ के प्रवाह को आगे बढाता है। इसके प्रवर्तक सुकरात माने जाते है, अतः इसे सुकराती विधि (Socratic Method) भी कहा जाता है।

गद्यपाठयोजना

I. पूर्वज्ञानपरीक्षणम्।
II. प्रस्तावना
III. उद्देश्यकथनम्।
IV. प्रस्तुतीकरणम्/विषयोपस्थापनम्
आदर्शवाचनम् - अध्यापक द्वारा।
अनुवाचनम् - छात्रों द्वारा।
अशुद्धिसंशोधनम्-अनुवाचन में छात्रों द्वारा बोले गये अशुद्ध शब्दों में संशोधन। (अध्यापक द्वारा)
काठिन्यनिवारणम्- पाठ में आये कठिन पदों का अनेक विधियों से अर्थ स्पष्ट करना। (अध्यापक द्वारा)
V. बोधप्रश्नाः/पाठप्रवर्धनम् - अध्यापक पाठ से सम्बन्धित सरल प्रश्न पूछता है।
VI. मौनवाचनम्-
VII. विचारविश्लेषणात्मकप्रश्नाः-अध्यापक पाठ से सम्बन्धित क्लिष्ट भावों को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न पूछता है।
VIII. सारकथनम्/अध्यापककथनम्-अध्यापक पूरे पाठ का सारांश संक्षेप में प्रस्तुत करता है।
IX. पुनरावृत्तिप्रश्नाः/मूल्याङ्कनप्रश्नाः-छात्रों को पाठ का अवगमन हुआ या नहीं, इस तथ्य के परीक्षण के लिए अध्यापक मूल्याङ्कन प्रश्न पूछता है।
X. गृहकार्यम्।

3. पद्यशिक्षण

उद्देश्यम्–रसानुभूतिः

काव्यशिक्षण/ कविताशिक्षण/पद्यशिक्षण

काव्य से तात्पर्य

- सबसे पहला काव्य लक्षण - अग्निपुराण में-

  'संक्षेपाद् वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।
  काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद्दोषवर्जितम्।।'

इसके अनुसार काव्य में इन पाँचों तत्त्वों का होना आवश्यक है-

1. संक्षिप्त वाक्य, 2. इष्टार्थ, 3. अलंकार, 4. गुण और 5. दोषराहित्य।

- **भामह**–शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् (काव्यालङ्कारः)।
- **रुद्रट**–शब्दार्थौ काव्यम् (काव्यालङ्कारः)।
- **हेमचन्द्र**–अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्।
- **विद्यानाथ प्रतापरुद्र**–गुणालंकार-सहितौ शब्दार्थौ दोषवर्जितौ।
- **कुन्तक**–शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
  बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी।।
  (वक्रोक्तिकाव्यजीवितम्)
- **मम्मट**–तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि। (काव्यप्रकाशः)
- **विश्वनाथ**–वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (साहित्यदर्पणम्)।
- **जगन्नाथ**–रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। (रसगङ्गाधरः)
- स्पष्ट है कि पण्डितराज जगन्नाथ के अलावा सभी आचार्यों ने काव्य में शब्द और अर्थ दोनों का संयोजन माना है। प. जगन्नाथ ने केवल शब्द को ही काव्य माना है।
- **काव्य का प्रयोजन-**
  मम्मट के अनुसार-

  काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
  सद्यःपरनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

पद्यशिक्षण के उद्देश्य- [रसानुभूति]

(1) गतिलयपूर्वक काव्यपाठ द्वारा आनन्द प्रदान तथा रुचि का विकास।
(2) काव्यगत भावों के द्वारा रसानुभूति।
(3) कल्पनाशक्ति व तर्कशक्ति का विकास।

पद्यशिक्षण की विधि

1. **दण्डान्वय विधि-**
   - इस विधि में श्लोक का अन्वय करने का प्रयास किया जाता है।
   - इसमें छात्र स्वयं या अध्यापक की सहायता से कविता में प्रधानवाक्य को खोजता है। फिर इसमें व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं।
   - यहाँ दण्ड से तात्पर्य 'ग्रन्थियुक्त' दण्ड है।
   - यहाँ दण्ड वाक्य का प्रतीक है।
   - यहाँ श्लोक में से कर्ता, क्रिया, अन्य कारक (अन्यविभक्तियाँ), अव्ययपद, विशेषण - विशेष्य आदि को छाँटने हेतु प्रश्न किये जाते है। इनके माध्यम से श्लोक का अन्वय करने का प्रयास किया जाता है।

Scanned by CamScanner

- **जैसे**–अधोलिखित श्लोक को देखिए–
उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः।
अन्योन्यं प्रशंसन्ति अहो रूपमहो ध्वनिः॥
- दण्डान्वय प्रणाली में इसे कुछ इस तरह पढाया जायेगा–
  1. श्लोकेऽस्मिन् कर्ता कः (इस श्लोक में कर्ता कौन है ?)
  उत्तरम्– गर्दभाः (गधे)।
  2. श्लोकेऽस्मिन् क्रियापदं किम् ?
  (इस श्लोक में क्रियापद क्या है ?)
  उत्तरम्– गायन्ति, प्रशंसन्ति च (गायन्ति और प्रशंसन्ति)।
  3. **श्लोके**ऽस्मिन् कर्म किम् ? (इस श्लोक में कर्म क्या है ?)
  उत्तरम्– 'गायन्ति'-क्रियायाः कर्म 'गीतम्'।
  प्रशंसन्ति - क्रियायाः कर्म 'अन्योन्यम्'।
  इस तरह श्लोकार्थ का विकास किया जाता है।

2. **खण्डान्वय विधि–(श्रेष्ठ विधि)**
- इस विधि में श्लोक का अन्वय करने के लिए सर्वप्रथम श्लोक में से प्रधानवाक्य को खोजा जाता है।
- यहाँ प्रश्न व्याकरण पर आधारित न होकर श्लोक के विषय पर आधारित होते हैं।
- इसमें संज्ञा–सर्वनाम के ज्ञान हेतु कः, कम्, केन आदि के माध्यम से प्रश्न किया जाता है।
- इस विधि में छात्र सक्रिय रहते है। उनकी श्लोकपाठ में रुचि रहती है। यह विधि सामूहिक शिक्षण हेतु श्रेष्ठविधि है। छात्रों को रसानुभूति तथा सौन्दर्यानुभूति होती है।

उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः।
अन्योन्यं प्रशंसन्ति अहो रूपमहो ध्वनिः॥

इस श्लोक के प्रसङ्ग में खण्डान्वय विधि में प्रश्न होंगे–

गर्दभाः किं कुर्वन्ति ?	गर्दभाः गायन्ति।
गर्दभाः किं गायन्ति ?	गर्दभाः गीतं गायन्ति।
गर्दभाः कुत्र गीतं गायन्ति ?	गर्दभाः विवाहेषु गीतं गायन्ति।
गर्दभाः केषां विवाहेषु गीतं गायन्ति ?	गर्दभाः उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति।
गर्दभाः अन्यत् किं कुर्वन्ति ?	गर्दभाः अन्योन्यं प्रशंसन्ति।
गर्दभाः कथं प्रशंसन्ति ?	अहो रूपम् इति।

- इस प्रकार यह विधि रुचिकर व रसोत्पत्ति कारक है।

3. **गीत विधि**
- अध्यापक गीति के माध्यम से काव्य को पढाया है। बीच-बीच में नाट्य का आश्रय लेता है। (प्राथमिक स्तर हेतु)

4. **भाषानुवाद विधि/अर्थबोधविधि–**
- अध्यापक किसी भी श्लोक को पढकर अर्थ बताता है, इसमें आये कठिन शब्दों का मातृभाषा में अनुवाद कर दिया जाता है। इससे छात्र रटकर लिखने में तो समर्थ हो जाते है लेकिन उन्हें रसानुभूति नहीं हो पाती है।
- अतः इसे शुष्कविधि भी कहा जाता है। इसमें छात्र निष्क्रिय रहते है, अतः यह अमनोवैज्ञानिक विधि है।

5. **व्याख्याविधि (उच्च स्तर हेतु)/परम्परागत विधि–**
- अध्यापक श्लोक के एक-एक पद की व्याख्या करते हुए श्लोकार्थ बताता है। शैली, रस, अलङ्कार, छन्द आदि का भी ज्ञान यथास्थान करवाते हुए, श्लोक से सम्बद्ध अन्तःकथाओं को भी स्पष्ट करता है।

6. **भाष्यविधि/व्यासविधि– (उच्च स्तर हेतु)**
- शिक्षक कथावाचक की तरह, अनेक अवान्तर अन्तःकथाओं और प्रसङ्गों को बताते हुए, श्लोकार्थ स्पष्ट करता है। यहाँ अनेक उदाहरण, सन्दर्भ, भावभङ्गिमा आदि की सहायता से श्लोक के भाव, तथा रसानुभूति तक पहुँचा जाता है। लेकिन इसमें अध्यापक तो सक्रिय होता है, लेकिन छात्र निष्क्रिय होता है।

7. **तुलनाविधि–**
- इस विधि में शिक्षक, प्रस्तुत श्लोक के समान अर्थ वाला अन्य श्लोक बताते हुए, तुलना करते हुए, भावों को स्पष्ट करता है। यह तुलना उसी कवि या अन्य कवि या भिन्न शैली के कवि के श्लोक के साथ हो सकती है। इसमें शिक्षक का श्रम ज्यादा है। शिक्षक को साहित्यज्ञ व भाषाविद् होना आवश्यक है।

8. **टीकाविधि– (उच्च स्तर हेतु)**
- इस विधि में शिक्षक विभिन्न टीकाओं की सहायता से व्याकरणात्मक एवं भावात्मक ज्ञान करवाता है। साहित्यिक टीका लेखन के प्रसङ्ग में मल्लिनाथ द्वारा की गई टीकाएँ प्रसिद्ध हैं।

9. **समीक्षाविधि–**
- इस विधि में शिक्षक छात्र को कवि के जीवनदर्शन के साथ जोड़ता है। भाषाशैली, अलङ्कार, विचार, कल्पना, भाव, आदि को विस्तार देते हुए अन्य कवियों के साथ तुलना करके, गुण-दोषों को बताकर, समीक्षा करता है। शिक्षक कविता की पृष्ठभूमि पर भी बल देता है।

पद्यपाठयोजना

I. प्रस्तावना
II. उद्देश्यकथनम्
III. प्रस्तुतीकरणम्/विषयोपस्थापनम्
  (i) आदर्शवाचनम्-शिक्षक द्वारा यतिगतिलयपूर्वक।
  (ii) अनुवाचनम्/अनुकरणवाचनम्- छात्रों द्वारा।
  (iii) अशुद्धिसंशोधनम्- अनुवाचन में छात्रों द्वारा बोले गये अशुद्ध पदों का शुद्धीकरण।
  (iv) काठिन्यनिवारणम्-कविता में आये कठिन शब्दों की कठिनता का निवारण।
IV. पाठप्रवर्धनम् (दण्डान्वय-खण्डान्वय विधि द्वारा)
  (i) भावविश्लेषणात्मकप्रश्नाः। (ii) सौन्दर्यानुभूतिप्रश्नाः।
V. सारकथनम्/अध्यापककथनम्।
VI. तुलना– समभाव श्लोक के साथ।
VII. **सस्वरवाचनम्/समवेतवाचनम्**–यहीं पर रसानुभूति होती है। (प्रमुख सोपान)
VIII. पुनरावृत्तिप्रश्नाः मूल्याङ्कनप्रश्नाश्च।
IX. गृहकार्यम्।

4. नाटक शिक्षण

उद्देश्यम्–संस्कारशिक्षणम्

नाटक शिक्षण के उद्देश्य– [संस्कार शिक्षण]

(1) नाटक में प्रस्तुत पात्रों द्वारा संस्कारशिक्षण तथा संस्कृति शिक्षण।
(2) अवरोह-आरोहपूर्वक वार्तालाप तथा अभिनय की क्षमता प्रदान।
(3) कल्पना, चिन्तन, विवेचन तथा निरीक्षण शक्ति का विकास।
(4) भरतमुनि के अनुसार नाटक के तीन उद्देश्य है–
  (i) हितोपदेशजननम्– व्यक्ति तथा समाज के लिए कल्याणकारी उपदेश।
  (ii) विश्रान्तिजननम्– व्यक्ति एवं समाज में शान्ति प्रदान करना।
  (iii) विनोदजननम्– सभी का मनोरञ्जन करना।

नाटकशिक्षण की विधि

नाटक शिक्षण की विधियाँ–

1. **आदर्शनाट्यविधि–**
- इस विधि में, नाटक में आये सारे पात्रों का अभिनय स्वयं शिक्षक ही करता है।
- पात्रों के अनुकूल व भावानुसार आरोह-अवरोह के साथ संवाद बोलकर अभिनय करता है।
- लेकिन इस विधि में छात्र मूक द्रष्टा की तरह रहते है।
- व्याकरणात्मक तत्त्वों का ज्ञान भी नहीं हो पाता।

2. **व्याख्याविधि–**
- इस विधि में अध्यापक नाटक के कथावस्तु, चरित्र, कथनोपकथन, व्याकरण आदि भाषायी तत्त्वों तथा रीति-गुण-शैली आदि की व्याख्या करता है।
- लेकिन इस विधि में व्याख्या पर जोर दिये जाने के कारण नाटक के प्रवाह में कमी आती है।
- छात्र निष्क्रिय रहते हैं।

3. **रंगमञ्चाभिनय विधि–**
- इस विधि में छात्रों के द्वारा पूरे नाटक का अभिनय रंगमञ्च पर प्रस्तुत किया जाता है।
- इससे छात्रों में संस्कार शिक्षण होता है, जो कि नाटक का मुख्य उद्देश्य है।
- लेकिन यह विधि बहुत व्ययकारी है।
- हर नाटक को रंगमञ्च पर प्रस्तुत करने के साधनों का अभाव विद्यालयों में होता है।

4. **कक्षाभिनयविधि–**
- इस विधि में अध्यापक सभी छात्रों को एक-एक पात्र की भूमिका दे देता है। ये छात्र अपने पात्रानुसार प्रसङ्ग पर कक्षा में वाचिक अभिनय करते हैं।
- इसमें छात्रों की सक्रियता एवं रुचि की वृद्धि होती है।

5. **समवायविधि–**
- उक्त सभी विधियों का सम्मिश्रण करके अध्यापक द्वारा नाटक शिक्षण करवाना समवाय विधि है।
- इसे नाटक शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि कहा जा सकता है।

Scanned by CamScanner

नाटक की पाठयोजना

I. प्रस्तावना
II. उद्देश्यकथनम्
III. वाचनम्–
(i) आदर्शवाचनम् (अध्यापक द्वारा)
(ii) अनुकरणवाचनम् (छात्रों द्वारा)
IV. बोधप्रश्नाः
V. काठिन्यनिवारणम्
VI. विषयवस्तुसम्बद्धप्रश्नाः
VII. अभिनयः–(प्रमुख सोपान)
1. आदर्शाभिनयः (अध्यापक द्वारा वाचिक अभिनय)
2. भूमिकावितरणम् (छात्रों को रुच्यनुसार पात्रों का वितरण)
3. अनुकरणाभिनयः (छात्रों द्वारा)
VIII. मूल्याङ्कनम्।
IX. गृहकार्यम्।

5. अनुवाद शिक्षण

उद्देश्यम्–द्विभाषाज्ञानम्

अनुवाद शिक्षण के उद्देश्य

(i) दोनों भाषाओं का बोध व व्याकरण का ज्ञान,
(ii) शुद्ध लेखन की योग्यता देना,
(iii) विभिन्न भाषाओं में विद्यमान तत्त्वों को ग्रहण करके संस्कृत साहित्य का समृद्धीकरण

यह अनुवाद मातृभाषा से संस्कृत तथा संस्कृत से मातृभाषा में हो सकता है। यह अनुवाद तीन प्रकार का होता है।

1. **अक्षरशोऽनुवाद–**
- इसमें समानार्थक शब्दों का ही प्रयोग होता है। लेकिन कभी-कभी अर्थान्तरन्यास में अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। सूक्ति, लोकोक्ति व मुहावरों में अक्षरशः अनुवाद करना गलत है।

2. **छायानुवाद या भावानुवाद–**
- प्रस्तुत अनुच्छेद के भावों के अनुसार अनुवाद होता है। यही श्रेष्ठ अनुवाद है, क्योंकि इससे छात्रों की भावाभिव्यक्ति बढ़ती है। लेकिन यहाँ भाषा शैली की उपेक्षा कर दी जाती है।

3. **तथ्यानुवाद–**
- इस तरह के अनुवाद में अक्षरशः अनुवाद के साथ भावों का मिश्रण भी किया जाता है। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि यह अनुवाद उसी लेखक ने किया है, जिसने मूल अनुच्छेद लिखा है। यह अनुवाद सर्वश्रेष्ठ अनुवाद है।

अनुवादशिक्षणविधयः

1. **पुस्तकविधि–**
- इस विधि में अनुवाद के लिए पुस्तकों की सहायता ली जाती है। जैसे रचनानुवादकौमुदी।
- यहाँ अभ्यास के लिए वाक्य दिये जाते हैं। आरम्भ में सरल तथा क्रमशः कठिन प्रश्न होते हैं।

2. **द्विभाषा विधि–**
- इसमें एक व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है तथा दूसरा उसकासंस्कृत रूपान्तरण कर देता है।
- यहाँ व्यक्ति को दोनों भाषाओं का ज्ञान होता है।
- सम्मेलन, साक्षात्कार, गोष्ठी आदि में इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

3. **तुलना एवं अनुकरण विधि–**
- इसमें संस्कृत वाक्य बोलकर मातृभाषा या अन्य भाषा में, उसके समान भावार्थ का वाक्य बोला जाता है।
- इसमें छात्र दूसरी भाषा के वाक्यों के साथ तुलना करते हैं तथा उनके वाक्यों का अनुकरण करते हैं।

अनुवादपाठ्योजना

I. प्रस्तावना	II. उद्देश्यकथनम्	III. प्रस्तुतीकरणम्	IV. मौनवाचनम्	V. चित्राङ्कनम्
VI. काठिन्यनिवारणम्	VII. मौखिककार्यम्	VIII. श्यामपट्टकार्यम्	IX. संशोधनम्	X. सामान्यीकरणम्
XI. सिद्धान्तनिरूपणम्	XII. अभ्यासकार्यम्	XIII. गृहकार्यम्		

रचना शिक्षण के मुख्यतः दो भाग हैं–
(1) मौखिक रचना शिक्षण या उच्चारण शिक्षण। (2) लिखित (रचना) शिक्षण।

6. मौखिक रचना/उच्चारण शिक्षण

उद्देश्यम् – मौखिकम् आत्मप्रकाशनम्

- भाषा के प्रसंग में उच्चारण का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- संस्कृत वैदिक प्रक्रिया में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि के उच्चारण के वैविध्य के आधार पर अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है। कहा भी गया है–

''मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।''

- अधोलिखित श्लोक के माध्यम से पिता अपने पुत्र को व्याकरण पढ़कर उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करने को कहता है।

''यद्यपि बहु नाधीषे ग्रन्थान्, तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भूत्, सकलं शकलं सकृच्छकृत्।।''

- कहा भी गया है कि जिस प्रकार व्याघ्री अपने मुँह में दाँतों के बीच अपने बच्चों को जिस प्रकार बिना काटे या बिना गिराये एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जाती है। ठीक उसी प्रकार से वर्णों का उच्चारण करना चाहिए।

''व्याघ्री यथा हरेत्पुत्रान्, दंष्ट्राभ्यां च न पीडयेत्।
भीता पतनभेदाभ्यां, तद्वद्वर्णान् प्रयोजयेत्।।''

उच्चारण में ध्यान रखने योग्य बिन्दु–
(1) शब्दोच्चारण। (2) अक्षरों की स्पष्ट अभिव्यक्ति। (3) गति। (4) बलाघात। (5) विराम। (6) उचित वाचनमुद्रा। (7) सुस्वरता। (8) उचित ध्वनिनिर्गमन।

अशुद्धोच्चारण के कारण–
(1) अज्ञान– तीनों प्रकार के ऊष्म वर्णों (श् ष् स्) के उच्चारण में, व और ब, ऋ और र तथा ण और न के उच्चारण में भेद नहीं कर पाना।
(2) प्रयत्नलाघव। (3) भ्रम।
(4) प्रादेशिक भाषा का प्रभाव। (5) भावातिरेक।
(6) अनवधान।

उच्चारण में दोष–
(1) पठनकरण में शंका। (2) भयभीत। (3) धृष्टपठन।
(4) क्रन्दित पठन। (5) अस्पष्ट पठन। (6) सानुनास्य पठन।
(7) श्रुतिकटुपठन। (8) मूर्धन्य पठन। (9) स्वरराहित्य।
(10) नीरसपठन। (11) बलाघात वैषम्य।
(12) व्याकुलता। (13) व्यामिश्र अस्पष्ट पठन।
(14) अतालव्यमिव पठन।

उच्चारण शिक्षण विधि

(1) अनुकरण विधि–
- इस विधि में अध्यापक द्वारा उच्चरित वर्ण या शब्दों का अनुकरण छात्र करते हैं।

(2) अभ्यास/आवृत्ति विधि–
- इस विधि में कठिन वर्णों या शब्दों की पुनः आवृत्ति की जाती है।

(3) अवरोध विधि–
- इस विधि में वर्ण या शब्दों के उच्चारण में शीघ्रता न करके रुक-रुककर धीरे-धीरे शुद्ध उच्चारण किया जाता है।

(4) पूर्णता विधि–
- इस विधि में सम्पूर्ण वाक्य का स्पष्ट उच्चारण बताया जाता है।

(5) परिष्कार विधि–
- इस विधि में छात्रों के द्वारा किये गये गलत उच्चारणों का शुद्धिकरण किया जाता है।

(6) व्यवहार विधि–
- इस विधि में छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से सरल प्रश्न पूछे जाते हैं।

(7) निरीक्षण विधि–
- इस विधि में नई-नई वस्तुओं या स्थानों को दिखाकर उनके नाम आदि का उच्चारण किया जाता है।

Scanned by CamScanner

उच्चारण शिक्षण पाठयोजना

(1) प्रस्तावना। (2) उद्देश्यकथन। (3) प्रस्तुतीकरण (प्रश्नोत्तर के माध्यम से)।
(4) श्यामपट्ट कार्य। (5) सिद्धान्त निरूपण। (6) मौखिक अभ्यास कार्य। (7) गृहकार्य।

7. लिखित रचना शिक्षण

उद्देश्यम् – लिखितम् आत्मप्रकाशनम्

उद्देश्य–(1) अपने मन्तव्य को लिपि रूप में अभिव्यक्त करना। (2) **आत्मप्रकाशन**–अपने विचारों को लिखने का सामर्थ्य सम्पादित करना। (3) मातृभाषा से संस्कृत भाषा में तथा संस्कृत भाषा से मातृभाषा में अनुवाद की योग्यता सम्पादित करना।

लिखित रचना शिक्षण विधि

(1) चित्रविधि–
- इस विधि में छात्रों के समक्ष चित्र रखकर, चित्र के विविध पक्षों पर प्रश्न पूछना तथा उनके उत्तर श्यामपट्ट पर लिखना एवं छात्रों को अभ्यास पुस्तिकाओं में लिखवाने का कार्य किया जाता है।
- यह विधि प्राथमिक स्तर पर लेखन की श्रेष्ठ विधि है।

(2) उद्बोधनविधि–
- इस विधि में अध्यापक किसी विषय पर चर्चा करके छात्रों की जिज्ञासा बढ़ाता है।
- फिर कल्पना शक्ति के आधार पर छात्रों से लिखवाया जाता है।

(3) सूत्र विधि–
- इस विधि में कहानी आदि की प्रमुख घटनाओं को सूत्र या Hint के रूप में लिखकर, छात्रों को पूरी कहानी या गद्यांश लिखने के लिए कहा जाता है।

(4) प्रश्नोत्तर विधि–
- इस विधि में किसी ज्ञात एवं अनुभूत विषयवस्तु पर प्रश्न पूछे जाते हैं।
- फिर इन प्रश्नों के आधार पर ही गद्यांश लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है।

(5) मन्त्रणा विधि–
- इस विधि में छात्रों को विभिन्न पुस्तक एवं पत्रिकाएँ पढ़ने हेतु प्रेरित किया जाता है।
- तुलनात्मक अध्ययन एवं समीक्षा के माध्यम से छात्रों से स्वयं स्वतन्त्र निष्कर्ष को लिखवाया जाता है।
- यहाँ अध्यापक केवल मार्गदर्शक होता है।
- यह विधि उच्च स्तर के लिए श्रेष्ठ विधि है।

(6) स्वाध्याय विधि–
- इस विधि का मानना है कि स्वाध्याय से नये चिन्तन की अभिव्यक्ति छात्र अपनी रचनाओं के माध्यम से करे।

(7) अनुकरण विधि–
- इस विधि में छात्रों को किसी मौलिक निबन्ध या रचना को देखने के लिए कहा जाता है।
- इसके उपरान्त इसके जैसी ही मौलिक रचना हेतु छात्रों को प्रेरित किया जाता है।

(8) निरीक्षण विधि–
- शैक्षिक भ्रमण करवाकर छात्रों से प्राप्त ज्ञान और अनुभव को लिखवाने का कार्य इस विधि में किया जाता है।

(9) तर्क वितर्क विधि–
- इस विधि में सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक समस्याओं पर तर्क वितर्क करके उनके समाधान को लिखवाया जाता है।

लिखित रचना की पाठयोजना

(1) प्रस्तावना।
(2) उद्देश्यकथन।
(3) प्रस्तुतीकरण (प्रश्नोत्तर, चित्र, तर्क वितर्क एवं रूपरेखा के माध्यम से)।
(4) श्यामपट्ट कार्य।
(5) लेखन कार्य (छात्रों के द्वारा)।
(6) संशोधन (अध्यापक के द्वारा)।
(7) गृहकार्य।

8. कथा शिक्षण/उपाख्यान शिक्षण

उद्देश्यम् – नीतिज्ञानप्रदानम्

उद्देश्य–(1) नीतिगत ज्ञान देना।
(2) सांसारिक ज्ञान की वृद्धि एवं व्यवहार कौशल की उत्पत्ति।
(3) तर्कशक्ति एवं विवेक शक्ति का विकास।
(4) जिज्ञासाओं का समाधान करके अनुरंजन करना।
(5) सदाचार का ज्ञान, संयमित एवं अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देना।
(6) कौतूहलपूर्ण कथाओं के माध्यम से कल्पनाशक्ति का विकास करना।
(7) धर्म, अर्थ और काम–इस त्रिवर्ग की प्राप्ति करना।

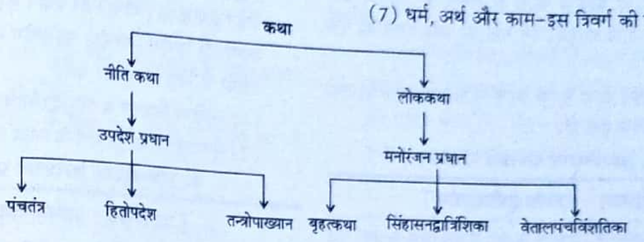

कथा शिक्षण की विधियाँ

(1) कथन विधि–
- इस विधि में कथा को कथावाचक की तरह स्पष्ट प्रकार से सुनाया जाता है।
- यह विधि प्राथमिक स्तर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।
- लेकिन भावप्रधान-मनोवैज्ञानिक कथाओं के लिए यह विधि उपयुक्त नहीं है।

(2) चित्र विधि–
- इस विधि में कथा से सम्बन्धित चित्रों के माध्यम से कथा का विकास किया जाता है।
- चित्रों के कारण छात्रों में सक्रियता रहती है, पाठ के प्रति उनकी रुचि एवं जिज्ञासा बनी रहती है।

(3) प्रश्नोत्तर विधि–
- इस विधि में छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से कथा को समझाया जाता है।
- यह विधि माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के लिए उपयुक्त है।

(4) संवाद विधि–
- इस विधि में पात्रों के कथनों के सन्दर्भ में छात्रों से बातचीत की जाती है।
- तदुपरान्त छात्रों की सहायता से अध्यापक सम्पूर्ण कथा को कहता है।

(5) कथाभिनय विधि–
- इस विधि में उचित हावभावों के साथ अध्यापक कथा का वाचन करता है।
- छात्रों से भी पात्रों के अनुसार ही वाचन करवाया जाता है।
- संवाद ज्यादा होने पर ही यह विधि ज्यादा उपयोगी है।

(6) गहनाध्ययन विधि–
- इस विधि में कथा के क्लिष्ट-शब्दों, नये विचारों, सुभाषित वाक्यों और लोकोक्तियों को स्पष्ट करने के लिए व्याख्या का कार्य किया जाता है।
- यह विधि उच्च स्तर के लिए उपयोगी है।

कथा की पाठयोजना

(1) प्रस्तावना।
(2) उद्देश्यकथन।
(3) कथोपस्थापन-चित्रादि को दिखाकर या प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से कथा को प्रस्तुत करना।
(4) बोध प्रश्न।
(5) नये शब्दों की व्याख्या/काठिन्य निवारण।
(6) पुन: कथापठन- केवल एकबार।
(7) उत्प्रेरणात्मक प्रश्न।
(8) कथा-निष्कासन/निष्कर्ष।
(9) गृहकार्य।

Scanned by CamScanner

1. प्रस्तावना प्रश्न

[उद्देश्यम् - पूर्वज्ञानपरीक्षणम्]

- 'ज्ञाताद् अज्ञातं प्रति' शिक्षण सूत्र की सहायता से छात्रों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न किये जाते है। ये प्रश्न सरल व स्पष्ट होने चाहिए। ये प्रश्न 4 या 5 हो सकते है। अन्तिम प्रश्न समस्यात्मक होना चाहिए। यह पाठ की ओर बढ़ने का एक कदम है।

यह ध्यान रखने योग्य है कि प्रश्नों में में क्रमबद्धता हो तथा प्रश्न अप्रासंगिक नहीं हों।

2. अन्वेषण प्रधान प्रश्न

[उद्देश्यम् - ज्ञानस्य दृढीकरणम्]

- समस्यात्मक प्रश्न के विकल्प के रूप में इस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं। उसी उत्तर को किसी दूसरे माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। ये प्रश्न भी पूर्वज्ञान पर आधारित होते हैं। लेकिन ये प्रश्न मूल भाव से दूर नहीं होने चाहिए।
- इस तरह के प्रश्नों से छात्रों में चिन्तन शक्ति, कल्पना शक्ति व मनन शक्ति का विकास होता है।
- **विशेषताएँ–**

(1) प्रश्न ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर होते है।

(2) ये प्रश्न विषय वस्तु तक पहुँचने के माध्यम है।

(3) शिक्षक, संभावित उत्तर के नहीं मिलने पर, अवान्तरप्रश्न भी कर सकता है।

3. श्यामपट्ट प्रश्न

[उद्देश्यम् - लेखनकौशलविकासः]

- श्यामपट्ट पर लिखे गये प्रश्न स्पष्ट हो। इन शब्दों का आकार ऐसा हो कि अन्तिम पंक्ति के छात्र भी स्पष्ट देख सके।
- प्रमुख तथ्यों को दिखाने के लिए Underline का प्रयोग करें या रंगीन सुधाखण्ड (चौक) का प्रयोग करें।
- श्यामपट्ट मार्जनी (डस्टर) का प्रयोग सदैव उपरिष्टाद् अधः (ऊपर से नीचे की ओर) करें।

(1) काठिन्य निवारण व अशुद्धिसंशोधन के समय उपयोगी।

(2) मूल्याङ्कन तथा गृहकार्य के समय उपयोगी।

4. प्रश्नोत्तर कौशल प्रश्न

[उद्देश्यम् - अभिव्यक्तिः]

- विषय से सम्बद्ध सार्थक प्रश्न, जो विषय के भावों को स्पष्ट करें तथा वाञ्छित उद्देश्यों की पूर्ति करें। छात्रों में उस विषय में अभिव्यक्ति देने की क्षमता मिल सके।
- भाषा छात्रों के स्तर के अनुसार हो। प्रश्न क्रमबद्ध तथा संक्षिप्त हों।

5. प्रवाह कौशल प्रश्न

[उद्देश्यम् - नैरन्तर्यम्]

- इस तरह के प्रश्नों में अध्यापक छात्रों को प्रोत्साहित करता है। अतः इसे पुनर्बलन कौशल भी कहा जाता है।
- यह पुनर्बलन मौखिक या अमौखिक तथा सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है।

संस्कृत शिक्षण सार

शिक्षण	मुख्य उद्देश्य	श्रेष्ठ विधि	पाठयोजना का मुख्य बिन्दु	सर्वाधिक समय
1. व्याकरण	भाषाज्ञान	आगमन निगमनविधि	प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुतीकरण
2. गद्य	ग्रहण और अभिव्यक्ति	उद्बोधन/व्याख्याविधि	आदर्शवाचन	काठिन्यनिवारण
3. पद्य	रसानुभूति और सौन्दर्यानुभूति	खण्डान्वय विधि	सस्वरवाचन/समवेतवाचन	अन्वय सोपान
4. नाटक	संस्कारशिक्षण	समवायविधि	अभिनय	अभिनय
5. अनुवाद	द्विभाषाज्ञान	द्विभाषाविधि	साक्षादनुवाद	साक्षादनुवाद
6. मौखिक रचना	मौखिक आत्मप्रकाशन	अनुकरणविधि	प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुतीकरण
7. लिखित रचना	लिखित आत्मप्रकाशन	चित्र/मन्त्रणाविधि	प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुतीकरण
8. कथा	नीतिज्ञानप्रदान	कथन/प्रश्नोत्तरविधि	कथोपस्थापन	कथोपस्थापन

- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यवहार में परिवर्तन / Change in Behaviour / **प्रवर्त्तनायां परिवर्तनानयनम्** है। व्यवहार में इस परिवर्तन का परीक्षण करना ही मूल्यांकन है।
- शिक्षण से पूर्व निर्धारित किये उद्देश्यों की पूर्ति हुई या नही हुई, इसका ज्ञान करने के लिए पाठ पढ़ाने के दौरान या बाद में किया गया परीक्षण मूल्यांकन कहलाता है।

विशेषताएँ–

1. छात्रों के ज्ञान के स्तर, बुद्धिकौशल, कार्य शक्ति व कार्यकुशलता का परीक्षण ही मूल्यांकन है।
2. योग्यता के परीक्षण के साथ-साथ छात्रों की प्रगति का भी निर्धारण।
3. मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें मापन (परीक्षण) और निरीक्षण दोनों समाहित होते हैं। (व्यापकता)
4. मूल्यांकन शारीरिक, मानसिक, नैतिक, व्यावहारिक आदि सभी पक्षों से सम्बद्ध हैं। (सर्वपक्षीय)
5. मूल्यांकन जीवनपर्यन्त निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके द्वारा समय-समय पर, व्यावहारिक परिवर्तनों को मापा जाता है।
6. मूल्यांकन न केवल परीक्षण का ही साधन है, अपितु परिष्करण का भी साधन है। मूल्यांकन में प्रक्रिया के दौरान ही नये लक्ष्यों को भी जोड़ा जा सकता हैं।
7. मूल्यांकन में निबन्धात्मक व वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की अपेक्षा मौखिक परीक्षा, अभिरुचि परीक्षा, आसक्ति परीक्षा व सांघिक प्रवर्तन परीक्षा आदि पर बल दिया जाना चाहिए।

गुण–

1. वैधता (उसी बात का परीक्षण जिसके बारे में जानना चाहते हैं।)
2. विश्वसनीयता
3. व्यावहारिकता
4. न्यायसंगतता
5. उपयोगिता
6. व्यापकता
7. बाल केन्द्रित
8. अनवरत प्रक्रिया

परीक्षण (मापन) और मूल्यांकन में भेद।

1. परीक्षण का सम्बन्ध केवल ज्ञानात्मक पक्ष में होता है, जबकि मूल्यांकन सभी पक्षों को समाहित करता है।
2. परीक्षण में उद्देश्य सीमित होते हैं, जबकि मूल्यांकन में उद्देश्य व्यापक होते हैं।
3. परीक्षण या मापन में अंकों या प्रतिशतों के माध्यम से स्तरनिर्धारण का कार्य होता है, जबकि मूल्यांकन में व्यावहारिक परिवर्तनों का सूक्ष्म अवलोकन किया जाता है।

विशेष–

मूल्यांकन में निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया का प्रयोग होने पर व्यवहारगत परिवर्तनों का मूल्यांकन किया जाता हैं। इसके बाद पुनः उद्देश्य निर्धारण तथा शिक्षण-मूल्यांकन होता है। अतः मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हैं।

मूल्याङ्कन के प्रकार

- मूल्यांकन आन्तरिक व बाह्य भेद से दो प्रकार का हैं।
- आन्तरिक मूल्यांकन में सत्रपर्यन्त दैनिक गतिविधियों का मूल्यांकन होता हैं। इसमें गृहकार्य, रचनात्मकता, साहित्यिक गतिविधयाँ आदि सर्जनात्मक पक्ष भी निहित हैं।
- बाह्य मूल्यांकन लिखित परीक्षा के माध्यम से विश्वविद्यालय, बोर्ड या एजेंसी के माध्यम से होता हैं।

मूल्याङ्कन के साधन

1. निबन्धात्मक परीक्षा (Essay type Examination)
2. वस्तुनिष्ठपरीक्षा (Objective type tests)
3. मौखिक परीक्षा- साक्षात्कार, शलाका, अन्त्याक्षरी आदि।
4. प्रश्नावली (Questionaire)
5. जीवन संघटन संचिका / जीवनेतिहासिविधि (Case history)
6. मापक पट्टिका (Rating Scale)- पाँच (Rating)
7. परिशीलन पट्टिका (Check lists)
8. प्रगतिपत्र (Cumulative Records)
9. चिकित्सकीय या निदानात्मक परीक्षा (Diagnostic Tests)
10. बुद्धि परीक्षा (Intelligence tests)
11. अभिरुचिपरीक्षा (Aptitude tests)
12. आसक्तिपरीक्षा (Interest inventories)
13. प्रयोजनप्रविधि (Projective techniques)
14. सोशियो मेट्रिक विधि (Sociometric method)

Scanned by CamScanner

परीक्षा

- भाषा शिक्षण के चारों कौशलों के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मौखिक और लिखित दोनों प्रकार की परीक्षायें आवश्यक हैं। मौखिक परीक्षा के द्वारा श्रवण, भाषण और पठन- तीनों कौशलों का मूल्यांकन किया जा सकता है, जबकि लिखित परीक्षा में केवल लेखन कौशल का ही मूल्यांकन संभव हैं। इन दोनों परीक्षाओं के अलावा प्रयोगात्मक परीक्षाएँ भी होती हैं।

1. मौखिक परीक्षा

- यह मूल्यांकन का प्राचीनतम सरल तरीका है, जिसमें परीक्षक प्रत्यक्ष प्रश्न पूछकर उनकें उत्तर चाहता हैं। इस तरह के प्रश्नों में संभावना के अनुसार पूरक प्रश्न भी संभव हैं।
- मौखिक प्रश्न, वादविवाद, विचारविमर्श, समूह चर्चा, शास्त्रार्थ, भाषण आदि विषय मौखिक परीक्षा के क्षेत्र में आते हैं।
- मौखिक परीक्षा में इनकी जाँच की जाती हैं -

1. उच्चारण, 2. सक्रिय शब्दावली 3. निष्क्रिय शब्दावली 4. वाचन में कुशलता 5. वाचन में बोधगम्यता 6. श्लोकों का सस्वरवाचन 7. मौखिक अभिव्यक्ति।

मौखिक परीक्षा के भेद

1. **शलाका परीक्षा (शलाका = लघुकाष्ठखण्ड)**
- पुस्तक में कहीं पर भी शलाका डालकर, उस पृष्ठ से प्रश्न, समस्याओं तथा भावों को पूछा जाता हैं।
- यह परीक्षा छात्रों को स्वाध्याय, विषय पर अधिकार व चिन्तन के लिए प्रेरित करती है।
- छात्र गहन अध्ययन हेतु प्रेरित होता है। छात्र की कल्पना शक्ति का विकास होता हैं।
- भययुक्त वातावरण होने के कारण इसे मनोवैज्ञानिक परीक्षा नहीं माना जा सकता। पुनश्च मन्दबुद्धि छात्र भी इसमें शामिल नहीं हो पाते।

2. **शास्त्रार्थ** -
- किसी विषय या समस्या पर तर्क-वितर्क करके अन्तिम निर्णय करने के रूप में परीक्षा ही शास्त्रार्थ हैं।

3. **साक्षात्कार** -
- सम्मुख होकर पृष्ठभूमि, विषय आदि से सम्बन्धित तथ्यात्मक व अवधारणात्मक प्रश्न पूछना ही साक्षात्कार हैं।

4. **भाषण** या निर्धारित अंशों का पठन या पत्रवाचन
5. **अन्त्याक्षरी**- शब्दान्त्याक्षरी व श्लोकान्त्याक्षरी।

2. लिखित परीक्षा

- प्रश्नों के उत्तरों को लिपिबद्ध करना ही लिखित परीक्षा हैं। लिखित परीक्षा में स्मरण के आधार पर छात्र अपने भावों को प्रकट करता हैं।
- सामान्य तौर पर लिखित परीक्षा में निबन्धात्मक व वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को समाहित किया जाता हैं। कार्यसमर्पण (Assignment), प्रतिवेदन (Report), लेखन, पत्रांकनी परीक्षा (Paper Pencil Test) आदि को भी लिखित परीक्षा में ही समाहित किया जाता है।

लिखित परीक्षा के भेद

1. **निबन्धात्मक प्रश्न** -
- इस तरह के प्रश्नों के द्वारा छात्रों की अभिव्यक्ति, सुलेख क्षमता व लेखनशैली का मूल्यांकन किया जाता है।
- इस तरह के प्रश्नों में निबन्ध, सार, व्याख्या, तुलना, आलोचना, गुणावगुण आदि से सम्बन्धित विषय समाहित होते हैं।
- छात्रों की चिन्तन शैली व अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ मूल्यांकन निबन्धात्मक प्रश्नों के द्वारा ही हो सकता है।
- इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति की परीक्षा की जा सकती है। छात्र अपने भावों को प्रकट कर सकता हैं।
- ये प्रश्न निबन्धात्मक (विस्तृत उत्तर), लघूत्तरात्मक (2-5 पंक्ति में उत्तर) व अतिलघूत्तरात्मक (2-3 शब्द या एक पंक्ति में उत्तर) के रूप में हो सकते है।
- निबन्धात्मक प्रश्नों में कर्तृनिष्ठता होती हैं। (Subjectivity) अत: मूल्यांकन के स्तर पर विविधता हो सकती हैं। कोई निश्चित मूल्यांकन संभव नही है।

2. **वस्तुनिष्ठ परीक्षा**
- इस परीक्षा में निश्चित उत्तर वाले प्रश्नों को समाहित किया जाता हैं। अत: इस परीक्षा को अधिक विश्वसनीय, वैध व व्यावहारिक माना गया हैं। इस परीक्षा में अल्प समय में छात्र का परीक्षण किया जा सकता है।
- इस तरह के परीक्षण में कर्मनिष्ठता (Objectvity) होती है।
- विश्वसनीय परिणाम।
- कण्ठस्थीकरण को हतोत्साहन।
- ज्ञान को स्थायित्व प्रदान।
- लेकिन सर्जनात्मकता लुप्त हो जाती है।
- इस तरह के परीक्षण में लेखन शैली, निरीक्षण शक्ति व कल्पना शक्ति का परीक्षण संभव नहीं है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रकार -

1. बहुविकल्पात्मक परीक्षा (Multiple Choice Question) (बहुसमाधान प्रश्न)
2. अन्यतरप्रत्युत्तरप्रकार - दो विकल्पों में एक का चयन
3. संयोजनात्मकप्रश्न (Maich the following)
4. वर्गीकरणात्मक प्रश्न- (संगत शब्दों का वर्गीकरण)
5. व्यवस्थीकरण (Re-arrangement)
6. सत्यासत्य निर्णय (True or false)
7. रिक्त स्थान पूर्ति (Fill in the blanks)
8. एक पद से समाधान

- **डॉ. रघुनाथ सफाया** के अनुसार प्रश्नपत्रों के **प्रमुख तीन उद्देश्य** -

1. ग्रहण
2. अभिव्यक्ति
3. ज्ञान, संस्कृति व रसास्वादन

- शिक्षण के उपरान्त अपने शिक्षण तथा छात्रों की उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए अध्यापक छात्रों को गृहकार्य देता हैं। गृहकार्य से पठितपाठ का अभ्यास होता है तथा अवकाश का सदुपयोग होता है। इससे छात्रों की विषय में रुचि बढ़ती है। लेकिन गृहकार्य में विषय की प्रकृति और छात्रों की शारीरिक मानसिक अवस्था को ध्यान में जरूर रखना चाहिए।

सतत मूल्याङ्कन

- बच्चों ने जो कुछ सीखा, उसका मूल्यांकन उनके पढ़ने के दौरान निरन्तर होता रहे ताकि उनमें परीक्षा का भय नहीं रहे।
- इस मूल्यांकन में छात्रों का मूल्यांकन तो होती ही है, साथ ही शिक्षक को अपनी योजना में बदलाव करने का आधार व मौका भी मिल जाता है।
- यह एक व्यापक गुणवत्ता सुधार प्रक्रिया है। इसे सीखने सिखाने की विधा और विद्यार्थी के स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था के रुप में ही समझा जाये जिसमें जिसमें विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाता है।
- RTE Act -2009 के अनुसार CCE (सतत व्यापक मूल्यांकन) इसी प्रकार का मूल्यांकन है।
- CBSE ने 6 अक्टूबर, 2009 से सतत व्यापक मूल्याङ्कन प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में सत्र 2010-11 में अलवर व जयपुर के 60 विद्यालयों में CCE को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरु किया गया था। (कक्षा-1 से 5 तक)
- सत्र 2012-13 में कक्षा 6 से 8 तक शुरु किया गया।

आकलन के उपकरण -

1. सतत अवलोकन अभिलेखन
2. चैकलिस्ट
3. पोर्टफोलियों
4. कक्षा कार्य
5. गृहकार्य
6. अन्य शिक्षकों, अभिभावकों तथा साथियों द्वारा किया गया आकलन।
7. प्रोजेक्ट कार्य आदि।

भाषा-शिक्षण के सिद्धान्त

1. **प्रकृतिवादी/स्वाभाविकता का सिद्धान्त**-
- भाषा एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।
- भाषा सीखना एक जन्मजात प्रवृत्ति है।
- शैशवावस्था में भाषा-शिक्षण का प्रयास श्रेष्ठ होता है। क्योंकि भाषा सीखने की क्षमता शैशवावस्था में तीव्र, फिर उत्तरोत्तर घटती जाती है। भाषा शिक्षण में चारों कौशलों का प्रयोग होना चाहिए।
- छात्रों को जिस भाषा में ग्रहण हो, उसी भाषा में अभिव्यक्ति हेतु छात्रों को उत्साहित करें।

2. **अभ्यास सिद्धान्त / क्रियाशीलता का सिद्धान्त / व्यावहारिक प्रयोग का सिद्धान्त**-
- भाषा एक विज्ञान होने के साथ - साथ एक कला भी है।
- कला के विकास हेतु निरन्तर अभ्यास एवं व्यावहारिक प्रयोग की आवश्यकता होती है।
- अर्थात् किसी भी कला को सीखने के लिए दीर्घकालीन अभ्यास की आवश्यकता होती है।
- संस्कृत भाषा में अधिगम को स्थायी करने के लिए पुन: पुन: मौखिक व लिखित अभ्यास किया जायें।

Scanned by CamScanner

3. **रुचि का सिद्धान्त** -

- जिस विषय में बालकों की अधिक रुचि होती है, वह उसी को पढने के लिए प्रेरित होता है। अत: छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि का उत्पादन किया जाना चाहिए।
- अन्त्याक्षरी , वादविवाद , भाषण , निबन्ध आदि पाठ्यसहगामिक्रियाओं के द्वारा संस्कृत- भाषा में छात्रों की रुचि जाग्रत की जायें । इसके लिए दृश्य-श्रव्य उपकरणों, श्यामपट्ट आदि कौशलों तथा क्रीडाविधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।

4. **सक्रियता का सिद्धान्त**

- भाषा शिक्षण में सक्रियता आवश्यक है।
- क्योंकि सक्रियता मानसिक विकास को तीव्र करती है।
- प्रेरणा के माध्यम से छात्रों को हमेशा सक्रिय रखने प्रयत्न करना चाहिए।

5. **मौखिक प्रवचन का सिद्धान्त/ मौखिक कार्य का सिद्धान्त-**

- भाषा शिक्षण की प्रक्रिया कर्ण और जिह्वा के माध्यम से प्रारम्भ होती है।
- अत: भाषा शिक्षण में श्रवण और भाषण कौशल का विकास आवश्यक है। इसी के बाद पठन और लेखन का विकास होता है।
- भाषा में ग्रहण के साथ - साथ अभिव्यक्ति भी आवश्यक है।
- अभिव्यक्ति के रूप में मौखिक अभिव्यक्ति भाषा शिक्षण का श्रेष्ठ प्रतिमान है।

6. **अनुपात एवं क्रम का सिद्धान्त-**

- संस्कृत भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य ग्रहण और अभिव्यक्ति हैं।
- भाषा में भावों के ग्रहण की क्षमता तथा भावों के अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना आवश्यक है।
- भाषा का शिक्षण क्रमश: होता है। पहले मौखिक कार्य का तथा फिर क्रमश: लिखित कार्य का शिक्षण होना चाहिए।
- भाषा शिक्षण के समस्त उद्देश्यों व पक्षों पर उचित मात्रा में ध्यान दिया जाना चाहिए।
- ज्ञात से अज्ञात, सरल से कठिन की ओर बढ़ना चाहिए।
- नेत्रों से पहले कान, आवृत्ति से पहले प्राप्ति, स्वतंत्र कार्य से पूर्व अभ्यास, व्यक्तिगत कार्य से पहले सामूहिक कार्य सिद्धान्तों का प्रयोग होना चाहिए।

7. **बहुमुखी सिद्धान्त** -

- अनेक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अनेक प्रकार के प्रयास किये जाने चाहिए।

8. **स्वतन्त्रता व वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धान्त** -

- सभी छात्रों की योग्यता, रुचि, प्रवृत्ति, अभिवृद्धि, संवेग तथा शारीरिक-मानसिक क्षमतायें अलग-अलग होती हैं।
- अत: कुशाग्र, सामान्य और मन्दबुद्धि छात्रों के लिए अलग-अलग अभ्यास कार्य होना चाहिए।
- शिक्षण का वातावरण स्वतन्त्र हो। स्वतंत्र वातावरण में छात्रों की जिज्ञासा तेज होती है, छात्र आत्मप्रकाशन के लिए उन्मुख होते हैं।
- आत्मप्रकाशन वादविवाद, चर्चा, वार्तालाप आदि के रूप में होता है।

9. **एकता और सहभागिता का सिद्धान्त** -

- भाषा शिक्षण में मौखिक व लिखित कार्य साथ-साथ होने चाहिए।
- एक उद्देश्य का पूरा होने के लिए, इस उद्देश्य से सम्बद्ध अन्य सभी विषयों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

10. **भावात्मक अभिव्यक्ति की सिद्धान्त** -

- शिक्षक मूल पाठ का सस्वर वाचन करता है, छात्र शिक्षक के भावों के अनुसार ही वाचन करते हैं।
- संस्कृत में विशेषज्ञता सम्पादित करने के लिए छात्रों को भाव प्रकट करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।
- लेख लिखकर, सम्भाषण, गीत-गान, तर्क आदि के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति संभव है।

संस्कृत शिक्षण में अधिगम एवं सम्प्रेषण के साधन

- भाषा को लिखित या मौखिक रूप से सम्प्रेषित करने तथा अभिव्यक्त करने में दृश्य और श्रव्य उपकरणों की महती उपयोगिता है। इन साधनों के प्रयोग से भाषा का अधिगम छात्रों के लिए अधिक सुगम हो जाता है।
- अधिगम में लगभग 85 प्रतिशत योगदान श्रवण और दर्शन इन्द्रियों के माध्यम से होता है। वस्तुत: यहाँ इन्द्रियों द्वारा साक्षात्कार होने के कारण वस्तु का ज्ञान मूर्त रूप में हो जाता है। यह मूर्त ज्ञान अधिक समय के स्थायी रह पाता हैं।
- दृश्य और श्रव्य साधन वस्तुत: अधिगम के लिए उद्दीपक का कार्य करते हैं। ये साधन ज्ञानेन्द्रियों को आकर्षित करते हैं।
- **प्रो. जे.जे. वेबर** ने दृश्य साधनों तथा **प्रो. पी. जे. रूलन** ने श्रव्य-दृश्य साधनों पर परीक्षण किया है। शिक्षाविद् पैस्टॉलाजी शिक्षा में प्रत्यक्ष अनुभव पर अत्यधिक बल देते है। **फ्राबेल व मान्टेसरी** भी दृश्य-श्रव्य उपकरणों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं।
- दृश्य श्रव्य साधनों के माध्यम से अध्ययन को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाया जा सकता है। अधिगम से प्राप्त ज्ञान चिरकाल तक बुद्धि में स्थायी रहे, यह ही इनका मुख्य उद्देश्य है।

उद्देश्य -

1. छात्र रुचिमान् और सक्रिय रह सकें।
2. श्रवण और दर्शन इन्द्रियों का आकर्षण।
3. पाठ्यवस्तु को सुग्राह्य, रोचक, सार्थक व आकर्षक बनाना।
4. प्राप्त किए गये ज्ञान को परिपुष्टता प्रदान करना।
5. प्रभावी शिक्षण और यथार्थ ज्ञान सम्पादित करना।
6. चिरकाल तक ज्ञान का स्थायित्व।
7. क्रमबद्ध चिन्तन की प्रेरणा।
8. सार्थक शब्द भण्डार की वृद्धि।

अधिगम और सम्प्रेषण हेतु सामान्यत: तीन प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है-

1. दृश्यसाधन
2. श्रव्यसाधन एवं
3. दृश्यश्रव्यसाधन।

1. दृश्यसाधन

- ऐसे साधन जिनको छात्र प्रत्यक्ष रूप से देखकर अधिगम करते है, उन्हें दृश्य साधन कहा जाता है।
- इन दृश्यसाधनों को भी सामान्य और यान्त्रिक साधनों के भेद से दो भागों में बाँटा जा सकता है।

सामान्य साधन	यान्त्रिक साधन
1. **श्यामपट्ट** (Black board)	1. प्रोजेक्टर/प्रक्षेपण यन्त्र तीन प्रकार
2. चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र	अ) ओवर हेड प्रोजेक्टर (उन्नतशीर्ष प्रक्षेपिका)
3. चार्ट-पत्र, भित्तिपत्र	
4. प्रतिकृति (माड्यूल)	ब) फिल्मस्ट्रिपप्रोजेक्टर
5. पाठ्यपुस्तक, पत्रिका	स) स्टिरियोस्कोप (आकृतिविस्तारकयंत्र)
6. संग्रहालय	
7. पुस्तकालय	2. चित्रविस्तारकयंत्र (Epidiascope)

2. श्रव्यसाधन -

- श्रवणेन्द्रिय या कानों का प्रयोग करके जिन साधनों से ज्ञान का अधिगम हो, उन्हें श्रव्यसाधन कहा जाता है।
  1. रेडियो / आकाशवाणी
  2. ग्रामोफोन / वर्तुलाकारध्वनिग्राहकयंत्र
  3. टेपरिकोर्डर / ध्वनिपञ्जिका
  4. लिंग्वाफोन (Linguaphone) / भाषापञ्जिका (सीतावाद्य)
  5. ध्वनिसंचिका, ध्वन्यभिलेख (ओडियो केसेट्स)

3. दृश्यश्रव्यसाधन -

- ऐसे साधन जिनकों आँखों से देखकर व कानों से सुनकर अधिगम सुगम होता है, उन साधनों को दृश्यश्रव्यसाधन कहा जाता है। जैसे -
  1. दूरदर्शन (T.V)
  2. संगणक (कम्प्यूटर) / मस्तिष्कयंत्र
  3. चलचित्र (फिल्म / सिनेमा)
  4. अभिनय / नाटक
  5. श्रव्यदृश्य अभिलेख (ओडियो वीडियो टेप)
  6. भाषाप्रयोगशाला (Language Laboratory)
  7. इन्टरनेट (अन्तर्जाल), यू ट्यूब आदि
  8. ध्वनिचित्रग्राहकयन्त्र (Audio-Vedio recording machine)
- ये शिक्षण के साधन हैं, साध्य नहीं है।
- अनेक शिक्षण साधन एक साथ प्रयुक्त नहीं किये जाने चाहिए।

Scanned by CamScanner

संस्कृत पाठ्यपुस्तक

- **पुस्तक** - Book शब्द जर्मन भाषा के बीक (Beach) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है - वृक्ष।
- **पाठ्यपुस्तक** - पढ़ने और पढ़ाने योग्य पुस्तक, लेकिन प्रत्येक पुस्तक पाठ्यपुस्तक नहीं हो सकती। किन्हीं विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन के रूप में अध्यापकों व छात्रों द्वारा प्रयोग की जाने वाली प्रामाणिक पुस्तक को ही पाठ्यपुस्तक कहा जा सकता है।

1. कक्षा में शिक्षण का सर्वाधिक केन्द्रबिन्दु तथा सर्वाधिक अवलम्बन पाठ्यपुस्तकें ही हैं। यह शिक्षण का सबसे प्रमुख साधन है।
2. भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का अवलम्बन आवयक हैं, क्योंकि भाषा का मूल स्वरूप पाठ्यपुस्तकों में ही है। लेकिन यहाँ रोचकता का पुट भी होना चाहिए।
3. प्रत्येक शिक्षण के उद्देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तकें तैयार की जानी चाहिए। जैसे-

व्याकरण शिक्षण में -	भाषा ज्ञान
गद्य शिक्षण में -	ग्रहण एवं अभिव्यक्ति
पद्य / काव्य शिक्षण में -	रसानुभूति एवं सौन्दर्यानुभूति
नाटक शिक्षण में -	चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिक्षण

को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक में पाठों का निर्माण किया जाना चाहिए।

4. यह ध्यान रखें कि भाषाशिक्षण में पुस्तकें साधनमात्र है, साध्य नही।
5. पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से भाषाशिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति संभव हैं।
6. पाठ्यपुस्तकें स्मरण और पुन: स्मरण के प्रबल साधन हैं।
7. पाठ्यपुस्तकें गृहकार्य में सुविधाजनक हैं।
8. अनेक प्रकार की सूचनायें एक ही स्थल पर मिल जाती हैं, अत: पाठ्यपुस्तक शिक्षक व छात्र दोनों की सहायता करती है।
9. पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से छात्रों में स्वाध्याय के प्रति रुचि का उत्पादन किया जा सकता हैं।
10. पाठ्यपुस्तक वर्तमान शिक्षा की आधारशिला या मेरुदण्ड है।

पुस्तकों के दो प्रकार

सूक्ष्म अध्ययन की पुस्तकें	विस्तृताध्ययन की पुस्तकें
• गम्भीर अध्ययन	• द्रुत (तीव्र) पाठ के लिए
• शब्दभण्डार में वृद्धि	• सरल भाषा का प्रयोग

- सूक्तियों व लोकोक्तियों का परिचय
- उद्देश्य-शीघ्रवाचन का अभ्यास।
- विभिन्न प्रसंगों का स्पष्ट ज्ञान
- संस्कृत व्याकरण की पुस्तकें
- संस्कृत अनुवाद की पुस्तकें

पाठ्यपुस्तक निर्माण के सिद्धान्त

1. प्रारम्भिक सामग्री -
- शीर्षक, लेखक, प्रकाशक, भूमिका, पाठसूची, चित्रसूची।

2. आन्तरिकपक्ष-
- सोद्देश्यता, स्तरानुगुणता, व्यावहारिकता, रोचकता, विषयवैविध्य, आदर्शवाद, आधुनिक विषयों का समावेश, उपयोगी, व्यवस्थित क्रम, अभ्यास।

3. बाह्य पक्ष-
- आकार, सम्पादन, चित्र, मुद्रण (शुद्ध)
- नाम (सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट, आकर्षक)
- आवरण (सुदृढ़, आकर्षक)
- मूल्य (उचित)

4. सहसम्बन्धी सामग्री-
- अध्यापकदर्शिका (Teacher's Guide)
- द्रुतपाठ के लिए सहायक पुस्तक
- अभ्यास पुस्तिका (Work book)

उपचारात्मक शिक्षण

- किसी छात्र या छात्रों के समूह को किसी विषय विशेष या प्रकरण से सम्बन्धित समस्याओं या कठिनाईयों के निवारण के लिए किया जाने वाला शिक्षण या अनुदेशात्मक कार्य ही उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है।
- उपचारात्मक शिक्षण का प्रमुख आधार निदानात्मक प्रक्रिया होती है। निदान के बाद ही उपचार किया जाता है। छात्र विषय को क्यों नही समझ पा रहे, इनके कारणों का पता लगाना ही निदान है।

उद्देश्य–
1. लेखन त्रुटियाँ दूर करना।
2. छात्रों का उत्साहवर्धन करना।
3. छात्रों व अध्यापकों में स्फूर्ति सम्पादन।
4. मानसिक तनाव दूर कर शिक्षण में अवरोध को दूर करना।

अभ्यासार्थ प्रश्न

(संस्कृत शिक्षण)

1. **भाषा-कौशल के चार सोपानों का क्रम है–**
(अ) श्रवण-पठन-लेखन-भाषण
(ब) श्रवण-लेखन-पठन-भाषण
(स) श्रवण-भाषण-पठन-लेखन
(द) भाषण-श्रवण-पठन-लेखन ( )

2. **ध्वनि विज्ञान से जुड़े हुए कौशल हैं–**
(अ) श्रवण, भाषण (ब) श्रवण, पठन
(स) श्रवण, लेखन (द) पठन, लेखन ( )

3. **'मौखिक अभिव्यक्ति' किस कौशल का उद्देश्य है–**
(अ) श्रवण कौशल (ब) भाषण कौशल
(स) पठन कौशल (द) लेखन कौशल ( )

4. **'श्रुत्वा अर्थग्रहणम्' किस कौशल का उद्देश्य है?**
(अ) श्रवण कौशल (ब) पठन कौशल
(स) भाषण कौशल (द) लेखन ( )

5. **लिपिविज्ञान के साथ सम्बद्ध कौशल हैं–**
(अ) श्रवण, भाषण (ब) भाषण, लेखन
(स) पठन, भाषण (द) पठन, लेखन ( )

6. **बुद्धि में 'इनपुट' हैं–**
(अ) श्रवण (ब) पठन
(स) भाषण (द) श्रवण, पठन दोनों ( )

7. **डॉ. रघुनाथ सफाया ने किस उद्देश्य को ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना है?**
(अ) ग्रहण
(ब) अभिव्यक्ति
(स) ग्रहण और अभिव्यक्ति
(द) विद्वान् बनना ( )

8. **'स्वजन: श्वजनो मा भूत्'-किस कौशल के प्रसङ्ग में कहा गया है?**
(अ) श्रवण कौशल (ब) भाषण कौशल
(स) पठन कौशल (द) लेखन कौशल ( )

9. **भाषण कौशल हेतु आवश्यक नहीं–**
(अ) भाषाक्रीडा (ब) अभिनय
(स) सम्भाषण (द) विद्वता ( )

10. **छात्रों के द्वारा नहीं किया जाता है–**
(अ) आदर्शवाचन (ब) अनुकरणवाचन
(स) मौनवाचन (द) समवेतवाचन ( )

11. **मौनवाचन कितने प्रकार का है–**
(अ) 1 (ब) 3
(स) 4 (द) 2 ( )

12. **पठन कौशल की सबसे प्राचीन विधि है–**
(अ) अक्षरबोधविधि (ब) पदपद्धति
(स) वाक्यपद्धति (द) कथापद्धति ( )

13. **लेखन कौशल की विधि नहीं है–**
(अ) दृष्टलेखन विधि (ब) पदपद्धति
(स) श्रुतलेख विधि (द) अक्षरानुकरण पद्धति ( )

14. **व्याकरण के मुख्य प्रयोजन कितने है?**
(अ) चार (ब) पाँच
(स) सात (द) तेरह ( )

15. **लेखन कौशल के विकास के लिए श्रेष्ठ विधि है–(प्राथमिक स्तर के लिए)**
(अ) श्रुतलेखनविधि (ब) जेकाटॉट पद्धति
(स) ट्रेकिंग विधि (द) पदपद्धति ( )

16. **वर्तमान में कक्षाओं में दी जाने वाली 'वर्कबुक' किस पद्धति का अनुसरण है–**
(अ) ट्रेकिंग विधि (ब) जेकाटॉट विधि
(स) उक्तलेखन विधि (द) पदपद्धति ()

17. **पठन कौशल के विकासार्थ श्रेष्ठ पद्धति है–**
(अ) अक्षरबोध विधि (ब) पदपद्धति
(स) वाक्य पद्धति (द) कथा पद्धति ()

18. **इस कौशल में वर्तनी को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है–**
(अ) श्रवण (ब) भाषण
(स) पठन (द) लेखन ()

19. **व्याकरण के गौण प्रयोजन कितने है?**
(अ) 4 (ब) 5
(स) 11 (द) 13 ()

Scanned by CamScanner

20. बार-बार रटने की विधि है–
(अ) परायण विधि (ब) व्याख्या विधि
(स) सूत्र विधि (द) अव्याकृत विधि ( )

21. 'ज्वालामुखी' पाठ को पढ़ाने हेतु श्रेष्ठ विधि होगी–
(अ) प्रत्यक्ष विधि (ब) प्रतिकृति दिखाकर
(स) चित्र दिखाकर (द) अभिनय करके ( )

22. काव्य के लक्षण में शब्दार्थ समुदाय की महत्ता नहीं मानी है–
(अ) मम्मट ने (ब) विश्वनाथ ने
(स) जगन्नाथ ने (द) कुन्तक ने ( )

23. ''दैनयिक'' से तात्पर्य है–
(अ) परीक्षा में दो दिन विलम्ब करने वाला
(ब) परीक्षा में दो त्रुटियाँ करने वाला
(स) दीन-हीन व्यक्ति
(द) प्रतिदिन पाठ करने वाला ( )

24. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'–काव्य लक्षण है–
(अ) जगन्नाथ का (ब) विश्वनाथ का
(स) मम्मट का (द) कुन्तक का ( )

25. व्याकरण शिक्षण में व्याख्या का अङ्ग नहीं है–
(अ) चर्चा (ब) परिचर्चा
(स) उदाहरण (द) प्रत्युदाहरण ( )

26. पाणिनि ने कितने वैयाकरणों का नाम 'अष्टाध्यायी' में लिया है ?
(अ) 8 (ब) 9
(स) 10 (द) 11 ( )

27. दण्डान्वय विधि में दण्ड प्रतीक है–
(अ) पद का (ब) लकड़ी का
(स) वाक्य का (द) अनुशासन का ( )

28. व्याकरणात्मक प्रश्न होते हैं–
(अ) दण्डान्वय में (ब) खण्डान्वय में
(स) गीत विधि में (द) भाषानुवाद विधि में ( )

29. 'महाभाष्य' में व्याकरण-शिक्षण की किस विधि का प्रयोग किया गया है?
(अ) सूत्रविधि (ब) व्याख्या विधि
(स) अव्याकृत विधि (द) परायण विधि ( )

30. व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि है–
(अ) अव्याकृत विधि (ब) सूत्रविधि
(स) आगमन निगमन विधि (द) समवाय विधि ( )

31. भण्डारकर इस विधि के प्रवर्तक हैं–
(अ) आगम विधि (ब) निगमन विधि
(स) व्याकरणानुवाद विधि (द) अनौपचारिक विधि ( )

32. काठिन्य निवारण की सुकराती विधि है–
(अ) उद्बोधन विधि (ब) प्रवचन विधि
(स) स्पष्टीकरण विधि (द) प्रश्नोत्तर विधि ( )

33. गद्य शिक्षण में पहले पाठ होता है–
(अ) आदर्शवाचन (ब) अनुवाचन
(स) मौनवाचन (द) समवेत वाचन ( )

34. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'-काव्यलक्षण है–
(अ) कुन्तक का (ब) मम्मट का
(स) विश्वनाथ का (द) जगन्नाथ का ( )

35. काव्य शिक्षण में रसानुभूति किस सोपान पर होती है?
(अ) प्रस्तुतीकरण में (ब) काठिन्यनिवारण में
(स) सस्वरवाचन में (द) पाठप्रवर्धन में ( )

36. 'ग्रहणाभिव्यक्तिः'–उद्देश्य है–
(अ) व्याकरण शिक्षण का (ब) गद्य शिक्षण का
(स) पद्य शिक्षण का (द) नाटक शिक्षण का ( )

37. निगमन विधि का सूत्र नहीं है–
(अ) नियमाद् उदाहरणं प्रति
(ब) सामान्याद् विशिष्टं प्रति
(स) प्रत्यक्षात् प्रमाणं प्रति
(द) सूक्ष्मात् स्थूलं प्रति ( )

38. काठिन्यनिवारण पर विशेष बल दिया जाता है–
(अ) गद्य शिक्षण में (ब) पद्य शिक्षण में
(स) नाटक शिक्षण में (द) व्याकरण शिक्षण में ( )

39. व्याकरण की पाठयोजना में महत्त्वपूर्ण सोपान है–
(अ) प्रस्तावना (ब) प्रस्तुतीकरणम्
(स) सामान्यीकरणम् (द) नियमीकरणम् ( )

40. 'पूर्वज्ञान-परीक्षण' उद्देश्य है–
(अ) श्यामपट्ट प्रश्नों का
(ब) प्रस्तावना प्रश्नों का
(स) प्रवाह कौशल प्रश्नों का
(द) प्रश्नोत्तर कौशल प्रश्नों का ( )

41. सम्भाषण के माध्यम से ही व्याकरण का ज्ञान दिया जाता है–
(अ) आगमन-निगमन विधि में
(ब) समवाय विधि में
(स) अनौपचारिक विधि
(द) भण्डारकर विधि ( )

42. आगमन विधि का सूत्र है–
(अ) विशिष्टात् सामान्य प्रति (ब) प्रमाणात् प्रत्यक्षं प्रति
(स) अमूर्तात् मूर्तं प्रति (द) अज्ञाताद् ज्ञातं प्रति ( )

43. नाटक शिक्षण की श्रेष्ठ विधि है–
(अ) आदर्श नाट्य विधि (ब) व्याख्या विधि
(स) रंगमञ्चाभिनय विधि (द) समवाय विधि ( )

44. काव्य शिक्षण में प्राथमिक स्तर हेतु उपयोगी विधि है–
(अ) व्याख्या विधि (ब) भाष्य विधि
(स) टीकाविधि (द) गीत विधि ( )

45. संस्कार-शिक्षण प्रमुख उद्देश्य हैं–
(अ) नाटकशिक्षण का (ब) पद्यशिक्षण का
(स) व्याकरण शिक्षण का (द) कथा शिक्षण का ( )

46. किं, केन, कस्मै आदि के माध्यम से प्रश्न होते हैं–
(अ) दण्डान्वय में (ब) खण्डान्वय में
(स) गीतविधि में (द) व्यास विधि में ( )

47. व्याकरण शिक्षण की आधुनिक विधि हैं–
(अ) सूत्र विधि (ब) व्याख्या विधि
(स) परायण विधि (द) आगमन विधि ( )

48. किन प्रश्नों में अन्तिम प्रश्न समस्यात्मक होता है?
(अ) प्रस्तावना प्रश्नों में
(ब) अन्वेषण प्रधान प्रश्नों में
(स) श्यामपट्ट प्रश्नों में
(द) प्रवाह कौशल प्रश्नों में ( )

49. प्रवाह कौशल प्रश्नों के विषय में गलत है–
(अ) यहाँ नैरन्तर्य पर बल दिया जाता है
(ब) यहाँ पुनर्बलन पर बल दिया जाता है।
(स) यहाँ अन्तिम प्रश्न समस्यात्मक होता है।
(द) यहाँ प्रश्न लिखित या मौखिक दोनों होते हैं। ( )

50. बुद्धि के 'आउटपुट' हैं–
(अ) श्रवण (ब) भाषण
(स) लेखन (द) भाषण व लेखन ( )

51. भाषाशिक्षण के प्रमुख उद्देश्य–
(अ) ग्रहण (ब) अभिव्यक्ति
(स) शुद्धोच्चारण (द) अ, ब दोनों ( )

52. पठन कौशल अभिवृद्धि की श्रेष्ठ विधि–
(अ) आवृत्ति (ब) श्रवण
(स) वाचनानुकरण विधि (द) कोई नहीं ( )

53. लेखन कौशल अभिवृद्धि की विधि नही है–
(अ) वर्ण विश्लेषण विधि (ब) अभ्यासविधि
(स) प्रश्नविधि (द) कोई नहीं ( )

54. प्रस्तावना प्रश्नों का उद्देश्य है–
(अ) पूर्वज्ञान परीक्षण (ब) ज्ञानदृढीकरण
(स) लेखन कौशल (द) भाषाप्रवाह ( )

55. शिक्षण सूत्रों का प्रयोग होता है–
(अ) प्रस्तावनाप्रश्न (ब) अन्वेषण प्रश्न
(स) श्यामपट्टप्रश्न (द) सभी प्रश्नों में ( )

56. व्याकरणशिक्षण का मुख्य उद्देश्य–
(अ) भाषाज्ञान (ब) द्विभाषाज्ञान
(स) रसानुभूति (द) चरित्रनिर्माण ( )

57. व्याकरणशिक्षण की श्रेष्ठ विधि है–
(अ) आगमन (ब) निगमन
(स) काव्यविधि (द) आगमन निगमन ( )

58. काव्यविधि से व्याकरण के अध्यापन का उदाहरण है–
(अ) रघुवंशम् (ब) हयग्रीववधम्
(स) दशग्रीववधम् (द) रावणवधम् ( )

59. व्याकरण पाठ योजना का मुख्य पाठ्यबिन्दु है–
(अ) प्रस्तावना (ब) प्रस्तुतीकरण
(स) सामान्यीकरणम् (द) नियमीकरण ( )

60. गद्यशिक्षण हेतु प्रयोग में लायी जाती है–
(अ) काव्यविधि (ब) व्याख्याविधि
(स) आगमनविधि (द) द्विभाषाविधि ( )

61. गद्य शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है–
(अ) भाषा ज्ञान (ब) ग्रहण, अभिव्यक्ति
(स) द्विभाषा ज्ञान (द) रसानुभूति ( )

62. समास शिक्षण हेतु सूत्र काम आता है–
(अ) स्थूलात् सूक्ष्मं प्रति (ब) ज्ञातादज्ञातं प्रति
(स) सूक्ष्मात् स्थूलं प्रति (द) ज्ञानेन्द्रियैः पाठनम् ( )

63. गद्य पाठ योजना में नहीं होता–
(अ) उद्देश्यकथन (ब) काठिन्यनिवारण
(स) सस्वरवाचन (द) प्रयोग ( )

64. काव्यशिक्षण की इस विधि में व्याकरणात्मक प्रश्न पूछे जाते है–
(अ) परम्परागत विधि (ब) खण्डान्वयविधि
(स) दण्डान्वयविधि (द) भाषानुवादविधि ( )

Scanned by CamScanner

65. पद्य पाठयोजना में सस्वरवाचन होता है–
(अ) एक बार (ब) दो बार
(स) तीन बार (द) चार बार ( )

66. नाटक शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है–
(अ) विश्रान्तिजनन (ब) मनोरञ्जन
(स) सच्चरित्र निर्माण (द) रसानुभूति ( )

67. नाटक की पाठयोजना में अभाव होता है–
(अ) प्रस्तावना का (ब) व्याख्या का
(स) प्रस्तुतीकरण का (द) प्रयोग का ( )

68. अनुवादशिक्षण की विधि है–
(अ) काव्यविधि (ब) आगमन विधि
(स) द्विभाषा विधि (द) नाट्यविधि ( )

69. नाटकशिक्षण की श्रेष्ठ विधि है–
(अ) आदर्शनाट्यविधि (ब) व्याख्याविधि
(स) अभिनयविधि (द) साक्षादनुवाद विधि ( )

70. गद्यपाठयोजना का प्रमुख पाठ्यबिन्दु है–
(अ) आदर्शवाचन (ब) अनुवाचन
(स) अशुद्धिसंशोधन (द) काठिन्यनिवारण ( )

संस्कृत माध्यम से प्रश्न

71. संस्कृतभाषायां कथितादेशानुसारेण कार्य-सम्पादनेन विकासो भवति
(अ) भाषणकौशलस्य (ब) व्याकरणदक्षतायाः
(स) लेखनकौशलस्य (द) श्रवणकौशलस्य ( )

72. पठनकौशलस्य उद्देश्यमस्ति
(अ) पठित्वा लिखिताभिव्यक्तिः
(ब) पठित्वा मौखिकाभिव्यक्तिः
(स) पठित्वार्थग्रहणम्
(द) पठित्वा पाण्डित्यप्रदर्शनम् ( )

73. लेखनकौशलस्य वृद्धिर्भवति
(अ) पत्रलेखनेन (ब) गीतश्रवणेन
(स) सूत्रकण्ठस्थीकरणेन (द) शुद्धोच्चारणेन ( )

74. 'बलाघातम्' इति कदा प्रयुक्तो दृश्यते ?
(अ) गहनपठने (ब) मौखिकाभिव्यक्त्याम्
(स) लिखिताभिव्यक्त्याम् (द) मौनपठने ( )

75. व्याकरणस्य पर्यायोऽस्ति
(अ) मानवानुशासनम् (ब) शब्दानुशासनम्
(स) राष्ट्रानुशासनम् (द) सैनिकानुशासनम् ( )

76. 'अव्याकृतिः' इति कस्य शिक्षणविधिः ?
(अ) व्याकरणस्य (ब) आख्यायिकायाः
(स) रूपकस्य (द) काव्यस्य ( )

77. नवीनशिक्षणपद्धत्यां व्याकरणशिक्षणस्य सर्वाधिकरुचिकरो विधिः मन्यते
(अ) पारायणम् (ब) सूत्रकण्ठस्थीकरणम्
(स) आगमन-निगमनम् (द) अर्थावबोधनम् ( )

78. मुख्यतः भाषाशिक्षणस्य सम्बन्धः केन सह अस्ति ?
(अ) ज्ञानात्मकपक्षेण (ब) अनुभवात्मकपक्षेण
(स) मनोक्रियात्मकपक्षेण (द) संसाधनेन ( )

79. भाषायाः कौशलानि सन्ति
(अ) त्रीणि (ब) चत्वारि
(स) दश (द) चतुर्दश ( )

80. मुख्यरूपेण संस्कृतभाषाशिक्षणस्योद्देश्यमस्ति
(अ) संस्कृतभाषायां दक्षताप्रदानम्
(ब) यज्ञसम्पादनम्
(स) भारतीयसंस्कृतेः प्रचारः
(द) संस्कृतसाहित्यस्य रक्षणम् ( )

81. 'दण्डान्वयविधौ' दण्डः कस्य सूचकः ?
(अ) शब्दस्य (ब) अर्थस्य
(स) लगुडस्य (द) वाक्यस्य ( )

82. पाठयोजनायां पूर्वज्ञानस्य तात्पर्यमस्ति
(अ) पूर्वदिशायाः ज्ञानम् (ब) पूर्वदेशस्य ज्ञानम्
(स) पूर्वकक्षायाः ज्ञानम् (द) भारतदेशस्य ज्ञानम् ( )

83. संस्कृतभाषाधिगमाय सर्वकौशलेषु अभ्यासः सम्भवः
(अ) संगणकेन (ब) चलचित्रेण
(स) दूरदर्शनेन (द) पुस्तकेन ( )

84. सम्प्रेषणोपागमे भाषादक्षतास्ति
(अ) विषयवस्तुनः विश्लेषण क्षमता
(ब) भाषासंश्लेषणकौशलम्
(स) भाषायाः प्रवाहिता
(द) भाषायाः व्याकरणज्ञानम् ( )

85. छात्रेषु मुख्यरूपेण जिज्ञासा उत्पाद्यते
(अ) उद्दीपनपरिवर्तनेन (ब) उत्प्रेरणोपक्रमेण
(स) व्याख्यया (द) श्यामपट्टकौशलेन ( )

86. छात्राणां ज्ञानविस्तारं क्रियते
(अ) अन्वेषणप्रश्नैः (ब) केन्द्रीयबोधप्रश्नैः
(स) मूल्यांकनप्रश्नैः (द) पुनरावृत्तिप्रश्नैः ( )

87. संयोजकशब्दानाम् अधिकप्रयोगो भवति
(अ) प्रश्नकौशले (ब) श्यामपट्टकौशले
(स) प्रस्तावनाकौशले (द) व्याख्याकौशले ( )

88. आदर्शवाचनस्य प्रयोजनमस्ति
(अ) श्रुतलेखनम् (ब) उच्चारणशिक्षणम्
(स) त्रुटिसंशोधनम् (द) काठिन्यनिवारणम् ( )

89. खण्डान्वयविधेः प्रयोगः क्रियते
(अ) गद्यशिक्षणे (ब) पद्यशिक्षणे
(स) कथाशिक्षणे (द) नाटकशिक्षणे ( )

90. पद्यशिक्षणस्य विधिरस्ति
(अ) वाक्यप्रयोगः (ब) गहनपठनम्
(स) भाष्यविधिः (द) अनुलेखनम् ( )

91. संरचनात्मकोपागमे क्रियते–
(अ) वाक्यानां संक्षिप्तीकरणम्
(ब) वाक्यानां संरचनाः
(स) वाक्यनामनुवादः
(द) सूत्राणां व्याख्या ( )

92. बलाघातस्याभ्यासः क्रियते–
(अ) मौनवाचने (ब) उच्चारणशिक्षणे
(स) लिखितस्वनायाम् (द) गहनपठने ( )

93. द्विभाषात्मकः प्रविधिः आवश्यकं वर्तते–
(अ) अनुवादशिक्षणे (ब) व्याकरणशिक्षणे
(स) पद्यशिक्षणे (द) गद्यशिक्षणे ( )

94. आगमनविधौ भवति–
(अ) अनुवादम्
(ब) प्रथमम् उदाहरणानि तदनन्तरं नियमीकरणम्
(स) प्रथमं नियमीकरणं तदनन्तरम् उदाहरणानि
(द) व्याख्या ( )

95. व्याकरणशिक्षणस्य सर्वाधिकोपयुक्तविधिः मन्यते–
(अ) पाठ्यपुस्तकविधिः
(ब) अनुवादविधिः
(स) आगमन-निगमनविधिः
(द) मौखिकविधिः ( )

96. ''प्रत्यक्षविधौ'' किं न क्रियते–
(अ) व्याकरणस्य शिक्षणम्
(ब) पुस्तकस्य प्रयोगम्
(स) मातृभाषायाः प्रयोगम्
(द) दृश्य-श्रव्यसंसाधनानां प्रयोगम् ( )

97. संस्कृतसाहित्यस्यादिकविः कथ्यते–
(अ) कालिदासः (ब) माघः
(स) वेदव्यासः (द) वाल्मीकिः ( )

98. पद्यशिक्षणस्य विधिः–
(अ) प्रदर्शनम् (ब) द्रुतपठनम्
(स) खण्डान्वयनम् (द) मौनवाचनम् ( )

उत्तर तालिका

(1) स	(2) अ	(3) ब	(4) अ	(5) द	(6) द	(7) अ	(8) ब	(9) द	(10) अ
(11) ब	(12) अ	(13) ब	(14) ब	(15) ब	(16) अ	(17) स	(18) द	(19) द	(20) अ
(21) ब	(22) स	(23) ब	(24) अ	(25) ब	(26) स	(27) स	(28) अ	(29) ब	(30) स
(31) स	(32) द	(33) अ	(34) स	(35) स	(36) ब	(37) स	(38) अ	(39) ब	(40) ब
(41) स	(42) अ	(43) द	(44) द	(45) अ	(46) ब	(47) द	(48) अ	(49) स	(50) द
(51) द	(52) स	(53) द	(54) अ	(55) द	(56) अ	(57) द	(58) द	(59) ब	(60) ब
(61) ब	(62) अ	(63) स	(64) स	(65) अ	(66) स	(67) द	(68) स	(69) स	(70) अ
(71) द	(72) स	(73) अ	(74) ब	(75) ब	(76) अ	(77) स	(78) अ	(79) ब	(80) अ
(81) द	(82) स	(83) अ	(84) स	(85) अ	(86) अ	(87) द	(88) ब	(89) ब	(90) स
(91) ब	(92) ब	(93) अ	(94) ब	(95) स	(96) स	(97) द	(98) स		

Scanned by CamScanner

विगत REET/RTET परीक्षाओं के हल प्रश्न पत्र

RTET-2011

लेवल-प्रथम

भाषा-I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

31. 'उ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति–
(A) कण्ठः (B) तालु
(C) मूर्धा (D) ओष्ठौ। (D)

32. 'ऋ' स्वरस्य उच्चारणस्थानं भवति–
(A) दन्ताः (B) जिह्वा
(C) मूर्धा (D) कण्ठः। (C)

33. 'चवर्गस्य' उच्चारणस्थानं भवति–
(A) मुखम् (B) हस्तौ
(C) तालु (D) दन्ताः। (C)

34. 'बालक' शब्दस्य तृतीयैकवचने रूपं भवति–
(A) बालकेण (B) बालकेन
(C) बालकैः (D) बालकाभिः। (B)

35. 'पितृ' शब्दस्य द्वितीया बहुवचने रूपं भवति–
(A) पितृस्य (B) पितुः
(C) पितृन् (D) पितरान्। (C)

36. 'युष्मद्' शब्दस्य पञ्चम्येकवचने रूपं भवति–
(A) युष्मत् (B) युष्मध्यम्
(C) त्वत् (D) त्वयि। (C)

37. 'गुरवे' इति रूपमस्ति–
(A) चतुर्थी-एकवचनस्य
(B) पञ्चमी-एकवचनस्य
(C) षष्ठी-एकवचनस्य
(D) तृतीया-एकवचनस्य। (A)

38. 'दृश्' धातोः लट् लकारस्य प्रथमपुरुषबहुवचने रूपमस्ति–
(A) द्रक्ष्यति (B) द्रक्ष्यन्ति
(C) पश्यति (D) पश्यन्ति। (D)

39. 'सेव्' धातोः लङ्लकारे उत्तमपुरुष एकवचने रूपं भवति–
(A) असेवत (B) असेवन्त
(C) असेवे (D) असेवथाः। (C)

40. 'पा' धातोः विधिलिङ्लकारे मध्यमपुरुष बहुवचने रूपं–
(A) पिबेत् (B) पिबेत
(C) पिबेतम् (D) पिबेम (B)

41. 'अस्' धातोः लृट् लकारे प्रथमपुरुष एकवचने रूपं भवति–
(A) अस्ति (B) भविष्यन्ति
(C) भविष्यति (D) A व B (C)

42. 'थ' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानं भवति–
(A) तालुः (B) मूर्धा
(C) कण्ठः (D) दन्ताः। (D)

43. '.................. सह बालकः गच्छति।' रिक्तस्थाने शुद्धरूपं भविष्यति–
(A) पिता (B) पितरम्
(C) पित्रा (D) पित्रे। (C)

44. '<u>बालकेन</u> मोदकं रोचते।'
अत्र रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपं भविष्यति
(A) बालकम् (B) बालकाय
(C) बालकात् (D) बालकस्य। (B)

45. 'नृपः <u>दुर्जनं</u> क्रुध्यति।' रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपं भविष्यति–
(A) दुर्जनेन (B) दुर्जनात्
(C) दुर्जनस्य (D) दुर्जनाय। (D)

46. 'अभितः परितः योगे' विभक्तिः भवति–
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी (B)

47. 'नायकः' इत्यस्य पदस्य संधिविच्छेदः अस्ति–
(A) ने + अकः (B) नै + अकः
(C) नो + अकः (D) नौ + अकः। (B)

48. 'इति + अपि' अत्र संधिः भविष्यति–
(A) इत्यपि (B) इत्यापि
(C) इतिपि (D) इतीपि। (A)

49. 'वागीशः' अत्र संधिः अस्ति–
(A) श्चुत्व (B) जश्त्व
(C) ष्टुत्व (D) उत्व। (B)

50. 'वनौषधिः' अत्र संधिविच्छेदः अस्ति–
(A) वनौ + षधिः (B) वनो + ओषधिः
(C) वन + औषधिः (D) वने + ओषधिः। (C)

51. प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः भवति–
(A) अव्ययीभावसमासे (B) तत्पुरुषसमासे
(C) बहुव्रीहिसमासे (D) कर्मधारयसमासे। (B)

52. 'नीलोत्पलम्' अस्मिन् पदे समासः अस्ति–
(A) द्विगुः
(B) द्वन्द्वः
(C) कर्मधारयः
(D) बहुव्रीहिः। (C)

53. 'अधिहरि' अस्मिन् पदे समासः अस्ति–
(A) तत्पुरुषः
(B) अव्ययीभावः
(C) द्विगुः
(D) बहुव्रीहिः। (B)

54. 'रामकृष्णौ' अस्मिन् पदे समास-विग्रहः अस्ति–
(A) रामः च कृष्णः च
(B) रामम् च कृष्णम् च
(C) रामेण च कृष्णेन च
(D) रामः च रामः च। (A)

55. 'कथितः' अत्र धातुः प्रत्ययश्च स्तः–
(A) कथ् + क्त
(B) कथ् + क्तवतु
(C) कथ् + शतृ
(D) कथ् + शानच्। (A)

56. 'छात्रेषु मोहनः <u>पटुतमः</u>।'
रेखाङ्कितपदे प्रत्ययः अस्ति
(A) तरप्
(B) तमप्
(C) क्तवतु
(D) तमुन्। (B)

57. 'मया पाठः <u>पठनीयः</u>।'
रेखाङ्कितपदे प्रत्ययः अस्ति
(A) तव्यत्
(B) अनीयर्
(C) तमप्
(D) क्त्वा। (B)

58. 'मोहन गेंद से खेलता है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृत-अनुवादः अस्ति–
(A) मोहन्ः कन्दुकान क्रीडति
(B) मोहनः कन्दुकं क्रीडति
(C) मोहनः कन्दुकेन क्रीडति
(D) मोहनः कन्दुकाय क्रीडति। (C)

59. 'वह विद्यालय की ओर जाता है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति–
(A) सः विद्यालयस्य प्रति गच्छति
(B) सः विद्यालयेन प्रति गच्छति
(C) सः विद्यालयात् प्रति गच्छति
(D) सः विद्यालयं प्रति गच्छति। (D)

60. 'वह ब्राह्मण को धन देता है।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति–
(A) सः विप्रं धनं ददाति
(B) सः विप्रेण धनं ददाति
(C) सः विप्राय धनं ददाति
(D) सः विप्रस्य धनं ददाति। (C)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2011

लेवल-प्रथम

भाषा -II : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

61. 'य' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते–
(A) कण्ठः (B) मूर्धा
(C) तालु (D) दन्ताः। (C)

62. 'लृ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति–
(A) नासिका (B) दन्ताः
(C) ओष्ठौ (D) कण्ठः। (B)

63. 'ओ' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते–
(A) कण्ठोष्ठम् (B) दन्तोष्ठम्
(C) कण्ठतालु (D) जिह्वामूलम्। (A)

64. ऊष्मवर्णः वर्तते–
(A) र् (B) ह्
(C) प् (D) व्। (B)

65. 'नदी' शब्दस्य द्वितीयाविभक्तौ बहुवचने रूपं भवति–
(A) नद्या (B) नदीन्
(C) नदीः (D) नद्यः। (C)

66. 'अस्मद्' शब्दस्य तृतीयैकवचने रूपं विद्यते–
(A) मया (B) मय
(C) मत् (D) मयि। (A)

67. 'तद्' शब्दस्य पुंल्लिङ्गे सप्तम्यैकवचने रूपम् अस्ति–
(A) तस्याम् (B) तस्य
(C) तस्मिन् (D) तस्मै। (C)

68. 'मुनि' शब्दस्य षष्ठीबहुवचने रूपं भवति–
(A) मुनिनाम् (B) मुनीनाम्
(C) मुनीन् (D) मुनिषु। (B)

69. 'दा' धातोः लट्लकारस्य प्रथमपुरुषबहुवचने रूपं वर्तते–
(A) ददन्ति (B) ददः
(C) ददति (D) ददामि। (C)

70. 'कृ' धातोः लट्लकारस्य मध्यमपुरुषैकवचने रूपं विद्यते–
(A) करोति (B) करोमि
(C) करोसि (D) करोषि। (D)

71. 'पठ्' धातोः लङ्लकारस्य उत्तमपुरुषैकवचने रूपम् अस्ति–
(A) अपठम् (B) अपठः
(C) अपठत् (D) अपठन्। (A)

72. 'सेव्' धातोः लृट्लकारस्य उत्तमपुरुष बहुवचने रूपं वर्तते–
(A) सेविष्ये (B) सेविष्यन्ते
(C) सेविष्यामहे (D) सेविष्यध्वे। (C)

73. गृहं .... वृक्षाः सन्ति। रिक्तस्थानं पूरयत–
(A) प्रति (B) परितः
(C) सह (D) विना। (B)

74. वयं विद्यालयं .... गच्छामः। रिक्तस्थानं समुचितशब्देन पूरयत–
(A) अभितः (B) विना
(C) प्रति (D) सह। (C)

75. 'रुच्' धातोः योगे कारकं भवति–
(A) अपादानम् (B) कर्म
(C) करणम् (D) सम्प्रदानम्। (D)

76. खलः <u>सज्जनं</u> क्रुध्यति। रेखाङ्कितं पदं संशोधयत–
(A) सज्जनाय (B) सज्जनेन
(C) सज्जनस्य (D) सज्जने। (A)

77. ''लाकृतिः'' इत्यस्य सन्धि-विच्छेदः करणीयः–
(A) ल + आकृतिः (B) लृ + आकृतिः
(C) ला + आकृति (D) ल् + आकृतिः। (B)

78. 'भवति' कस्य सन्धेः उदाहरणम् ?
(A) यण् सन्धेः (B) दीर्घ सन्धेः
(C) अयादि सन्धेः (D) उत्व सन्धेः। (C)

79. 'वधूत्सवः' अस्य सन्धिविच्छेदः विद्यते–
(A) वधु + उत्सवः
(B) वधू + उत्सवः
(C) वधूत् + सवः
(D) वधू + उत्सवः। (D)

80. 'सच्चित्' अस्य सन्धिविच्छेदः वर्तते–
(A) सत् + चित्
(B) सद् + चित्
(C) सस् + चित्
(D) सश् + चित्। (A)

81. संस्कृते समासः कतिविधः?
(A) सप्तविधः
(B) अष्टविधः
(C) पञ्चविधः
(D) षड्विधः। (C)

82. ''गृहगतः'' उदाहरणमिदं विद्यते–
(A) तत्पुरुषसमासस्य
(B) बहुव्रीहिसमासस्य
(C) द्वन्द्वसमासस्य
(D) अव्ययीभावसमासस्य। (A)

83. ''हरिश्च हरश्च'' इत्यत्र समस्तपदं वर्तते–
(A) हरहरी
(B) हरिहरः
(C) हरिहरौ
(D) न कोऽपि। (C)

84. 'चन्द्रशेखरः' पदस्यास्य विग्रहः करणीयः
(A) चन्द्रस्य शेखरे परस्य सः
(B) चन्द्रः शेखरे यस्य सः
(C) चन्द्रः शेखरे यस्मिन् सः
(D) चन्द्राय शेखरः यः सः। (B)

85. 'दाण् + क्त' इत्यत्र प्रत्यययुक्तं पदं भवति–
(A) दतः
(B) दातः
(C) दत्तः
(D) दानम्। (C)

86. 'पचनीयम्' इत्यत्र प्रकृतिप्रत्ययौ कौ?
(A) पच् + अनीयर्
(B) पा + अनीयर्
(C) पच् + क्तवतु
(D) पच + तुमुन्। (A)

87. 'नम् + तुमुन्' प्रत्यययुक्तपदं किम्?
(A) नमितुम्
(B) नमित्वा
(C) नन्तुम्
(D) नमनीयः। (C)

88. ''द्ररिद्र को दान देता है'' इत्यस्य संस्कृतानुवादः करणीयः–
(A) द्ररिद्रं दानं ददाति
(B) दरिद्रः दानं ददाति
(C) दरिद्राय दानं ददाति
(D) दरिद्राय दानं ददामि। (C)

89. 'पिता पुत्र के साथ गया' अस्य संस्कृतानुवादः कर्त्तव्यः–
(A) पिता पुत्रेन सह अगच्छत्
(B) पिता पुत्रेण सह अगच्छत्
(C) पिता पुत्रस्य सह अगच्छत्
(D) पिता पुत्रेण सह अगच्छताम्। (B)

90. 'मेरा नाम गोपाल है' अस्य संस्कृतानुवादः विधेयः–
(A) मम नाम गोपालः
(B) अहं नाम गोपालः
(C) मम् नाम गोपालः
(D) मम नामः गोपालः। (A)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2011

लेवल-द्वितीय

भाषा -I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

31. 'व' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति–
(A) कण्ठोष्ठम्
(B) कण्ठ-तालु
(C) दन्तोष्ठम्
(D) जिह्वामूलम्। (C)

32. तवर्गस्य उच्चारणस्थानं भवति–
(A) नासिका
(B) मूर्धा
(C) कण्ठः
(D) दन्ताः (D)

33. 'अ' स्वरस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति–
(A) ओष्ठौ
(B) कण्ठः
(C) दन्ताः
(D) मुखम्। (B)

34. 'मूर्धा' उच्चारणस्थानम् अस्ति–
(A) वकारस्य
(B) षकारस्य
(C) ककारस्य
(D) पकारस्य। (B)

35. 'हरि' शब्दस्य द्वितीयाविभक्तिबहुवचने रूपं भवति–
(A) हरिम् (B) हरी
(C) हरिन् (D) हरीन्। (D)

36. 'नदी' शब्दस्य चतुर्थी विभक्ति एकवचने रूपं भवति–
(A) नदीम् (B) नद्या
(C) नद्यै (D) नद्याम्। (C)

37. 'कस्माद्' इति रूपमस्ति–
(A) द्वितीया विभक्ति - एकवचनस्य
(B) तृतीया विभक्ति - एकवचनस्य
(C) चतुर्थी विभक्ति - एकवचनस्य
(D) पंचमी विभक्ति - एकवचनस्य। (D)

38. 'एकस्मै बालकाय फलं यच्छ' रेखांकितपदे विभक्तिः अस्ति–
(A) प्रथमा
(B) द्वितीया
(C) तृतीया
(D) चतुर्थी। (D)

39. 'सर्वे बालकाः जलं पिबन्ति।' रेखांकितपदमस्ति–
(A) प्रथमपुरुषस्य एकवचनम्
(B) प्रथमपुरुषस्य बहुवचनम्
(C) मध्यमपुरुषस्य बहुवचनम्
(D) उत्तमपुरुषस्य एकवचनम्। (B)

40. 'स्था' धातोः लट्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचने रूपं भवति–
(A) स्थास्यसि
(B) स्थास्यथ
(C) तिष्ठथः
(D) तिष्ठथ (D)

41. 'लभ्' धातोः लोट्लकारे उत्तमपुरुष बहुवचनं भवति–
(A) लभन्ताम्
(B) लभै
(C) लभावहै
(D) लभामहै। (D)

42. 'वयम् आत्मानं जयेम।' रेखाङ्कितपदम् अस्ति–
(A) विधिलिङ्लकारस्य मध्यमपुरुष बहुवचनम्
(B) विधिलिङ्लकारस्य उत्तमपुरुष बहुवचनम्
(C) विधिलिङ्लकारस्य उत्तमपुरुष एकवचनम्
(D) विधिलिङ्लकारस्य प्रथमपुरुष एकवचनम्। (B)

43. सः .... बधिरः। अत्र रिक्तस्थाने शुद्धरूपं भविष्यति–
(A) कर्णाय (B) कर्णेन
(C) कर्णात् (D) कर्णस्य। (B)

44. रामः मूर्खेण ईर्ष्यति। रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपं भविष्यति–
(A) मूर्खम् (B) मूर्खाय
(C) मूर्खात् (D) मूर्खस्य। (B)

45. सीता जनकं सह विद्यालयं गच्छति। रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपमस्ति–
(A) जनकेन (B) जनकाय
(C) जनकात् (D) जनकस्य। (A)

46. 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधा' योगे विभक्तिः भवति–
(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पंचमी। (C)

47. 'राजपुरुषः' अस्मिन् पदे समासः अस्ति–
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) कर्मधारयः (D) द्वन्द्वः। (B)

48. 'घनश्यामः' अस्य समासस्य विग्रहः अस्ति–
(A) घनः च श्यामः च
(B) घनः इव श्यामः
(C) श्यामः इव घनः (D) घने श्यामः (B)

49. 'त्रिभुवनम्' अत्र समासः अस्ति–
(A) कर्मधारयः (B) तत्पुरुषः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्विगुः। (D)

50. प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो समासः भवति–
(A) द्वन्द्वः (B) तत्पुरुषः
(C) द्विगुः (D) बहुव्रीहिः। (A)

51. 'चयनम्' अस्य शब्दस्य संधिविच्छेदः अस्ति–
(A) च + अयनम्
(B) चि + अयनम्
(C) चे + अनम्
(D) चे + यनम्। (C)

52. 'देव + ऐश्वर्यम्' अत्र संधिः भविष्यति–
(A) देवेश्वर्यम्
(B) देवैश्वर्यम्
(C) देवश्वर्यम्
(D) देवऽर्यम्। (B)

53. 'पेष्टा' अत्र संधिः अस्ति–
(A) श्चुत्व
(B) ष्टुत्व
(C) जशत्व
(D) पूर्वरूप। (B)

54. 'शिवोऽर्च्यः' अत्र संधिविच्छेदः अस्ति–
(A) शिवः + अर्च्यः
(B) शिवा + अर्च्यः
(C) शिवि + अर्च्यः
(D) शिव + आर्च्यः। (A)

55. दुर्जनः सज्जनस्य अपकरोति। रेखाङ्कितपदे उपसर्गः धातुश्च स्तः–
(A) अप + कृ
(B) अपा + कृ
(C) अप + कर्
(D) अपा + कर्। (A)

56. सीता स्नानं कृत्वा देवालयं गच्छति। रेखाङ्कितपदे धातुः प्रत्ययश्च स्तः
(A) कृ + क्त्वा
(B) कृ + ल्यप्
(C) क्री + तुमुन्
(D) क्री क्त्वा। (A)

57. 'कथयितुम्' अत्र धातुः प्रत्ययश्च स्तः–
(A) कथ् + तुमुन्
(B) कथ् + ल्यप्
(C) कथय् + तुमुन्
(D) कथि + ल्यप्। (A)

58. पवनः .... वहति। रिक्तस्थाने अव्ययस्य शुद्धरूपं भविष्यति–
(A) कुत्रम्
(B) कुत्र
(C) कुत्रा
(D) कुत्रे। (B)

59. "गोपाल मोहन से चतुर है" इत्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति–
(A) गोपालस्य मोहनः चतुरतरः
(B) गोपालः मोहनेन चतुरतरः
(C) गोपालः मोहनाय चतुरतरः
(D) गोपालः मोहनात् चतुरतरः। (D)

60. 'वे सब संस्कृत पढ़ें।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति–
(A) ते संस्कृत पठन्ति
(B) ते संस्कृतं पठन्तु
(C) यूयं संस्कृतं पठथ
(D) वयं संस्कृतं पठामः। (B)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2011

लेवल-द्वितीय

भाषा-II : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

61. 'ह' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते
(A) मूर्धा (B) कण्ठः
(C) तालु (D) नासिका। (B)

62. 'ए' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति
(A) कण्ठोष्ठम् (B) दन्तोष्ठम्।
(C) कण्ठतालु (D) नासिका। (C)

63. मूर्धा उच्चारणस्थानं कथ्यते
(A) 'ल' वर्णस्य (B) 'र' वर्णस्य
(C) 'य' वर्णस्य (D) 'न' वर्णस्य। (B)

64. स्वराः कति?
(A) पञ्च (B) अष्टौ
(C) एकादश (D) नव। (D)

65. 'त्रि' शब्दस्य स्त्रीलिङ्गे प्रथमाविभक्तेः बहुवचने रूपम् भवति
(A) त्रीणि (B) तिस्रः
(C) त्रयः (D) त्रिभिः। (B)

66. .... वेदाः सन्ति।
(A) चत्वारि (B) चतस्त्र
(C) चत्वारः (D) चतुरः। (C)

67. 'लता' शब्दस्य सप्तमी बहुवचने रूपं भवति
(A) लतासु (B) लताषु
(C) लतानाम् (D) लताः। (A)

68. 'पितृ' शब्दस्य षष्ठी बहुवचने रूपं विद्यते
(A) पितृनाम् (B) पितृषु
(C) पितृणाम् (D) पितृणाम्। (D)

69. 'अस्' धातोः लोट्लकारस्य मध्यमपुरुषैकवचने रूपमस्ति
(A) असि (B) एधि
(C) सन्तु (D) असानि। (B)

70. 'सह्' धातोः लट्लकारस्य उत्तमपुरुषैकवचने रूपं भवति
(A) सहे
(B) सहते
(C) सहन्ते
(D) सहसे। (A)

71. 'कृ' धातोः लङ्लकारस्य उत्तमपुरुष बहुवचने रूपं विद्यते
(A) अकुर्मः
(B) अकरवम्
(C) अकुर्म
(D) अकरोः। (C)

72. 'पा' धातोः लृट्लकारस्य प्रथमपुरुष बहुवचने रूपम् अस्ति
(A) पास्यन्ति
(B) पास्यथः
(C) पिबिस्यन्ति
(D) पास्यमः। (A)

73. संस्कृते कति कारकाणि भवन्ति?
(A) सप्त
(B) अष्टौ
(C) षट्
(D) पञ्च। (C)

74. बालकः .... बिभेति। रिक्तस्थानं पूरयत
(A) सर्पस्य
(B) सर्पात्
(C) सर्पाय
(D) सर्पे। (B)

75. राक्षसाः.......... ईर्ष्यन्ति स्म। समुचित पदेन रिक्तस्थानं पूरयतः
(A) देवानाम्
(B) देवैः
(C) देवेषु
(D) देवेभ्यः। (D)

76. गोविन्दः शिरसा खल्वाटः। इत्यत्र रेखाङ्कितपदे कारणं स्पष्टयतः
(A) करणार्थे
(B) अङ्गविकारार्थे
(C) अपवर्गार्थे
(D) सहार्थे। (B)

77. ''शक्तिम् अनतिक्रम्य'' इत्यत्र समस्तपदं सूचयतः
(A) अनु शक्ति
(B) उपशक्तिः
(C) यथाशक्तिम्
(D) यथाशक्ति। (D)

78. 'गोसुखम्' इत्यत्र समासः कः?
(A) कर्मधारयः
(B) बहुव्रीहिः
(C) तत्पुरुषः
(D) अव्ययीभावः। (C)

79. 'त्रयाणां लोकानां समाहारः' समस्तपदं वर्तते
(A) त्रिलोकी
(B) त्रिलोकः
(C) त्रिलोकम्
(D) त्रयः लोकाः। (A)

80. ''पितरौ'' इत्यत्र विग्रहः कार्यः
(A) मातृ च पितृ च
(B) पिता च माता च।
(C) माता च पिता च
(D) मातुः च पितुः च। (C)

81. ''बालः+चलति'' इत्यत्र संधिः करणीयः
(A) बालो चलति
(B) बालश्चलति
(C) बालस्चलति
(D) बालष्चलति। (B)

82. ''प्रेजते'' सन्धिविच्छेदः कार्यः
(A) प्र+ऐजते (B) प्रे+जते
(C) प्र+एजते (D) पर्+एजते। (C)

83. ''कोऽस्ति'' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) पूर्वरूपसन्धिः
(B) पररूपसन्धिः
(C) गुणसन्धि
(D) वृद्धिसन्धि। (A)

84. ''कृष्णः'' सन्धिविच्छेदः करणीयः
(A) कृष्+णः
(B) कृस्+नः
(C) कृष्+नः
(D) कृषः+नः। (C)

85. ''संस्कृत'' इत्यत्र कः उपसर्गः?
(A) सम् (B) सु
(C) उप (D) अव। (A)

86. ''पच्+क्तः'' इत्यत्र प्रत्यययुक्तपदं भवति
(A) पक्तः (B) पक्वः
(C) पचितः (D) पतः। (B)

87. ''उत्थाय'' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) क्त्वा (B) अनीयर्
(C) ल्यप् (D) यत्। (C)

88. .... विवादेन। रिक्तस्थानं। शुद्ध अव्ययेन पूरयत
(A) विना
(B) अलम्
(C) धिक्
(D) प्रति। (B)

89. 'गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।' संस्कृतानुवादः करणीयः–
(A) गुरुः शिष्येण प्रश्नं पृच्छति
(B) गुरुः शिष्यात् प्रश्नं पृच्छति
(C) गुरुणां शिष्यः प्रश्नं पृच्छति
(D) गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति। (D)

90. हम सबको सत्य बोलना चाहिए।
(A) वयं सत्यं वदामः
(B) वयं सत्यं वदेम
(C) वयं सत्यं वदिष्यामः
(D) वयं सत्यं वदन्तु। (B)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2012

लेवल-प्रथम

भाषा-I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

प्रस्तुतं गद्यांशं सम्यक् पठित्वा निम्नलिखितान् 31 तः 37 पर्यन्तम् प्रश्नान् उत्तरयत :

संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी अस्ति। अनया भाषया सर्वाः प्रान्तीयभाषाः अनुप्राणिताः प्रभाविताः च सन्ति। इयं भाषा अतीव सरला मधुरा चास्ति। श्रुतिः उपनिषत् पुराणं दर्शनम् अन्यानि च शास्त्राणि संस्कृते एव रचितानि सन्ति। श्रुतयः चतस्रः सन्ति- ऋक्, यजुः, साम, अथर्व इति। श्रुतीनामाशयं स्मृतयः प्रतिपादयन्ति। यद्यपि बह्व्यः स्मृतयः सन्ति तथापि मनुस्मृतिः याज्ञवल्क्यस्मृतिः चेति द्वे स्मृती प्रसिद्धे स्तः।

31. श्रुतीनामाशयं काः प्रतिपादयन्ति?
(A) वेदाः (B) स्मृतयः
(C) श्रुतयः (D) उपनिषदः। (B)

32. 'यद्यपि' इत्यत्र सन्धि-विच्छेदः कः?
(A) यदी + अपि (B) यद्य् + अपि
(C) यदि + अपि (D) यदि + अपी। (C)

33. 'चतस्रः' इत्यस्य पदस्य पुँल्लिङ्गे रूपं भवेत्–
(A) चत्वारि (B) चतुरः
(C) चतस्त्रः (D) चत्वारः। (D)

34. 'स्तः' इति पदं लङ्लकारे परिवर्तयत–
(A) आसीत् (B) आस्ताम्
(C) आसन् (D) अस्ताम्। (B)

35. 'स्मृतिः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) क्तिन् (B) तिः
(C) तिप् (D) क्त। (A)

36. कति स्मृतयः प्रसिद्धाः सन्ति?
(A) द्वौ (B) त्रयः
(C) द्वयम् (D) द्वे। (D)

37. ''स्मृती'' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः ? किं वचनं च?
(A) प्रथमा - एकवचनम् (B) द्वितीया - एकवचनम्
(C) प्रथमा - द्विवचनम् (D) द्वितीया - बहुवचनम्। (C)

प्रस्तुतं गद्यांशं पठित्वा निम्नलिखिताः प्रश्नसंख्याः 38 तः 44 पर्यन्तं समाधेयाः–

दक्षिणात्ये जनपदे काञ्ची नाम नगरी आतीत्। काञ्चीं नगरीं निकषा एकः न्यग्रोधतरुः आसीत्। लघुपतनकः नाम वायसः तं तरुम् अधितिष्ठति स्म। सः एकदा तरुं निकषा कञ्चन दुरात्मानं व्याधम् अपश्यत्। तं दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्–''धिक् एवं पापात्मानं यः प्राणिनः हन्ति। किञ्च किम् एतेन निन्दा वचनेन। इदानीं वटवासिनः पक्षिणः बोधयामि, अन्यथा एषः व्याधः तान् ग्रहीष्यति''। ततः सः सर्वान् वटवासिनः पक्षिणः अबोधयत्–''भोः पक्षिणः! दुर्मनसं व्याधं पश्यत, एषः हस्ते तण्डुलान् जालं च गृहीत्वा आगच्छति। जालं प्रसार्य तण्डुलान् विकरिष्यति।। तण्डुलान् खादितुं मा गच्छत, अन्यथा सः भवतः सर्वान् जालेन बद्ध्वा नेष्यति।।

38. वायसस्य नाम किम् ?
(A) दर्मनसः (B) लघुपत्तनकः
(C) न्यग्रोधः (D) काञ्ची। (B)

39. 'प्रसार्य' इत्यत्र कः प्रत्ययः ?
(A) यत् (B) ण्यत्
(C) ल्यप् (D) क्यप्। (C)

40. 'दुर्मनसम्' इत्यत्र कः उपसर्गः?
(A) दुः (B) दुस्
(C) दु (D) दुर्। (D)

41. 'पश्यत' इत्यत्र धातुं लकार-पुरुष वचनानि कानि?
(A) दृश् + लट् + मध्यम पु. + बहुवचनम्।
(B) पश् + लोट् + मध्यम पु. + एकवचनम् ।
(C) दृश् + लोट् + मध्यम पु. + बहुवचनम् ।
(D) दृश् + लङ्. + प्रथम पु. + एकवचनम् । (C)

42. धिक् एवं पापात्मानं यः प्राणिनः हन्ति।
रेखाङ्किते पदे का विभक्तिः?
(A) द्वितीया (B) प्रथमा
(C) तृतीया (D) पञ्चमी। (A)

43. तरुं निकषा कीदृशं व्याधम् अपश्यत् ?
(A) सुखात्मानम् (B) गतात्मानम्
(C) दुरात्मानम् (D) सत्यात्मानम्। (C)

44. 'कञ्चन' इत्यत्र सन्धि विच्छेदः करणीयः
(A) किम् + चन (B) कः + चन
(C) कम् + चन (D) कं + चन। (D)

45. संस्कृतशिक्षणे सम्प्रेषणोपागमे कस्य प्रधानता वर्तते?
(A) पुस्तकस्य (B) श्यामपट्टस्य
(C) अध्यापकस्य (D) छात्रस्य। (C)

46. संस्कृताध्यापने दृश्यश्रव्यसाधनं किम् ?
(A) दूरदर्शनम् (B) ध्वनियन्त्रम्
(C) श्यामपट्टः (D) एतानि सर्वाणि (A)

47. लघूत्तरात्मक प्रश्नानाम् उत्तरसीमा भवेत्
(A) एकं पदम् (B) एकं वाक्यम्
(C) वाक्यत्रयम् वा चतुष्टयम्(D) दश वा द्वादशवाक्यानि। (C)

48. विषयगतकाठिन्यानां ज्ञानं कथं भवति?
(A) मूल्याङ्कनेन (B) भाषणेन
(C) श्लोकगानेन (D) परस्परसम्भाषणेन। (A)

49. शिक्षकः कक्षायां कम् आश्रित्य पाठयति?
(A) सुधाखण्डम् (B) पाठ्यपुस्तकम्
(C) श्यामपट्टम् (D) सर्वम् (D)

50. अधोलिखितवाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

	सः	मां	पश्यति।
(A)	तेन	अहं	दृश्ये
(B)	तेन	अहं	दृश्यते
(C)	तेन	अहं	पश्ये
(D)	तेन	मां	दृश्ये। (A)

51. वाक्यमिदं संशोधयत–

	अहं	नाम	गोपालः।
(A)	अहं	नामं	गोपालः
(B)	मम	नामः	गोपालः
(C)	मम	नाम	गोपालः
(D)	सम्	नाम	गोपालः। (C)

52. रेखाङ्कितं पदम् अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं करणीयम्–
लतायां पुष्पाणि सन्ति।
(A) कस्य (B) कस्याम्
(C) कस्मिन् (D) किम् (B)

53. रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं संयोजयत–
उद्यमेन हि सिध्यन्ति .... न मनोरथैः।
(A) वस्त्राणि (B) धनानि
(C) दानानि (D) कार्याणि। (D)

54. ''तुम सब मेरे साथ संस्कृत बोलो'' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) युयं मम सह संस्कृत वदत
(B) यूयं मया सह संस्कृतं वदत
(C) यूयं मया सार्कं संस्कृतं वदताम्
(D) यूयं मां समं संस्कृत वद। (B)

55. तुम्हारा नाम क्या है? संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) तस्य नाम किम्? (B) तव नामः किम्?
(C) त्वत् नामं किम् ? (D) तव नाम किम्? (D)

56. व्याकरणशिक्षणस्य कोऽयं विधिः श्रेष्ठः?
(A) निगमनविधिः (B) आगमनविधिः
(C) आगमननिगमनविधिः (D) सूत्रविधिः। (C)

57. प्राथमिक स्तरे कोऽयं विधिः समुपयुक्तः?
(A) कथाविधिः (B) प्रश्नविधिः
(C) उदाहरणविधि (D) भाषणविधिः। (A)

58. भाषाशिक्षणस्य कति कौशलानि भवन्ति?
(A) त्रीणि (B) द्वे
(C) चत्वारि (D) पञ्चम। (C)

59. संस्कृतभाषायां श्रवणं सम्भाषणं च केन विधिना भवतः ?
(A) पाठशालाविधिना (B) प्रत्यक्षविधिना
(C) व्याख्याविधिना (D) सूत्रविधिना। (B)

60. शिक्षणसूत्रं विद्यते–
(A) सरलात् कठिनं प्रति
(B) कठिनात् कठिनं प्रति
(C) कठिनात् सरलं प्रति
(D) सरलात् सरलं प्रति। (A)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2012

लेवल-प्रथम

भाषा-II : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

प्रस्तुतं पद्यांशं सम्यक् पठित्वा प्रश्नसंख्या 61 तः 67 पर्यन्तं प्रश्नानाम् उत्तराणि लेखनीयानि–

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च,
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा॥

61. का अनेकरूपा विद्यते?
(A) परुषा (B) नृपनीतिः
(C) वाराङ्गना (D) वदान्या। (B)

62. "प्रियवादिनी" इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) णिनि (B) इनि
(C) इञ् (D) नो। (A)

63. 'नित्यव्यया' इत्यत्र समासः कः?
(A) कर्मधारयः (B) अव्ययीभावः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्विगुः। (C)

64. 'वाराङ्गनेव' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) यण् सन्धिः (B) गुण सन्धिः
(C) दीर्घ सन्धिः (D) अयादि सन्धिः। (B)

65. श्लोकेऽस्मिन् छन्दः किम् ?–
(A) उपेन्द्रवज्रा (B) वंशस्थम्
(C) प्रहर्षिणी (D) वसन्ततिलका। (D)

66. 'सत्या' इति पदस्य विलोमं पदं किं भवेत्?
(A) प्रियवादिनी (B) परुषा
(C) अनृता (D) वदान्या। (C)

67. 'दयालुरपि' इत्यत्र कः सन्धि-विच्छेदः?
(A) दयालुर् + अपि (B) दयालुः + अपि।
(C) दयालुस् + अपि (D) दया + आलुर् + अपि। (B)

68. मूल्याङ्कनं कतिविधम्?
(A) त्रिविधम् (B) एकविधम्
(C) द्विविधम् (D) चतुर्विधम्। (C)

69. संस्कृतभाषाशिक्षणे सर्वप्रथमं भाषाकौशलं विद्यते–
(A) श्रवणम् (B) सम्भाषणम्
(C) पठनम् (D) लेखनम्। (A)

70. 'उदाहरणानि प्रस्तूय नियमस्य कथनम्' इति कः विधिः?
(A) सूत्रविधिः (B) निगमनविधिः
(C) व्याख्याविधिः (D) आगमनविधिः। (D)

71. प्राचीनतमः विधिः कः?
(A) पारायणविधिः (B) व्याख्याविधिः
(C) सूत्रविधिः (D) आगमनविधिः। (A)

72. शिक्षणं रुचिकरं कथं स्यात्?
(A) विधिभिः (B) कौशलैः
(C) पुस्तकैः (D) दृश्यश्रव्यसाधनैः। (D)

प्रस्तुतं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखितः प्रश्न सं. 73 तः 79 पर्यन्तं प्रश्नाः समाधेयाः–

अथ का नाम संस्कृतिः? मनसः आत्मनः च संस्कारः परिष्कारः इति संस्कृतिः। संस्कृतिः मनः निर्मलं करोति। विश्वसंस्कृतिषु भारतीयसंस्कृतिः प्राचीनतमा। भारतीयसंस्कृते : आदर्शवाक्यानि सन्ति–'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'आत्मवत् सर्वभूतेषु', 'अहिंसा परमोधर्मः' 'मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्' इत्यादीनि। भारतीयसंस्कृतिः धर्मप्रधाना, वर्णाश्रम व्यवस्थायुक्ता चास्ति। कर्मफलं, पुनर्जन्म, मोक्षवादः च अस्याः प्रमुखाः सिद्धान्ताः सन्ति। सत्यस्य, त्यागस्य, अहिंसायाः च अत्र महत्त्वं वर्तते। विश्वहितस्य मूलभूताः भावनाः भारतीयसंस्कृतौ उपलभ्यन्ते।

73. सर्वभूतेषु कीदृशः व्यवहारः करणीयः?
(A) मातृवत् (B) आत्मवत्
(C) पितृवत् (D) लोष्ठवत्। (B)

74. 'वसुधैव' इत्यत्र सन्धि विच्छेदः कार्यः–
(A) वसुधा + इव (B) वसुधा + ऐव
(C) वसुधा + एव (D) वसुधा + ईव। (C)

75. 'लोष्ठवत्' व्यवहारः कुत्र प्रदर्शनीयः?
(A) परदारेषु (B) सर्वभूतेषु
(C) परद्रव्येषु (D) सर्वत्र। (C)

76. 'महत्त्वम्' इत्यत्र कः प्रत्ययः ?
(A) तमप् (B) तत्
(C) क्त (D) त्व। (D)

77. 'संस्कृति' इत्यत्र कः उपसर्गः?
(A) सह (B) सम्
(C) सु (D) सः। (B)

78. 'कर्मफलम्' इत्यत्र कः समासः?
(A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्वन्द्वः। (A)

79. "संस्कृतिः मनः निर्मलं करोति" वाक्यमिदं लङ्लकारे परिवर्तयत–
(A) संस्कृति मनः निर्मलं करिष्यति
(B) संस्कृतिः मनः निर्मलम् अकरोत्
(C) संस्कृतिः मनः निर्मलं कर्यात्
(D) संस्कृतिः मनः निर्मलम अकुरुत। (B)

80. परम्परागतसहायकोपकरणम् अस्ति–
(A) दूरदर्शनम् (B) श्यामपट्टः
(C) मानचित्रम् (D) आकाशवाणी। (B)

81. कस्यापि नगरस्य भौगलिकीं स्थितिं बोधयितुं कीदृशस्य पाठ्योपकरणस्य प्रयोगः करणीयः?
(A) मानचित्रस्य (B) पत्रकस्य
(C) रेखाचित्रस्य (D) पुस्तकस्य। (A)

82. संस्कृतभाषा सर्वाधिक सफला भाषा कस्य कृते वर्तते?
(A) दूरदर्शनस्य (B) चलचित्रस्य
(C) संगणकस्य (D) आकाशवाण्याः। (C)

83. अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नानाम् उत्तरसीमा स्यात्–
(A) पृष्ठमेकम् (B) वाक्यद्वयम्
(C) पञ्चवाक्यानि (D) एकं वाक्यम्। (D)

84. निबन्धात्मक परीक्षापेक्षया का परीक्षा विश्वसनीया कथ्यते?
(A) वस्तुनिष्ठपरीक्षा (B) भाषणपरीक्षा
(C) साक्षात्कारपरीक्षा (D) लिखितपरीक्षा। (A)

85. अधोलिखितस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादं कुरुत– "वह, मैं और तुम विद्यालय जा रहे हैं।"
(A) सः त्वम् अहं च विद्यालयं गच्छन्ति
(B) सः अहं त्वं च विद्यालयं गच्छामः
(C) सः अहं त्वं च विद्यालयं गच्छथ
(D) सः अहं त्वं च विद्यालयः गच्छामः। (B)

86. 'ऋ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम्?
(A) मूर्धा (B) दन्ताः
(C) कण्ठः (D) तालु। (A)

87. वाक्यमिदं संशोधयत–
"त्वं भिक्षुकं धनं यच्छसि।"
(A) त्वं भिक्षुकस्य धनं यच्छति
(B) त्वं भिक्षुकाय धनं यच्छसि
(C) त्वं भिक्षुकेण धनं यच्छसि
(D) त्वं भिक्षुके धनं यच्छसि। (B)

88. निम्नलिखितसूक्तेः समुचितपदेन रिक्त स्थानं पूरयत–
स्वदेशे पूज्यते राजा .... सर्वत्र पूज्यते।
(A) विद्या (B) धनम्
(C) विद्वान् (D) मूर्खः। (C)

89. "अहं पुस्तकानि पठामि" वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(A) मया पुस्तकान् पठ्यते
(B) मया पुस्तकानि पठ्येते
(C) मया पुस्तकानि पठ्यन्ते
(D) अहं पुस्तकैः पठ्यते। (C)

90. 'व' कारस्य उच्चारण-स्थानं किम्?
(A) दन्तोष्ठम् (B) कण्ठोष्ठम्
(C) तालु-ओष्ठम् (D) नासिका-ओष्ठम्। (A)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2012

लेवल-द्वितीय

भाषा-I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

प्रस्तुतं गद्यांशमाधारीकृत्य प्रश्नसंख्या 31 तः 37 पर्यन्तं प्रश्नाः समाधेयाः–

एकदा कश्चित् मुनिः कस्मिंश्चित् तडागे स्नानरतः आसीत्। स्नानसमये कश्चित् क्षुद्रसर्पः तस्याञ्जलौ अपतत्। किञ्चिद् भीतः मुनिवरः अपृच्छत–"कोर्भवान्" इति। सर्पः अवदत्–"सपोऽहम्"। तं श्रुत्वा मुनिवरः पुनः अपृच्छत्–"रेफः क्व गतः" इति। सर्पः उक्तवान् – "तवया अपहृतः" इतिः। मुनिवरः स्वदोषं ज्ञात्वा लज्जितः अभवत्। सः ज्ञातवान् यत् अवश्यमयं कश्चन् महापुरुषः विद्वान् च वर्तते। पतञ्जलेः जीवन-वृत्तान्त-विषये अन्याः अपि काश्चन किं वदन्त्यः सन्ति। पतञ्जलेः व्याकरणमहाभाष्यम् आकरग्रन्थः वर्तते। तस्य योगविषयकः अपि विलक्षणग्रन्थः वर्तते। पतञ्जलेः व्याकरणविषये यावान् अधिकारः आसीत् तावान् अधिकारः योगे आयुर्वेदे अपि आसीत्।

31. सर्प कुत्रः अपतत्?
(A) हस्ते (B) अञ्जलौ
(C) मुखे (D) शिरसि। (B)

32. "उक्तवान्" इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) क्तवतु (B) क्त
(C) मतुप् (D) वतुप्। (A)

33. 'पतञ्जलिः' इत्यत्र कः सन्धिविच्छेदः ?
(A) पत् + अञ्जलिः (B) पर्त + जलिः
(C) पतत् + अञ्जलिः (D) पतम् + अञ्जलिः। (C)

34. "मुनिवरः लज्जितः अभवत्"
वाक्ये स्थितं क्रियापदं लोट् लकारे परिवर्तयत–
(A) भवतु (B) भव
(C) भविष्यति (D) भवेत्। (A)

35. पतञ्जलेः आकारग्रन्थस्य नाम किम्?
(A) अष्टाध्यायी (B) चरकसंहिता
(C) सिद्धान्तकौमुदी (D) महाभाष्यम्। (D)

36. 'सपोऽहम्' इति कः अवदत्?
(A) मुनिः (B) पतञ्जलिः
(C) सर्पः (D) सपः। (C)

37. 'यावान्' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) वतुप् (B) मतुप्
(C) शानच् (D) शतृ। (A)

प्रस्तुतं श्लोकमाधारीकृत्य प्रश्न संख्या 38 तः 44 पर्यन्तं प्रश्नाः समाधेयाः–

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना,
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।।

38. खलसजनानां मैत्री पश्चात् कीदृशी भवति?
(A) गुर्वी (B) वृद्धिमती
(C) दीर्घा (D) लघ्वी। (B)

39. 'वृद्धिमती' पदेऽस्मिन् प्रत्ययः कः?
(A) मतुप् (B) वतुप्
(C) शतृ (D) शानच्। (A)

40. श्लोकेऽस्मिन किं छन्दः?
(A) इन्द्रवज्रा (B) उपेन्द्रवज्रा
(C) उपजातिः (D) भुजङ्गप्रयातम्। (C)

41. 'छायेव' इत्यत्र सन्धिविच्छेदः कः?
(A) छाया + इव (B) छाया + एव
(C) छया + ईव (D) छाया + ऐव। (A)

42. पूर्वार्द्धम् = (पूर्वं च तद् अर्द्धम्) इत्यत्र कः समासः?
(A) अव्ययीभावः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः (D) तत्पुरुषः। (B)

43. "भिन्ना" इत्यत्र कौ प्रकृतिप्रत्ययौ?
(A) भिद् + ल्यु (B) भिद् + ल्युट्
(C) भिद् + क्त (D) भिद् + क्तवतु। (C)

44. "पुरा" इति पदस्य विलोमपदं विद्यते–
(A) अग्रे (B) अधः
(C) वामतः (D) पश्चात्। (D)

45. वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
"शिशुः जलं पिबति"
(A) शिशुना जलं पियते
(B) शिशुना जलं पीयते
(C) शिशुना जलं पिव्यते
(D) शिशुणा जलं पीयते। (B)

46. "रमा सीता की दुष्टों से रक्षा करती है।"–
संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) रमा सीतां दुष्टेभ्यः रक्षति
(B) रमा सीतया दुष्टान् रक्षति
(C) रमया सीता दुष्टेभ्यः त्रायते
(D) रमा सीता खलानां रक्षति। (A)

47. "वयं विद्यालयात् आगच्छामः" रेखाङ्कितपदे प्रश्ननिर्माणं करणीयम्–
(A) कस्य (B) कथम्
(C) कस्मात् (D) कस्मै। (C)

48. वाच्यपरिवर्तनं करणीयम्–
सा उच्चैः हसति।
(A) तेन उच्चैः हस्यते
(B) तया उच्चैः हस्यते
(C) सा उच्चैः हस्यते
(D) ताम् उच्चैः हस्यते। (B)

49. रिक्तस्थानं पूरयित्वा सुक्तिं रचयत–
'......................परमो धर्मः।'
(A) हिंसा (B) असत्यम्
(C) अहिंसा (D) सत्यम्। (C)

50. गुरुः शिष्यात् प्रश्नं पृच्छति।
वाक्यमिदं संशोधयत–
(A) गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति
(B) गुरुः शिष्येण प्रश्नं पृच्छति
(C) गुरुणा शिष्यं प्रश्नः पृच्छति
(D) गुरुः शिष्याय प्रश्नं पृच्छति। (A)

51. संस्कृतशिक्षणे सर्वोत्तमविधिः वर्तते–
(A) व्याख्यानविधिः (B) अनुवादविधिः
(C) प्रश्नोत्तरविधिः (D) कण्ठस्थीकरणविधिः। (A)

52. व्याकरणानुवादविधेः प्रवर्तकः कः?
(A) डॉ. राधाकृष्णन
(B) डॉ. रामकृष्णगोपालभण्डारकरः
(C) फ्रॉयडः
(D) प्रो. वी. पी. बौकिलः। (B)

53. भाषणकौशलस्य विकासः कथं क्रियते?
(A) लेखनेन (B) श्रवणेन
(C) उच्चारणेन (D) पठनेन। (C)

54. मौखिकपरीक्षायाः भेदः नास्ति–
(A) शलाकापरीक्षा (B) शास्त्रार्थपरीक्षा
(C) वस्तुनिष्ठपरीक्षा (D) भाषणपरीक्षा (C)

55. निश्चित-उत्तरात्मकः प्रश्नः कः?
(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्नः (B) अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नः
(C) लघुत्तरात्मक प्रश्नः (D) निबन्धात्मक प्रश्नः। (A)

56. प्रश्नपत्रे कति उद्देश्यानि भवन्ति?
(A) द्वे (B) त्रीणि
(C) पञ्च (D) चत्वारि। (B)

57. शिक्षकः स्वशिक्षणस्य मूल्याङ्कनाय छात्रेभ्यः किं प्रददाति?
(A) गृहकार्यम् (B) पठनकार्यम्
(C) भ्रमणकार्यम् (D) श्रवणकार्यम्। (A)

58. पठने दुर्बलछात्राणां कृते कीदृशं शिक्षणं प्रदीयते?
(A) गद्यशिक्षणम्
(B) पद्यशिक्षणम्
(C) उपचारात्मकं शिक्षणम्
(D) कथाशिक्षणम्। (C)

59. कक्षाशिक्षणे छात्राणामुच्चारणाभ्यासः केन शिक्षणाधिगम साधनेन कर्तुं शक्यते?
(A) मानचित्रेण (B) रेखाचित्रेण
(C) पाठ्यपुस्तकेन (D) ध्वन्यभिलेखेन। (D)

60. दृश्यसहायकसाधनेन कस्य उपयोगः क्रियते?
(A) शुद्धलेखनस्य (B) उच्चारणस्य
(C) उभयोः (D) केवलं पठनस्य। (C)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

RTET-2012

लेवल-द्वितीय

भाषा-II : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

प्रस्तुतं गद्यांश आधारीकृत्य 61-67 पर्यन्तं प्रश्नाः समाधेयाः–

अहो प्रातःकालम्! अतीव रमणीयं दृश्यम्। प्रातः वातावरणम् अतीव शुद्धं भवति। सर्वत्र शीतलवायुः प्रवहति। सूर्यः उदेति। सूर्यप्रकाशः सर्वत्र प्रसरति। उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि विकसन्ति। तेषु भ्रमराः इतस्ततः भ्रमन्तः गुञ्जन्ति। खगाः गीतं गायन्ति। मनुष्याः उत्थाय सूर्यं नमन्ति। प्रातः छात्राः सूर्योदयात् पूर्वं शयनं त्यजन्ति। ते ईश्वरं स्वजननीजनकौ च नमन्ति। स्नानं कृत्वा प्रातराशं कृत्वा मित्रैः सह विद्यालयं गच्छन्ति। कृषकाः क्षेत्राणि गच्छन्ति। समाचारपत्रवाहकः समाचारपत्राणि सर्वेभ्यः वितरति। प्रातःकाले शुद्धवातावरणे उद्याने केचन भ्रमन्ति केचिद् व्यायामं कुर्वन्ति। केचन मनुष्याः स्व-स्व-कार्याणि कुर्वन्ति।

61. भ्रमराः कुत्र गुञ्जन्ति?
(A) पुष्पेषु (B) उद्यानेषु
(C) वृक्षेषु (D) पत्रेषु। (A)

62. ''स्वजननीजनकौ'' पदेऽस्मिन् कः समासः?
(A) अव्ययीभावः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः (D) तत्पुरुषः। (C)

63. 'भ्रमन्तः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) शनच् (B) क्तवतु
(C) क्त (D) शतृ। (D)

64. समाचारपत्रवाहकः समाचारपत्राणि सर्वेभ्यः वितरति रेखाङ्कितपदे का विभक्तिः?
(A) पञ्चमी (B) चतुर्थी
(C) तृतीया (D) द्वितीया। (B)

65. उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि सन्ति।
वाक्येऽस्मिन् विशेषणपदं किम्?
(A) सन्ति (B) पुष्पाणि
(C) सुन्दराणि (D) उद्याने। (C)

66. ''मनुष्याः सूर्यं नमन्ति'' वाक्यमिदं लृट्लकारे परिवर्तयत–
(A) मनुष्याः सूर्यं नमष्यिन्ति
(B) मनुष्याः सूर्यं नंस्यन्ति
(C) मनुष्याः सूर्यं नमन्तु
(D) मनुष्याः सूर्यम् अनमन्। (B)

67. ''व्यायामम्'' पदेऽस्मिन कति उपसर्गाः सन्ति?
(A) एकः (B) त्रयः
(C) द्वौ (D) उपसर्गाः न सन्ति। (C)

68. कस्याभावे कार्याभावो भवति?
(A) धनस्य (B) मद्यस्य
(C) कारणस्य (D) समाजस्य। (C)

69. मद्यपानं किं जनयति?
(A) महत्सुखम् (B) महत्-दुःखम्
(C) महत्सुखम् (D) महद्-धनम् (B)

70. गद्यांशे ''प्रजाः'' इति पदं कस्मिन् लिङ्गे प्रयुक्तमस्ति?
(A) पुंलिङ्गे (B) नंपुसकलिङ्गे
(C) स्त्रीलिङ्गे (D) सर्वलिङ्गे। (C)

71. ''अन्येषाञ्च'' इत्यस्य सन्धिविच्छेदः करणीयः–
(A) अन्येषां + च
(B) अन्येषाम् + च
(C) अन्येषाञ् + च
(D) अन्य + एषाञ्च। (A, B)

72. ''गान्धिमहोदयः'' इत्यत्र कः समासः?
(A) तत्पुरुषः (B) अव्ययीभावः
(C) कर्मधारयः (D) बहुब्रीहिः। (C)

73. 'दृष्ट्वा' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) ण्वुल् (B) क्त्वा
(C) क्त (D) ल्यप्। (B)

74. ''सम्पूर्णम् आपमूलकमिदं मद्यपानं त्यजन्तु''
वाक्येऽस्मिन् विशेष्यपदं किम् ?
(A) मद्यपानम् (B) सम्पूर्णम्
(C) त्यजन्तु (D) इदम्। (A)

75. 'ल' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते–
(A) मूर्धा (B) दन्ताः
(C) तालु (D) कण्ठः। (B)

76. पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) पिता पुत्रं क्रुध्यति (B) पिताः पुत्रं क्रुध्यति
(C) पिता पुत्राय क्रुध्यति (D) पिता पुत्रे क्रुध्यति। (C)

77. अहं तस्मै धनं ददामि।
वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(A) मया तं धनं दीयते
(B) मया तस्मै धनं दीयते
(C) अहं तस्मै धनः दीयते
(D) मया तस्मै धनं दायते। (B)

78. अन्तःस्थवर्णानां क्रमः कः ?
(A) व्, य्, र्, ल् (B) य्, र्, ल्, व्
(C) य्, र्, व्, ल् (D) य्, व्, र्, ल्। (B, D)

79. ''छात्राः गुरवे नमस्कुर्वन्ति।''
वाक्यमिदं संशोधयत–
(A) छात्राः गुरुं नमस्कुर्वन्ति
(B) छात्राः गुरुः नमस्कुर्वन्ति
(C) छात्राः गुरोः नमस्करोति
(D) छात्राः गुरौ नमस्कुर्वन्ति। (A)

80. ''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो .... धीमताम्।''
रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं निर्मापयत–
(A) धावति (B) गच्छति
(C) पिबति (D) पश्यति। (B)

81. ''नियमान् प्रस्तूय उदाहरणैः बोधनम्।''
इत्यत्र कोऽयं विधिः?
(A) निगमनविधिः (B) परायणविधिः
(C) आगमनविधिः (D) सूत्रविधिः। (A)

82. अभिनयविधेः प्रयोगः कुत्र क्रियते?
(A) कथाशिक्षणे (B) पद्यशिक्षणे
(C) नाटकशिक्षणे (D) गद्यशिक्षणे। (C)

83. प्रो. वी. पी. बोकीलमहोदयेन संस्कृतशिक्षणे कस्य विधेः प्रयोगः कृतः ?
(A) अनुवादविधेः (B) प्रत्यक्षविधेः
(C) पाठशालाविधेः (D) पाठ्यपुस्तकविधेः। (B)

84. संस्कृतभाषाशिक्षणस्य अन्तिमं कौशलं विद्यते–
(A) सभाषणम् (B) श्रवणम्
(C) पठनम् (D) लेखनम्। (D)

85. उपचारात्मकशिक्षणं किम्?–
(A) छात्राणां समस्याः दूरीभूताः भवन्ति
(B) शिक्षणमिदं समागतेभ्यः दोषेभ्यः त्रायते
(C) छात्र-शिक्षकयोः नूतनां स्फूर्ति जागर्ति
(D) उपर्युक्तं कथनत्रयं सत्यम्। (D)

86. शिक्षायाः प्रमुखम् उद्देश्यं किं भवेत्?
(A) धनोप्रार्जनम् (B) स्वार्थसाधनम्
(C) सर्वाङ्गीणविकासः (D) सर्वत्रभ्रमणम्। (C)

87. छात्रस्य ज्ञानात्मकक्षेत्रस्य परीक्षणं कथं क्रियते?
(A) दर्शनेन (B) परीक्षया
(C) मूल्याङ्कनेन (D) भाषणेन। (B)

88. सम्प्रेषणाय किं कर्त्तव्यम्?
(A) पूर्णसज्जा (B) सहायकसामग्री
(C) भ्रमणम् (D) भाषणम्। (A)

89. कैः अमूर्तवस्तुनः सङ्कल्पना मूर्तिमती भवति?
(A) पत्रकैः (B) दण्डैः
(C) चित्रैः (D) पुस्तकैः। (C)

90. छात्राणां सुलेखः लेखनशैली अभिव्यक्तिः च कैःप्रश्नैः परीक्ष्यन्ते?
(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्नैः
(B) निबन्धात्मक प्रश्नैः
(C) लघूत्तरात्मक प्रश्नैः
(D) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नैः। (B)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

REET-2015

लेवल-प्रथम

भाषा-I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

31. **शिक्षणमूल्यांकनस्य कति भेदाः सन्ति?**
(A) त्रयः (B) पञ्च
(C) चत्वारः (D) षष्ट (A)

32. **अनुवादशिक्षणस्योद्देश्यमस्ति–**
(A) छात्रेषु संस्कृतलेखनस्य योग्यतोत्पादनम्।
(B) छात्राणां शब्दभण्डारस्य अभिवर्धनम्।
(C) शब्दकोषस्य वृद्धिः भवति।
(D) सर्वमपि (D)

33. **उपचारात्मकं शिक्षणं भवति–**
(A) छात्राणाम् त्रुटिनिवारणार्थम्
(B) पठनस्य अभ्यासः
(C) लेखनकलासु निपुणता
(D) सर्वमपि (A)

34. **चतुर्विधभाषाकौशलानाम् क्रमनिर्धारणम् अस्ति–**
(A) श्रवणं, भाषणं, पठनम्, लेखनम्।
(B) भाषणं, लेखनं, पठनम्, श्रवणम्।
(C) पठनम्, भाषणम्, श्रवणम्, लेखनम्।
(D) लेखनम्, पठनम्, भाषणम्, श्रवणम्। (A)

35. **संस्कृतमूल्यांकनस्य हेतोः प्रश्नाः भवेयुः–**
(A) निबन्धनात्मकाः (B) लघूत्तरात्मकाः
(C) अतिलघूत्तरात्मकाः (D) समन्विताः (D)

36. **कः प्रयोगः शुद्धः?**
(A) अलं हसिताय (B) अलं हसितेन
(C) अलं हसितः (D) अलं हासितस्य (B)

37. **'मनोरथः' इत्यत्र सन्धिविच्छेदः कः अस्ति?**
(A) मन + रथः (B) मनु + रथः
(C) मनस् + रथ (D) मनो + रथः (C)

38. **शुद्धं पदम् अस्ति–**
(A) अन्तर्राष्ट्रियम् (B) अन्ताराष्ट्रीयम्
(C) आन्ताराष्ट्रीयम् (D) अन्ताराष्ट्रियम् (D)

39. लेखनकलायाः अत्यधिकं महत्त्वं वर्तते–
(A) मञ्चेषु (B) नाट्यस्थलेषु
(C) गृहेषु (D) विद्यालयेषु (D)

निम्नलिखितम् अपठितं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखित-व्याकरण-सम्बन्धिताः प्रश्नाः (40-44) समाधेयाः–

संस्कृतभाषा जगतः सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा, सर्वोत्कृष्ट-साहित्यसंयुक्ता च वर्तते। अनन्तानन्तवर्षेषु व्यपगतेष्वपि अस्याः माधुर्यम् उदारत्वं च नाद्यापि विकृतम्। पाश्चात्त्यदेशीया विचारशीलाः कोल्हार्न-मैक्समूलर-मैकडानाल्ड-कीथादयः विद्वांसः, संस्कृतभाषायाः प्रशंसामकुर्वन्। सर्वासामार्यभाषाणाम् उत्पत्तिः अत एव बभूव। पुरा सर्वे जनाः संस्कृतभाषयैवाभाषन्त। अतः सर्वमपि प्राक्तनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव उपलभ्यते। सर्वे प्राचीनतमाः ग्रन्थाः चत्वारो वेदाश्च संस्कृतभाषायामेव सन्ति। वेदेषु मानवकर्तव्याकर्तव्ययोः सम्यक् निर्धारणमस्ति। संस्कृतसाहित्यं भारतस्य गौरवं उद्घोषयति। समस्तं देशं च एकतासूत्रे बध्नाति। अस्य साहित्यस्य प्रचारः प्रसारश्च नितान्तं लाभप्रदः एतज्ज्ञानविहीनस्तु पशुरेव।

40. 'जगतः' इत्यत्र का विभक्तिः?
(A) प्रथमा (B) षष्ठी
(C) सप्तमी (D) तृतीया (B)

41. 'व्यपगतेष्वपि' इत्यत्र कः सन्धिः?
(A) यणसन्धिः (B) विसर्गसन्धिः
(C) वृद्धिसन्धिः (D) पररूपसन्धिः (A)

42. 'विकृतम्' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) क्तवतु (B) क्त्वा
(C) क्त (D) ण्वुल् (C)

43. संस्कृतभाषायां कति वेदाः सन्ति?
(A) सप्त (B) पञ्च
(C) दश (D) चत्वारः (D)

44. 'एकतासूत्रे' इत्यत्र समासविग्रहः कः अस्ति?
(A) एकतायाः सूत्रे (B) एकता सूत्रे
(C) एकताम् सूत्रे (D) एकस्मिन् सूत्रे (A)

अधोलिखितं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखिताः प्रश्नाः (45–49) समाधेयाः–

भारतवर्षं एकः महान् देशः वर्तते। अस्मिन् अनेके प्रदेशाः सन्ति। तेषु राजस्थानप्रदेशोऽपि एकः वर्तते। अयं प्रदेशः मूलतः विविधराज्ञां स्थली वर्तते। स्वतंत्रताप्राप्तिपश्चात् तेषां एकीकरणम् अभवत्। अस्मिन् एकीकरणे पटेलमहोदयस्य महत्वपूर्णभूमिका आसीत्। साम्प्रतं राजस्थानप्रदेशः एकं राज्यं वर्तते। अस्य राजधानी जयपुरम् अस्ति। राजस्थान–प्रदेशस्य काश्चन एतादृश्यः विशेषताः सन्ति या खलु अन्यत्र न लभन्ते। अस्य प्रदेशस्य भूमिः वीराणां वीरांगनानां च जननी वर्तते। साम्प्रतं शिक्षाक्षेत्रे राजस्थानप्रदेशः उन्नतिपथमारूढो वर्तते। अत्र छात्राणां कृते उच्चशिक्षायाः उत्तमा व्यवस्था वर्तते। अत्र अनेकानि रमणीयानि स्थानानि वर्तन्ते। अस्य प्रदेशस्य भाषा राजस्थानी वर्तते। अत्रत्या संस्कृतिः सर्वत्र प्रसिद्धा।

45. 'राज्ञाम्' इत्यत्र का विभक्तिः अस्ति?
(A) सप्तमी बहुवचनम् (B) षष्ठी बहुवचनम्
(C) पञ्चमी बहुवचनम् (D) चतुर्थी बहुवचनम् (B)

46. 'अभवत्' इति पदं कस्मिन् लकारे प्रयुक्तमस्ति?
(A) लट्लकारे (B) लोट् लकारे
(C) लङ्लकारे (D) विधिलिङ्लकारे (C)

47. 'वीराणाम्' इत्यस्य विलोमशब्दः कः अस्ति?
(A) वीरांगनानाम् (B) वीरान्
(C) वीराणि (D) वीरेषु (A)

48. 'छात्राणां कृते' इति पदस्य पर्यायः अस्ति–
(A) छात्रेषु (B) छात्राय
(C) छात्रेण (D) छात्रान् (BONUS)

49. 'अत्र अनेकानि रमणीयानि स्थानानि वर्तन्ते' वाक्यस्य लोट्लकारे परिवर्तितम् रूपम् अस्ति–
(A) अत्र अनेकानि रमणीयानिं स्थानानि सन्ति।
(B) अत्र अनेकानि रमणीयानि स्थानानि आसीत्।
(C) अत्र अनेकानि रमणीयानि स्थानानि वर्तन्ताम्।
(D) अत्र अनेकानि रमणीयानि स्थानानि भविष्यन्ति। (C)

50. हरि वैकुण्ठ में रहते हैं। -संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) हरि वैकुण्ठम् अधिवसति।
(B) हरिः वैकुण्ठम् वसति।
(C) हरिः वैकुण्ठे अधिवसति।
(D) हरि वैकुण्ठे उपवसति। (A)

51. सः पत्रम् लिखति। वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(A) सः पत्रेण लिखति। (B) तेन पत्रम् लिख्यते।
(C) तेन पत्रम् लिखति। (D) सः पत्रम् लिख्यते। (B)

52. निम्नांकितेषु शुद्धं वाक्यम् अस्ति–
(A) सः ईश्वरं नमति।
(B) सः ईश्वरस्य नमस्करोति।
(C) सः ईश्वराय नमस्करोति।
(D) सः ईश्वरेण नमस्करोति। (A)

53. निम्नसूक्तेः मूलरूपमस्ति–
(A) अहितं मनोहारि च सुलभं वचः।
(B) हितं मनोहारि च सुलभं वचः।
(C) हितं अमनोहारि च दुर्लभं वचः।
(D) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। (D)

54. 'बलि से पृथिवी मांगता है' वाक्यस्य अनुवादः अस्ति–
(A) बलेः वसुधां याचति।
(B) बलिं याचते वसुधाम्।
(C) बलि याचते वसुधा।
(D) बलिना याचते वसुधा। (B)

55. संस्कृतभाषाशिक्षणस्य प्रथमं कौशलं विद्यते–
(A) श्रवणं (B) पठनम्
(C) सम्भाषणम् (D) लेखनम् (A)

56. नाटकपाठयोजनायाम् शिक्षकः रंगमचे कारयति–
(A) पाठनम् (B) अभिनयम्
(C) लेखनम् (D) वाचनम् (B)

57. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' किम् अस्ति?
(A) नाटकम् (B) महाकाव्यम्
(C) खण्डकाव्यम् (D) कथा (A)

58. कथाश्रवणे अनावश्यकम् वर्तते–
(A) कथाश्रवणम्
(B) सरलभाषा
(C) कथायाः मुख्यविशेषता
(D) पुस्तकस्य प्रयोगः (D)

59. निम्नांकितेषु शब्देषु उपसर्गरहितः शब्दः अस्ति–
(A) अनुरागः (B) परागः
(C) विरागः (D) संलापः (B)

60. संस्कृतशिक्षणेप्राचीनपद्धतेः, मुख्योद्देश्यमस्ति–
(A) भारतीयसंस्कृतेः परिचयः।
(B) स्वाध्यायं प्रति छात्राणां अभिरुच्युत्पादनम्।
(C) शुद्धोच्चारणस्य सामर्थ्यप्रदानम्।
(D) सर्वे (D)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

REET-2015

लेवल-प्रथम

भाषा–II : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

61. संस्कृतशिक्षणे किं श्रव्यसाधनमुपयोगि नास्ति:?
(A) आकाशवाणी (B) मानचित्रम्
(C) ग्रामोफोन (D) टेपरिकार्डर (B)

62. संस्कृत-अध्यापकस्य अभिन्नं मित्रम् अस्ति–
(A) श्यामपट्ट: (B) चार्ट:
(C) चित्रं (D) मानचित्रं (A)

63. भाषाशिक्षणस्य महत्त्वपूर्णविशेषता अस्ति–
(A) व्याकरणस्य ज्ञानम् (B) व्यवहारज्ञानम्
(C) शुद्धोच्चारणम् (D) विद्यार्थिनां रुचि: (C)

64. लिखितपरीक्षायां प्रश्ना: सन्ति–
(A) निबन्धात्मका: (B) लघूत्तरात्मका:
(C) वस्तुनिष्ठप्रश्ना: (D) सर्वे (D)

65. निम्नांकितेषु अनुवादस्य प्रकार: नास्ति–
(A) चित्रानुवाद: (B) अक्षरश: अनुवाद:
(C) तथ्यानुवाद: (D) छायानुवाद: (A)

66. 'सर्व' शब्दस्य पुँल्लिंग बहुवचने रूपम् अस्ति–
(A) सर्वा (B) सर्वे
(C) सर्वाणि (D) सर्वम् (B)

67. परिष्कारात्मकं शिक्षणम् अस्ति–
(A) उपचारात्मकम् (B) व्यापकम्
(C) मौखिकम् (D) विकल्पात्मकम् (A)

68. शिक्षणं भवेत्–
(A) संश्लेषणात् विश्लेषणम्
(B) कठिनात् कठिनं प्रति
(C) सरलात् कठिनं प्रति
(D) तर्कात् मनोविज्ञानं प्रति (C)

अधोलिखितम् अपठितम् गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नांकिता: प्रश्ना: (69-73) समाधेया–

मम विद्यालय: नगरस्य एकस्मिन् सुरम्ये स्थले स्थित: अस्ति। प्राङ्गणस्य मध्ये एकं सुन्दरम् उद्यानम् वर्तते। अत्र अध्यापकानां संख्या सप्तति: छात्राणां च सहस्रद्वयं वर्तते। अध्यापका: अतीव निपुणा: योग्या: च सन्ति। शिक्षाक्षेत्रे अस्य ख्याति: सम्पूर्णदेशे अस्ति। अत: दूरत: पठनाय अत्र छात्रा: प्रवेशं लभन्ते। क्रीडाक्षेत्रे सदा प्रमुखं स्थानं प्राप्नोति। अहं गर्वित: भाग्यशाली च य: एतादृशे अत्युत्तमे विद्यालये शिक्षां लभे।

69. 'मम' इत्यस्य का विभक्ति:?
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) षष्ठी (D) पञ्चमी (C)

70. 'शिक्षाक्षेत्रे' इत्यत्र समासविग्रह: अस्ति–
(A) शिक्षायाम् क्षेत्रे (B) शिक्षाम् क्षेत्रे
(C) शिक्षया क्षेत्रे (D) शिक्षाया: क्षेत्रे (D)

71. 'स्थित:' इत्यत्र क: प्रत्यय: वर्तते?
(A) स्था + क्तवतु प्रत्यय
(B) स्था + शतृ प्रत्यय
(C) स्था + क्त प्रत्यय
(D) स्थ् + इत: प्रत्यय (C)

72. 'अत्युत्तमे' पदे सन्धिविच्छेद: करणीय:–
(A) अति + उत्तमे (B) अत्य + उत्तमे
(C) अति - त्तमे (D) अत्यु + त्तमे (A)

73. 'प्राप्नोति' इत्यत्र क: धातु: अस्ति?
(A) प्राप् धातु (B) प्रप् धातु
(C) प्रपन् धातु (D) आप् धातु (D)

निम्नलिखितं श्लोकम् आधारीकृत्य निम्नांकिता: प्रश्ना: (74-78) समाधेया:–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नं गुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यश:सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरु:।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते, नहि धनं विद्याविहीन: पशु:।।

74. 'प्रच्छन्नम्' अत्र क: प्रत्यय: प्रयुक्त:?
(A) शतृ (B) क्त:
(C) क्तवतु (D) ण्वुल् (B)

75. 'यश:' इत्यत्र का विभक्ति: अस्ति?
(A) प्रथमा (B) पञ्चमी
(C) सप्तमी (D) षष्ठी (A)

76. 'राजसु' शब्दस्य मूलशब्द: अस्ति–
(A) राजा (B) राज
(C) राजन् (D) राजस् (C)

77. 'विद्याविहीन:' इत्यत्र समास: क: ?
(A) कर्मधारय: (B) तत्पुरुष:
(C) बहुव्रीहि: (D) अव्ययीभाव: (B)

78. 'गुरूणाम्' इत्यत्र का विभक्ति अस्ति?
(A) सप्तमी एकवचनम्
(B) षष्ठी एकवचनम्
(C) षष्ठी बहुवचनम्
(D) तृतीया बहुवचनम् (C)

79. ऋतुरषाणाम् .... ।
उपर्युक्तस्थानं पूरयत–
(A) कण्ठ: (B) कण्ठतालु
(C) जिह्वा (D) मूर्धा (BONUS)

80. 'ञ म ङ ण न' व्यञ्जनानाम् उच्चारणस्थानं किं वर्तते?
(A) नासिका (B) मूर्ख
(C) जिह्वामूलम् (D) कण्ठोष्ठम् (BONUS)

81. वाक्यमिदं संशोधयत–
''बालका: पुस्तकं रोचते।''
(A) बालकं पुस्तकं रोचते।
(B) बालकेन पुस्तकं रोचते।
(C) बालकाय पुस्तकं रोचते।
(D) बालकस्य पुस्तकं रोचते। (C)

82. 'स: गृहं गच्छति' वाक्यस्यास्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(A) तेन गृहम् गम्यते। (B) तया गृहम् गच्छते।
(C) तेन गृहम् गच्छति। (D) तेन गृहे गम्यते। (A)

83. निम्नलिखितसूक्तेः समुचितपदेन रिक्त स्थानं पूरयत:
दुर्बलस्य .... राजा–
(A) जनं (B) बलम्
(C) धनम् (D) धर्मम् (B)

84. संस्कृतशिक्षणस्य प्रमुखोद्देश्यमस्ति–
(A) बोधात्मकम् (B) ज्ञानात्मकम्
(C) रचनात्मकम् (D) सर्वाणि (D)

85. बाह्यप्रयत्ना: सन्ति–
(A) पञ्च (B) एकादश
(C) सप्त (D) चत्वारि (B)

86. निबन्धात्मकपरीक्षापेक्षया विश्वसनीया का परीक्षा?
(A) साक्षात्कारपरीक्षा
(B) मौखिकपरीक्षा
(C) वस्तुनिष्ठपरीक्षा
(D) लिखितपरीक्षा (C)

87. 'अष्टाध्यायी' इति पाणिनीयग्रन्थे अध्याया: सन्ति–
(A) सप्त (B) सपादसप्त
(C) दश (D) अष्ट (D)

88. 'य' कारस्य उच्चारणस्थानं किम्?
(A) तालु (B) कण्ठोष्ठ
(C) ओष्ठ (D) मूर्धा (A)

89. स्वाध्यायप्रणाल्या: सोपानानि सन्ति–
(A) नियोजनम् (B) क्रियान्वयम्
(C) मूल्यांकनम् (D) सर्वाणि (D)

90. संस्कृतभाषाकौशलस्य प्रथमकौशलम् अस्ति–
(A) पठनम् (B) लेखनम्
(C) श्रवणम् (D) सम्भाषणम् (C)

Scanned by CamScanner

हल प्रश्न पत्र–REET/RTET

REET-2015

लेवल-द्वितीय

भाषा-I : संस्कृतम्

अत्र त्रिंशत् प्रश्नाः सन्ति। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

अधोलिखितं अपठितं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखिताः प्रश्नाः (31-35) समाधेया–

श्रवणकुमारः पितृभक्तः बालकः आसीत्। तस्य मातापितरौ नेत्रहीनौ आस्ताम्। सः सदा तयोः सेवां करोति स्म। एकदा श्रवणस्य पितरौ तम् अवदताम् - वत्स! आवां तीर्थयात्रां कर्तुम् इच्छावः। श्रवणकुमारः आज्ञाकारी पुत्रः आसीत्। सः पित्रोः आज्ञाम् अपालयत्। श्रवणकुमारः एकस्यां वहङ्गिकायां पितरौ उपावेशयत्। अथ सः ताम् स्कन्धे धृत्वा तीर्थयात्रायै प्राचलत्।

31. 'मातापितरौ' इत्यस्य समासविग्रहः अस्ति–
(A) माता च पिता च
(B) मातुः पितरः
(C) मात्ता पितरौ
(D) मात्रो पितरो (A)

32. 'धृत्वा' इत्यत्र कः प्रत्ययः प्रयुक्तः?
(A) क्त (B) शानच्
(C) क्तवतु (D) क्त्वा (D)

33. 'तीर्थयात्रायै' इत्यस्य का विभक्तिः?
(A) षष्ठी (B) चतुर्थी
(C) पञ्चमी (D) तृतीया (B)

34. 'अपालयत्' इत्यत्र लकारः अस्ति–
(A) लोट् लकार (B) लट् लकार
(C) लुङ्लकार (D) लङ्लकार (D)

35. 'श्रवणकुमारः आज्ञाकारी पुत्रः आसीत्' अत्र विशेषणम् अस्ति–
(A) श्रवणकुमारः (B) पुत्रः
(C) आज्ञाकारी (D) आसीत् (C)

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा निम्नलिखिताः प्रश्नाः (36-40) समाधेयाः

''भारतस्य उत्तरस्यां दिशि हिमालयो नाम नगाधिराजः वर्तते। स हिममण्डितैः दुर्गमैश्च निजशिखरैः प्रहरीव भारतस्य रक्षां करोति। दक्षिणदिशायां च हिन्दमहासागरः भारतमातुः चरण-प्रक्षालनं करोति। भारतदेशः कृषिप्रधानोऽस्ति। अस्य जलम् अमृत-तुल्यम् अस्ति। यमुनायाः जलमपि पवित्रं मन्यते।''

36. 'दिशि' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः ? किं वचनं च ?
(A) षष्ठी - एकवचनम्
(B) द्वितीया - एकवचनम्
(C) सप्तमी - द्विवचनम्
(D) सप्तमी - एकवचनम् (D)

37. 'प्रहरीव' अत्र सन्धिविच्छेदं कुरुत–
(A) प्रहरी + इव (B) प्रह + रीव
(C) प्रहर + इव (D) प्र + हरीव (A)

38. 'पवित्रतमा' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
(A) तरप् (B) तसिल्
(C) तमप् (D) तव्यत् (C)

39. 'अस्ति' इति पदं लङ्लकारे परिवर्तयत–
(A) अत्ति (B) आसीत्
(C) स्तः (D) सन्ति (B)

40. 'निर्गताः' इत्यत्र कः उपसर्गः?
(A) निः (B) निस्
(C) नि (D) निर् (D)

41. अधोलिखितवाक्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
अहं ग्रामं गच्छामि।
(A) मया ग्रामः गम्यते।
(B) मया ग्रामम् गम्यते।
(C) मया ग्रामे गम्यते।
(D) मया ग्रामं गच्छामि। (BONUS)

42. वाक्यमिदं संशोधयत–
बालाः दुग्धम् पिबामि।
(A) बालाः दुग्धम् पिबति।
(B) बालः दुग्धानि पिबन्ति।
(C) बालाः दुग्धम् पिबन्ति।
(D) बालाः दुग्धाः पिबन्ति। (C)

43. रेखाङ्कितं पदम् अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं करणीयम्–
जनाः लोभिनः वर्तन्ते।
(A) के (B) किम्
(C) कस्मिन् (D) कः (A)

44. रिक्तस्थानं पूरयित्वा सूक्तिं संयोजयत–
संघे शक्तिः कलौ .... ।
(A) धर्म (B) कार्य
(C) युगे (D) वर्ष (C)

45. ''कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है'' अस्य वाक्यस्य संस्कृते अनुवादं कुरुत–
(A) कवेः कालिदासः श्रेष्ठः
(B) कवि कालिदासः श्रेष्ठः
(C) कवयोः कालिदासः श्रेष्ठः
(D) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः (D)

46. कात्यायनस्य काः सन्ति?
(A) सूत्राणि (B) वार्तिकानि
(C) मन्त्राणि (D) परिभाषासूत्राणि (B)

47. 'इति + आदि' इत्यत्र सन्धिः वर्तते–
(A) गुण संधिः (B) वृद्धिसंधिः
(C) उपपदसंधिः (D) यण् संधिः (D)

48. संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि सन्ति–
(A) भारतीसंस्कृतेः ज्ञानम्
(B) शुद्धोच्चारणम्
(C) स्मरणशक्तेः वर्धनम्
(D) सर्वाणि (D)

49. संस्कृतशिक्षणस्य प्राचीनपद्धतिः वर्तते–
(A) भण्डारपद्धतिः (B) पाठशालापद्धतिः
(C) पाठ्यपुस्तकपद्धतिः (D) सम्भाषणपद्धतिः (B)

50. मौखिकपरीक्षायाः प्रकाराणि सन्तिः–
(A) शलाकापरीक्षा (B) शास्त्रार्थम्
(C) भाषणम् (D) सर्वाणि (D)

51. चतुर्विधभाषाकौशलेषु द्वितीयकौशलम् अस्ति–
(A) श्रवणम् (B) भाषणम्
(C) पठनम् (D) लेखनम् (B)

52. श्रवणकौशलस्य प्रमुखम् साधनम् अस्तिः–
(A) श्यामपट्टः (B) पुस्तकम्
(C) गुरुमुखम् (D) चित्रम् (C)

53. सस्वरपठनं आवश्यकम् अस्ति–
(A) शुद्धम् उच्चारणार्थम्
(B) भावग्रहणार्थम्
(C) काठिन्यनिवारणार्थम्
(D) प्रश्नानाम् समाधानाय (A)

54. संस्कृतशिक्षणे कानि उपकरणानि प्रयुक्तानि सन्ति?
(A) केवल श्रव्य उपकरणानि
(B) केवल दृश्योपकरणानि
(C) चित्राणि
(D) दृश्य-श्रव्योपकरणानि (D)

55. अनुवादशिक्षणस्य विधयः सन्ति–
(A) पुस्तकविधिः
(B) द्विभाषीविधिः
(C) तुलना एवं अनुकरणविधिः
(D) सर्वाः (D)

56. संस्कृतशिक्षणे परम्परागतसहायोपकरणम् अस्ति–
(A) दूरदर्शनम् (B) श्यामपट्टः
(C) चित्रम् (D) आकाशवाणी (B)

57. संस्कृतशिक्षणे अन्वयस्य द्वितीयः भेदः वर्तते–
(A) खण्डान्वयः (B) दण्डान्वयः
(C) शब्दान्वयः (D) अर्थान्वयः (A)

58. संस्कृतभाषायाम् स्वराः सन्ति–
(A) य् व् र् ल् (B) श् ष् स् ह्
(C) अ इ उ ऋ (D) ञ् म् ङ् न् (C)

59. संस्कृतभाषा सर्वाधिकसमीचीना भाषा कथ्यते–
(A) दूरदर्शनार्थम्
(B) संगणकार्थम्
(C) चित्रार्थम्
(D) ध्वनिविस्तारकयन्त्रार्थम् (B)

60. 'बुनियादी शिक्षा' केन प्रवर्तिता?
(A) राजेन्द्रप्रसाद महोदयेन
(B) एन. गोपाल स्वामी द्वारा
(C) डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी द्वारा
(D) महात्मागांधीमहोदयेन (D)

Scanned by CamScanner